बाबा कदम

तूफान

TABLE OF CONTENTS

आंधी
समर्पण

तुफान

□□□□□□□

बाबा कदम

दिलीपराज प्रकाशन प्रा. लि.®
२५१ क, शनिवार पेठ, पुणे -४११०३०

□□□□□□□□
□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□
□□□□□□ □□□□□□,
□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□,
251 □□, □□□□□□ □□□, □□□□ - 411030□

□□□□ □□. □□□□□□□□ □□□□□□ □□□
'□□□□', □□□□ □□□□□ □□ □□□,
□□□□□□□ □□□□□, □□□□□□□□□□

□□□□□□□ 4 - 15 □□□□□□, 2008

□□□□□□□ □□□□□□□ - □□□□

□□□□ - □□□□□ 2020

□□□ - □□□□□ □□□□

□□□□□□□ - www.diliprajprakashan.in

□□□□ - info@diliprajprakashan.in

तूफान

- बाबा कदम

एक
चित्रदुर्ग जेल की पथरीली तलहटी से ज्वार की लहरें टकरा रही थीं, झाग बना रही थीं और टूट रही थीं। चट्टानों के ऊपर से उड़ती बर्फ बहुत ऊँची उड़ रही थी। फिर भी वह जेल की दीवारों तक नहीं पहुँच रही थी। भला वह बर्फ सात-आठ सौ फीट की ऊँचाई तक कैसे पहुँच सकती थी?
सितु सारंग—कैदी संख्या तैंतीस—जेल की पिछली खिड़की पर खड़ा होकर चट्टानों से टकराती लहरों को देख रहा था। वह पिछले छह महीनों से ऐसा ही कर रहा था। कभी-कभी वह घंटों पश्चिम की ओर फैले विशाल अरब सागर को घूरता रहता था। वह किसी का इंतज़ार नहीं कर रहा था; बस पागलों की तरह पश्चिम की ओर देखता रहता था। बैरक में बंद अन्य कैदी उसकी इस हरकत को नज़रअंदाज़ करते थे। क्योंकि वे जानते थे कि सज़ा मिलने के बाद पहली बार यहाँ आने वाला कैदी जब तक यहाँ के माहौल से अभ्यस्त नहीं हो जाता, तब तक कुछ न कुछ अजीब हरकतें करता ही है। एक बार जब वह यहाँ के माहौल से अभ्यस्त हो जाता है, तो उसका व्यवहार—बोलचाल—सब कुछ एक समझदार व्यक्ति की तरह व्यवस्थित हो जाता है! तब तक तो यही चलता रहता था।
"सीतू, सीतू, सीतू!" दिवेकर जज बराकी के पास आकर सीताराम को पुकारने लगा। सीताराम ने पीछे मुड़कर देखा। उसने अपने गालों पर बहते आँसू पोंछे और दिवेकर के पास खड़ा हो गया।
"अरे, तुम कब तक ऐसे ही शोक मनाते रहोगे? अब, जब तक यह उम्रकैद पूरी नहीं हो जाती, यहाँ से निकलने का कोई रास्ता नहीं है। कल ही

एक पत्र आया था जिसमें लिखा था कि उच्च न्यायालय में तुम्हारी अपील खारिज कर दी गई है। तो अब, खुद को संभाल लो। मजबूत बनो। क्या मैंने यहाँ पाँच साल नहीं बिताए?"
"लेकिन महोदय, आपने कम से कम दो हत्याएं की हैं; मैंने किसी को नहीं मारा, लेकिन किसी को मारा है! सचमुच! मैं मथुकाका की कसम खाता हूँ - मैंने नारायण को नहीं मारा! मुझे तो यह भी नहीं पता कि उसे किसने मारा।"
जैसे ही उन्होंने बोलना शुरू किया, सीतू की आँखों से फिर से आँसू बहने लगे। इस बार दिवेकर साहब का व्यवहार कुछ गंभीर हो गया। इतने समय से वे यही सोचते आ रहे थे कि सजा सुनाए जाने के बाद पहली बार जेल आने वाला हर कैदी पहले कुछ दिनों तक यही कहता रहेगा कि वह निर्दोष है। लेकिन धीरे-धीरे उन्हें एहसास हुआ कि चाहे वे यहाँ के सभी कैदियों को कितना भी यकीन दिला लें कि वे निर्दोष हैं, कोई भी उनकी बात नहीं मानेगा; और यह सच भी नहीं था! फिर धीरे-धीरे उन्होंने कोशिश करना छोड़ दिया और चुपके से बढ़ईगिरी, बुनाई या लिफाफे बनाने का काम सीखने लगे। चित्रदुर्ग जेल बहुत पुरानी है। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की समाप्ति के बाद, ब्रिटिश सरकार ने उग्र और दृढ़ क्रांतिकारियों को सुरक्षित रखने के लिए इस जेल का निर्माण करवाया था। चित्रदुर्ग कोंकण तट पर स्थित जिले का एक गाँव है, और यह जेल इस गाँव से ढाई मील दूर समुद्र में एक विशाल चट्टान पर बनी थी। सात-आठ सौ फीट ऊँची इस चट्टान पर आठ वर्ग फर्लांग का समतल मैदान था। जेल भवन इसी समतल मैदान पर बनाया गया था। इमारत के चारों ओर दस फीट ऊँची कांच के टुकड़ों से बनी एक अभेद्य दीवार थी। कोई दीवार नहीं थी, केवल पश्चिम दिशा में थी, और यहाँ दीवार बनाने का कोई कारण नहीं था। बैरकों के पश्चिम की ओर छह-

हालांकि जेल की क्षमता दो सौ लोगों की थी, लेकिन वहां केवल एक लाख पंद्रह सौ कैदी ही रखे गए थे; और इसका मुख्य कारण ताजे पानी की कमी थी। पहले यहां तीन कुएं थे। ताजे पानी की कोई कमी नहीं थी। लेकिन न जाने जमीन के नीचे क्या हुआ - दो कुएं हमेशा के लिए सूख गए। केवल एक कुआं ही ताजे पानी की आपूर्ति कर पा रहा था। इसलिए, वहां एक लाख पंद्रह सौ से अधिक कैदियों को रखना संभव नहीं था।
हर साल बीस से तीस कैदियों को उनकी सजा पूरी होने के बाद रिहा कर दिया जाता है और इतनी ही संख्या में नए कैदियों को वापस जेल में डाल दिया जाता है। लेकिन पिछले पंद्रह से बीस वर्षों में कैदियों की कुल संख्या लगभग एक सौ से डेढ़ सौ के बीच ही रही है। इस जेल से आज तक कोई कैदी नहीं भागा था, यही इस जेल की खासियत थी! भागना आसान नहीं था! जेल के चारों ओर दस से बारह फीट ऊंची अभेद्य पत्थर की दीवार थी। इसकी चौखट पर नुकीले कांटेदार कांच की सलाखें लगी थीं। अगर कोई दीवार फांदने की कोशिश भी करता, तो भी नामुमकिन था; क्योंकि दीवार के नीचे सौ से दो सौ फीट गहरी खाई में उतरना मौत के मुंह में जाने जैसा था। और इन सबके बाद भी, अगर कोई कैदी उस दीवार और खाई को पार करके समुद्र तट तक पहुंच भी जाता, तो उसमें ढाई मील तैरकर किनारे तक पहुंचने की हिम्मत नहीं होती! जेल के आसपास बड़ी-बड़ी शार्क मछलियां थीं। ऐसी घटनाएं भी हुई थीं जिनमें उन्होंने अपनी पूंछ से छोटी नावों पर हमला किया और उनमें मौजूद मकड़ियों को निगल लिया। इसलिए, जेल भेजे गए कैदी को केवल दो ही तरीकों से रिहा किया जा सकता था। एक तो सजा पूरी होने के बाद, और दूसरा सजा काटते समय उसकी मृत्यु हो जाने पर! इसीलिए, हालांकि कुछ लोग मजाक में इस जेल को अंडमान कहते थे, यहाँ की हवा अंडमान जितनी खराब नहीं थी। जेल परिसर में दस-पाँच

उसे सौंप देते थे। यह कैदी कोई और नहीं बल्कि मोहनराव दिवेकर थे!
जब दिवेकर जिला न्यायाधीश थे, तब उन्होंने अपनी पत्नी शारदा और मकान मालिक दाऊद की रिवॉल्वर से गोली मारकर हत्या कर दी थी। हत्या के बाद, उन्होंने शांत भाव से पुलिस स्टेशन को फोन किया और घटना की सूचना स्वयं दी। उन्होंने न केवल अपने पास मौजूद रिवॉल्वर पुलिस को सौंप दी, बल्कि स्वयं को भी पुलिस के हवाले कर दिया। जिला न्यायाधीश द्वारा अपनी पत्नी और मकान मालिक की हत्या की यह घटना इतनी भयावह थी कि दस मिनट के भीतर घटनास्थल पर पहुंचे डीएसपी मिरांडा भी कुछ क्षणों के लिए असमंजस में पड़ गए। लेकिन मोहनराव ने शांत भाव से उन्हें बताया,
"मिस्टर मिरांडा, मुझे गिरफ्तार करो! अरे, मुझे गिरफ्तार करो! मैंने दो हत्याएं की हैं!"
मिरांडा पुलिस अधिकारी ने फिर भी उसे हथकड़ी लगाने का आदेश नहीं दिया। वह उसे अपनी कार में पुलिस स्टेशन ले गया। मोहनराव की गिरफ्तारी का पंचनामा होने के बाद, उसे मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया जाना था। लेकिन मोहनराव को मजिस्ट्रेट स्वयं अपने कक्ष में ले गए, जो अचानक अपनी कुर्सी से उठ खड़े हुए। तब मोहनराव ने उनसे कहा,
"आप क्यों खड़े हैं? मैं आज आपके सामने एक आरोपी के रूप में खड़ा हूँ! मैं एक अपराधी हूँ! मैं आज आपके सामने आपके जिला न्यायाधीश के रूप में नहीं खड़ा हूँ!"
मजिस्ट्रेट के मुंह से एक शब्द भी नहीं निकला। पुलिस द्वारा मांगी गई रिमांड सूची पर हस्ताक्षर करते समय भी मजिस्ट्रेट का हाथ कांप रहा था।

मोहनराव दिवेकर पर अपनी पत्नी शारदा और पट्टेवाले के मालिक दाऊद की हत्या का आरोप लगाया गया था। मोहनराव ने अपना बचाव करने के लिए किसी वकील को नियुक्त नहीं किया। मुकदमा शुरू होने के बाद, उन्होंने अपराध से इनकार नहीं किया, लेकिन सरकारी साक्ष्यों के समाप्त होने के बाद उन्होंने जो बयान दिया, वह दिल दहला देने वाला था।
अदालत में सन्नाटा पसरा हुआ था, यहाँ तक कि एक चींटी भी अंदर नहीं जा सकती थी। नव नियुक्त जिला न्यायाधीश सल्धाना अपने चेहरे की गंभीरता छिपा नहीं सके। वे मुख्य न्यायाधीश मोहनराव से सवाल कर रहे थे।
"क्या आप सरकार द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों के बारे में कुछ और कहना चाहते हैं?"
"हां, मैं आपको बताना चाहता हूं।"
टाइपिस्ट ने टाइपराइटर में नया कागज डाला। अदालत कक्ष में बस इतनी ही आवाज हुई।
मोहनराव बोलने लगे,
"जिला न्यायाधीश के रूप में इस जिले में आए हुए मुझे एक साल हो गया है। मैं और मेरी पत्नी शारदा अकेले ही यहाँ आए थे। मेरे दो बच्चे हैं, एक बेटा और एक बेटी। मेरी बेटी की शादी को तीन साल हो गए हैं। उसका पति नागपुर में एक प्रसिद्ध सर्जन है। मेरा बेटा इस साल मेडिकल स्कूल के दूसरे वर्ष में है। अब तक मेरा जीवन सुख और संतोष से भरा रहा है। मैंने कभी मान-सम्मान, धन या प्रतिष्ठा की इच्छा नहीं की। फिर भी ये सब मेरे पीछे-पीछे आते रहे। मेरे दोनों बच्चे अच्छे संस्कारों में पले-बढ़े और गुणी निकले। मुझे कोई परेशानी नहीं थी। मैं खुद को एक आदर्श पति मानता था। लेकिन मेरा यह विचार धराशायी हो गया। मेरी पत्नी शारदा का व्यवहार

कुछ अजीब होने लगा। पैंतालीस साल की उम्र में, प्रकृति के नियम के अनुसार, स्त्रीत्व में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। लेकिन शारदा के साथ मेरा अनुभव कुछ अलग होने लगा। मैंने देखा कि अन्य पुरुषों के प्रति उसका नजरिया बदल रहा था। हम क्लबों में जाते थे। वह अन्य महिलाओं से बात करने के बजाय पुरुषों के साथ मजाक करना पसंद करने लगी। मैंने उसके इस व्यवहार पर दस-पाँच बार असहमति जताई, लेकिन उसने मुझे नजरअंदाज कर दिया।
उसके बाद मैंने उसके साथ क्लब जाना बंद कर दिया। मैंने उसे भी जाने से मना कर दिया। लेकिन इससे उसके व्यवहार में सुधार होने के बजाय और भी बिगड़ गया। वह काम के लिए घर आने वाले पुरुषों से बेधड़क बातें करने लगी। धीरे-धीरे वह मकान मालिक और माली के साथ भी अंतरंग संबंध बनाने लगी।
"मेरी सेहत बिगड़ने लगी। मैं दिन-रात इस बारे में सोचने लगा कि उसके चरित्र को कैसे बदला जाए। एक बार मैंने उससे सीधे ही पूछ लिया।"
"शारदा, तुम आजकल ऐसा व्यवहार क्यों कर रही हो?"
"इस तरह से कहने का क्या मतलब है?"
"हाल ही में तुम्हारा व्यवहार तुम्हारी और मेरी प्रतिष्ठा के लिए ठीक नहीं है। बताओ तुममें क्या कमी है? हमारी विद्या की शादी हो गई है और वह एक अच्छे परिवार में गई है। विनय अगले साल अपना एम.बी.बी.एस. पूरा कर लेगा। हमें उसके लिए एक उपयुक्त लड़की ढूंढनी होगी।"
"हां; लेकिन आप मुझे यह बात बार-बार क्यों बताते हैं?"
"अपने हाल के व्यवहार पर आत्मनिरीक्षण करें।"
"मैं सब कुछ समझता हूँ। तुम्हारा स्वभाव ही शंकालु हो गया है। तुम्हें मेरा लोगों से खुलकर बात करने का तरीका पसंद नहीं है।

तुम्हें खुद को थोड़ा देखना सीखना चाहिए। तुम इस बात पर झूठा घमंड करते हो कि जिला न्यायाधीश बनने के कारण तुम सब कुछ जानते हो।"
"ऐसा हो सकता है। लेकिन शारदा, क्या तुम्हें एहसास है कि गाँव में तुम्हारे व्यवहार का मज़ाक उड़ाया जा रहा है? ज़िला न्यायाधीश होने के नाते, मुझे ऐसी बातें कोई नहीं बताता। लेकिन मैं इतना समझदार ज़रूर हूँ कि अपने आस-पास के लोगों की बातें समझ सकूँ। अभी तुम्हारी उम्र इतनी नहीं है कि तुम वो कर सको जिसमें तुम्हारी दिलचस्पी है। इस पल में सब कुछ समझ लो।"
"ठीक है, ठीक है! मैं समझ गया! लोग जो कह रहे हैं, वह मेरे व्यवहार की वजह से बिल्कुल नहीं है। वे तुम्हारी कमज़ोर मानसिकता पर हंस रहे हैं, वे तुम्हारे संशयपूर्ण रवैये का मज़ाक उड़ा रहे हैं।"
"उस दिन शरद ने मुझ पर शक करने का आरोप लगाया।"
उसके बाद एक हफ्ता बीत गया। दरबार में दाऊद नाम का एक पट्टेवाला था। सुनहरे बालों वाला, लाल बालों वाला, काली आँखों वाला दाऊद किसी यूरोपीय सैनिक जैसा दिखता था। वह बंगले में चिट्ठियाँ लाता था, लेकिन मैं उसे बाहर भेज देता था।
"उस दिन अदालत में एक बड़ा सनसनीखेज मामला चल रहा था। मैं 11:30 बजे अदालत में पहुंचा। चूंकि दाऊद, जो गवाहों को बुला रहा था, अदालत में मौजूद नहीं था, इसलिए मैंने पीठासीन न्यायाधीश से पूछा,
"डेविड आज दिखाई नहीं दे रहा है?"
"आज वह छुट्टी पर हैं, महोदय।"
‘‘सी. ओ. सीं. ना बोलवा.’’

"सी.ओ.सी. आए और उन्होंने मुझे दाऊद का एक दिन की छोटी छुट्टी का आवेदन दिखाया।"
मैंने काम शुरू किया; लेकिन कौन जानता है, मेरा मन बहुत बेचैन था। गवाहों के बयान लिखवाते समय मुझसे गलतियाँ होने लगीं। दीवार घड़ी में दो बज गए, इसलिए मैंने काम बंद कर दिया और उठ गया। मैंने कार ली और बंगले के लिए निकल पड़ा। लेकिन कार को बंगले के अंदर ले जाने के बजाय, मैंने उसे बाहर सड़क पर पार्क कर दिया। कंपाउंड से मैं शारदा के कमरे के पास गया और झपकी ले ली। उसका कमरा बंद था। अंदर, शारदा दाऊद से धीमी आवाज़ में बात कर रही थी। मैं अपने कमरे में गया। मैंने अलमारी से रिवॉल्वर निकाली और वापस शारदा के कमरे में जाकर दरवाजा खटखटाया। शारदा ने मन ही मन पूछा,
"कौन है भाई?"
"मैं! दरवाजा खोलो!" मैंने गुस्से से कहा।
"शारदा जानती थी कि अगर मैं रात ग्यारह बजे दरबार जाता, तो वह शाम छह बजे तक नहीं लौटती। कई सालों से यही नियम चला आ रहा था। मुझे इतनी जल्दी आते देख वह समझ नहीं पा रही थी कि क्या करे। लेकिन मैं जानता था कि वह क्या करेगी। मुझे पूरा यकीन था कि वह बरामदे का दरवाजा खोलकर दाऊद को बाहर फेंक देगी। इसलिए मैं बरामदे के दरवाजे की ओर भागा और रुक गया।"
"मैंने दाऊद को ठीक उसी समय गोली मार दी जब वह दरवाजे से बाहर भागने ही वाला था। वह 'या अल्लाह' कहते हुए गिर पड़ा।" शारदा वहीं खड़ी चीख रही थी, उसने अपने कान हाथों से ढके हुए थे। अगले ही पल, वह भी मेरी एक और गोली का निशाना बन गई।"
मैंने दो हत्याएं कीं, पूरी सोच-समझकर। मैंने हत्या की सज़ा जानते हुए भी दो हत्याएं कीं! लेकिन मुझे इसका कोई अफ़सोस नहीं

है। मुझे नहीं लगता कि मैंने कुछ गलत किया है। मुझे पता था कि मुझे अपने कर्मों की सज़ा मिलेगी। अब सवाल यह है कि मुझे क्या सज़ा दी जाए। इस संबंध में मेरी न्यायाधीश से एक निवेदन है। यह सज़ा बहुत हल्की नहीं होनी चाहिए। क्योंकि अगर मैं एक-दो साल में जेल से बाहर आ गया, तो लोग मुझे देखते ही मेरे बारे में बात करते रहेंगे, क्योंकि इस मामले की पृष्ठभूमि अभी ताज़ा है। यह सज़ा लंबी भी नहीं होनी चाहिए; क्योंकि मैंने ऐसा कोई अपराध नहीं किया है जिसके लिए लंबी सज़ा दी जाए। मेरा बस यही निवेदन है कि यह सज़ा पांच से सात साल की हो। मैं उसके बाद अपने पोते- पोतियों के साथ जीना चाहता हूँ।
अदालत में फैसला सुनने के लिए जमा हुए लोगों को लगा कि न्यायाधीश को मोहनराव को बरी कर देना चाहिए। न्यायाधीश भी अपने पूर्व सहकर्मी को कड़ी सजा देने के लिए दृढ़ थे। उन्होंने मोहनराव दिवेकर को छह साल की कैद की सजा सुनाई।
उस अवधि के पांच से साढ़े पांच साल बीत चुके थे। इसके बाद मोहनराव की सजा समाप्त होने वाली थी। विनय और विद्या साल में एक बार उनसे जेल में मिलने जाते थे। जेलर देसाई ने मोहनराव को पैरोल पर रिहा करने की सिफारिश की थी, लेकिन मोहनराव ने स्वयं यह रियायत स्वीकार नहीं की थी।
जेलर कभी नहीं चाहता था कि मोहनराव कोई शारीरिक श्रम करे। इसके विपरीत, जेलर देसाई ने कानून और नियमों की अवहेलना करते हुए भी उसे भोजन और सोने के लिए बिस्तर मुहैया कराया था। अन्य कैदियों ने इस पर कभी कोई शिकायत नहीं की। बल्कि, अन्य कैदी खुशी-खुशी मोहनराव के कपड़े धोने और बिस्तर लगाने जैसे छोटे-मोटे काम करते थे।

मित्र उमाजी रावराने, सेवानिवृत्त सी.आई.डी., डी.आई.जी. को पत्र लिखना शुरू किया।
चित्रदुर्ग जेल
21 दिसंबर, 1975।
प्रिय उमाजीराव-
सप्रेम नमस्कार,
मुझे कुमारी संध्या की शादी का निमंत्रण मिला था। मैं चाहता तो था, लेकिन शादी में नहीं जा सका। मुझे कुछ समय जेल में बिताना पड़ेगा। लेकिन मुझे आज भी आपके साथ बिताए सुखद पल याद हैं। हमारी दोस्ती कितनी आसानी से पनप गई! जब मैं सहायक न्यायाधीश के पद पर नियुक्ति के लिए अकोला आया, तब हमारी मुलाकात हुई। जान-पहचान दोस्ती में बदल गई। लगभग उसी समय कुमारी संध्या का जन्म हुआ। उसके बाद आपका तबादला भी उसी जिले में हो गया जहाँ मेरा हुआ था। अगर आप इस नज़रिए से देखें, तो आप पुलिस अधिकारी हैं और मैं न्यायाधीश। हमारे पेशे बिल्कुल अलग हैं। फिर भी, हमारी घनिष्ठ मित्रता में कभी कोई दरार नहीं आई। आपका पदोन्नति हुआ और आप इंस्पेक्टर, फिर जिला न्यायाधीश बने और वर्धा में कुछ समय तक डीएसपी के रूप में काम करने के बाद, आप सी.आई.डी., डी.आई.जी. के पद से सेवानिवृत्त हुए। मैं भी लगभग उसी समय जिला न्यायाधीश बन गया था। मेरी नियुक्ति जल्द ही होने वाली थी। लेकिन मेरे साथ वह भयानक घटना घट गई। मैंने अपनी दुर्व्यवहार करने वाली पत्नी और किराएदार की हत्या कर दी। आप एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी होने के बावजूद मेरी मदद के लिए आगे आए। लेकिन मैंने अपना केस न लड़ने का फैसला कर लिया था। एक हिंसक पत्नी के पति के रूप में, मैं चैन से नहीं जीना चाहता था। इसीलिए मैंने केस नहीं लड़ा। वरना, मैं 'गंभीर अपराध और उकसावे' का बचाव करके एक साल या छह महीने के

भीतर ही जेल से बाहर आ जाता। लेकिन मैंने जानबूझकर जेल में ज़्यादा समय बिताया। एक तरह से यह अच्छा ही हुआ। मुझे जेल में आत्मचिंतन करने का बहुत मौका मिला। मैंने बहुत कुछ पढ़ा भी। यहाँ के जेलर देसाई मुझे पिता समान मानते हैं। मेरी इच्छा के विरुद्ध भी वे मुझे कोई शारीरिक काम नहीं करने देते। देसाई की बात तो छोड़िए, यहाँ के कैदी भी मुझे राष्ट्रीय नेता की तरह मानते हैं। छह महीने पहले, एक युवक को आजीवन कारावास की सजा काटने के लिए चित्रदुर्ग जेल में भर्ती कराया गया। उसका नाम सीताराम है, लेकिन सब उसे सीतू के नाम से जानते हैं। इस सीतू पर नारायणन नाम के एक मैनेजर की हत्या का आरोप था! उसे दोषी ठहराया गया और आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई। यह लड़का बहुत लालची है। वह लगातार रोता रहता है। मैंने कई बार उनसे विश्वास में लेकर कहा, "अगर आप कानून तोड़ते हैं, अगर आप अपराध करते हैं, तो आपको सज़ा मिलेगी। मैं न्यायाधीश होते हुए भी सज़ा क्यों नहीं पाता?" इस पर वे कहते हैं, "मैं अपराधी नहीं हूँ। मैंने नारायणन की हत्या नहीं की। मैं निर्दोष हूँ।"
मुझे भी हाल ही में लगने लगा है कि उसकी बातों में कुछ सच्चाई जरूर है, लेकिन चित्रदुर्ग के बाहरी इलाके में स्थित इस सुरक्षा घेरे में मौजूद जंजीरा जेल में, मैं सीतू के मामले में सच और झूठ को समझ नहीं पाऊंगा। इसलिए, मैं जानता हूं कि मैं यह जिम्मेदारी आपको सौंप रहा हूं। क्योंकि इस मामले की जांच के लिए आपको निंबरदी गांव जाकर रहना होगा। नारायणन का पैतृक गांव एर्नाकुलम है। आपको वहां भी जाना होगा। सीतू के माता-पिता कौन थे, वे फादर मैथ्यूज-मथुकाका कौन हैं जिनका नाम वह बार-बार लेता है, वे सज्जन कौन हैं जो वहां मौजूद हैं। आप सोच रहे होंगे कि दिवेकर साहब को यह सब करने के लिए किसने कहा? लेकिन सच कहूं तो,

उस लड़के ने मुझे बहुत दुख पहुंचाया है। उसकी प्रेमिका सुबी थी। वह कहता है कि उसने उससे शादी की थी। मुझे लगता है कि उसके मामले की जटिलता सुबी वाले मामले से ही पैदा हुई होगी। आप अब सेवानिवृत्त हो चुके हैं, इसलिए समय का सवाल ही नहीं उठता। इसमें कोई शक नहीं कि चार पैसे का खर्च आएगा। लेकिन अगर मैं कहूँ कि मैं आपको पैसे की भरपाई कर दूँगा, तो आपको यह भी पसंद नहीं आएगा। आप कहेंगे, 'क्या मैं दोस्ती के लिए इतना भी नहीं कर सकता?' क्या यह सच नहीं है?
तो कृपया, हम जल्द से जल्द निंबार्डी गांव चलें।
निंबार्डी में रहने की कोई व्यवस्था नहीं होगी। आपको तित्था में बाशा मामा के होटल में ठहरना होगा, जो निंबार्डी से तीन मील दूर है। वहाँ ठहरकर आप प्रतिदिन निंबार्डी में सैर कर सकेंगे। दूरी बहुत कम है। मैं आपसे एक बार फिर निंबार्डी जाने का अनुरोध करती हूँ। श्रीमती बहिनी, क्रमांक
आपका,
मोहनराव।
उमाजीराव रावराना ने पत्र पढ़ा और फिर जब उनकी पत्नी ने पढ़ने के लिए कहा, तो उन्होंने वह पत्र उन्हें पढ़ने के लिए दे दिया। "क्या तुम सचमुच जा रहे हो?"
"तुम्हारा क्या मतलब है? मैं जाऊँगा! यह मोहनराव का अनुरोध है।
मुझे जानना ही होगा।"
उमाजीराव रावराना अपना बैग पैक करने लगे।
०००

दो
चित्रदुर्ग से पचास मील की दूरी पर, ठीक समुद्र तट पर स्थित था निंबराडी—सीतू सारंगा का गाँव। यह गाँव दो छोटी-छोटी बस्तियों से मिलकर बना था, जिन्हें एक पहाड़ी अलग करती थी; और उसी पहाड़ी पर एक चर्च बना हुआ था। यहाँ भी, समुद्र तट से ऊपर उठती हुई, लगभग एक-दो सौ फुट ऊँची एक चट्टान थी। और इसी चट्टान की चोटी पर, वर्ष 1875 में, अंग्रेजों ने एक चर्च बनवाया था। इस चर्च को बनवाने का एकमात्र उद्देश्य निंबराडी के मछुआरों और भंडारियों को ईसाई धर्म में दीक्षित करना था—एक ऐसा अभियान जिसे कुछ हद तक सफलता भी मिली थी, क्योंकि निंबराडी के कई निवासियों ने वास्तव में ईसाई धर्म अपना लिया था। हालाँकि, देश की आज़ादी मिलने के साथ ही, इस चर्च का महत्व धीरे-धीरे कम होता गया। फिर भी—यह बात ध्यान देने योग्य है—लगभग पच्चीस से तीस श्रद्धालु ईसाई हर रविवार की सुबह प्रार्थना के लिए इस चर्च में इकट्ठा होते थे। पिछले तीस वर्षों से, फ़ादर मैथ्यूज़ वहीं निवास कर रहे थे और वहाँ के स्थायी पादरी के रूप में सेवा दे रहे थे। चर्च स्वयं तो पुराना था, फिर भी उसका निर्माण इतनी बेहतरीन गुणवत्ता का था कि कोई भी व्यक्ति—भले ही उसे बताया भी जाता—यह विश्वास नहीं कर पाता कि यह इमारत एक सदी पुरानी है। प्रार्थना-कक्ष इतना विशाल था कि उसमें एक ही समय में एक या दो सौ लोगों की मंडली आसानी से समा सकती थी। कक्ष के भीतर, पूरब की ओर मुख किए हुए, सूली पर चढ़े ईसा मसीह की एक भव्य और पूर्णतः सुडौल संगमरमर की प्रतिमा

स्थापित थी—यह एक ऐसी अत्यंत सुंदर शिल्पकृति थी कि यदि कोई हिंदू या मुसलमान भी चर्च के प्रवेश-द्वार से भीतर केवल एक नज़र डाल लेता, तो उसके हाथ स्वतः ही श्रद्धापूर्वक जुड़ जाते। वास्तव में, एक ऐसी विशेष घटना पहले ही घट चुकी थी, जिसने निंबराडी क्षेत्र के हिंदुओं और मुसलमानों के मन में भी इस चर्च के प्रति आस्था का भाव जगा दिया था। जहाँ एक ओर निंबराडी में नारियल और सुपारी के वृक्ष खूब फलते-फूलते थे, और समुद्र तट से हर प्रकार की मछलियाँ प्रचुर मात्रा में प्राप्त होती थीं, वहीं दूसरी ओर गाँव में पीने के पानी की भारी किल्लत थी। ताज़े पानी की आपूर्ति के लिए, गाँव वालों को पूरब की ओर आधा मील पैदल चलकर जाना पड़ता था—ठीक उसी स्थान पर, जहाँ से निंबराडी नदी का उद्गम होता था। यह विचार—"केवल पानी लाने के लिए हमें और कितने वर्षों तक यह कठिन सफ़र तय करना पड़ेगा?"—हर किसी के मन पर भारी पड़ रहा था। फिर भी, उन्हें इसका कोई समाधान सूझ नहीं रहा था। पैंतीस साल पहले, फ़ादर एंड्रूज़ स्टीफ़न—जो चर्च के पीछे रहते थे—ने एक योजना पेश की थी: चर्च के सामने स्थित पहाड़ी पर पानी पहुँचाने के लिए, वहाँ से आधा से तीन-चौथाई मील की दूरी पर एक तेल का इंजन लगाया जाए, और उस पहाड़ी की चोटी पर एक पानी की टंकी बनाई जाए। इस उद्देश्य के लिए, उन्होंने अमेरिकन चर्च काउंसिल के साथ पत्राचार भी शुरू कर दिया था। ऐसे संकेत मिलने लगे थे कि यह परियोजना आखिरकार आकार ले रही है। हालाँकि, ठीक उसी समय, फ़ादर एंड्रूज़ स्टीफ़न का निधन हो गया। उनके बाद रेवरेंड मैथ्यूज़ ने उनका स्थान लिया। रेवरेंड मैथ्यूज़ ने भी इस परियोजना को पूरा करने का भरसक प्रयास किया। फिर भी, भारत में ब्रिटिश शासन समाप्त होने के बाद, चर्च काउंसिल ने स्थानीय नागरिकों के कल्याण और सुविधाओं को सुनिश्चित करने के प्रति

कोई भी प्रतिबद्धता दिखाने में हिचकिचाहट दिखाना शुरू कर दिया। इसके बावजूद, रेवरेंड फ़ादर मैथ्यूज़—जिन्हें निंबार्डी के लोग प्यार से 'माथुकाका' कहकर बुलाते थे—ने हिम्मत नहीं हारी।

उनका मानना था, "ईश्वर बहुत महान है। उन्होंने ही प्यास पैदा की है, वे ही पानी भी देंगे!"
मई का महीना आ गया। निंबरदी नदी का उद्गम स्थल सूख गया। ग्रामीणों को पीने के लिए पर्याप्त पानी तक नहीं मिल रहा था। गाँव में अफरा-तफरी मच गई। चर्च के दाएं और बाएं दोनों ओर के लोग इकट्ठा होकर मथुकाका के पास आए। मथुकाका ने उनकी शिकायतें सुनीं और कहा,
“मैं आप सबके बीच मनुष्य को देखता हूँ, चाहे आप किसी भी जाति या धर्म के हों। हम सब ईश्वर की संतान हैं। स्वर्ग का स्वामी अत्यंत दयालु है। उसने समस्त मानव जाति के उद्धार के लिए अपने इकलौते पुत्र यीशु को पृथ्वी पर भेजा। दुर्भाग्यवश, मनुष्य उसे पहचान नहीं सका। उसकी हत्या कर दी गई। परन्तु यदि वह पृथ्वी, जो उसके स्पर्श से पवित्र हुई है, और उस पर रहने वाले लोग उसे हृदय से याद रखें, तो इस संसार में कोई दुःख नहीं रहेगा। हमें जल की आवश्यकता है। जो हमें भोजन देता है, उसे भोजन कराना हमारा कर्तव्य है। जो हमें प्यासा करता है, उसे जल पिलाना हमारा अधिकार है। परन्तु हम सबको उसके लिए हृदय से प्रार्थना करनी चाहिए। प्रार्थना में अपार शक्ति है।” मथुकाका इसी संदर्भ में एक वाक्य कहा करते थे। उस दिन बहुत से लोग उसे समझ नहीं पाए। इसलिए उन्होंने उस वाक्य का अंग्रेजी में पुनः अनुवाद किया।

“प्रार्थना में अपार शक्ति है। प्रार्थना क्या नहीं कर सकती? इसलिए, भाइयों, आइए आज हम हृदय से प्रार्थना करें।”
निंबरदी से सौ-चार सौ लोग गिरजाघर के सामने प्रांगण में हाथ जोड़कर खड़े थे। मथुकाका प्रार्थना का नेतृत्व कर रहे थे और सभी पुरुष-महिलाएं एक साथ प्रार्थना कर रहे थे। प्रार्थना की ध्वनि पूरे गांव में गूंज रही थी। प्रार्थना के बाद सभी अपने- अपने घरों को लौट गए। शाम हो गई। हवा की गर्मी कम हो गई। तूफानी हवा थम गई। अचानक, आकाश में बादल काले और नीले हो गए। हल्की हवा चलने लगी। अनगिनत नारियल और पपीते के पेड़ उखड़कर गिर पड़े। आकाश में बिजली चमकने लगी। गिरजाघर के पास से तोप जैसी तेज आवाज सुनाई दी। लोगों को लगा कि बिजली गिरी है और गिरजाघर नष्ट हो गया है। लेकिन बाहर अंधेरे में कौन यह देखने की हिम्मत करता कि उनका संदेह सही है या गलत? भारी बारिश हो रही थी। पपीते के पेड़ गिर रहे थे। नारियल के खोल टूटकर गिर रहे थे। बिजली का तांडव जारी रहा। यह सिलसिला रात दस बजे तक चलता रहा। दस बजे के बाद सब शांत हो गया। कुछ लोगों की झोपड़ियां नष्ट हो गईं, जबकि दूसरों के नारियल के बाग पूरी तरह से नष्ट हो गए। किनारे पर पड़ी नावें नारियल के छिलकों की तरह बिखरी पड़ी थीं। खैर, बारिश का दिन था। मछुआरे मछली पकड़ने समुद्र में नहीं गए थे। अगर वे गए होते, तो... वह भयानक रात बीत गई। पूरब उजाला था। निंबरदी गांव के लोग अपने नुकसान का सामना करने ही वाले थे कि तभी निंगू दादली जोर-जोर से चिल्लाता हुआ आया।
"मथुका का! मथुका का!"
"अरे, मथुकाका को क्या हुआ?" उनमें से एक ने पूछा।
"मथुकाका बुला रहा है।"

"तुम क्यों फोन कर रहे हो? हमने कल प्रार्थना की थी और यह हमारा नुकसान है! हम उसका चेहरा नहीं देख पाएंगे!" भंडारी और गैबित इस नुकसान से बहुत गुस्से में थे।
फिर एक और व्यक्ति चिल्लाता हुआ आया।
‘‘यीशु आ गए हैं। यही जल की शक्ति है!’’
उसने अपने दोनों हाथ फैलाए और चिल्लाने लगा। सभी ग्रामीण गिरजाघर की पहाड़ी पर इकट्ठा हो गए। गिरजाघर के पास बिजली गिरी थी। वहाँ बांध टूट गया था। दरार से पानी की एक धारा बहती हुई दिखाई दी। लोगों ने उसे चखा। झरने के पानी की तरह मीठा!
सभी लोग गिरजाघर के सामने जमा हो गए। मथुकाका यीशु की मूर्ति के सामने घुटने टेककर प्रार्थना कर रहा था।
हे प्रभु! आप कितने दयालु हैं! इस क्षेत्र के लोग प्यासे थे और पानी के लिए तरसे हुए थे... आपने उनकी प्यास बुझाई। हे प्रभु! आप कितने दयालु हैं!
मथुकाका प्रार्थना कर रहे थे। उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे। उनकी आँखों में आँसू देखकर वहाँ जमा हुए लोगों ने भी अपने आँसू पोंछ लिए। निंबरदी के गिरजाघर की महानता उनके होश में आ गई थी। अब तक उन्होंने दुंदई देवी से अनगिनत मन्नतें और प्रार्थनाएँ की थीं। दुंदई ने कई बार अपना दाहिना हाथ भी दिया था, लेकिन उन्होंने ऐसा चमत्कार पहले कभी नहीं दिखाया था।
रात के तूफान ने भारी तबाही मचाई थी, लेकिन अब ग्रामीणों को इसकी परवाह नहीं थी। व्यापारियों ने शराब बनाने के कारखाने लगा दिए। ग्रामीणों ने मुर्गियां और बकरियां काटीं। निंबरदी में खुशी का माहौल था।
गिरजाघर के पीछे मथुकाका का घर था। मथुकाका भी आज ग्रामीणों की खुशी में शामिल था। हालांकि, उसने शराब नहीं पी। मछुआरे,

भंडारी, दादली और ईसाई सभी हाथ पकड़कर नाच रहे थे। गिरजाघर की पहाड़ी से बहता जीवनदायी जल आज हर घर तक पहुँच गया था। निंबरदी की झोपड़ियों से टपकते मटन की खुशबू हवा में फैल रही थी। मथुकाका ने नाचते हुए लोगों को शांत किया और कहा, "भाइयों, हमने पूरे मन से प्रार्थना की और प्रभु ने उसे स्वीकार किया। हमें जल मिला; परन्तु अब से हम सबको प्रभु को कभी न भूलें। प्रभु के चरणों से बहने वाला यह जल पवित्र है। जो इसे पीता है, उसके हृदय में कभी कोई पाप न रहे। किसी की निंदा न करे, किसी की भी नहीं..." निंबरदी के लोग इतने प्रसन्न थे कि वे मथुकाका की बातें सुनने को सहन नहीं कर पा रहे थे।
रासु सारंग नाच-गाने में शामिल नहीं हुए थे! उनकी पत्नी पाडी प्रसव पीड़ा से तड़प रही थीं। उनकी झोपड़ी में दो-तीन औरतें उन्हें दिलासा दे रही थीं। लेकिन झोपड़ी के दरवाजे पर बैठे रासु सारंग, पाडी के कराहने और रोने की आवाज सुनकर बेचैन हो गए। जब उन्हें कुछ समझ नहीं आया, तो उन्हें पहाड़ी पर स्थित गिरजाघर में यीशु बप्पा याद आए। यीशु ने गांव वालों की पानी की प्रार्थना सुनी थी, लेकिन रासु की प्रार्थना नहीं सुनी। पाडी का कराहना और रोना जारी रहा। आखिरकार, वे उठे और गांव के बीचोंबीच आए जहां उत्सव चल रहा था। जिंग्या डाल्डी हाथ में शराब का गिलास लिए खड़ा था। उन्होंने उसके हाथ से गिलास छीनकर अपने मुंह में डाल लिया। उसके बाद उन्हें कुछ समझ नहीं आया कि क्या हुआ।
जब रासु सुबह उठा तो वह अपनी झोपड़ी के बाहर लेटा हुआ था। एक छोटे बच्चे के रोने की आवाज सुनकर वह अचानक उठ खड़ा हुआ।
सीतु का जन्म इसी तरह हुआ! अगर इस नज़रिए से देखें तो पाडी के जीवन में अभी एक महीना बाकी था। लेकिन उस दिन भयंकर तूफान और

गरज के कारण पाडी डर गईं और समय से पहले ही सीतु को जन्म दे दिया। गरज के बीच जन्मा सीतु जन्म के समय बहुत दुबला-पतला और कमज़ोर दिख रहा था। वह रसु सारंग का पहला और आखिरी बच्चा साबित हुआ! सीतु के जन्म के बाद पाडी की कोई संतान नहीं हुई।
सीतू के पिता का नाम रसु सारंग गबित था। पाँच वर्ष की आयु में वह पहली बार अपने पिता के साथ नदी पर गया और फिर लगातार वहाँ जाता रहा। पंद्रह वर्ष की आयु में वह एक कुशल नाविक बन गया। कभी-कभी वह अपनी छोटी नाव लेकर दो-तीन मील अंदर तक चला जाता था। उसे भय का कोई ज्ञान नहीं था। हवा चाहे कितनी भी विपरीत दिशा में क्यों न हो, वह नाव चलाता और ठीक उसी स्थान पर पहुँच जाता जहाँ उसे जाना था। विशाल सागर में सटीक स्थान याद रखना लगभग असंभव था; लेकिन इस रसु सारंग के पास ही यह ज्ञान भी जन्म लेता था। बड़ों को उससे सीखना चाहिए कि सुरमई कहाँ फूँकनी है, सारंगा कहाँ पकड़नी है, रावा कैसे पकड़नी है! निंबरदी के मछुआरे कभी-कभी हाथ हिलाते हुए लौट आते थे। लेकिन किसी को याद नहीं था कि रसु सारंग कभी खाली हाथ लौटा हो!
सीतू पाँच साल का हो गया। रासु उसे पहली बार नदी पर ले गया। सीतू अपनी असाधारण रूप से चमकदार आँखों से अपने पिता की सूक्ष्म गतिविधियों को देख रहा था। जब रासु ने मछली पकड़ने के लिए जाल बिछाना शुरू किया, तो सीतू ने अपना कांटा पानी में गिरा दिया। रासु ने मुस्कुराते हुए उससे कहा,
"तुमने क्या पकड़ रखा है?"
"मछली!"
तुमने अपने गले में क्या पहना है?
"कुछ नहीं!"
"अरे मूर्ख, मछली उस गले को कैसे खा सकती है?"

लेकिन तभी एक आश्चर्यजनक घटना घटी। उसके नंगे गले में एक माला लटकी हुई थी। सीता ने उसे ऊपर खींचा और वह खुशी से चिल्ला उठा। "देखो! क्या तुमने इसे बिना कुछ पहने ही हासिल कर लिया?"
रासु ने अपने हाथ में पकड़ा जाल एक तरफ रख दिया और आगे बढ़ा। उसने सीतू के गले में फंसी रस्सी खोली और उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा,
‘‘वाऽऽऽ पठ्ठे! बाप से बेटा सवाई होणार!’’
बाद में सीतू दस साल की हो गई।
अब वह नाव में बैठकर तट के किनारे-किनारे यात्रा करने लगा। कभी वह सारंगा लेकर घर आता तो कभी सुरमई लेकर। लेकिन जब तक वह लौटता, पाडी की मृत्यु हो चुकी होती थी।
इस समय, सीटू और मथुकाका दोस्त बन गए। जब भी सीतू को कोई अच्छा सारंगा मिलता, तो वह उसे पहाड़ी पर मथुकाका के पास ले जाती। मथुकाका मुस्कुराकर उससे इसे ले लेते। जब मथुकाका ने पहली बार सीतु को मछली के लिए पैसे दिए, तो सीतू ने कहा,
"चाचा जी, मैं कोई पैसा नहीं लूंगा।"
‘‘का रे?’’
मेरी मां कहती हैं, 'तुम भगवान हो!'
मथुकाका ने सिर हिलाकर नकारात्मक भाव व्यक्त करते हुए कहा, "नहीं, मैं भी तुम्हारी तरह एक इंसान हूँ, मेरे हाथ, पैर, नाक और आँखें हैं! इस दुनिया में केवल एक ही ईश्वर-पुरुष हुआ है-" उन्होंने यीशु की संगमरमर की मूर्ति की ओर इशारा करते हुए कहा, "उसे देखो, वह ईश्वर-पुरुष!"
सीतु यीशु की मूर्ति को देखते हुए हाथ जोड़कर खड़ा था। मथुकाका उसे गिरजाघर के पीछे अपने स्थान पर ले गया और मछली साफ करते हुए उसने सीतु से पूछा,

"क्या रसु आज नदी पर गया था या नहीं?"
मैं शाम को जाऊंगा।
"तो ऐसा करो, मैं तुम्हें कुछ दूंगा, उसे उसके पास ले जाओ।"
यह कहते हुए, उसने साफ की हुई मछली को टोकरी में रख दिया और मथुकाका द्वारा थाली में रखे गए गाढ़े, चबाने वाले पदार्थ को चाकू से काटकर कागज में लपेट दिया और सीतु को देते हुए कहा,
"यह पनीर है। रासु को यह बहुत पसंद है। यह मुझे कल शाम मिला था।" कागज में लिपटे पनीर की गंध सूंघते हुए सितु ने कहा,
“आप क्या कर रहे हैं, चाचा? यहाँ इतनी गंदी बदबू क्यों आ रही है?”
"अरे, यह गंदा नहीं है, यह दूध से बना है। गोरे लोग इसे बड़े चाव से खाते हैं। आप भी इसे चख कर देखिए।"
नहीं नहीं! मुझे नमकीन मछली बिल्कुल पसंद नहीं है!
मथुकाका ने अपना हाथ अपनी पीठ पर रखा और कहा,
"क्या तुम्हें मछली पसंद नहीं है? अरे, तुम तो बड़े बेवकूफ हो, तुम्हें मछली पसंद नहीं है, ये सुनकर लोग हंसेंगे।"
‘‘मैं ताजा मांस नहीं खाता। उसे नमकीन खाना पसंद नहीं है।’’ "अच्छा, मैं इसे रसू को स्मृति चिन्ह के रूप में दे देता हूँ। उसे यह बहुत पसंद है। पहले मैंने उसे यहाँ चावल के साथ खाने के लिए दिया था, लेकिन उसने चावल को छुआ तक नहीं।"
सीतु और मथुकाका के बीच अच्छा रिश्ता बन गया था। जब भी कोई काम नहीं होता था, सीतु सीधे पहाड़ी पर आकर मथुकाका से बातें करती थी।
मथुकाका अपने हाथों से खाना बनाया करता था। खाना क्या है? एक मोटा पराठा और उबली हुई मछली; रात के खाने में मुट्ठी भर चावल ही काफी हैं!

रासु और मथुकाका कई वर्षों से मित्र थे। रासु एक प्रसिद्ध नाविक थे। वे एक-दो दिन पहले ही समुद्र में आने वाले तूफान का पूर्वानुमान लगा सकते थे। वे न केवल मछली पकड़कर अपना जीवन यापन करते थे, बल्कि यदि उन्हें किसी मालवाहक जहाज से लंबी यात्रा पर जाना होता, तो व्यापारी मार्गदर्शन के लिए रासु को अपने साथ ले जाते थे। रासु महीनों तक समुद्र में रहते थे। रासु मुंबई से गोवा तक के समुद्र से भली-भांति परिचित थे। कोई अन्य नाविक रासु की तरह यह नहीं जानता था कि चट्टानें कहाँ हैं, रात में लंगर कहाँ लगाना है। उन्हें इस काम के लिए अच्छा खासा भुगतान मिलता था। रासु एक महीने के लिए समुद्र में जाते और सौ- पाँच सौ रुपये लेकर लौटते। लेकिन उनके हाथ में हमेशा कैंची रहती थी। पैसा कभी उनके हाथ में नहीं रहता था। चाहे वे सौ कमाएँ या पाँच सौ, आठ-पंद्रह दिनों में उनकी जेब खाली हो जाती थी। मथुकाका ने उन्हें कई बार उनके खर्चीले स्वभाव के बारे में बताया था। सीतू के जन्म से पहले, रासु ने मजाक में उससे कहा था, "चाचा जी, जब मेरी जेब में पैसे होते हैं तो मुझे बहुत अच्छा लगता है! और जब मैं उन्हें खर्च करता हूँ तो भी अच्छा लगता है!" "लेकिन अगर आप अपने बुढ़ापे के लिए चार पैसे बचा लें तो क्या यह बुरा होगा?"
"बुढ़ापा?" रासु ने मुस्कुराते हुए कहा और अपना बायां हाथ अपने पेट पर रख लिया।
मैं समुद्र का आदमी हूँ! हर दिन मैं मौत के द्वार पर खड़ा रहता हूँ। मुझे बताओ, क्या तुम्हें इस बात का कोई भरोसा है कि मौत आएगी?
"तुम अभी चालीस साल के भी नहीं हुए हो, और अभी से मौत की बातें करने लगे हो?"

"चाचा जी, ऐसा मत सोचिए कि मैं मरने के लिए बेताब हूं, लेकिन मुझे यह बताइए कि मेरा काम खतरनाक क्यों है।"
"मैं यह कैसे कह सकता हूँ कि यह खतरनाक नहीं है? लेकिन यह दरिया तुम्हें कभी धमकी नहीं देगी - मुझे इस बात का पूरा यकीन है।" रासु फिर हंस पड़ी और बोली, "चाचा जी, मुझे तो बच्चा होने पर ही आजादी मिली।"
तो फिर क्या होगा?
"इसका मतलब है कि इस स्थिति का समर्थन किया जाएगा।"
"आपकी सोचने का तरीका थोड़ा अजीब है।"
मथुकाका रसु के प्रति बहुत लालची था। उसे इंग्लैंड और अमेरिका से कई उपहार मिलते थे। इनमें उत्तम वस्त्र, ऊनी स्वेटर, फेल्ट की टोपियाँ और यहाँ तक कि खाने-पीने की वस्तुएँ भी शामिल होती थीं। जब भी ऐसा कोई उपहार आता, मथुकाका सबसे पहले रसु को पुकारने दौड़ता था।
रासु कभी दूसरे मकड़ियों की तरह कपड़े नहीं पहनता था। वह हमेशा नीली और लाल धारीदार टाइट टी-शर्ट, ऊनी कॉरडरॉय पैंट और सिर पर फेल्ट पहनता था! जब कोई नया व्यक्ति रासु को देखता, तो उसे लगता कि वह गोवा का कोई बड़ा तस्कर या शेठ है!
रासु को कभी आर्थिक परेशानी नहीं हुई। उसने कभी किसी को धमकाया नहीं। जब जहाज पर काम नहीं होता था, तो वह अपनी नाव और जाल लेकर मछली पकड़ने जाने के लिए तैयार रहता था! वह किसी से भीख नहीं मांगता था और मथुकाका के अलावा किसी के साथ बैठता या खड़ा भी नहीं होता था। गाँव के लोग उसके विनम्र और तटस्थ स्वभाव के कारण उसका सम्मान करते थे।
उनकी एक ही चिंता थी - पाडी से शादी के आठ साल बाद भी उन्हें कोई संतान नहीं हुई थी। जब भी उन्हें निःसंतान होने का ख्याल आता,

वे शराब का सहारा लेकर उस विचार को भुलाने की कोशिश करते, लेकिन फिर भी वे शराबी नहीं थे। महीनों तक वे शराब की एक बूंद भी नहीं पीते थे। लेकिन जब पीना शुरू करते, तो दो-तीन दिन तक सुबह से शाम तक पीते रहते। खूब पीने के बाद वे रुक जाते, और जब प्यास लगती, तो फिर रुक जाते! कई लोगों को उनका यह व्यवहार समझ में नहीं आता था। निंबरदी में कुछ भंडारी, ईसाई और गैबिट समुदाय के लोग थे, जो दिन ढलने पर बेचैन हो जाते थे।
मथुकाका ने रासु को एक सुंदर घड़ी उपहार में दी। वह उसे कपड़े और टोपियाँ दिया करता था। लेकिन घड़ी देने के बाद रासु ने कहा, "चाचा जी, आप यह मुझे जैसे नाविक को क्यों दे रहे हैं?"
"अरे, तुम्हें अंदाज़ा भी नहीं है कि जब तुम घाटी में जाते हो तो बेचारी पाडी का क्या हाल होता है। इसलिए मैं तुम्हें यह घड़ी दे रही हूँ ताकि तुम्हें एक निश्चित समय पर लौटने का ध्यान रहे। जब तुम जाते हो और लौटने का समय होता है, तो वह यहाँ पहाड़ी पर आकर बैठ जाती है और दूर घाटी को निहारने लगती है। मुझे उस पर तरस आता है!"
"चाचा जी, कुछ तो कहिए - पत्नियों को अपने पतियों से इस तरह प्यार नहीं करना चाहिए!"
‘‘का?’’
"जब कोई ऐसा व्यक्ति जिसे आप बहुत प्यार करते थे, अचानक आपको छोड़कर चला जाता है, तो यह बहुत दुखद होता है।"
"मुझे समझ नहीं आ रहा, तुम इस तरह क्यों बोल रहे हो? हे भगवान! इसे बुद्धि प्रदान करो!" मथुकाका ने अपने गले में लटके क्रॉस को छूते हुए और रसु को अभद्र शब्द बोलने के लिए फटकारते हुए कहा। जब बच्चा पैदा नहीं हुआ था, तब रसु का व्यवहार अनियमित था। उसे लगा कि सीतु के जन्म के बाद यह बदल जाएगा। पर व्यर्थ! वही

फिजूलखर्ची, लापरवाह व्यवहार और अपनी जान की परवाह न करने का वही पुराना रवैया फिर से दिखने लगा! वह हर सुबह और शाम मथुकाका के घर जाया करता था। उन दोनों के बीच गहरी दोस्ती हो गई थी, जिसे देखकर निंबरदी गांव के लोग हैरान और अचंभित रह गए थे। कभी-कभी वह मथुकाका के घर ही खाना खाता था। मथुकाका एक धर्मगुरु थे और पाडी को इस बात का गर्व था कि उसकी सीतु ऐसे धर्मगुरु की संगति में रह रही है।
जब से सीतू अपने नाना-नानी के साथ रहने लगा था, उसके व्यवहार और बोलने के तरीके में बदलाव आ गया था। सरल अंग्रेजी किताबें पढ़ने के बाद, वह पाडी को 'मम्मी' और रसू को 'पापा' कहकर बुलाने लगा था, पहले 'माई' कहता था।
सीतु के जन्म के बाद, मथुकाका ने रसु का अनुसरण किया और उससे मजबूत लकड़ी का तीन कमरों वाला घर बनवाया। घर में एक मेज और कुर्सियाँ थीं। एक खिड़की में देवघर बनाया गया था। जब सीतु देवघर में श्री कृष्ण की तस्वीर के बगल में यीशु की तस्वीर लेकर आया, तो निंबरदी के कुछ बुजुर्ग कहने लगे, "रसु सारंगा का बेटा ईसाई बन जाएगा!"
०००

तीन
निंबार्डी गाँव का भौगोलिक बनावट कुछ अनोखा था। गाँव के ठीक बीच में एक चर्च खड़ा था। चर्च के उत्तर में चार कमरों की एक कतार थी, जो बाहरी कमरों (आउटहाउस) जैसी दिखती थी। ब्रिटिश राज के दौरान, कुछ साहसी गोरे यात्री अपने परिवारों के साथ इन बाहरी कमरों में आकर रुका करते थे। निंबार्डी की यह खास जगह बेहद खूबसूरत और नज़ारों से भरी थी। एक ऊँची जगह पर स्थित होने के कारण, यहाँ से दोनों तरफ दूर तक फैली समुद्र तट की एक विशाल और मनोरम झलक दिखाई देती थी। अपनी चमकीली पीली रेत वाले समुद्र तट, सामने दूर तक फैले गहरे नीले समुद्र, और किनारे के पीछे नारियल के पेड़ों के घने झुरमुट के साथ, यह जगह तीन शुद्ध रंगों—नीले, पीले और हरे—का एक बेदाग और अद्भुत नज़ारा पेश करती थी। जब समुद्र में ज्वार आता था, तो किनारे से टकराती लहरें पूरे समुद्र तट को पूरी तरह से डुबो देती थीं, और आगे बढ़कर कतार में खड़े नारियल के पेड़ों के तनों को छूने लगती थीं। निंबार्डी गाँव के दक्षिण में एक खाड़ी थी। खाड़ी का यह मुहाना ज़मीन के अंदर तक लगभग चार से साढ़े चार मील की दूरी तक फैला हुआ था। उत्तर की ओर से, इसी तरह का एक और घुमावदार मुहाना—जो लगभग डेढ़ मील लंबा था—इस दक्षिणी खाड़ी से आकर मिल जाता था। नतीजतन, जब ज्वार आता था, तो निंबार्डी गाँव के आस-पास का पूरा इलाका पूरब की ओर मुख्य ज़मीन से कटा हुआ दिखाई देता था, और एक छोटे से द्वीप जैसा लगता था। खाड़ी का रास्ता सिर्फ़ एक खास जगह पर आकर

काफ़ी संकरा हो जाता था। ज्वार के समय, बिना नाव की मदद के पूरब की ओर जाना नामुमकिन था। ठीक इसी सबसे संकरे हिस्से पर एक तार वाला झूला पुल बना हुआ था। इस पुल का इस्तेमाल करके एक बार में सिर्फ़ एक ही व्यक्ति खाड़ी पार कर सकता था। इस पुल से पूरब की ओर जाने वाला एक पगडंडी मुख्य उत्तर-दक्षिण सड़क से जुड़ता था, जो मुंबई और गोवा के बीच चलती थी। निंबार्डी की खाड़ी और समुद्र तट में तरह-तरह की मछलियाँ बहुतायत में पाई जाती थीं; हालाँकि, पकड़ी गई मछलियों को सड़क तक पहुँचाने के लिए, उन्हें सिर पर लादकर ढाई से तीन मील की दूरी तय करनी पड़ती थी। जिस जगह पर निंबार्डी-तीर्था पगडंडी मुख्य राजमार्ग से मिलती थी, उस जगह को ‘निंबार्डी-तीर्था’ के नाम से जाना जाता था। इस चौराहे पर चार या पाँच खाने-पीने की दुकानें थीं; उनमें से, बाशा मलबारी की दुकान खास तौर पर मशहूर थी। यह जंक्शन उन दलालों का भी एक केंद्र था, जो निंबराडी के स्थानीय कोली मछुआरों से थोक में मछलियाँ खरीदते थे और उन्हें ट्रकों के ज़रिए अंदरूनी इलाकों में भेजते थे। वहाँ 'रूसी' नाम के एक पारसी सज्जन द्वारा चलाई जाने वाली एक छोटी-सी बर्फ़ की फ़ैक्ट्री भी थी। मुंबई से गोवा जाने वाले ट्रक हमेशा इसी जंक्शन पर रात भर के लिए रुकते थे। चूँकि ट्रक रात में वहीं रुकते थे, इसलिए ड्राइवर अपनी ज़रूरत की लगभग हर चीज़ वहीं से हासिल कर सकते थे। निंबराडी का भंडारी समुदाय नारियल और काजू की 'फेनी' बनाने की कला का सच्चा माहिर था। उनकी 'फेनी' इतनी तेज़ होती थी कि कोई भी बोतल में उंगली डुबोकर, उस पर माचिस की तीली जलाकर, उसे आग पकड़ते हुए देख सकता था! बाशा मलबारी की जगह पर, 'चिकन' के व्यंजनों से लेकर 'सास अन्नाक' तक, सब कुछ मिलता था। अपने नाम के अनुरूप—जिसका अर्थ 'सम्राट' होता है—बाशा सचमुच एक 'बादशाह' थे। उनका रंग साँवला

था और वे गंजे थे, फिर भी उनकी मूँछें बेहद सफ़ेद थीं! उनके चेहरे पर हमेशा खुशी झलकती थी; किसी ने भी उन्हें कभी गुस्सा करते हुए या उदास चेहरे के साथ नहीं देखा था। बाशा आठ अलग-अलग भाषाओं में धाराप्रवाह बात कर सकते थे।
बाशा के होटल के पीछे एक चादर की झोपड़ी थी। इस झोपड़ी में सात-आठ दक्षिणी वेश्याएं थीं, जिन्होंने नाक में चमकीले गहने लगा रखे थे।
मलाबारी में इस होटल के बगल में एक पान की दुकान थी। पान, तंबाकू और सिगरेट के साथ-साथ, यह पान की दुकान एक और काम भी करती थी - गांजा!
निंबरदी का यह चौराहा हमेशा व्यस्त रहता था। यहां तक कि राजमार्ग से गुजरने वाले निजी वाहन भी ईंधन भरवाने के लिए थोड़ी देर रुकते थे। भीकुशेठ ने चार साल पहले यहां पेट्रोल पंप खोला था, उन्हें इस बात का संदेह था कि यह चलेगा या नहीं। उनकी जगह इतनी अच्छी थी कि उन्होंने दो साल पहले पंप के पीछे मंगलौरी कौला शैली का दो मंजिला मकान बनवा लिया था। बाशा मालबारा ने यात्रियों की असुविधा को दूर करने के लिए एक छोटा सा स्टॉल लगा रखा था, जिसमें यात्रियों के लिए आवश्यक वस्तुएं बेची जाती थीं। इस स्टॉल में रुमाल से लेकर बच्चों को दूध पिलाने के लिए रबर के निप्पल तक सब कुछ उपलब्ध था।
निंबार्डी के तीर्थस्थल पर एक-दो घंटे खड़े रहने से भी आपको आनंद मिलेगा। मुंबई और गोवा से निजी कारों में आने वाले युवा जोड़े भी अगर थोड़ी देर के लिए उतरते, तो एक-दूसरे की कमर में हाथ डालकर घूमते! निंबार्डी के कोल्या और भंडारा समुदाय के लोग तीर्थस्थल पर जाना पसंद करते थे। लेकिन तीर्थस्थल इतना लुभावना था कि जेब में चार-दो रुपये भी हों, तो समझ नहीं आता था

कि खर्च कैसे करें! फिर भी, निंबार्डी के चंडीफांडी समुदाय के लोग सप्ताह में कम से कम एक-दो बार तीर्थस्थल पर जाए बिना चैन से नहीं बैठ सकते थे।
मथुकाका को तिथि जाना पसंद नहीं था। मथुकाका पिछले तीस वर्षों से निंबार्डी में रह रहा था, लेकिन बिना किसी कारण के वह कभी तिथि नहीं गया था। हालांकि, सेंट जेवियर चर्च के दर्शन के लिए गोवा जाने के लिए उसे तिथि जाना ही था। इसी तरह, मुंबई से गोवा जाने वाली नाव निंबार्डी से बीस मील दूर स्थित 'राजगढ़' बंदरगाह पर रुकती थी, लेकिन आजकल नाव से निंबार्डी आने वाले यात्री बहुत कम हैं। दिन के समय गोवा-मुंबई जाने वाली केवल पच्चीस-पच्चीस कारें ही थीं। यह यात्रा सुविधाजनक थी।
सीतु आज मथुकाका के साथ थित्था पहुँचे थे। रेवरेंड विलियम्स, जो बैंगलोर से गोवा होते हुए मुंबई जा रहे थे, ने मथुकाका से मिलने का अनुरोध किया था। रेवरेंड विलियम्स चर्च काउंसिल के काम के लिए जल्द ही अमेरिका जाने वाले थे। वे वहाँ की सर्वोच्च धार्मिक संस्था से शिकायत करने वाले थे कि भारत में ब्रिटिश शासन के अंत के बाद से अमेरिका ने ‘धार्मिक गतिविधियों’ की उपेक्षा की है। इसके लिए उन्होंने भारत के विभिन्न स्थानों के ‘पादरी’ और ‘महात्माओं’ से निवेदन किया था।
मथुकाका उनसे मिलने गया।
लेकिन वे जाते समय अपने साथ कोई बयान नहीं ले गए।
जब मथुकाका और सीतु तिथि पहुंचे, तो वहां भारी भीड़ जमा थी।
सड़क के किनारे एक आम के पेड़ के नीचे एक नीली इम्पाला कार खड़ी थी। तिथि के प्रमुख लोग कार के चारों ओर जमा थे।

मथुकाका बाशा मालाबारी के होटल के पास आये। उन्हें देखते ही सफेद धोती और कढ़ाईदार लुंगी पहने बाशा मुस्कुराते हुए आगे आये। उन्होंने मथुकाका का अभिनंदन किया.
"चाचा जी, आपने आज क्या किया?"
"काम है। रेवरेंड विलियम्स आज मुंबई जा रहे हैं। मैं उनसे मिलने आया हूँ।"
"अंदर आओ, अंदर आओ," उसने मथुकाका का हाथ पकड़ते हुए कहा और उसे काउंटर के पास एक कुर्सी पर बैठा दिया।
"यह किसका बेटा है?"
"यह सीटू-रासु सारंगा का बेटा है!"
"वाह, मेरे बेटे! क्या खाओगे? लड्डू, पेड़ा, बर्फी, गुलाब जैम?" सीतु अपना सिर हिलाती रही, जिसका मतलब था 'कुछ नहीं'।
"जो चाहो ले लो," मथुकाका ने सीतु से कहा। बाशा ने नौकर को आइसक्रीम लाने का इशारा किया और मथुकाका की ओर मुड़कर कहा,
आप क्या लेंगे?
मुझे बस एक कप हल्की चाय दे दो।
चाय के बाद मथुकाका ने बाशा से पूछा,
"यह किसकी गाड़ी है? इसके चारों ओर बहुत सारे लोग जमा हैं।"
"ये सिंधी उद्योगपति मनमोहन शेठ हैं! ये इस इलाके में एक डिब्बाबंद मछली का कारखाना और एक कोल्ड स्टोरेज शुरू करना चाहते हैं। 'सफेद झींगे' अमेरिका और जापान को बहुत ऊंचे दामों पर बिकते हैं! इसलिए उन्होंने मत्स्य पालन विशेषज्ञों को साथ लाया है ताकि निंबार्डी के आसपास कारखाना स्थापित करने के लिए उपयुक्त जगह का पता लगाया जा सके।"
"तो ये लोग निंबार्डी की सेहत खराब करने वाले हैं!" मथुकाका ने झट से कहा।

"यह सच नहीं है, चाचा जी। यहाँ के लोगों को मछली पकड़ने की वैज्ञानिक शिक्षा मिलेगी, और महिलाओं और बच्चों को डिब्बाबंदी कारखानों और कोल्ड स्टोरेज में अच्छी मजदूरी मिलेगी। मुझे बताइए कि निंबार्डी का एक व्यक्ति आज प्रतिदिन कितना कमाता है?" बाशा ने पूछा।
"लेकिन मैं तीन या चार रुपये कमाता हूँ। क्यों!"
"लेकिन अगर ये लोग यहां आ गए, तो दस रुपये प्रतिदिन के लिए हर कोई नहीं मरेगा!"
मथुकाका ने बाशा की ओर देखकर कहा, "बाशा, तुम्हें कुछ पता नहीं है। रोजगार बढ़ने मात्र से लोग खुश नहीं हो जाते। उद्योग का मशीनीकरण निश्चित रूप से देश की प्रगति का संकेत माना जाना चाहिए; लेकिन यह मत भूलो कि इसके साथ कुछ अभिशाप भी आते हैं।" बाशा ने कहा, "लेकिन क्या निंबार्डी क्षेत्र के लोगों की जीवन स्थितियों में सुधार होगा या नहीं?"
"सुधार होगा, सुधार होगा!" मथुकाका ने एक लंबी आह भरी और कहा, "निंबार्डी गिरजाघर की घंटी आज यहाँ से सुनाई दे रही है, लेकिन अब यहाँ से सुनाई नहीं देगी!"
बाशा को मथुकाका की बातों का अर्थ समझ नहीं आया। इसके विपरीत, यदि निंबरदी के पास दो बड़े कारखाने होते, तो संचार बढ़ता; और संचार बढ़ने से उसका व्यापार भी बढ़ता। व्यावहारिक गणनाओं में उलझे बाशा ने सोचा, मथुकाका तो अभी भी पचास साल पीछे हैं! फिर भी, बाशा में मथुकाका से खुलकर यह कहने का साहस नहीं था कि, 'मैं आपकी बात से सहमत नहीं हूँ - ये विचार पिछड़े हुए हैं।' सभी लोग मथुकाका की प्रार्थनाओं की अपार शक्ति को समझते थे। सभी को लगता था कि इस गोरे रंग और काली आँखों वाले बूढ़े व्यक्ति में कोई दैवीय शक्ति है, इसलिए किसी ने भी मथुकाका के विचारों को

गलत कहने की हिम्मत नहीं की, भले ही वे उनसे सहमत न हों। उस समय बाशा में भी यह साहस नहीं था।
कुछ ही देर बाद रेवरेंड विलियम्स की कार आ गई। मथुकाका से मेरी मुलाकात हुई, लेकिन मथुकाका ने उन्हें कोई बयान नहीं दिया। उन्होंने बस इतना कहा, "जब अंग्रेजों ने इस देश पर शासन किया, तब से यहाँ के ईसाई भाइयों के प्रति पश्चिमी लोगों का नज़रिया बदल गया है। पहले यहाँ के गरीब ईसाई भाइयों को ढेरों उपहार मिलते थे। ऊनी कपड़े, डिब्बाबंद खाना, पनीर... अब उन्हें कुछ नहीं मिलता। चर्च की इमारत के लिए उन्हें साल में एक हज़ार रुपये मिलते थे, लेकिन अब तो पाँच सौ रुपये भी देना उनके लिए मुश्किल हो गया है! पिछले साल उन्होंने इसे रंगवाया। इसमें सात सौ रुपये लगे। जब तक मैं यहाँ हूँ, यह चर्च बना रहेगा। मेरे जाने के बाद इसका क्या होगा, यह कोई नहीं बता सकता। धार्मिक प्रचार-प्रसार बयान देने से नहीं होता; यह तो स्वाभाविक होना चाहिए।"
रेवरेंड विलियम्स ने मथुकाका से हाथ मिलाते हुए कहा, “मैं आपके विचारों से पूरी तरह सहमत हूँ। यहाँ के ईसाई भाइयों को अब ‘न इधर का, न उधर का’ जैसा महसूस होने लगा है। ईसाई होने के नाते, यहाँ के शासक हमें अलगाव की दृष्टि से देखते हैं और जिन्होंने हमें दीक्षा दी, उन्हीं की बदौलत यह देश स्वतंत्र हुआ; अब हम यहाँ के अपने साथी जातियों के प्रति किसी भी प्रकार से ऋणी नहीं हैं।” "वे चांद पर जाने के लिए इतना पैसा खर्च कर रहे हैं। लेकिन धरती से गरीबी और दुख को खत्म करने पर कोई ध्यान नहीं दे रहा है। यह समझ से परे है। मुझे दुख है कि एक भी विकसित पश्चिमी देश यीशु की शिक्षाओं का पालन नहीं करता," मथुकाका ने आकाश की ओर देखते हुए कहा।

रेवरेंड विलियम्स लगातार 'हां, हां' कहते रहे और फिर मथुकाका को अलविदा कहकर चले गए।
“चाचा जी, अभी खाना मत बनाइए,” बाशा ने कहा।
"नहीं। मैं कभी न कभी वापस आऊंगा। लेकिन आप बहुत समय से चर्च नहीं गए हैं।"
हमें इस कारोबार से छुटकारा पाना होगा!
"व्यापार में रुचि रखने वाले व्यक्ति को यह सब मरने के बाद ही मिलता है! अब तक तो तुम चार-पाँच लाख कमा चुके होगे!"
बाशा ने अपने हाथों को मलते हुए मुस्कुराते हुए कहा,
"इतना सारा अदरक कैसे मिल गया! कम से कम पेट भरने के लिए तो काफी है।"
"अरे, बाशा, मैं तुम्हें एक बात बता दूँ - गुस्सा मत करो। हम इंसान हैं और हमारे पेट की भी एक सीमा होती है। अगर तुम दिन में दस रुपये भी कमाओ, तो तुम्हारा पेट भर जाएगा। लेकिन तुम्हें तो दिन में पंद्रह सौ रुपये चाहिए! तो अगर तुम इसे अपने पेट के लिए काफी समझते हो, तो मुझे मानना पड़ेगा कि तुम्हारा पेट हाथी जितना बड़ा है! अब मुझे देखो। पहले मुझे चर्च परिषद से महीने में पाँच सौ रुपये मिलते थे, उन्होंने इसे बढ़ाकर दो सौ रुपये कर दिया। लेकिन फिर भी मुझे मेरा हिस्सा मिलता है। फिर भी कभी- कभी दस-बीस रुपये बच जाते हैं।"
"आप ठीक हैं, चाचा जी। निंबार्डी गबिट्स आपको हर दिन ताज़ी मछली देते हैं। खर्चे तो चावल और आटे के ही हैं। आपको दो सौ क्यों दूं, डेढ़ सौ ही काफी होंगे।"
"आप एक कुशल व्यवसायी का उत्तम उदाहरण हैं। ओह, मैं अब बूढ़ा हो गया हूँ। मैं अब पहले की तरह अपने हाथों से काम नहीं कर सकता। अगर मैं आपसे घर पर खाना बनाने के लिए किसी लड़की को रखने के लिए

कहूँ, तो भी यह संभव नहीं होगा। आपको उसे कम से कम पच्चीस से तीस रुपये देने चाहिए।"
"क्या आपको वाकई काम के लिए एक लड़की चाहिए?"
"हाँ। सचमुच। इसे देखो!" मथुकाका ने हंसिया बनाते समय अपनी कलाई पर पड़े जले हुए निशानों की ओर इशारा करते हुए कहा।
"जब भी कुछ ठीक नहीं लगता था, सीतू की मां आकर यह काम कर देती थी। लेकिन हर दिन, हम उठकर एक-दूसरे को बताते थे कि हम कितनी मुसीबत खड़ी करते थे। बताओ तो सही।"
"उसे यहीं रहने दो। कल ही भिक्कू भंडारी मेरे पास आए थे। वे मुझसे अपनी बेटी को काम के लिए अपने घर रखने को कह रहे थे। लेकिन वह छोटी बच्ची है। वह रोज़ निंबरदी से तिथि तक आना-जाना नहीं कर पाएगी। मैं उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा। छोटी होने के बावजूद वह बहुत होशियार है। एक बार उसे कोई काम समझा दो, तो दोबारा समझाने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।"
"वह भिक्षुओं की भूमि का एक गरीब आदमी है। इसके अलावा, वह नशे का आदी है।"
"रहने दो। तुम बच्ची को घर पर रखो और उसे खाना खिलाओ। वह तुम्हारे साथ रहेगी। भिक्कू और मैं देखेंगे कि हम क्या कर सकते हैं। तो, क्या बात खत्म?"
"लेकिन क्या आप उस लड़की के काम के लिए भुगतान नहीं करना चाहते?"
"चाचा जी, मैं आपके लिए इतना तो कर ही सकती हूँ," बाशा ने हाथ जोड़कर कहा, "आपके आशीर्वाद से मैं ठीक हूँ।"
"वाह, आपने कितनी अच्छी बात कही! अच्छा, उस बच्चे को कल से आने दीजिए। बेल और बच्चा एक समान होते हैं। उन्हें वैसे ही पलटना

ज़रूरी है! लेकिन मुझे संदेह है, बाशा, कि भिक्कू अपनी बेटी को मेरे पास काम पर नहीं लगाना चाहेंगे।"
‘‘का?’’
"मैंने उसे शराब पीने की आदत के लिए एक-दो बार खूब पीटा है। उसके बाद से उसने कभी मेरा विरोध नहीं किया। मुझे नहीं लगता कि वह अपनी बेटी को मेरे यहाँ काम करने देगा।"
"चिंता मत करो, चाचाजी, उनकी बेटी कल सुबह आठ बजे आपके पास आ जाएगी।"
"ठीक है।"
मथुकाका और सीतु निंबार्डी वापस जाने के लिए चल पड़े। जाते समय मथुकाका थोड़ा चिंतित लग रहा था। अगर निंबार्डी में डिब्बाबंद खाद्य पदार्थ बनाने का कारखाना और कोल्ड स्टोरेज गोदाम बन गए, तो यहाँ का शांत वातावरण नष्ट हो जाएगा। लहरों की आवाज़ मछली पकड़ने वाली नावों और ट्रॉलरों के हॉर्न की आवाज़ में दब जाएगी। समुद्र से आने वाली ताज़ी हवा प्रदूषित हो जाएगी। इसके अलावा, यहाँ यातायात बढ़ जाएगा। बाहर से अच्छे और बुरे, दोनों तरह के लोग काम की तलाश में उमड़ पड़ेंगे। लेकिन क्या पचास वर्ष से अधिक उम्र का मथुकाका इस बदलाव को रोकने के लिए कुछ कर सकता था?
मथुकाका की दिली इच्छा थी कि निंबरदी क्षेत्र के सीधे-सादे, भोले-भाले ईसाई, गबिट और भंडारी लोग सुखी जीवन व्यतीत करें। मथुकाका को लंबे समय तक चुपचाप, हाथ में पकड़ी छड़ी के सहारे, विचारों में डूबे हुए घूमते देख, नन्ही सीतू ने पूछा,
"चाचा जी, आप बात क्यों नहीं कर रहे हैं?"
मथुकाका को यह भी याद नहीं था कि सीतु उसके साथ है। उसके प्रश्न ने अचानक उसे होश में ला दिया और उसने कहा,

"अरे? सीतु, मैं तो यह भी भूल गई थी कि तुम मेरे साथ हो।" "तुम्हारी आंखों से पानी क्यों आया?"
"बेटा, सच तो यह है कि मेरी आँखों में आँसू मन की कमजोरी के कारण आते हैं। लेकिन बताओ मैं क्या करूँ। वही शहरी जीवन, जिसके कारण मैंने ऊब के मारे संन्यास लिया था, यहाँ भी दस्तक दे रहा है। सबसे पहले मुझे इसका एहसास यहीं हुआ था। अब जब वे दो कारखाने निंबार्डी में आ गए हैं, तो सब कुछ खत्म हो गया!"
"किस तरह की फैक्ट्री, चाचा?"
"एक कारखाना मछली और झींगा तैयार करने और डिब्बाबंद करने के लिए, और दूसरा मछली और झींगा को फ्रीज करने और उन्हें विदेशों में निर्यात करने के लिए।"
"तब क्या होगा?"
"क्या होगा? हाँ!" मथुकाका ने बनावटी मुस्कान के साथ कहा, "आज हम यहाँ जिन लोगों को देख रहे हैं, वे वहाँ गुलाम होंगे। सुबह से शाम तक मजदूरी के लिए काम करने वाले गुलाम!"
"चाचा जी, गुलाम क्या होता है?"
जब किसी व्यक्ति के साथ पशुवत व्यवहार किया जाता है, तो उसे गुलाम कहा जाता है। आज निंबरदी में कोई किसी का गुलाम नहीं है। लेकिन एक बार जब ये दोनों कारखाने यहाँ चलने लगेंगे, तो तुम सब गुलाम बन जाओगे। तुम अभी जवान हो। बड़े होकर सब समझ जाओगे। लेकिन नहीं, एक बार गुलामी की आदत पड़ जाए, तो आज जैसे कोई नाविक नदी पर जाता है, अगर लहरें उठती हैं, तो वह जाल लेकर मछली पकड़ने चला जाता है, आज उस पर कोई बाध्यता नहीं है। लेकिन कल, अगर वही रसू इस कारखाने में काम करता रहा, तो वह अपनी मनमर्जी नहीं कर पाएगा। छोड़ो इस मामले को।"

उसके सामने एक रस्सी का पुल था। एक बार में केवल एक ही व्यक्ति उसे पार कर सकता था। सीतु ने पुल पार किया और आगे बढ़ने लगा, पीछे से आ रहे मथुकाका को देखता हुआ। मथुकाका के हर कदम के साथ रस्सी का पुल हिल रहा था। जब मथुकाका पुल पार करके दूसरी तरफ पहुँच गया, तो सीतु ने कहा,
"चाचा जी, आपके नियंत्रण में कोई कारखाने नहीं होंगे।"
‘‘का?’’
"वे लोग इस पुल को कैसे पार करेंगे?" मथुकाका ने आगे बढ़ते हुए सीतु के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।
"ओह, वे इस जगह पर सीमेंट-कंक्रीट का पुल बनाएंगे। तिथि से गांव तक पक्की सड़क बनाई जाएगी। पैसे कमाने वाले लोग तो पहले से ही सारी मुश्किलों के बारे में सोच रहे हैं।"
"तो तीसरी मंजिल पर होटल नहीं चलेंगे?"
"वे ज़बरदस्त तरीके से आगे बढ़ेंगे। यह कमीना निंबार्डी में भी अपना होटल खोलेगा।"
जैसे ही वे गांव के पास पहुंचे, रास्ते में उनकी मुलाकात रासु से हुई।
"चाचा जी, क्या आप समझते हैं? निंबरदी में दो बड़ी फैक्ट्रियां बन रही हैं," रासु ने ऐसे कहा जैसे वह मथुकाका को यह खबर पहली बार बता रहा हो।
समझ गया। आपको किसने बताया?
"यह क्या है?" रासु ने समुद्र की ओर इशारा करते हुए कहा। "सुबह से दो नौकाएँ यहाँ समुद्र में मिलने वाली मछलियों की जाँच कर रही हैं। उनमें एक गोरे रंग का सज्जन भी है।"
"क्या सही है और क्या गलत! जो होना है सो होने दो। समय बदल रहा है। क्या मैं अकेले ही इसे कुछ समय के लिए रोक पाऊँगा?"

“चाचा जी, यह सब गाँव के भले के लिए हो रहा है। यहाँ सभी को भरपूर रोज़गार मिलेगा। यहाँ तक कि छोटे बच्चों और हमारी पत्नियों को भी कोल्ड स्टोरेज में झींगे साफ़ करने के लिए रोज़ाना छह रुपये मिलते हैं। अगर परिवार के सभी लोगों को रोज़गार मिल जाए, तो गरीबी की कोई कमी नहीं रहेगी,” रासु ने उत्साह से कहा।
"हाँ!" मथुकाका ने रासु को अजीब नज़र से देखते हुए कहा।
"रासु, अगर यह गाँव के भले के लिए है, तो मैं इस योजना का हमेशा समर्थन करूँगा। लेकिन मैंने बड़े शहरों में नौकरों और मालिकों के बीच का रिश्ता देखा है। शुरुआत में, ये मालिक कामगारों की मदद करते हैं जब तक कि वे व्यवसाय में जम न जाएँ; लेकिन एक बार जब वे जम जाते हैं, तो वे उन कामगारों के हाथ तोड़ने में ज़रा भी संकोच नहीं करते!"
"मुझे आपकी बात समझ नहीं आ रही है, चाचा जी।"
मुझे अभी यह समझ नहीं आ रहा है। चलो, सिटु।
एक हाथ सीतु के कंधे पर और दूसरा हाथ एक छड़ी के सहारे टिकाकर मथुकाका गिरजाघर की ओर पहाड़ी चढ़ने लगा। वह पहले से कहीं अधिक थका हुआ महसूस कर रहा था।
०००

चार
अगली सुबह आठ बजे, मथुकाका चाय और ट्रांजिस्टर रेडियो के साथ बाहरी कमरे के बरामदे में बैठकर समाचार सुन रहा था। आजकल तो उसे समाचार सुनने का मन ही नहीं करता था। वह हर दिन उठकर वही समाचार सुनकर थक चुका था। वियतनाम युद्ध! दक्षिण वियतनाम और उत्तर वियतनाम के बीच सशस्त्र संघर्ष में भारी जनहानि के बारे में सुनकर वह सोचने लगा, आखिर ये लोग आखिर जा क्या रहे हैं? पश्चिमी देशों को ऐसे कदम क्यों उठाने चाहिए जिनसे दुनिया के अन्य देशों में संघर्ष और जनहानि हो? अरब-इजराइल संघर्ष खत्म नहीं हो रहा है। गोलटेकी क्षेत्र में टैंक युद्ध जारी है। आज के मनुष्य की प्रगति की बात कहने का क्या मतलब? इसके विपरीत, मनुष्य आज जितना क्रूर है, उतना पहले कभी नहीं देखा गया। मथुकाका ने रेडियो बंद कर दिया। उसी समय उसने चौदह या पंद्रह साल की एक लड़की को पहाड़ी पर आते देखा। मथुकाका ने उसे गौर से देखा। वह सीधे बरामदे में आई और वहीं खड़ी हो गई।
"तुम कौन हो?" मथुकाका ने स्नेह भरे शब्दों में उससे पूछा।
"सुबी!" उसने शर्माते हुए कहा।
"हाँ, मुझे याद है! क्या आप भिक्कू भंडारा की पुत्री हैं?" सुबिन ने आदरपूर्वक हां कहा।
"क्या भिक्षु ने आपको यहां आने की अनुमति दी थी?"
एक बार फिर, सुबी ने सहमति में सिर हिलाया।

"मुझे आश्चर्य हुआ! कल बाशा ने मुझे बताया था कि तुम काम के लिए यहाँ आओगे; लेकिन मुझे यकीन नहीं हुआ था कि यह सच है।"
"कल रात बाशा के चाचा आए और उन्होंने मुझे बताया," उसने कहा। "लेकिन तुम अभी जवान हो। क्या तुम खाना बना सकते हो?" ‘‘होऽऽऽऽ!’’
"आप क्या कर रहे हो?"
‘‘सब कुछ! चावल, केल, चपातियाँ...’’
मथुकाका ने सुबी को ध्यान से देखा और कहा,
"तुमने खाना कब सीखा?"
सुबी बिना कुछ कहे नीचे देखती रही।
इसी बीच, सीतु दो सारंग लेकर मथुकाका के पास आई। कपड़े में लिपटे हुए ये सारंग अभी-अभी पहने गए थे। उनके बाल अभी भी ऊपर-नीचे हिल रहे थे। पट्टियाँ भी हिल रही थीं।
"चाचा जी, दादाजी ये सारंगे लाए हैं। ये एकदम ताज़े हैं!" सीतू ने सुबी की ओर एक सरसरी नज़र डालते हुए कहा।
मथुकाका ने सीतु के हाथ से सारंग लेकर कहा, "क्या तुम उसे जानती हो?"
सीता ने सुबी की ओर देखकर कहा, "यह सुबी भिक्षुणियों की है।" "कल बाशा ने ऐसा कहा था, और आज उसने उसे भेज दिया?"
मथुकाका ने सुबी की ओर देखते हुए कहा, "क्या तुम मछली का जाल बना रहे हो?"
सुबी ने सिर हिलाकर हां कहा।
"ठीक है। सीतू, उसे जो चाहिए वो दे दो... मैं आज रसोई में नहीं आऊँगी। देखते हैं वो कलवन कैसे बनाती है।"
सुबी सीटू के पीछे-पीछे रसोई में चली गई।

मथुकाका की रसोई बहुत छोटी थी, पर एकदम साफ-सुथरी। खिड़कियों पर बारीक जाली लगी थी। दो चूल्हे थे, एक चूल्हा। अलमारी में कांच की प्लेटें, चम्मच और चाय के सेट जैसे बर्तन रखे थे। कोने में मसाले रखने के लिए एक पत्थर का तख्ता था, पर पिछले कई दिनों से उसका इस्तेमाल नहीं हुआ था। भला कौन करता होगा? मथुकाका कुछ न कुछ पका लेते थे। अगर उन्हें बहुत ऊब होती, तो वे रसु सारंगा को संदेश भेज देते। रसु डिब्बाबंद मछली का स्टू और चावल ले आते। पर हाल ही में, पाडी ने काफी दिनों से खाना नहीं लाया था। मथुकाका रसु और पाडी को बार-बार परेशान करना भी पसंद नहीं करते थे। वे खाना खुद ही बनाते थे।
सीतू ने सारंगे को साफ किया और सुबी से पूछा, "क्या हम इसे टुकड़ों में काट लें?"
"क्या हम सब कुछ तल दें या थोड़ा सा तलें?" सुबी ने प्लेट साफ करते हुए पूछा।
"क्या आप तैरना जानते हैं?"
सुबी ने मुस्कुराते हुए कहा, "मैं इसे आज तल दूंगी, तो देखते हैं यह बनता है या नहीं। मेरे लिए एक नारियल तोड़ दो। क्या तुमने छील लिया है?"
"हाँ! देखो, ये इस जार में हैं। लेकिन चाचाजी को मसालेदार खाना पसंद नहीं है, याद है ना? अगर तुम मसालेदार खाना बनाओगे, तो चाचाजी उसे नहीं खाएँगे क्योंकि उन्हें 'भूख नहीं है'। वो ये भी नहीं कहेंगे, 'खाना मसालेदार था।'"
सुबी सीतू की हर बात ध्यान से सुन रही थी। खिड़की से आती हवा उसके बालों को उड़ा रही थी, जिन्हें वह हाथ से पीछे कर रही थी। तभी सीतू ने कहा,

मुंबई जाने वाली कोई नाव चित्रदुर्ग बंदरगाह पर रुकती, तो ऐसे लड़के दस से बीस रुपये इकट्ठा करके चित्रदुर्ग पहुँच जाते थे। गबिट समुदाय में घोर गरीबी थी। अगर ज़्यादा मछली मिल जाती, तो उसे बाज़ार ले जाकर बेचना पड़ता था। बाज़ार में दलाल होते थे। वे मछली एक से डेढ़ रुपये प्रति किलो के भाव से खरीदते, बर्फ में पैक करते और पुणे, कोल्हापुर और करहाड़ जैसे स्थानों पर भेजते थे। हर किलो पर दलाल को तीन से चार रुपये तुरंत मिल जाते थे; लेकिन नदी पर दिन-रात काम करने वाले मछुआरे आधी तनख्वाह पर गुज़ारा करते थे।
भंडारी जनजाति नारियल और काजू का उत्पादन करती थी। लेकिन शराबबंदी नीति के कारण वे खुलेआम यह व्यापार नहीं कर पाते थे। जिले में एक टास्क फोर्स गठित की गई थी। यह पता नहीं होता था कि इस टास्क फोर्स के लोग कब आएंगे। जब वे आते थे, तो नारियल के किण्वन के लिए रखे रसायनों के जार तोड़ देते थे। कुछ भंडारी शराब चुराकर बेचते भी थे। लेकिन भंडारी जनजाति का अधिकांश हिस्सा बेरोजगारी से जूझ रहा था। इनमें से कुछ भंडारियों के बच्चे भी नौकरी की तलाश में गांव छोड़कर चले गए थे। चुनाव नजदीक आने पर जिला नेता निंबरदी आते थे। वे हमसे वादा करते थे कि वे कोंकण के विकास के लिए संगठित प्रयास करेंगे। चुनाव समाप्त होने और वोटों का चंदा इकट्ठा करके चले जाने के बाद, वे गलती से निंबरदी नहीं आए होंगे।
मथुकाका ने निंबरदी के लोगों के लिए किसी प्रकार का उद्योग स्थापित करने के विचार पर चर्चा करने के लिए गबिट, भंडारी और किरिस्तवा जनजातियों के लोगों को एक साथ बुलाया। गबिट जनजाति के लोग बिचौलियों से परेशान थे, इसलिए उन्होंने स्वयं एक समिति बनाने और ट्रक खरीदकर गांवों में मछली भेजने का प्रस्ताव रखा।

भंडारी जनजाति के लोगों ने कहा कि ऐसी खबरें हैं कि सरकार शराबबंदी नीति में ढील देने जा रही है; इसलिए अगर शराब की दुकानें फिर से खुलती हैं, तो लाइसेंस हमें ही दिए जाने चाहिए। मथुकाका ने मुंबई के सुझावों का ही समर्थन किया। विधायक ने आश्वासन दिया, "हम आपका सुझाव सरकार के सामने रख रहे हैं। कार्रवाई होते ही हम आपको सूचित करेंगे।" अंततः, वे योजनाएँ मात्र विचार बनकर रह गईं।
मथुकाका इन सब बातों से दुखी थे। उनके हृदय में गहरी तड़प थी, लेकिन वे कुछ भी करने में असमर्थ थे। रविवार को गिरजाघर में प्रार्थना होती थी। निंबरदी की विशेषता यह थी कि स्थानीय दलदी, मछुआरे, भंडारी और यहाँ तक कि ईसाई भी इस प्रार्थना में शामिल होते थे। चाहे मथुकाका के प्रति प्रेम के कारण हो या फिर उनमें दैवीय तत्व होने की भावना के कारण, निंबरदी की सभी जातियों के लोग मथुकाका के प्रति आदर का भाव रखते थे।
लेकिन पिछले एक-दो सालों में मथुकाका को लगने लगा था कि लोग अब उसका उतना सम्मान नहीं करते जितना पहले करते थे। मथुकाका युवाओं को तित्था न जाने और बुरे काम न करने की सलाह देता था। लेकिन जैसे ही इन युवाओं की जेब में चार पैसे आते, वे सीधे तित्था चले जाते। वे घंटों बशममु की दुकान में बैठे रहते। मथुकाका को इस बात का दुख था कि उन्होंने इतने वर्षों तक उपदेशक के रूप में काम किया, लेकिन किसी ने भी सच्चे धर्म को नहीं समझा। हाल ही में, वे लोगों से ज्यादा मेलजोल नहीं रखते थे और न ही कहीं जाते थे। उनके कुछ पसंदीदा ठिकाने थे, लेकिन उन्होंने उन्हें भी कम कर दिया था। फिर भी, वे कभी-कभार रसु के घर जाते थे। सीतु मथुकाका के पास आई और बोली, "चाचा जी, वह कहती है कि वह सब कुछ खुद करेगी... उसे करने दीजिए।"

मथुकाका सितुका को देखकर, उसने हल्की सी मुस्कान के साथ कहा, "बच्ची ठीक लग रही है। देखते हैं, उसे जो करना है करने दो।"
जब मथुकाका और सीटू बात कर रहे थे, तो उन्होंने दूर समुद्र से निम्बार्डी के तट पर एक मोटरबोट की आवाज़ सुनी।
"मोटरबोट क्यों?" चाचा ने दूर देखते हुए पूछा।
"हां। यह लाल है।"
"वो दूरबीन ले लो।"
सीतु अंदर गया और खूंटी पर टंगी दूरबीन निकालकर मथुकाका को दे दी। मथुकाका ने दूरबीन का फोकस ठीक किया और उसे अपनी आँखों पर लगाया। सीतु को लगा कि लाल बिंदु करीब आ रहा है। उसने अपने चाचा से पूछा।
"केवल एक ही आ रहा है। उसमें कौन-कौन है?"
"तीन लोग हैं। एक की उम्र लगभग आपकी उम्र के बराबर या थोड़ी ज़्यादा है। दूसरा इक्यावन साल का है और तीसरा पैंतीस साल का। लेकिन जब तक आप पास नहीं जाते, तब तक यह बताना नामुमकिन है कि वे कौन हैं।" मथुकाका बोल रहा था, अभी भी दूरबीन उसकी आँखों पर टिकी हुई थी।
अचानक, मोटरबोट गिरजाघर के नीचे स्थित चट्टान के पास रुक गई। मथुकाका ने दूरबीन वापस रख दी और वे सोचने लगे। आखिर कौन हो सकता है?
लेकिन उन्हें ज्यादा सोचने की जरूरत नहीं पड़ी। तीनों चर्च के पश्चिम की ओर से पहाड़ी पर चढ़ गए। पचास वर्ष के आसपास के एक सज्जन आगे आए। यह देखकर कि समूह उनके पास आया है, मथुकाका उठकर आगे आ गए।
"सुप्रभात, फादर मैथ्यूज।"
‘‘गुड मॉर्निंग टु यू.’’

"मेरा नाम मनमोहन है। ये मेरा भतीजा रविंद्र है और ये नारायणन हैं, मेरे मैनेजर।"
मथुकाका ने सबसे हाथ मिलाया। सीतु को बिना बताए, वह अंदर से तीन बेंत की कुर्सियाँ बरामदे में ले आई। आए हुए लोग उन पर बैठ गए। मनमोहन ने कहा,
"वाह, क्या अद्भुत जगह है! सचमुच, यह गिरजाघर कितनी खूबसूरत जगह पर बना है! मुझे लगता है कि इस पूरे इलाके में प्रार्थना के लिए इससे बेहतर कोई और जगह नहीं है। यह गिरजाघर कब बना था?"
"यह कार्य दिसंबर 1875 में पूरा हुआ था," मथुकाका ने कहा। मनमोहन ने कहा, "इसके अलावा, उस समय के लोगों में धार्मिक भावना के साथ-साथ सौंदर्यबोध भी था।"
उस समय इस गांव में दस या बारह मछुआरे और उतने ही दुकानदार थे, लेकिन अब वहां लगभग पांच सौ से सात सौ लोग रहते हैं!
"बहुत बढ़िया! मैंने इस चर्च के बारे में बहुत अच्छी बातें सुनी हैं।"
"कौन सा?"
"जब लोगों को पीने का पानी नहीं मिल रहा था, तब आपने सामूहिक रूप से प्रार्थना की, और उसी रात बिजली गिरी, जिससे ताजे पानी का एक जीवंत झरना बन गया!"
मथुकाका हँसते हुए बोले, "मुझे यीशु में गहरी आस्था है। मैं अभी- अभी यहाँ आया था। मैं सबको अपने साथ प्रार्थना करने के लिए लाया था ताकि मुझे लोगों को पानी के लिए झेलनी पड़ रही कठिनाइयों को न देखना पड़े।"
“पिताजी,” मनमोहन मुस्कुराते हुए बोले, “आज हमारे भारत में, इन हज़ारों मंदिरों से! लाखों लोग प्रार्थना करते हैं। हर किसी के दिल में कोई न कोई उम्मीद होती है। लेकिन बताइए, कितनी

प्रार्थनाएँ फलदायी होती हैं? अगर ऐसा है, तो आपकी प्रार्थनाओं में कोई शक्ति थी। इसके अलावा, यहाँ ताज़े पानी का झरना क्यों फूट पड़ा? तूफ़ान के दिनों में कई जगहों पर बिजली गिरती है। कुछ जगहों पर निर्दोष और बेगुनाह लोग मर जाते हैं, मवेशी जलकर राख हो जाते हैं; लेकिन यहाँ बिजली गिरती है और जीवनदायी जल का झरना फूट पड़ता है? तो इसका कारण आपकी प्रार्थना है, यीशु में आपका अटूट विश्वास है।”
इसमें कोई संदेह नहीं है कि मथुकाका उस सज्जन के कथन से कुछ हद तक प्रसन्न हुए थे; लेकिन जब उस सज्जन ने निंबर्दी आने के अपने इरादे के बारे में बताया, तो मथुकाका का प्रसन्नमिजाज स्वभाव अचानक चिंतित हो गया।
वह सज्जन मनमोहन शेठ थे! निंबर्दित ही थे जिन्होंने ये दोनों व्यवसाय शुरू करने की इच्छा जताई थी - एक डिब्बाबंद खाद्य पदार्थ बनाने का कारखाना और एक कोल्ड स्टोरेज।
"मेरा इरादा है कि मैं अपने भतीजे, रविंद्र को यहां ये दो व्यवसाय शुरू करने के लिए प्रेरित करूं।"
"यहाँ संचार की समस्या है।" मथुकाका।
"उन्हें चिंता करने की जरूरत नहीं है। मेरे पास नावें हैं। इसके अलावा, तिथि से निंबरदी तक एक पक्की सड़क बनाई जाएगी।"
रास्ते में एक छोटी नदी है।
"इस पर एक मजबूत पुल बनाया जाएगा। फादर मैथ्यूज, मैंने विदेश से जिन विशेषज्ञों को बुलाया था, उन्होंने मुझे सलाह दी है कि यह स्थान मेरी दोनों चिंताओं के लिए उपयुक्त है। पहला, इस समुद्र में प्रचुर मात्रा में समुद्री संसाधन हैं और दूसरा, यहाँ श्रमशक्ति की उपलब्धता है। निंबरदी में पाँच सौ लोग रहते हैं। उन सभी को पर्याप्त काम मिलेगा। उनकी जीवनशैली में भी सुधार

होगा। एक बार जब हमारे दो कारखाने यहाँ शुरू हो जाएँगे, तो यहाँ के लोगों को कोई समस्या नहीं होगी। उन्हें अपने धर्म के लिए उचित पारिश्रमिक मिलेगा।"
"लेकिन अपने श्रम के बदले में उन्हें अपनी स्वतंत्रता खोनी पड़ेगी," मथुकाका ने दूर क्षितिज की ओर देखते हुए कहा।
मनमोहन सेठ धूर्त थे। वे मथुकाका की बात तुरंत समझ गए, फिर भी उन्होंने उन्मादी स्वर में कहा, "गरीबी की आजादी से सुख की आजादी बेहतर है।"
लेकिन मैं स्वतंत्रता की दरिद्रता में मृत्यु को कहीं अधिक बेहतर मानता हूँ।
मनमोहन शेठ ने इसके बाद कुछ नहीं कहा। वे अपने मित्र नारायणन को देखते रहे और मुस्कुराते रहे। उनके चेहरे के भाव थे, 'यह बूढ़ा आदमी थोड़ा मूर्ख है।'
"अरे सीतू, क्या तुम गरीबों को चाय पिलाती हो?"
मथुकाका ने सीतु से कहा।
"हाँ!" कहते हुए सिटु रसोई की ओर चल पड़ी।
लेकिन मनमोहन सेठ ने उन्हें रोकते हुए कहा, "अरे रुकिए, हमने अभी-अभी चित्रदुर्ग में प्रांतसाहेब के घर पर चाय पी है।" मथुकाका ने उन्हें ज्यादा आग्रह नहीं किया। जब ये लोग मथुकाकाकांका में थे, तभी पहाड़ी के पूर्वी हिस्से से छह-सात लोग वहाँ आए। वे गाँव के थे। मनमोहन सेठ को प्रणाम करने के बाद उन्होंने कहा,
"सभी तैयारियां पूरी हो चुकी हैं। ग्रामीण दुर्गा मंदिर के सामने एकत्रित हो गए हैं।"
"आओ पिताजी, क्या आप आएंगे?" मनमोहन शेठ ने पूछा।
"कहाँ?"

नारायणन ने कहा, "हम निंबार्डी गांव के ग्रामीणों को अपनी योजना के बारे में सूचित करना चाहते हैं।"
"मुझे अभी तक किसी ने क्यों नहीं बताया?" मथुकाका ने आश्चर्य से कहा।
"अगर आप आएँ तो अच्छा होगा। आपको भी हमारे व्यवसाय के बारे में जानकारी मिलेगी। आपको यह भी समझ आएगा कि इससे यहाँ के लोगों को कितना लाभ होता है। ऐसे काम के लिए आप जैसे किसी वरिष्ठ व्यक्ति का आशीर्वाद आवश्यक है।"
"चलो चलते हैं, मैं आ जाता; लेकिन आज मेरी तबीयत ठीक नहीं है।" "ठीक है। मुझे उम्मीद है कि आप कम से कम कारखाने की नींव रखने के समारोह में तो आएंगे ही," मनमोहन शेठ ने हाथ जोड़ते हुए कहा। उन सबके चले जाने के बाद, मथुकाका ने एक लंबी आह भरी। अपने हाथ हवा में लहराते हुए, उसने पास खड़े सीतु से कहा,
"सिर्फ मेरे मना करने से ऐसा नहीं होगा। होने दो। यीशु यही तो चाहते हैं। मैं कौन होता हूँ इसे रोकने वाला?"
सीतु यह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि स्वतंत्रता का क्या अर्थ होता है, गरीबी का क्या अर्थ होता है और इन दोनों कारकों से क्या परिस्थिति उत्पन्न होगी। लेकिन वह यह जरूर समझ गया था कि जो कुछ भी होने वाला था वह मथुकाका की इच्छा के विरुद्ध था।
गांव के बीचोंबीच स्थित दुर्गा मंदिर छोटा था। लेकिन मंदिर के सामने का प्रांगण विशाल था। प्रांगण निंबरदी गांव के पुरुषों, महिलाओं और कुलियों से भरा हुआ था। लोहे के ड्रमों पर तख्ते रखकर मंदिर के सामने एक अस्थायी मंच बनाया गया था। मंच पर चार कुर्सियां रखी गई थीं। मनमोहन सेठ, उनके भतीजे और गबिट जनजाति के एक नेता तथा भंडारी जाति के एक अन्य नेता शेष दो कुर्सियों पर बैठे थे। बैटरी से चलने वाले दो लाउडस्पीकर भी लगाए गए थे।

मनमोहन शेठ के मैनेजर नारायणन सबसे पहले बोलने के लिए खड़े हुए।
श्री मनमोहन जी, श्री रविंद्र कुमार और निंबार्डी के सभी सम्मानित पुरुष एवं महिलागण-
मैं अब आपके सामने हमारी दो बड़ी योजनाओं के बारे में आपको जानकारी देने के लिए खड़ा हूं।
"एक योजना है, एक डिब्बाबंदी कारखाने की। मैं आपको संक्षेप में समझाता हूँ कि डिब्बाबंदी कारखाना क्या होता है। हम तारली, सुंगथ, बंगाडे जैसी छोटी मछलियाँ पकड़ते हैं। हम उन्हें तेल में पकाते हैं और वायुरोधी डिब्बों में भरते हैं। इसे 'डिब्बे भरना' कहते हैं। निंबरदी खाड़ी और तट पर इस तरह की 'डिब्बे भरने' के लिए उपयुक्त मछलियाँ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। अब तक आप लोग मछली पकड़ने के लिए असुरक्षित नावों और बेड़ों से समुद्र में जाते थे। आपके कई भाई अचानक आए तूफानों में डूब गए। उनके घर नष्ट हो गए। लेकिन अब आप मछली पकड़ने के लिए हमारी ट्रॉलरों से समुद्र में जा सकते हैं। आपकी नावें और बेड़े ज्वार और हवा पर निर्भर करती थीं। लेकिन हमारी ट्रॉलरें स्वचालित, डीजल इंजनों से सुसज्जित हैं। अब, समुद्र चाहे कितना भी दूर या गहरा हो, आप इस असीमित समुद्री संपदा का दोहन कर सकते हैं और सुरक्षित रूप से अपने बच्चों के पास लौट सकते हैं।" आपको अपना सामान ढाई मील सिर पर लादकर बेचने के लिए ले जाना पड़ता था। इतनी मेहनत करने के बाद, उस सामान का क्या दाम मिलता था? एक रुपया नहीं तो डेढ़ रुपया किलो! मतलब आपको रात भर समुद्र में मछली पकड़नी पड़ती थी और मुश्किल से पेट भर खाना मिलता था; और वो भी पक्का नहीं था! अगर मछली मिल जाए तो मिल जाती थी; नहीं तो हाथ हिलाकर कई बार वापस आना पड़ता था। लेकिन अब आपकी ये सारी

परेशानियां दूर होने वाली हैं। हम अपनी कंपनी में काम करने वाले हर व्यक्ति को दस रुपये प्रतिदिन देंगे। हमें मछली साफ करने के लिए महिलाओं की ज़रूरत होगी। उन्हें सात रुपये प्रतिदिन मिलेंगे। यानी, अगर परिवार में सिर्फ पति, पत्नी और बेटा ही हैं, तो उन्हें बाईस रुपये प्रतिदिन मिलेंगे, और अगर ज़्यादा लोग हैं, तो ज़ाहिर है, और भी ज़्यादा।
वहाँ जमा हुए पुरुषों और महिलाओं के बीच कानाफूसी होने लगी। तीन लोगों के परिवार को प्रतिदिन बाईस रुपये मिलने की बात सुनकर वे सब खुश हो गए। नारायणन ने आगे कहा, “आप पर कोई ज़िम्मेदारी नहीं है। अगर आप इस नौकरी में स्थायी हो जाते हैं, तो आपको एक निश्चित वेतन मिलेगा, चाहे हमारी फैक्ट्री बंद हो या खुली रहे।”
मेरे भाइयों, गरीबी और कठिनाइयों से जूझते हुए अब तक आप जो संघर्ष कर रहे थे, वह अब समाप्त होने वाला है। आपकी पत्नियां और बच्चे सदा सुखी रहेंगे। आपको जीवन में स्वास्थ्य मिलेगा, आपका जीवन सुखमय होगा।
"हमारी दूसरी परियोजना। शायद आप परियोजना शब्द का अर्थ न समझें। हम जो दूसरा उद्योग शुरू करने जा रहे हैं, वह है कोल्ड स्टोरेज। चलिए, मैं आपको इसके बारे में थोड़ी जानकारी देता हूँ। हमारे तट पर प्रचुर मात्रा में लॉबस्टर और झींगे मिलते हैं। लेकिन इनके लिए तुरंत खरीदार नहीं मिलते, इसलिए हमें झींगा पेस्ट तैयार करना पड़ता है। लेकिन इसके लिए आपको कोई मेहनताना नहीं मिलता। हमारी योजना इन झींगों को अमेरिका और जापान निर्यात करने की है। जापान में इन झींगों और लॉबस्टर की अच्छी प्रतिष्ठा है। हम यहाँ पकड़े गए झींगों को साफ करके प्लास्टिक बैग में भरकर बर्फ में जमा देते हैं। यह उत्पाद जमे

हुए रूप में विदेशों में भेजा जाता है। निंबार्डी की सभी महिलाओं को केवल झींगे साफ करने का काम मिलेगा।"
कुल मिलाकर, हमारा कारोबार यहाँ के लोगों की तकलीफ़ और गरीबी को दूर करेगा। इससे आपका जीवन स्तर सुधरेगा। आप खुद देखेंगे कि इन दो कारखानों के शुरू होने के बाद आपका निंबरदी कितना महत्वपूर्ण हो जाएगा। इसके बारे में मुझे और कुछ कहने की ज़रूरत नहीं है। अभी तित्था जाने के लिए आपको उस जर्जर रस्सी के पुल को पार करना पड़ता है। लेकिन एक बार हमारे दोनों कारखाने चालू हो जाएं, तो तित्था जाने के लिए नाले पर एक पुल बनाया जाएगा। निंबरदी नदी का किनारा आधा मील दूर है, लेकिन हमारे कारखानों को ताजे पानी की ज़रूरत होगी। तब निंबरदी नदी का पानी गाँव तक भी आएगा। यहाँ अभी भी बिजली नहीं है, जब बिजली आएगी, तब आप लोगों को क्या चाहिए?
"नहीं, नहीं, नहीं!" सबकी सामूहिक आवाज उठी।
"अब हमारा शेठ तुम्हारे सामने चार शब्द बोलेगा।"
मनमोहन शेठ का व्यक्तित्व बेहद मनमोहक था। सुनहरे बालों वाले, चील जैसी नाक वाले, छोटी भूरी मूंछों वाले और पीछे की ओर कंघी किए बालों वाले मनमोहन बोलने के लिए खड़े हो गए।
निंबार्डी के भाइयों और बहनों,
आज हमारे मैनेजर नारायणन ने आपको यहाँ शुरू होने वाले कारोबार के बारे में पहले ही बता दिया है। मैं इसके बारे में और कुछ नहीं कहूँगा। यहाँ की दोनों फैक्ट्रियाँ मेरे भतीजे रविंद्र कुमार के नाम पर हैं। चूंकि वह अभी युवा है, इसलिए मेरे मैनेजर नारायणन ही वास्तविक काम की ज़िम्मेदारी संभालेंगे। मैं यहाँ नहीं रहूँगा। मुंबई में मेरे कुछ और कारोबार हैं; मुझे वहीं रहना होगा। इसलिए, मेरा आप सभी से विनम्र निवेदन है कि हमारे

उद्योग का समर्थन करें। भले ही हम मालिक हैं, लेकिन हम मालिक और कर्मचारी के बीच का अंतर कभी महसूस नहीं करेंगे। लेकिन कुछ लोगों की सोच पुरानी और दकियानूसी है। उन्हें शायद यह बात पसंद न आए कि ये फैक्ट्रियाँ यहाँ शुरू होने जा रही हैं। लेकिन समय बदल रहा है। हमारी आधुनिक ट्रॉलर एक दिन में आपके गाँव के सभी मछुआरों द्वारा मिलकर पकड़ी जाने वाली मछलियों से दोगुनी मछलियाँ पकड़ती है। पहले चार और फिर छह ऐसी ट्रॉलर यहाँ लाई जाएँगी। ज़रूरत पड़ने पर और भी ट्रॉलर खरीदी जाएँगी।
“आज मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि श्रमिकों और कारखाना मालिकों के बीच कोई मतभेद नहीं होगा। जहाँ लोग होते हैं, वहाँ मतभेद तो होते ही हैं। लेकिन हम ऐसे मतभेदों को बातचीत और आपसी समझ के माध्यम से सुलझा लेंगे। इन कारखानों को अपना समझें। जब इन कारखानों से लाभ मिलना शुरू होगा, तो उस लाभ का एक हिस्सा श्रमिकों को बोनस के रूप में वितरित किया जाएगा। हमारा उद्देश्य केवल पैसा कमाना नहीं है। आप यह समझ जाएंगे। मेरी दिली इच्छा है कि यहाँ के लोगों को उनके श्रम का उचित पारिश्रमिक मिले, उनकी गरीबी दूर हो और उनका जीवन स्तर सुधरे।” यह कहते हुए जब शेठ मनमोहन बैठ गए, तो लोगों ने तालियाँ बजाईं। इसके बाद मछुआरों और भंडारी जनजाति के नेताओं ने अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि वे मनमोहन शेठ को अपना पूरा समर्थन दे रहे हैं। यहां, चर्च के पीछे मथुकाका के आउटहाउस में, मथुकाका ने सुबी द्वारा बनाई गई सारंगी कलवन खाते हुए कहा,
"मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि तुम इतना बढ़िया खाना बना रही हो। अरे वाह, क्या सच में ऐसा है, सीतू?"
"बिल्कुल सही। हमारी मम्मी भी इतनी अच्छी फिश करी नहीं बना सकतीं," सीतू ने चावल पर फिश करी डालते हुए कहा।

[illegible] [illegible] [illegible] [

पाँच
उस रात, रासु सारंग अत्यंत प्रसन्नता के साथ पाडी के पास आया और उससे कहा:
"पाडी, मीटिंग के बाद सेठ ने मुझे फोन किया था।"
"क्यों?"
"मछली पकड़ने के उपकरणों का एक बेड़ा आएगा, वे सभी मुझे सौंप दिए जाएंगे।"
पाडी प्रशंसा भरी निगाहों से रसू को देखती रही।
और सोचिए कि वेतन कितना है।
"कितना?"
"दो सौ रुपये!"
"आप क्या कहते हैं?"
"सिटुचियन!"
“अगो बाय गो!” पाडी ने अपना हाथ मुंह पर रखते हुए कहा।
"लेकिन यह बूढ़ा आदमी ऐसा क्यों कर रहा है?"
"कौन?" पाडी ने पूछा।
"मथुकाका! इससे गाँव को तो फायदा होगा, लेकिन बूढ़ा आदमी कहता है कि इससे गाँव को नुकसान होगा। वह पागल हो गया है!"
"ऐसा मत कहो, मथुकाका, वह एक देवता है।"

"मुझे लगा था कि वो ऐसा ही है, पैडे। लेकिन अब मुझे लगने लगा है कि वो सचमुच पागल हो गया है।"
जैसे ही रासु भोजन करने के लिए बैठने ही वाला था, वही फातु गौड़ा दरवाजे पर आया और बोला,
"रासु, सेठ ने तुम्हें बुलाया है।"
रासु की आँखें चमक उठीं। उसने अपनी कमीज़ को बनियान के ऊपर खींचा और पाडी की ओर देखकर बोला।
मुझे अकेला मत छोड़ो।
निंबरदी नदी के किनारे, जहाँ से पुलन मार्ग शुरू होता था, दो तंबू लगाए गए थे। एक तंबू में शेठ मनमोहन, नारायणन और रविंद्र थे। दूसरे छोटे तंबू में, उनके साथ आया रसोइया चूल्हे पर सारंगा तल रहा था।
जैसे ही रासु आया, मनमोहन शेठ खड़े हो गए, आगे आए, रासु का हाथ अपने हाथ में लिया और कहा,
"मैं तुम्हें रात के खाने पर आने के लिए कहना भूल गया था। तुमने अभी तक खाना नहीं खाया है, है ना?"
नहीं। मैं बैठने ही वाला था, लेकिन फिर मुझे थकान महसूस होने लगी।
"ठीक है। सारंग, हमें आप जैसे लोगों की ज़रूरत है जिन्होंने अपना जीवन समुद्र के साथ बिताया हो। हमारे पास कारखाना शुरू करने के लिए पैसा है, कुशल तकनीशियन हैं - लेकिन निंबार्डी के इस समुद्र के बारे में इतना गहरा ज्ञान रखने वाला कोई व्यक्ति हमारे पास नहीं था। हमने आपके बारे में बहुत कुछ सुना है। हमें यह भी पता चला है कि आपने कुछ व्यापारिक जहाजों को तूफान से बचाया है।"

रासु को अपनी ही तारीफ सुनकर थोड़ी खुशी हुई। उसने सिर झुकाया और विनम्रता से हाथ मलने लगा। सेठ मनमोहन ने नारायणन को इशारा किया। नारायणन स्कॉच की बोतल और गिलास आगे लेकर आया।
बोतल का ढक्कन खोलते हुए शेठ ने कहा,
"हमें एक बात से आश्चर्य हुआ है।"
"कौन सा?"
"मथुकाका को यहाँ कारखाने लगाने से आपत्ति क्यों है? हमें समझ नहीं आ रहा। हमारे नारायणन ने उनसे आज रात उनके बाहरी कमरे में रुकने की अनुमति माँगी थी। उन्होंने साफ इनकार कर दिया। मुझे समझ नहीं आ रहा कि वे इतना अजीब व्यवहार क्यों कर रहे हैं।" रासु ने कहा, "वे अब बूढ़े हो गए हैं। उन्हें अच्छे और बुरे के बीच का अंतर समझ नहीं आता।"
"ऐसा लगता है कि वे आपके बेटे पर बहुत फिदा हैं।"
"हां। मुझे बचपन से ही उनसे परेशानी रही है।"
नारायणन रासु को ध्यान से देखते हुए, शेठ ने मनमोहन से कहा,
"आप स्वयं को एक उपदेशक के रूप में क्या मानते हैं, और जब यहाँ के गरीब लोगों की मदद की जा रही हो तो एक उपदेशक अपना विरोध कैसे दिखा सकता है?"
रासु ने कुछ नहीं कहा। सेठ मनमोहन ने अपने लिए एक गिलास और रासु के लिए दूसरा गिलास भरा। तब रासु ने हिचकिचाते हुए कहा,
"मैं क्यों?"
"इसे ले लो!" मनमोहन ने गिलास उठाते हुए कहा और उसे रसू को दे दिया।
"इस लिहाज से देखें तो आज का दिन खुशी का दिन है। निंबार्डी के लोगों ने आज जबरदस्त समर्थन दिया है। आपके सहयोग के बिना हम यहां कुछ भी नहीं कर पाते।"

लेकिन अब रासु ने जरा भी संकोच नहीं किया। उसने गिलास उठा लिया।
शेठ मनमोहन ने रासु से उस क्षेत्र के बारे में बहुत सारी जानकारी मांगी। नारायणन वहां के सभी मामलों की देखरेख करने वाले थे और रासु ने उन्हें हर तरह की मदद देने का वादा किया।
जब रासु आधी रात को घर लौटी, तो पड़ी गहरी नींद में सो रही थी। रासु के दरवाजे पर दस्तक देने के बाद, उसने अंदर से दरवाजा खोला।
सीतु अंदर सो रहा था। वह जागा। उसने अपने पिता की ओर देखा। रसु अपना संतुलन नहीं बनाए रख सका। उसकी दृष्टि अस्थिर हो गई थी। वह दरवाजे से अंदर आया और सीतु को जगा हुआ देखकर बोला,
"तुम्हारे पिताजी क्या कहते हैं?"
दरअसल, सीतु क्रोधित था। उसे यह बात पसंद नहीं थी कि रसु, सेठ मनमोहन की चापलूसी करे और पहले ही दिन से सेठ लोगों की सेवा में लग जाए। उसे मथुकाका पर गहरी आस्था और श्रद्धा थी। सीतु जानता था कि मथुकाका यहाँ आए इन सेठ लोगों का स्वागत नहीं करते। उसके भोले मन को यह एहसास नहीं था कि कारखाने की शुरुआत यहाँ के सरल और सीधे-सादे जीवन में एक बड़ा बदलाव लाएगी। लेकिन सिर्फ इसलिए कि मथुकाका इससे सहमत नहीं थे, इसका मतलब यह नहीं था कि वे इन बदलावों से भी सहमत नहीं थे। उसे इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि उस शाम गाँव में हुई बैठक और गाँव वालों द्वारा सेठ मनमोहन को दिखाए गए सहज समर्थन के कितने दूरगामी परिणाम होंगे। पाडी ने जैसे ही सुना कि रसू आ गया है, उसने रसू को खाना खिलाने के लिए एक थाली ले ली। कोने में बैठा रसू चिल्लाने लगा।
मैंने खाना खाया - मैंने शेठ की थाली में अपनी थाली रखकर खाना खाया। पाडी, अब हमारे अच्छे दिन आएंगे! शेठ मुझसे बहुत खुश हैं।
मैं मैनेजर की सहायक बनूंगी! सीता, बूढ़े आदमी जैसी बातें करना

बंद करो! अरे, लक्ष्मी निंबरदी पहनकर आती हुई दिखाई दी।
लक्ष्मी!
सीतु चिमनी के दीपक की रोशनी में रसू को घूर रही थी, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा।
काफी देर बाद, रासु सो गया।
अगली सुबह, रासु के जागने से पहले, सीतु गिरजाघर के पीछे मथुकाका के बने शौचालय में पहुँच गई।
गिरजाघर के बाईं ओर घाट पर नावों की कतारें थीं। उससे आगे, भंडार्या बस्ती के पास, नारियल का बागान था। नारियल के पेड़ और पत्तियाँ सुबह की हल्की हवा में लहरा रही थीं। कल शाम, मथुकाका यहीं खड़े होकर बोले थे,
"सिटू, अब से तुम्हें खाड़ी का यह कोना, यहाँ की मिट्टी और चट्टानें, घाट पर खड़ी वो छोटी नावें नहीं दिखेंगी। अभी एक बार देख लो।"
उस समय सीतु को यह भी समझ नहीं आया कि मथुकाका ने ऐसा क्यों कहा। सीतु बस उसके चेहरे को देखता रहा, यह समझे बिना कि उसका क्या मतलब है, जबकि मथुकाका ने बस अपना हाथ उसकी पीठ पर रख दिया था। मथुकाका और सीतु के बीच एक अटूट बंधन विकसित हो गया था। मथुकाका का स्पर्श, उनकी निगाहें और उनके शब्द कभी-कभी पाडी के स्पर्श, निगाहों और शब्दों से भी अधिक स्नेहपूर्ण प्रतीत होते थे। सीतु को अब भी समझ नहीं आ रहा था कि निंबरदी में शुरू हो रही नई फैक्ट्री को मथुकाका क्यों नापसंद करते थे। लेकिन आज उन्होंने मथुकाका से इस बारे में खुलकर पूछने का फैसला किया था।
जब सीतु चर्च के पीछे बने शौचालय में गया, तो सुबी शेव कर रही थी। उसका माथा आगे निकला हुआ था। एक हाथ में रेज़र पकड़े हुए, वह दूसरे हाथ से अपनी आँखों पर रेज़र चला रही थी। हाल ही में सुबी

वे नहीं गए। निंबरदी क्षेत्र में दस से बीस ईसाई परिवार थे, जो हर रविवार को प्रार्थना के लिए चर्च आते थे। फादर मैथ्यूज निंबरदी छोड़ना नहीं चाहते थे क्योंकि उन्हें रविवार की प्रार्थना सभा की कमी खलती। हालांकि, भारत और विदेश से कुछ लोग साल में दो-चार बार उनसे मिलने आते थे। फादर मैथ्यूज उन्हें अपने घर के पीछे बने मकान में रहने की व्यवस्था करते थे।
आज मथुकाका को इंग्लैंड से एक पत्र मिला! तीन शौकिया जोड़े एक नाव से भारत के लिए रवाना हो रहे थे।
उन्होंने फादर मैथ्यूज के साथ दो दिन बिताने की इच्छा व्यक्त की थी। पत्र पढ़ने के बाद, मथुकाका ने सीतु और सुबी को पास बुलाया और कहा,
"प्रांत से बहुत सारे आगंतुक आते हैं। हमें पीछे वाले शौचालय की सफाई करनी होगी।"
वे हमारे साथ कब तक रहेंगे?
"वे एक-दो दिन रुकेंगे। इतनी दूर से आ रहे हैं। हम उन्हें मना कैसे कर सकते हैं? ये लोग शहर की जिंदगी से थक चुके हैं। इस पत्र में लिखा है कि हम भारतीय खाना खाएंगे और कोंकण तट पर भारतीयों की तरह चार दिन रुकेंगे। सीतू, सुबी - तुम दोनों बहुत व्यस्त रहोगी, इसलिए मैं आज तित्था जाकर बाशा से उस समय के लिए दो नौकर मांग लूंगी।"
"मुझे कुछ नहीं चाहिए।" सीतू और सुबी दोनों ने एक साथ कहा। "अरे, तुम दोनों उन छह लोगों के बारे में सुनकर हैरान हो जाओगे।" "चाचा जी, सिर्फ छह या दस लोगों को ही आने दीजिए," सीतू ने कहा। "ठीक है। तो क्या मुझे उन्हें पत्र लिखना चाहिए?"
‘‘जरूर!’’
वह समूह मुंबई पहुंच चुका था।

मथुकाका ने उन्हें पत्र भेजकर अपने पास आने का निमंत्रण दिया। उन्होंने उस पत्र के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से सीतु और सुबी का परिचय भी कराया।
सुबी ने साड़ी पर लगे शीशे को साफ किया। सीतू ने एक सरकंडे से झाड़ू बांधी और बाहरी कमरे की दीवार से खरपतवार और पत्तियां हटाने लगी। सुबी सीढ़ी पर चढ़ गई थी और सीतू सीढ़ी को कसकर पकड़े हुए थी ताकि वह फर्श पर न फिसल जाए। सुबी सरकंडे से बंधी झाड़ू से दीवारों की सफाई कर रही थी, उसे पता ही नहीं चला कि सीतू उसकी नंगी जांघों को घूर रही है।
"सिटू," सुबी ने सफाई करते-करते रुकते हुए कहा।
"यह प्रांत कितनी दूर है?"
‘‘बहुत लंबा रास्ता है! आपको सात समुद्र पार करने पड़ेंगे!’’
"ये लोग कहाँ से आए हैं?"
"लॉन्च की बात हो रही है। परसों, शेठ के लोग ही तो लंच लेकर आए थे, है ना? अरे, वो लोग तो बहुत अमीर हैं। वो पानी की तरह पैसा खर्च करते हैं। अब, जब वो आएंगे तब आपको पता चल जाएगा।"
सीतू ने चार कमरों में से दो की सफाई की और सुबी ने भी दो कमरों की सफाई की। सीतू झरने से पानी लेकर आई। बाहरी कमरे के पूरे बरामदे को धोया गया।
साहब लोग स्वच्छता और साफ-सफाई के पक्के होते हैं, उन्हें गंदगी पसंद नहीं होती - यह बात मथुकाका अक्सर कहते थे। उस समय सीतु इस बात का पूरा ध्यान रख रहे थे कि यहाँ आने वाले आगंतुक कोई गलती न करें। तभी सुबी के पिता भिक्कू भंडारी वहाँ पहुँचे। उन्होंने सुबी को देखा, जो पारकारा की खिड़की साफ करने के बाद सीतु के साथ बाहरी कमरे की सफाई कर रहे थे, और उन्होंने कहा,
"तुम आठ-पंद्रह दिनों से घर नहीं गए हो?"

"□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□"
□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□□□
□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□,
"□□□□□? □□□ □□ □□□□□?"
"□□□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□"
"□□□□!" □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ '□□□□ □□□□□□□□□□' □□□ □□□ □□□
"□□□□ □□!" □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□
"□□ □□□□□□ □□□ □□? □□□□ □□□□"
□□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□, □□□ □□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□,
"□□ □□ □□□□□"
□□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□
"□□□□, □□□ □□□□□ □□ □□?"
□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□
□□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□, "□□□□ □□□ □□□□ □□? □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □ □□□ □□□□ □□ □□-□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□?"
□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□□ - □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□
“□□ □□□□ □□□□□ □□? □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□?”
"□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□? □□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□"

"लेकिन क्यों?"
"गांव के लोग अपनी इच्छाओं के बारे में बात करना शुरू कर रहे हैं।"
"तुम किस बारे में बात कर रहे हो?"
"मुझसे यह मत पूछो। मैं सुबी को तुरंत ले लूंगा!"
मथुकाका ने सीटू को बुलाया।
सीतु वहां आई और अपनी कमीज की आस्तीन से अपने माथे से पसीना पोंछ रही थी।
"ओह, यह भिक्षु सुबी को ले जाने आया है।"
सीतु के पीछे-पीछे सुबी भी आई और दरवाजे पर खड़ी हो गई।
"चलो, सुबी!" भिक्षु ने सुबी को देखते ही कहा।
"तुम उसे कहाँ ले जा रहे हो?" सीता ने पूछा।
"तुम्हें पूछने का क्या हक है? क्या तुम उसके पति हो?"
बच्चों के सामने यह बात कहने से मत डरो।
मथुकाका ने भिक्षु से समझदारी भरे लहजे में बात की।
"चाचा जी, मेरी बेटी कुंवारी है। लोगों ने सुना है कि वह यहाँ सीता के साथ रहती थी, तो क्या उसकी शादी होगी?"
"तुम उससे शादी करने की इतनी जल्दी में क्यों हो?"
जैसे ही भिक्षु कुछ कहने ही वाले थे कि भिक्षु की पत्नी आकर बोली,
"चाचा जी, बच्चे को अपने पास मत छोड़िए। यह दरिंदा शराब के लिए बच्ची से शादी करने की फिराक में है! इसने चित्रदुर्ग के सात्वया भंडार्य से सुबी की शादी पाँच सौ रुपये में तय कर ली है। सात्वया की पहले दो बार शादी हो चुकी है।"
भिक्षु अपनी पत्नी के शव को देखकर दर्द से कराह उठा।
"अरे वेश्या, तुम मरने क्यों आई हो?"

अब मथुकाका के दिमाग में एक बात आई। उसे समझ आ गया कि भिक्कू भंडारी सुबह सुबी को क्यों ले गए थे। यह सब देखकर सुबी बहुत रो रही थी। मथुकाका ने उसे अपने पास ले जाकर समझाने की कोशिश की। लेकिन भिक्कू अब भी अड़े हुए थे।
वह चिल्लाते हुए आगे आया, ‘मैं तब तक नहीं रुकूंगा जब तक सुबी को अपने साथ न ले जाऊं,’ और उसने सुबी का हाथ पकड़कर उसे घसीटना शुरू कर दिया। सितु क्रोधित हो गई और चीते की तरह भिक्कू पर झपटी। शराब और विद्या के सेवन से सीना कड़ा होने के कारण भिक्कू तुरंत गिर पड़ा।
मथुकाका को समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। उसने सीतु को एक तरफ ले जाकर कहा, "अरे, आखिर ये तो सुबी के पिता हैं। ये तुमसे उम्र में बड़े हैं। इस तरह जल्दबाजी करना ठीक नहीं है। ये बर्बरता की निशानी है।"
सुबी की मां ने कहा, "हर रोज यह मृत पति मुझे रुला देता है। वह सीधे जमीन में क्यों नहीं चला जाता? उसने तो मृत व्यक्ति को यह भी नहीं देखने दिया कि बच्ची यहां बड़े चाव से दो निवाले खा रही थी।"
भिक्षु के पास पहुँचकर मथुकाका ने अपना हाथ उनके कंधे पर रखा और कहा,
"भिक्खु, अगर तुम्हें पैसों की जरूरत हो तो मैं तुम्हें दे दूंगा, लेकिन इस छोटी उम्र में इस बच्चे के साथ कोई सौदा मत करो।"
"चाचा जी, मैं आपके लिए उसकी देखभाल करने को तैयार हूँ; लेकिन यह गाड़ी बेकार है। मैं उसकी देखभाल नहीं करूँगा," भिक्षु ने सिटु की ओर उंगली करते हुए कहा।
"तुम इससे क्यों डरते हो?"

"वो अभी-अभी मेरे पास दौड़कर आया। एकदम निकम्मा है। मैं तो कल बच्चे की शादी भी नहीं होने देना चाहती। अगर तुम उसे आज ही यहाँ से निकाल दोगे, तो मैं सुबी को रख लूँगी। हाँ, और मुझे आज ही दो सौ रुपये चाहिए!"
मथुकाका भिक्षु की धन संबंधी शर्त तो पूरी कर सकता था, लेकिन वह सीतु को यहाँ से भेजने की शर्त पूरी नहीं कर सका।
"हे भिक्षु, तुम मेरे बाएं हाथ के बदले मेरा दाहिना हाथ लगाने की कोशिश कर रहे हो!" मथुकाका ने निराशा में कहा।
इस पर सुबी की माँ ने कहा, "चाचा जी, मैं आपसे विनती कर रही हूँ। उसे एक पैसा भी मत दीजिए। घर में खाने का एक दाना भी नहीं है। मैं बस जड़-कंद तोड़कर उसका पेट भरने की कोशिश कर रही हूँ। अगर आप उसे पैसे देंगे, तो वह चार-छह दिनों में तैयार हो जाएगा। वह दिन-रात शराब पीता है! वह पूरे गाँव को गालियाँ देता है!"
"अरे वेश्या, यहाँ से जा रही हो या नहीं?" भिक्कू ने उस पर तीखे स्वर में कहा।
मथुकाका ने अपने गंजे सिर पर हाथ फेरते हुए सोचा कि इस अचानक उत्पन्न हुई स्थिति का समाधान कैसे किया जाए। अंत में, उसने धीरे से कहा,
"भिक्षु, मैं इस सीतु को भी यहाँ से जाने के लिए कह देता - लेकिन मुंबई से छह लोग मेरे पास आने के लिए निकले हैं। बताइए, सीतु के अलावा और कौन उन्हें सैर कराएगा, उन्हें यह इलाका दिखाएगा? पूरा गाँव नए आए सेठ के पीछे चल रहा है। कोई यहाँ नहीं आता। इस सीतु के पिता ने भी हाल ही में यहाँ आना बंद कर दिया है। अगर इन दोनों में से एक भी मेरी मुसीबत के समय यहाँ से चला जाए, तो वही मेरा पंचायती सहारा होगा!" मथुकाका ने अपनी कमजोरी जताते हुए कहा।

"तो फिर मेहमानों के जाने के बाद इसे भी चले जाना चाहिए!" भिक्षु ने अपनी शर्त में थोड़ी नरमी बरती।
मथुकाका इस पर तुरंत सहमत हो गए।
"जी हां!" भिक्कू ने तुरंत कहा, "चलो देखते हैं दो सौ रुपये!" मथुकाका ने एक पल भी नहीं सोचा। वह तुरंत अपने कमरे में गया और बक्से से दो सौ रुपये निकाले। सुबी की माँ वहाँ बैठी थी, उसे देखकर मथुकाका ने कहा, "मैं यह अपने लिए कर रहा हूँ, सुबी की माँ, मुझे क्षमा कर दीजिए!"
नोटों को गिनकर और उन्हें बनियान की भीतरी जेब में रखकर भिक्षु चला गया। मथुकाका ने अपने पीछे आ रहे व्यक्ति को देखते हुए कहा, ईश्वर उन्हें ज्ञान प्रदान करें!
“जब तक मर नहीं जाएगा, तब तक होश में नहीं आएगा!” सुबी की माँ खड़ी हुई और मथुकाका से बोली, “इस बच्ची को यहाँ ऐसे मत छोड़ो। यह राक्षस इसे बेचना चाहता है। इसने ज़रूर सात्वय भंडार्य से पैसे लिए होंगे।”
अपने हाथों को हवा में लहराते हुए, मथुकाका ने आकाश की ओर देखा और कहा, "मुझे समझ नहीं आता कि आप मनुष्यों को ऐसी बुरी बुद्धि क्यों देते हैं।"
जब सुबी की माँ जाने ही वाली थी, तब मथुकाका ने उससे कहा,
"सुबी की माँ, अपना मन शांत रखो। चर्च जाओ और प्रार्थना करो। केवल वही अपने बच्चों की प्रार्थनाएँ पूरी करने में सक्षम है।" अपने गले में लटके चांदी के क्रॉस को छूते हुए मथुकाका ने कहा, सुबी की माँ उठीं। वे चर्च के प्रवेश द्वार पर गईं और वहाँ यीशु की मूर्ति को हाथों से थामकर खड़ी हो गईं। वे मन ही मन कह रही थीं, "गाँव में पानी नहीं था; आपने मुझे पानी दिया। अब मेरी एकमात्र इच्छा है कि मैं अपनी सुबी को इस राक्षस से बचा लूँ।"

मथुकाका ने अपने दोनों ओर खड़े सीतु और सुबी को देखा, एक लंबी आह भरी और नीले आकाश में दिखाई दे रहे गिरजाघर के क्रॉस को देखते हुए उन दोनों से कहा,
"काफी हंगामा हुआ था; लेकिन मुझे इस बात की चिंता है।"
समुद्र की लहरें पहाड़ी की तलहटी से टकरा रही थीं। दूर स्थित मदा पहाड़ियाँ डोल रही थीं।
०००

छह
पावने के आगमन के दिन, मथुकाका सुबह जल्दी उठ गए। सीतु भी अंधेरा रहते ही गिरजाघर आ गई। सुबी भी वहीं रहती थी। सीतु और सुबी दोनों के कहने पर ही मथुकाका ने पावने को बताया था कि उन्हें अवश्य ही 'आकर ठहरना चाहिए'।
जैसे ही सूर्य की किरणें पूरब के घने पेड़ों से होकर ऊपर उठीं, गिरजाघर का शिखर दिखाई देने लगा। निंबार्डी गाँव के चारों ओर रात भर छाया रहा कोहरा छंटने लगा। जैसे-जैसे सूर्य थोड़ा और ऊपर चढ़ा, गिरजाघर से दिखाई देने वाले दक्षिण और उत्तर के पीले क्षितिज पीले रंग से चमकने लगे। ज्वार कम होने के कारण किनारा शांत प्रतीत हो रहा था।
लगभग नौ बजे, मथुकाका दूरबीन लेकर बैठ गए और समुद्र को निहारने लगे। काफी देर तक उनकी दूरबीन पश्चिमी क्षितिज पर नौका को खोजती रही; लेकिन नौका का कोई निशान नहीं दिखा। एक पल के लिए उनके मन में एक बुरा ख्याल आया - कहीं कोई दुर्घटना तो नहीं हो गई? उन्होंने अनजाने में अपने गले में लटकी क्रॉस को छुआ और चर्च के कोने की ओर देखा। यह तो तय था कि ये लोग लंदन से मुंबई तक सुरक्षित पहुँच गए थे। मुंबई से यहाँ तक के रास्ते में क्या हुआ होगा? उन्होंने निश्चित संदेश दिया कि 'हम ठीक नौ बजे निंबार्डी के तट पर पहुँच रहे हैं।' मैं चिंतित हो गया।
एडम्स और ब्राउन प्रसिद्ध समुद्र विज्ञानी थे। रैटक्लिफ एक मैकेनिक थे। यात्रा के दौरान उनके भटकने की कोई संभावना नहीं

थी; अगर लॉन्च का इंजन खराब हो जाता, तो रैटक्लिफ अकेले ही उसकी मरम्मत करने में सक्षम थे। तीनों की पत्नियां भी उनके साथ थीं। लगभग 10:30 बजे, पश्चिमी क्षितिज पर एक छोटा सा बिंदु दिखाई दिया, जिसे सबसे पहले सीतु ने देखा था।
"चाचा जी, चाचा जी - उसे देखिए - वह लाल बिंदु वहाँ कैसा दिख रहा है?"
मथुकाका ने अपना चश्मा ठीक किया और दूरबीन को उस दिशा में घुमाया। सुबह नौ बजे से चिंतित दिख रहे उनके चेहरे पर अचानक चमक आ गई। दूरबीन को अपनी आँखों से लगाए रखते हुए मथुकाका ने कहा, "सिटू, तुम्हारी नज़रें कितनी तेज़ हैं! प्रक्षेपण बिल्कुल झंडे के खंभों की तरह है, यूनियन जैक लहरा रहा है। वे लोग सीधे हमारी दिशा में आ रहे हैं। देखो तुम कितनी सटीकता से दिशा का अनुमान लगा रहे हो!"
"चाचा जी, उन लोगों को यहाँ आने का पता कैसे चला जबकि वे पहले कभी यहाँ नहीं आए थे?"
"इसे कहते हैं पढ़ाई! अरे वाह, इनके पास कंपास है। ये बिल्कुल सही-सही बता सकते हैं कि हमें किस दिशा में जाना चाहिए। जाओ, सुबी को बुलाओ। क्या उसने कपड़े बदले हैं?"
मथुकाका ने सुबी के लिए एक नई स्कर्ट और ब्लाउज सिला था। उन्हें पहनकर और अबोली फूलों की माला लगाकर, वह भी मेहमानों का स्वागत करने के लिए तैयार थी।
अब नौका बहुत करीब थी। इंजन की आवाज़ भी साफ सुनाई देने लगी। चर्च के पीछे चट्टान पर खड़े सफेद वस्त्रधारी मथुकाका ने हाथ हिलाया। नौका के बाहर खड़े पांच लोगों ने अपने रुमाल लहराए।
सीतु जल्दी से चट्टान पर उतरा। वह नौका को लंगर डालने के लिए उपयुक्त जगह दिखाने के लिए आगे बढ़ा।

हजारों मील का समुद्री सफर तय करके आए एडम्स और ब्राउन इतने अनुभवहीन क्यों थे? उन्होंने नाव को दो चट्टानों के बीच एक संकरी जगह में उतारा। एडम्स ने उसे पास के एक पेड़ के तने से मजबूत नायलॉन की रस्सी से बांध दिया। ब्राउन ने तख्ते को चट्टान तक सरकाया, और तीनों पत्नियां हंसती-हंसती किनारे पर उतर गईं।
"मेरा नाम सीतू है, मैं फादर मैथ्यूज के साथ रहती हूँ।" सीतू ने लोगों से अपना परिचय दिया।
"अरे! सुबी कहाँ है?" रैटक्लिफ ने पूछा।
"वह वहीं है!" सीतु ने सुबी की ओर इशारा किया, जो मथुकाका के पास ऊपर चट्टान पर खड़ी थी।
"प्लीज़, आइए," सीतु ने उनसे कहा।
फिर ब्राउन ने कहा, "एक मिनट रुको, नौजवान।"
उसने अपना सारा सामान बाहर निकाल लिया। एडम और रैटक्लिफ ने उसे उतारा। महिलाओं ने जल्दी से कुछ सामान उठा लिया। उनमें एयर मैट्रेस, तकिए और कपड़ों के थैले थे। रैटक्लिफ के पास एक अच्छी राइफल भी थी।
आपस में मजाक करते हुए, सभी लोग पश्चिमी तरफ की चट्टान पर चढ़ गए।
फादर मैथ्यूज आगे आए और उन सभी से हाथ मिलाया। श्रीमती ब्राउन ने निंबार्डी बीच की ओर देखते हुए कहा, “कितना अद्भुत नज़ारा है! हे भगवान, इन नारियल के पेड़ों को देखो!”
‘‘याऽऽऽह, दे लुक लाइक द सी-शोअर गार्डस्!’’
फादर मैथ्यूज सबसे पहले उन सभी को चर्च के सामने ले आए। उन्होंने संक्षेप में बताया कि चर्च कब बना था, अब तक यहाँ कौन-

कौन से फादर आ चुके थे, और फिर उन्हें पीछे बने शौचालय में ले गए।
"श्री ब्राउन, यह निंबरदी गाँव है। यह इस तरफ कोलीवाड़ा है और यह यहाँ भंडारीवाड़ा है। इनमें से कुछ भंडारी ईसाई हैं।"
"मैं समझ गया! लेकिन इस चर्च को यहाँ बनाने का विचार करने वाले बिशप को सलाम! देखिए उन्होंने कितनी खूबसूरत जगह चुनी है। दोनों तरफ चौड़ा समुद्र तट और उसके पीछे ये चट्टानें... हमारे यहाँ भी समुद्र तट हैं; लेकिन हमें ऐसा शानदार नज़ारा देखने को नहीं मिलता," ब्राउन ने कहा।
श्रीमती ब्राउन ने कहा, "समुद्र तट पर कारखाने और उद्योग हैं। इसी वजह से समुद्र तट की सुंदरता लुप्त हो गई है।"
"भारत कितना भाग्यशाली है। हमारे यहां अभी तक हमारे जैसी फैक्ट्रियां और मिलें नहीं हैं," श्रीमती एडम्स ने अपनी दाहिनी ओर खाड़ी के किनारे फैली मछुआरों की झोपड़ियों को देखते हुए कहा।
इस पर मथुकाका ने कहा, "यह इलाका आज शांत और खूबसूरत दिख रहा है, लेकिन अगले साल यह ऐसा नहीं दिखेगा।"
"क्यों?" रैटक्लिफ ने सिगरेट जलाते हुए पूछा।
"यहाँ जल्द ही दो कारखाने स्थापित होने वाले हैं। मछली डिब्बाबंदी और कोल्ड स्टोरेज!"
"क्या! कोल्ड स्टोरेज?"
"जी हां! इस समुद्र में बड़े आकार के झींगे बहुतायत में पाए जाते हैं," फादर मैथ्यूज ने कहा।
"झींगे? क्या वे अभी उपलब्ध हैं?"
फादर मैथ्यूज मुस्कुराए और बोले, "आज हम आपके लिए कुछ बहुत ताज़े झींगे लाए हैं। सुरमई और सारंगा जैसी स्वादिष्ट मछलियाँ

भी इस क्षेत्र में बहुतायत में पाई जाती हैं। इसीलिए सेठ ने यहाँ कारखाने शुरू करने का फैसला किया है।"
"पिताजी!" श्रीमती ब्राउन ने उदास चेहरे से कहा, "ईश्वर की कृपा से, यहाँ कारखाने शुरू मत होने दीजिए। इस जगह की पवित्रता और शांति नष्ट हो जाएगी। मैं दिल से आशा करती हूँ कि इन लोगों को औद्योगीकरण के उस अभिशाप का सामना न करना पड़े, जिसका सामना हम पश्चिमी देशों में आज कर रहे हैं।"
"श्रीमती ब्राउन!" एडम्स ने रूमाल से अपने चश्मे के लेंस पोंछते हुए कहा, "जब तक इस देश की आबादी सूअरों की तरह बढ़ती रहेगी, औद्योगीकरण भी बढ़ता रहेगा। डिब्बाबंदी और कोल्ड स्टोरेज का काम छोड़ दीजिए। इससे कम से कम यहां के लोगों को रोजगार तो मिलेगा। पिताजी, क्या मैं जो कह रही हूं वह सच है?"
"बिल्कुल सही! ये लोग पीढ़ियों से गरीबी से जूझ रहे हैं। उन्हें चार पैसे तो जरूर मिलेंगे; लेकिन मुझे नहीं लगता कि उनके जीवन स्तर में कोई सुधार होगा।"
जब वे बरामदे के सामने बातें कर रहे थे, तभी सुबी चाय की थाली लेकर आई। बरामदे में एक लंबी मेज थी। सभी लोग उस मेज के चारों ओर इकट्ठा हो गए। श्रीमती ब्राउन ने सुबी को गौर से देखा और उसकी सुंदरता की प्रशंसा करने लगीं। उसके गेहुँए रंग, लाल पलकों वाली नम आँखों और लंबे काले घुंघराले बालों को देखकर श्रीमती एडम्स ने कहा, "यह तो सचमुच एक भारतीय सुंदरी है! पिताजी, अगर यह लड़की मेरे साथ आए, तो मैं इसे इंग्लैंड ले जाऊँगी।" सुबी का हाथ अपने हाथ में लेते हुए श्रीमती एडम्स ने कहा, "क्या तुम मेरे साथ आओगी?"
सीतू को अंग्रेजी समझ आती थी, और वह थोड़ी-बहुत बोल भी सकती थी! लेकिन सुबी को अंग्रेजी का ज़रा भी ज्ञान नहीं था। वह शर्म से

सिर झुकाए वहीं खड़ी रही। लेकिन उसे गलतफहमी हो गई थी कि उसकी सुंदरता की प्रशंसा की जा रही है।
श्रीमती रैटक्लिफ ने सबके लिए चाय बनाई। सबने खड़े-खड़े ही चाय पी। फिर मथुकाका ने सबको उनके कमरे दिखाए। सब अपना-अपना सामान अपने-अपने कमरों में ले गए और उसे व्यवस्थित किया।
"अगर आप लोग एक बजे लंच कर लें तो ठीक रहेगा! उससे पहले क्यों? " "पिताजी, कृपया दोपहर के भोजन की चिंता न करें। हमने अभी नाश्ता किया है। अब हम ठंडे पानी से नहाना चाहते हैं। आप कैसे हैं, श्रीमान ब्राउन?"
"ज़रूर!" ब्राउन ने कहा।
"यह तालाब पानी से भरा हुआ है। लेकिन अगर आप नीचे उतरकर झरने के पास जा सकें, तो देखिए। पास ही में स्वच्छ और ठंडे ताजे पानी का एक झरना बहता है।"
‘‘दॅटस् गुड!’’
तीनों आए हुए लोग और उनकी पत्नियाँ, सभी उस झरने की ओर चल दिए। चलते-चलते सितु ने उन्हें अपने जर्जर हो चुके अंग्रेज़ी झरने की कहानी सुनानी शुरू कर दी। उसने यह कहानी अपने माता-पिता से सुनी थी। सभी ध्यान से सुन रहे थे। वे अंग्रेज जो नाव से भारत आए थे, जो इतने साहसी थे, बिल्कुल भी अंधविश्वासी नहीं थे। लेकिन उन्हें यह सुनकर खुशी हुई कि इस घटना ने यहाँ के लोगों के बीच फादर मैथ्यूज के प्रति सम्मान पैदा कर दिया था।
जैसे ही पुरुषों ने अपने कपड़े उतारे, महिलाओं ने भी केवल लंबी आस्तीन वाली शॉर्ट्स और ऊपर से केवल ब्रा पहन रखी थी। किशोरावस्था में कदम रख रही सीतु ने यह देखकर दिल की धड़कन तेज कर ली। लेकिन तीनों गोरी स्त्रियाँ, बिना किसी रोक-टोक का पालन किए, झरने के पास बने तालाब में कूद पड़ीं और एक-दूसरे पर पानी

फेंकने लगीं। तीनों पुरुष भी इस मस्ती में शामिल हो गए। सीतु ने अपने जीवन में पहली बार पुरुषों और महिलाओं को एक-दूसरे के इतने करीब आते देखा था।
"चलो, नौजवान।" ब्राउन ने भी सीतू को पुकारा; लेकिन सीतू ने आगे बढ़े बिना ही दूर से कहा, "नहीं, नहीं! नहीं, नहीं! मैंने सुबह स्नान कर लिया है।"
स्नान के बाद वे चर्च लौट आए। श्रीमती ब्राउन ने अपने गीले सुनहरे बालों को पीछे छोड़ते हुए कहा, "हम कल समुद्र तट पर तैरने जा रहे हैं।"
"सचमुच, यह समुद्र तट तैरने के लिए बहुत सुंदर है।"
मथुकाका ने सुबी की माँ को बुलाकर उसकी मदद करने का सोचा था। लेकिन सुबी ने इस विचार का विरोध किया। वह उन्हें दिखाना चाहता था कि वह अकेले ही उन मेहमानों के लिए इंतज़ाम कर सकता है। माँ जो झींगे तल रही थी, उनकी स्वादिष्ट खुशबू दूर तक फैली हुई थी। रैटक्लिफ ने ज़ोर से सूंघते हुए कहा,
"ब्राउन, जब तक हम यहां हैं, हम पूरा भारतीय भोजन करेंगे। देखते हैं क्या होता है।"
"तुम्हारा पेट खराब हो जाएगा। ये भारतीय बहुत मिर्च खाते हैं।" "अरे नहीं! नहीं, नहीं!" उसकी बात सुनकर मथुकाका आगे आया और बोला,
मैंने अपनी सुबी को चेतावनी दी है कि वह मिर्च का इस्तेमाल बिल्कुल न करे। उसने नारियल के रस में जो 'इस्वान' बनाया है, उसे ज़रूर चखें। मछली और चावल के साथ नारियल की करी!
"ठीक है, पिताजी! सहमत हूँ!" ब्राउन ने कहा।
फिर वे तहखाने में रखी बीयर की बोतलें खोलते चले गए। फादर मैथ्यूज जानते थे कि दंपति मौज-मस्ती के लिए निकले थे, और

उन्हें अपनी मर्जी से करने की छूट दी जानी चाहिए। इसलिए मथुकाका जानबूझकर वहां नहीं गया था।
उन लोगों को सुबी का खाना इतना पसंद आया कि सब उसकी तारीफ करने लगे। जब मथुकाका को इन लोगों का पहला पत्र मिला, तो उन्होंने उसमें सीतू और सुबी के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी थी। रात के खाने के बाद, जब सब लोग बाहरी कमरे में मथुकाका के कमरे में इकट्ठा हुए, तो रैटक्लिफ ने कहा, "देखो, मुंबई से इन दोनों के लिए जो कपड़े हम लाए हैं, क्या वो इन्हें फिट आते हैं। अगर नहीं आते, तो श्रीमती ब्राउन हमारे यहाँ रहते हुए उन्हें सिलवा देंगी।" "ओह! बिल्कुल सही!" ब्राउन ने कहा और अपने कमरे में जाकर दोनों के लिए कपड़ों से भरा एक थैला ले आया। उसने थैला खोला। उसमें सीतू के लिए दो ऊनी पैंट और दो मनिला, तथा सुबी के लिए स्कर्ट, ब्लाउज और पेटीकोट थे। सीतू कपड़े देखकर बहुत खुश हुई। उसे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि गरीब लोग उसके लिए इतने महंगे कपड़े लाएंगे। सुबी ने पहले कभी इतने भारी कपड़े नहीं पहने थे। उसने ऐसे कपड़े पहले कभी नहीं देखे थे। वह अचंभित थी। थोड़े से बदलाव के साथ ये कपड़े दोनों के लिए उपयुक्त थे।
जब भी मथुकाका के घर कोई मेहमान आता, गाँव के जाने-माने लोग उनसे मिलने आते थे। लेकिन लोग नाराज़ थे क्योंकि मथुकाका मनमोहन शेट द्वारा शुरू की जाने वाली दो फैक्ट्रियों के खिलाफ थे। इंग्लैंड से इतने सारे लोग आने के बावजूद, कोई भी गाँव नहीं आया। रसु सारंग के मथुकाका, सीतू के पिता, अक्सर आते-जाते रहते थे; लेकिन वे भी नहीं आए। मथुकाका मन ही मन बहुत दुखी थे।
उन्होंने अपनी अंदरूनी नाराज़गी को ज़रा भी ज़ाहिर नहीं किया।
दोपहर के भोजन के बाद, परिवार अपने-अपने कमरों में सो रहा था।
सीतू और सुबी मथुकाका के कमरे में थे। तभी मथुकाका ने कहा,

‘‘सिटु, तो तुमने पाव्नेलोक की बातें नहीं सुनीं?’’
"क्या कह रहे थे?"
"अगर यहां वे कारखाने शुरू हो गए, तो यहां की शांति और पवित्रता नष्ट हो जाएगी।"
"चाचा जी, मुझे भी लगता है कि उन लोगों को यहां कारखाने बनाने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।"
"बेटा, तुम्हारे बताने से क्या फायदा? पूरा गाँव उनके साथ खड़ा है। यहाँ तक कि जो लोग पिछले रविवार सुबह प्रार्थना करने आते थे, वे भी नहीं आए। खैर, तुम मुझसे असहमत हो सकते हो; लेकिन भगवान ने क्या गलत किया है?"
"अगर उन लोगों की नावें यहाँ आती हैं, तो किसी को उन्हें डुबो देना चाहिए!"
"छी छी! इसके बारे में सोचना भी मत, सिटु। हमें दूसरों को नुकसान पहुँचाने के बारे में सोचना भी नहीं चाहिए। हमें समझना चाहिए कि इस दुनिया में जो कुछ भी होता है, वह यीशु की इच्छा के अनुसार होता है। चलो, इस विषय पर बात ही न करें। सुबी, आज शाम इन बच्चों के लिए क्या बना रही हो?"
"आप इसे अपनी पसंद के अनुसार बना सकते हैं। क्या हम सूखे ज्वार और तुरतिया का कलवन बनाएं? आजकल नाले में बहुत सारी तुरतिया मिल रही हैं। क्या लोग इन्हें खाएंगे?"
"खाना न खाने का क्या हुआ? वे लोग तो आपके खाने से वाकई बहुत खुश हैं!"
"चाचा जी, क्या आपने हमें कपड़े लाने के लिए पत्र लिखा था?" सीतू ने पूछा।
"अरे बाप रे! मैंने तो बस इतना ही लिखा था, 'मेरे पास जो दो लोग हैं, उनमें से एक सोलह-सत्रह साल का लड़का है और दूसरी चौदह-

पंद्रह साल की लड़की है।' इसी विवरण के आधार पर ये लोग आपके लिए कपड़े लेकर आए हैं।"
"आप यहाँ क्यों आए हैं?" सुबी ने पूछा।
मथुकाका हँसते हुए बोला,
"मैं बूढ़े आदमी के लिए क्या लाऊं? शायद मैं शराब की एक बोतल लाऊं। क्रिसमस के लिए बस इतना ही काफी होगा।"
"ये लोग शराब की बोतलें पीते हैं, फिर भी इन्हें नशा क्यों नहीं होता?" सीतू ने पूछा।
"अरे, ये तो वाइन नहीं, बीयर है। ये एक ही चीज़ है, लेकिन अगर आप चार बोतल भी पी लें तो भी कोई असर नहीं होगा। शाम को वे व्हिस्की पीते हैं - लेकिन देखिए वे कितना पीते हैं।"
"नहीं तो, वे हमारी मौजूदगी में भी शराब पी लेंगे! वे ठीक से चल भी नहीं पाएंगे। वे कहीं भी गिर पड़ेंगे! आप जो भी चाहेंगे, वे भाग जाएंगे!" सीतु ने कहा।
जब वे बातें कर रहे थे, तभी नीचे आंगन से ज़ोर-ज़ोर से धमाके और रोने की आवाज़ें आने लगीं। सीतू पूर्वी किनारे की ओर भागी और एक पेड़ के तने को पकड़कर यह देखने लगी कि शोर किसके घर से आ रहा है।
तभी उसने फातु भंडारी को गिरजाघर की ओर दौड़ते हुए देखा। वह झरने की ओर से पहाड़ी पर चढ़ गया। यह सोचकर कि वह मथुकाका की ओर आ रहा है, सीतु भी वापस मुड़ गया।
पसीना बहाती हुई फातु पहाड़ी पर चढ़कर दौड़ रही थी। मथुकाका को एहसास हो गया था कि कुछ गड़बड़ है। हांफती हुई फातु को थोड़ी देर शांति से बैठने देना ज़रूरी था।
उसने अपनी फटी हुई कमीज से माथे और गर्दन से पसीना पोंछा और सुबी को सहानुभूति से देखते हुए मथुकाका से कहा,

“ये सुबी के पिता हैं, भीकु भंडारी मेला!”
"तुम क्या कह रहे हो?" मथुकाका ने फातु की छड़ी पकड़े हुए पूछा। "उसे क्या हुआ?"
"वह सुबह थित्था में मुझसे मिला। वह बाशा मां के होटल के सामने रुका हुआ था। मैंने कहा, 'चलो, मैं तुम्हें निंबरदी ले चलता हूं।' उसने कहा, 'मैं नहीं आऊंगा।' जब मैं यहां आया, तो बाशा मां ने उसे डांटा और भगा दिया। जब वह नाले पर बने रस्सी के पुल से आ रहा था, तो उसका संतुलन बिगड़ गया और वह गिर गया; वह सिर के बल गिरा और मौके पर ही उसकी मौत हो गई!"
"अरे बाप रे! सुबी, तुम्हारे घर में एक बुरी घटना घटित हो गई है!" सुबी रोने लगी। सुबी को रोते देख सीतू की आंखें भी नम हो गईं। लेकिन शोर सुनकर ब्राउन दंपति जाग गए और बाहर आ गए।
सुबी को अपने पिता की मृत्यु की सच्चाई पता चलते ही उसने रैटक्लिफ और एडम्स को जगाया। सच्चाई जानकर उन्हें भी बहुत दुख हुआ। वे कहने लगे कि वे भी मथुकाका के साथ बीमार पड़ जाएंगे। "तुम लोग यहाँ क्यों आते हो? यहाँ लोग किसी की मृत्यु होने पर चिल्लाते और हंगामा करते हैं। इसके बजाय, तुम यहीं रुकते हो," मथुकाका ने उनसे कहा।
"चलिए देखते हैं कि यह दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना कैसे हुई," रैटक्लिफ ने अपने कपड़े टांगने के लिए कमरे में जाते हुए कहा। अंततः, मथुकाका और सभी लोग सुबी के साथ भंडारीवाड़ा पहुँचे। भंडारीवाड़ा सुबी के घर के सामने इकट्ठा था। भिक्कू के दूर के रिश्तेदार रो रहे थे और चिल्ला रहे थे; लेकिन आश्चर्य की बात यह थी कि सुबी की माँ की आँखों में एक भी आँसू नहीं था। ऐसा कैसे हो सकता था? भिक्कू ने जीवन भर उसे सताया था। उसने शराब के लिए पैसे जुटाने के चक्कर में उसे कई बार इतना पीटा था कि उसका मुँह

सूज गया था। उसने उसके शरीर पर एक भी मनका नहीं रखा था। घर में भूख से परेशान होने के कारण उसने बच्चे को मथुकाकाकांका के रूप में काम पर लगा दिया था। लेकिन उसने चित्रदुर्ग के सत्व भंडारी से उस बच्चे के लिए भी सौदा कर लिया था। सुबी की माँ को उस भिक्कू से कोई प्रेम नहीं था जिसने शराब के लिए अपना पेट बेच दिया था। उसके अनुसार, वह बहुत पहले मर चुका था, जबकि वह जीवित था।
जब सुबी की मां ने यह खबर सुनी कि 'भीकू नशे में धुत होकर नाले पर बने रस्सी के पुल से गिरकर मर गया', तो उनके चेहरे पर जरा भी भाव परिवर्तन नहीं आया। इसके विपरीत, भीकू के दूर के रिश्तेदार चिल्ला रहे थे और दुख जताने का नाटक कर रहे थे।
सुबी को घर पर छोड़कर, मथुकाका और उसके साथ आए छह नौकर नाले पर बने रस्सी के पुल की ओर चले गए।
नदी सूखी थी। नीचे चट्टानें थीं। एक चट्टान के पास एक भिक्षु का बेजान भूत पड़ा था, जिसकी सिर चीर कर दी गई थी। पुल पर तैनात कांस्टेबल पंचनामा करने नीचे आया था। पुल पर भीड़ जमा होने से रोकने के लिए, एक बार में केवल एक ही व्यक्ति को पार करने की अनुमति थी।
ब्राउन और उनके साथियों ने ऊपर से शव देखा। एडम्स ने कहा, "कितनी दुखद मौत है!"
''हाँ! यह तो आदतन शराबी था!” मथुका ने कहा.
"खराब किस्मत!"
दरअसल, मथुकाका यात्रा पर आए मेहमानों की खुशी को कम होने से बचाने के लिए संघर्ष कर रहे थे। लेकिन इन लोगों को आज यहां न आने के लिए कहने के बावजूद, उन्होंने उनकी बात नहीं मानी।

श्रीमती एडम्स एक बहुत ही भावुक महिला थीं। उन्हें अपने पिता की मृत्यु की घटना याद थी! मैनचेस्टर के दक्षिण में एक छोटे से गाँव को जोड़ने वाला पुल बनाते समय, श्रीमती एडम्स के पिता फिसलकर गिर गए और मौके पर ही उनकी मृत्यु हो गई।
वहां से लौटते समय फादर मैथ्यूज ने कहा,
"पिछले दिन उसने मुझसे दो सौ रुपये लिए थे। उसे नशे की बुरी लत थी। लेकिन मैंने कभी नहीं सोचा था कि उसकी मौत इतनी दुखद होगी।" “लेकिन पिताजी!” रैटक्लिफ ने पूछा, “भारत एक उष्णकटिबंधीय देश है, तो यहाँ के लोग गर्म पेय कैसे पीते हैं?”
"श्री रैटक्लिफ, मैं आपको क्या बताऊं - भारतीयों के व्यवहार में कुछ विचित्रताएं हैं। यह भिक्षु हर चार से आठ दिन में अपनी पत्नी को पीट-पीटकर मार डालता था... वह एक बार बच निकली!"
बातचीत के दौरान उनकी मुलाकात बशाममु से हुई। दुर्घटना की खबर सुनकर वह भी वहां आया था। बशाममु के हस्तक्षेप के कारण ही सुबी को फादर मैथ्यूज के यहां काम करने का मौका मिला था।
"देखिए चाचा जी, उस भिखारी ने क्या किया है? जब से उसे आपसे पैसे मिले हैं, वह दिन-रात शराब पी रहा है। आपने उसे इतने पैसे क्यों दिए?"
"मैं क्या करूं? मैं सुबी को घसीटकर ले जाने वाला था। यही सही समय था। मैं सुबी को पीछे नहीं छोड़ना चाहता था।"
"तुम्हें उसे मेरे पास भेजना चाहिए था। मैं उसे ठीक से पानी दे देता।"
"मुझे बताओ कि मुझे क्या करना चाहिए। अभी भी मुझे ऐसा लगने लगा है कि मैं अप्रत्यक्ष रूप से उसकी मौत के लिए जिम्मेदार था।" "अरे! ऐसी बातें अपने दिमाग में मत लाओ। उसकी मौत शराब में मिलाई गई थी। तुम उसके साथ क्या करोगे?"

अब मथुकाका के सामने एक नई समस्या खड़ी हो गई। भक्तों के इस समूह के लिए भोजन की व्यवस्था कैसे की जाए?
"बाशा, सुबी के लौटने तक मेरे लिए एक और लड़की भेज दो जो बहुत खाना बना सके। ये लोग दो-चार दिन रुकेंगे।"
"ठीक है। अगर मुझे वो लड़की नहीं मिली, तो मैं उसे अपने होटल के वेटर रंजंकर के पास भेज दूंगा।"
"भाई, किसी को भेजो।"
मथुकाका सुबी की मां को सांत्वना देने के लिए सुबी के घर आए। तब तक सुबी के घर में भीड़ थोड़ी कम हो चुकी थी। सुबी की मां झोपड़ी की दीवार से टेक लगाकर बैठी थीं। सुबी उनके बगल में बैठी थी। अंदर, भंडारा परिवार की दस-बारह पत्नियां उन्हें सांत्वना देने आई थीं। मथुकाका वहां पांच-छह मिनट रुके और वापस चले गए। निंबरदी गांव शोक में डूबा हुआ था। भिक्कू ऐसा व्यक्ति नहीं था जिससे कोई भी दोस्ती करना चाहे। इसके विपरीत, वह अपने किसी भी परिचित से चार-आठ आने मांग लेता था। अगर पैसे नहीं मिलते तो वह किसी को डांटता और सड़क की मरम्मत करवा देता। उसके मरने पर कोई भी पीछे नहीं छूटेगा - यहां तक कि उसकी पत्नी भी नहीं! लेकिन उसकी मृत्यु का तरीका सबके लिए बेहद दुखद था।
जब मथुकाका पवहानिया लेकर चर्च लौटा, तो उसने कुछ अनिच्छा से कहा, "अब हमें शाम का खाना खुद ही पकाना होगा।"
"चिंता मत करो, पिताजी। बिल्कुल भी चिंता मत करो। लंदन छोड़े हुए डेढ़ महीना हो गया है। लॉन्च के दिन हमारे लिए खाना कौन बना रहा था? हम तो अपना खाना खुद बना रहे थे!" ब्राउन ने कहा।
"मुझे पता है बच्चों। लेकिन ये दुख की बात है कि मेरे पास आने के बाद तुम्हें इसे पकाना पड़ेगा। उन्होंने कहा था कि वो एक रसोइया भेजेंगे; लेकिन मुझे नहीं लगता कि वो सुबी की तरह खाना

बना पाएगा। इतनी छोटी बच्ची, पर खाना बनाने में बहुत माहिर हो गई है। अब वो चार-आठ दिन तक नहीं आ पाएगी।"
दोपहर करीब चार बजे बाशा द्वारा भेजा गया रसोइया पहुंचा। लेकिन उसके गंदे कपड़े देखकर मथुकाकाओं ने उसे भगा दिया।
भिक्षु के पार्थिव शरीर का पंचनामा संपन्न होने के बाद, तालुका से एक चिकित्सक को बुलाया गया और नदी के किनारे ही उनका पोस्टमार्टम किया गया। पार्थिव शरीर को तालुका ले जाने की बजाय चिकित्सक को यहाँ बुलाना अधिक सुविधाजनक था। इसके बाद, निंबरदी नदी के किनारे ही भिक्षु के पार्थिव शरीर का अंतिम संस्कार किया गया। इस प्रकार दिन व्यतीत हुआ।
रात के लगभग आठ बज रहे थे। आगंतुक कम से कम कुछ नाराज़ तो लग ही रहे थे। ब्राउन, एडम्स और रैटक्लिफ चर्च के सामने आंगन में फादर मैथ्यूज से बात कर रहे थे। तभी पूरब से एक व्यक्ति आता हुआ दिखाई दिया। दूर से वह उसे पहचान नहीं पाया। लेकिन जैसे ही वह पास आया, सिटु ने कहा, "अंकल, सुबी आ गई है!"
"क्या, सुबी आज ही आई है?"
सुबी स्नान करने के बाद चर्च आई थी, उसने अपने बाल पीठ पर खुले छोड़ रखे थे और अपनी माँ की साड़ी पहनी हुई थी। मथुकाका के पास पहुँचकर उसने कहा,
"माँ ने कहा कि इससे मेहमानों को असुविधा होगी।"
"वह स्त्री धन्य है!"
वह कह रही थी कि वह आ रही है।
"अच्छा हुआ कि तुम उसे नहीं लाए। उसने तो मुझे गांववाले की तरह समझना शुरू कर दिया है; उसके पति की मृत्यु के बाद पहले ही दिन जब वह घर छोड़कर यहां काम करने आई थी, तो पूरा भंडारी समुदाय

हैरान रह गया होगा! रसोई में जाओ। देखो श्रीमती ब्राउन, एडम्स और रैटक्लिफ क्या पका रही हैं। आज कुछ मत करो। आराम करो।"
सुबी धीरे-धीरे रसोई की ओर चली गई। सीतू भी उसके साथ गई। उन दोनों के जाने के बाद, मथुकाका ने तीनों लड़कियों को संबोधित करते हुए कहा,
"ये दोनों लड़के यहाँ हैं, इसलिए मेरी अकेली ज़िंदगी थोड़ी और सहनीय हो गई है। क्या आप नहीं देख सकते कि वे मुझसे कितना प्यार करते हैं?"
०००

सात
चार दिन ठहरने के बाद मेहमान चले गए। जाते समय उन्होंने मथुकाका को धन्यवाद दिया, साथ ही सीतू और सुबी को भी धन्यवाद दिया। सुबी चर्च इसलिए आई थीं ताकि मथुकाका के मेहमानों को कोई असुविधा न हो, भले ही उनके जन्मदाता पिता का निधन हो गया था। सीतू ने उन्हें निंबरदी का पूरा इलाका दिखाया था। वह उन्हें समुद्र तट पर तैराकी के लिए ले गया था। अपनी टूटी-फूटी अंग्रेजी में उसने उन्हें उस इलाके की कई कहानियाँ भी सुनाई थीं। सीतू उन्हें अपनी छोटी नाव में बिठाकर मछली पकड़ने ले गया था। जब खाड़ी का पानी कम हुआ, तो उसने फावड़े से चट्टानों पर पड़े कंकड़ों को मेहमानों के लिए इकट्ठा किया और किर्ल्या मछलियाँ पकड़ीं। तीनों महिलाओं ने सुबी के गाल पर चुंबन करके उसे विदाई दी। मथुकाका की आँखें नम थीं। विदाई समारोह चर्च में आयोजित किया गया। दूर समुद्र से उनकी यात्री नाव अभी-अभी आई और चली गई थी।
मथुकाका काफी देर तक चट्टान पर बैठा रहा। नीचे लहरें टकरा रही थीं। उनका झागदार पानी चट्टानों के ऊपर से बह रहा था।
मथुकाका की नज़र दक्षिणी छोर पर पड़ी। वहाँ अब दो कारखाने बनने थे। इंजीनियर और पर्यवेक्षक इसके लिए इधर-उधर घूम रहे थे। नींव रखने का समारोह जल्द ही होने वाला था; तैयारियाँ ज़ोरों पर थीं। गाँव में लोगों के लिए आवास और भोजन की व्यवस्था कर दी गई थी।
इंजीनियरों के लिए एक अलग कमरा बनाने का अनुरोध मथुकाका से

किया गया था, लेकिन उन्होंने मना कर दिया क्योंकि उनके घर मेहमान आने वाले थे।
किनारे पर कतार में खड़ी नावों को देखते हुए मथुकाका ने सिटु से कहा,
"सीतू, देखो - तुम्हारे लोगों की नावें यहाँ कुछ और वर्षों तक नहीं दिखेंगी। अगर कारखाने में जगह कम पड़ गई, तो वे सड़क के किनारे लगे सारे पेड़ भी काट डालेंगे। इस तट की यह हरी-भरी छटा फिर कभी नहीं दिखेगी।"
"लेकिन चाचाजी, सब कहते हैं कि हम खुश होंगे। हर घर में पैसा आएगा, समृद्धि आएगी।"
"पैसा तो जरूर आएगा! लेकिन आज तो यहां के लोग बिना पैसे के भी रह सकते हैं, है ना?"
"हां! लेकिन हमारे पिताजी कहते हैं कि जब हमें बहुत सारा पैसा मिलेगा तभी हम खुश होंगे।"
मथुकाका ने भोले-भाले और वाक्पटु सितुका को देखकर मुस्कुराते हुए कहा, "हमारे यहाँ आए मेहमानों ने खूब धन-दौलत और समृद्धि अर्जित की थी। लेकिन वे सुख की तलाश में देश-देश भटकने लगे हैं। उनमें से कुछ अपने देश में हिप्पी बन गए हैं, तो कुछ अपनी असफलता के कारण शराबी बन गए हैं। कुछ को नशे की लत लग गई है। अत्यधिक सुख-सुविधा अंततः व्यक्ति को ऐसी दयनीय स्थिति में ले जाती है। मैं इसी का विरोध करता हूँ। लेकिन यहाँ जो कारखाने लगने वाले हैं, उनसे आपको ऐसी सुख-सुविधाएँ तो बिल्कुल नहीं मिलेंगी। अगर ऐसा ही हुआ, तो औद्योगीकरण के बुरे प्रभाव यहाँ जल्द ही महसूस होने लगेंगे। अगर उन्हें अतिरिक्त धन मिल भी जाता है, तो आपके गबिट समुदाय या इस उप-क्षेत्र के भंडारी समुदाय के लोगों का क्या होगा? वे इसे बचाकर नहीं रखेंगे।"

वे क्या करेंगे?
"वे अपना जीवन जुआ, शराब और विलासिता में बर्बाद कर देंगे! आज यहाँ जो लोग स्वतंत्र हैं, उनकी स्वतंत्रता नष्ट हो जाएगी। वे मनमोहन शेठ के गुलाम बन जाएंगे। उनमें आत्मसम्मान का कोई नामोनिशान नहीं बचेगा।"
‘‘लेकिन लोग कहते हैं...’’
वे क्या कहते हैं?
"आपको यह पसंद नहीं है कि हम चार दिन सुख और संतोष के बिताने वाले हैं।"
मथुकाका अपनी सीट से उठ खड़ा हुआ और बोला, "हमें जाना होगा। उनका ऐसा महसूस करना स्वाभाविक है। लेकिन मैंने दुनिया को बहुत देखा है। चलो, सिटु, अब समय आ गया है।"
मथुकाका का जन्म भारत में, पैंसठ वर्ष पूर्व, कारवार के तट पर हुआ था! वे शिक्षा के लिए बेलगाम गए। बेलगाम में, जिस घर में वे शिक्षा प्राप्त कर रहे थे, वह बेलगाम की मराठा लाइट इन्फैंट्री के कमांडिंग ऑफिसर कर्नल ह्यूजेस का घर था। कर्नल मैथ्यूज से बहुत प्रभावित हुए। सेवानिवृत्ति के बाद, वे मैथ्यूज को अपने साथ इंग्लैंड ले गए। वहाँ, शिक्षा के बजाय, मथुकाका का झुकाव धर्म की ओर दिखने लगा। मथुकाका ने वहाँ ईसाई धर्म का गहन अध्ययन किया। उनकी नियुक्ति के समय, चर्च परिषद ने उनसे पूछा कि वे किस देश में जाना चाहते हैं। उस समय, फादर मैथ्यूज ने अपनी जन्मभूमि में ही कार्य करने की इच्छा व्यक्त की। उन्हें निंबार्डी के चर्च में नियुक्त किया गया। तब से, फादर मैथ्यूज अरब सागर के तट पर निंबार्डी के चर्च के पास एक छोटे से घर में रहते हैं। हाल ही में, उन्हें यह महसूस होने लगा था कि दुनिया के कई देश जो ईसाई धर्म का पालन करते हैं, वे ईसाई धर्म के सच्चे सिद्धांतों से

भटक गए हैं। फादर मैथ्यूज को इंग्लैंड की युद्धोत्तर विदेश नीति, मध्य पूर्व में अमेरिका की गतिविधियाँ, कोरिया और वियतनाम के युद्ध और विश्व राजनीति में शक्ति संतुलन बनाए रखने के नाम पर उन्नत पश्चिमी देशों द्वारा अन्य देशों के राजनीतिक मामलों में हस्तक्षेप करना उचित नहीं लगा। अन्य देशों पर दबाव डालने या उन्हें नियंत्रित करने वाली विदेश नीति का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा, "अमेरिकियों और अंग्रेजों को पूर्व के राजनीतिक मामलों में दखल देने का कोई अधिकार नहीं है।"
इसी बीच, फादर मैथ्यूज एक और बात से परेशान थे। अंग्रेजों ने यहाँ के मूल निवासियों को ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिए प्रेरित किया था; लेकिन भारत की स्वतंत्रता के बाद, उन्हीं पश्चिमी ईसाइयों ने यहाँ के मूल ईसाईयों के हितों की उपेक्षा की, मैथ्यूज ने शिकायत की। उन्होंने यह शिकायत तब दर्ज कराई थी जब वे दस साल पहले 'चर्च सम्मेलन' के लिए इंग्लैंड वापस गए थे। पहले, यहाँ के मूल ईसाईयों को उच्च शिक्षा के लिए विदेशी छात्रवृत्तियाँ मिलती थीं, और कमजोर जातियों के लोगों को आर्थिक सहायता भी मिलती थी। लेकिन मैथ्यूज एकमात्र उपदेशक थे जिन्होंने इस बात पर आपत्ति जताई कि भारत की स्वतंत्रता के बाद से पश्चिम का व्यवहार बदल गया है। लेकिन सच्चाई हमेशा कड़वी होती है। बेशक, मैथ्यूज की शिकायत उन लोगों को पसंद नहीं आई जो कहते हैं कि 'दुनिया के सभी ईसाई एक हैं'। इस तरह के लोग हर क्षेत्र में मौजूद हैं और बड़े झूठे हैं। चाहे धार्मिक हो, सामाजिक हो या राजनीतिक, मैथ्यूका बिल्कुल भी अहंकारी नहीं थे। इसीलिए वे इस तरह के लोगों से बहुत नाराज थे।
जैसे-जैसे फादर मैथ्यूज की उम्र बढ़ती गई, मानवता के प्रति उनका दृष्टिकोण व्यापक होता गया। उन्हें यह महसूस नहीं होता था कि

उन्हें ईसाई के रूप में देखा जाना चाहिए, या मुसलमान या हिंदू होने के नाते उनसे दूरी बनाए रखनी चाहिए। इसके विपरीत, वे इस निष्कर्ष पर पहुँच रहे थे कि किसी व्यक्ति को किसी विशेष धर्म से संबंधित होने के नजरिए से देखना इस बात का प्रमाण है कि वह 'धर्म' शब्द का अर्थ नहीं समझता। मथुकाका की धर्म की परिभाषा बहुत व्यापक और विस्तृत थी। उनका मानना था कि जो व्यक्ति किसी को मनुष्य के रूप में नहीं देख सकता, वह धर्म का अर्थ नहीं समझता। इसलिए, जब वे सितु जैसी गबिट या सुबी जैसी भंडारी लड़की को देखते थे, तो मथुकाका के लिए उनका धर्म पूरी तरह से अप्रासंगिक था।
तीस साल पहले, जब बिजली गिरने से गिरे एक झरने से गिरजाघर के प्रांगण में ताजे पानी का स्रोत फूट पड़ा, तो एक ईसाई उपदेशक ने फादर मैथ्यूज से कहा, "यह नियम बना दीजिए कि जो भी इस झरने का पानी लेना चाहे, उसे ईसाई धर्म अपनाना होगा। यहाँ के लोग अंधविश्वासी हैं। अब उन्हें यकीन हो गया है कि आपने कोई अलौकिक चमत्कार कर दिया है। अपने धर्म का प्रचार करने का यह अवसर न चूकें।"
लेकिन फादर मैथ्यूज हँसे और उपदेशकों से बोले, "आदरणीय महोदय, यह कहना कि आप हमारे धर्म को स्वीकार करें और तभी झरने का पानी पिएं, ईसाई धर्म को बदनाम करने जैसा होगा। पानी से इनकार करना, और यहाँ तक कि पानी पीना भी, न केवल धर्म का उल्लंघन है बल्कि क्रूरता का भी कार्य है!"
मथुकाका की इस विचारधारा के कारण निंबरदी गाँव में सबसे छोटे से लेकर सबसे बड़े तक सभी उसे अपना मानते थे। लेकिन मनमोहन सेठ के आने के बाद निंबरदी के लोगों का मथुकाका के प्रति स्नेह कम होने लगा था। मथुकाका खुलेआम प्रचार कर रहा था कि 'इस कारखाने

के कारण निंबरदी के लोग अपनी पहचान खो देंगे'। लेकिन लोगों को लगता था कि मथुकाका अब बूढ़ा हो गया है। बुढ़ापे में व्यक्ति की सोचने-समझने की क्षमता कम हो जाती है। वह अच्छे-बुरे का भेद करने में असमर्थ हो गया था। इसलिए, इस बात में कोई संदेह नहीं था कि निंबरदी में कोई भी मथुकाका से नफरत नहीं करता था, लेकिन उसके प्रति सम्मान समाप्त हो गया था।
उस इलाके के मशहूर दरियावर्दी रासु सारंगा की तरह, वह भी खुलेआम कह रहे थे कि 'बूढ़े का दिमाग खराब हो गया है'। पूरा गांव मथुकाका से लगभग अलग-थलग पड़ गया था। लेकिन वे दोनों बच्चे - सीतू और सुबी - उनसे अलग नहीं हुए थे!
मथुकाका सीतु के कंधे पर हाथ रखकर बाहरी कमरे की ओर आ रहा था। चार दिन के लिए आए मेहमान एक सप्ताह तक रुके रहे। वे बड़े शहर से दूर इस छोटे से गाँव के गिरजाघर और बाहरी कमरे के परिसर में मग्न थे। सीतु और सुबी दोनों ने अपनी देखभाल में कोई कमी नहीं छोड़ी थी। सुबी ने अपने पिता की मृत्यु की रात ही गिरजाघर लौटकर सबको चौंका दिया था। मथुकाका ने भी नहीं सोचा था कि वह उस दिन गिरजाघर लौटेगी।
“सिटु!” माथुकाका ने बाहरी कमरे के बरामदे में एक कुर्सी पर बैठे हुए कहा, “उन लोगों ने तुम्हारे बारे में मुझसे बहुत तारीफ की।”
"चाचा जी, उन्होंने मेरी और सुबी की बहुत सारी तस्वीरें लीं। उन्होंने मुझसे कहा, 'हम आपको अपने साथ ले जा सकते थे; लेकिन हमारे फादर मैथ्यूज चर्च में आपके अलावा कोई और सहारा देने वाला नहीं है।' लेकिन वे मुझे अगले क्रिसमस पर एक अच्छा सा तोहफा भेजेंगे।"
"हां, वे करेंगे। वे लोग अपने वादे के पक्के हैं।"

"चाचा जी, मैं सचमुच उसे अपने साथ ले जाना चाहता था।"
"तुम्हारे पिताजी ठीक रहेंगे! अब उन्हें उस नई फैक्ट्री में अच्छी तनख्वाह वाली नौकरी मिल जाएगी! वो तुम्हारे लिए भी सौ-दो सौ रुपये की नौकरी ढूंढ लेंगे।"
मैं उन लोगों के लिए काम नहीं करूंगा।
मथुकाका ने सीतु की पीठ पर हाथ रखकर कहा, "सीतु, यह ठीक नहीं है। अगर तुम्हें इस गाँव में रहना है, तो तुम्हें बाबा की तरह व्यवहार करना होगा। क्या मैं तुम्हारे जन्म के लिए काफी हूँ?" तो क्या मैं उस कारखाने में काम करूंगा?
"हाँ! क्यों नहीं? आपको यह करना चाहिए - सुबी को भी यह करना चाहिए। अगर पूरे गाँव को, जवान और बूढ़े, वहाँ रोजगार मिल सकता है, तो काम करने में क्या बुराई है?"
"आपने कहा था कि यह गुलामी है।"
मैंने सही कहा था, लेकिन अब मैंने इस बारे में बहुत सोचा है। सीतू को पसंद हो या न हो, मनमोहन शेठ यहाँ कारखाने लगाएंगे ही! आप लोगों को वहीं काम करना चाहिए, नहीं तो शेठ कहीं और से मजदूर लाकर कारखाने शुरू कर देंगे। आपके लिए यहीं काम करना बेहतर है। सीतु को स्पष्ट था कि मथुकाका आज उसकी इच्छा के विरुद्ध बोल रही थी। लेकिन सीतु को यह समझ नहीं आ रहा था कि मथुकाका, जिसने कहा था कि निंबरदी की स्वतंत्रता नष्ट हो जाएगी और उसकी पवित्रता धूमिल हो जाएगी, अब यह क्यों कह रही थी, "तुम्हें और सुबी को वहाँ काम करना होगा।"
जब सीतु मथुकाका से मिला और रसोई में आया, तो सुबी बड़े-बड़े एल्युमिनियम के बर्तन धो रही थी। वह सिंक के पास बर्तन धो रही थी और अपनी स्कर्ट पर लगे शीशे को पोंछ रही थी। सीतु वहीं खड़ा

रहा और बर्तन धोते समय उसकी सफेद, भरी हुई जांघों और उसके अंगों की हलचल को देखता रहा। सुबी ने सीतु से कहा,
"सिटु, आप क्या कहते हैं, चाचा?"
"चाचा कहते हैं कि फैक्ट्री खुलने के बाद हम दोनों को वहां काम करना चाहिए।"
"क्या? तुमने तो पहले मना कर दिया था।"
''हाँ वे नहीं कर रहे हैं!"
सीतु सुबी के स्तनों को घूर रहा था। कल आए तीनों जोड़ों को समुद्र तट पर मौज-मस्ती करते देख सीतु के दिल में पनप रही वासना भड़क उठी थी। उसका मन कर रहा था कि वह सुबी को कसकर गले लगा ले, उसके होंठों और गालों को चूम ले।
बर्तन धोने और रगड़ने के बाद सुबी ने सीतू से कहा,
"चलो, इतनी प्लेटें अंदर वाली शेल्फ पर रख दो।"
सीतू ने कुछ व्यंजन लिए, सुबी ने भी कुछ लिए। सुबी ऊँची मेज पर चढ़ गई। सीतू उसके नीचे खड़ा होकर उसे एक-एक करके व्यंजन दे रहा था। लेकिन व्यंजन देते समय उसका सारा ध्यान सुबी की जांघों पर था। व्यंजन रखने के बाद जब सुबी स्टूल से उतरने लगी, तो सीतू ने झट से उसे गले लगा लिया। सुबी के कुछ समझने से पहले ही, उसने उसके गालों और होंठों पर अनगिनत बार चुंबन कर दिए!
सुबी डरी हुई थी, असमंजस में थी, लेकिन उसने सीतू का विरोध नहीं किया। वह सीतू को पसंद करती थी। वे कई दिनों से साथ थे। अनजाने में ही उनके बीच एक नाजुक रिश्ता पनप गया था। लेकिन उसे यह बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि सीतू इतनी जल्दी उसके प्रति अपना आकर्षण प्रकट कर देगी।
"मुझे अकेला छोड़ दो। अगर मेरे चाचा मुझे देख लेंगे तो क्या कहेंगे?" उसने अपने बिखरे बालों को समेटते हुए कहा।

"चाचाजी आरामकुर्सी में गहरी नींद में सो रहे हैं। वे अब यहां नहीं आते।"
"लेकिन आपने ऐसा क्यों किया?"
"सुबी, परसों हमारे घर आए मेहमान भी यही कर रहे थे। ये तो कुछ भी नहीं है। तुम समुद्र पर तो नहीं आई थी। वे औरतों को अपने कंधों पर उठाकर समुद्र में फेंक रहे थे और हंसते हुए किनारे पर लौट रहे थे। उन्हें ऐसा करने में मजा आता था।"
"चलो भी! काटने का निशान कहाँ है?" सुबी ने उसे मारने के लिए नकली हाथ उठाते हुए कहा, लेकिन उसने उसका हाथ रोक लिया और उसे फिर से अपनी ओर खींच लिया और उसे दोबारा चूम लिया।
उसके बाद, ये सब बातें नियमित रूप से होने लगीं। जब भी मेरे चाचा तिथि में बाशममु के होटल जाते या चर्च परिषद की बैठक के लिए चित्रदुर्ग जाते, तो उन्हें सीतु और सुबी के बीच का प्रेम प्रसंग देखने को मिल जाता।
एक दिन सीतू ने सुबी की कौमार्य भंग कर दी। उस दिन सुबी बहुत डर गई। उसे एहसास हुआ कि उसने कोई अक्षम्य अपराध कर दिया है, और वह रोने भी लगी। लेकिन सीतू ने उसे दिलासा दिया। सुबी को चिंता होने लगी कि उसने जो किया वह पाप था, और उसने कहा, "ऐसी बातें तो सिर्फ शादीशुदा जोड़ों के साथ ही होती हैं।" फिर भी, उसने लंबे समय तक सीतू को नहीं देखा, और उसे लगने लगा कि उसने गलती कर दी है।
मथुकाका की दृष्टि कमजोर हो गई थी। फिर भी, वह इन दो भोले-भाले लोगों के बीच के प्यार को देखकर खुद को रोक नहीं पाया। उसने सुबी की माँ को बुलवाया। वह आ गई।
"तुम्हें कुछ समझ आया या नहीं?" मथुकाका ने उससे पूछा।
"किस बारे मेँ?"

"सीतु और सुबी के बारे में?"
"नहीं।"
वे दोनों एक-दूसरे से बहुत प्यार करते हैं। उनकी अच्छी जान-पहचान हो गई है। वे किसी न किसी मोड़ पर कुछ न कुछ पागलपन भरा काम करेंगे। इससे पहले ही उनकी शादी करवा देना बेहतर है!
"चाचा जी!" सुबी की मां ने आश्चर्य से कहा।
"यह कैसे होगा?"
"क्यों नहीं?"
"सिटु गाबिट - हम भंडारी हैं!"
"लेकिन वे दोनों इंसान हैं, है ना?"
"नहीं, नहीं! चाचा जी, हम ऐसा नहीं करना चाहते। मैं सुबी को घर ले जाऊंगी। मैं उसकी शादी अपनी जाति के किसी लड़के से करवा दूंगी। मैं वेश्या नहीं बनूंगी," सुबी की मां ने झट से कहा।
"जनत? सुबी की माँ, दोनों लड़के एक-दूसरे से प्यार करते हैं। तुम उन्हें अलग क्यों कर रही हो?"
"ऐसा नहीं होगा, चाचा जी! उसके पिता ने आपसे दो सौ रुपये लिए हैं, मैं मेहनत करके उन्हें चुका दूंगी; लेकिन मैं शौचालय नहीं जाऊंगी!" सुबी की मां ने इशारा करते हुए कहा।
मथुकाका को समझ नहीं आ रहा था कि उसे कैसे मनाए। उसने सुबी को बुलाया। सीतु और सुबी अंदर के कमरे से बातचीत सुन रही थीं। सुबी की माँ का रवैया अप्रत्याशित था। भंडारी और गबित के बीच रोटी का व्यापार तो होता था, लेकिन बेटी का नहीं। मथुकाका यह जानता था; फिर भी उसे पूरा भरोसा था कि वह इन दोनों कबीलों के बीच एक आदर्श संबंध स्थापित कर लेगा। सुबी की माँ ने आज उसकी कल्पना को ज़बरदस्त झटका दिया।

मथुकाका ने कुछ निराश होकर कहा, "अपनी बहन के बारे में सोचो। क्या तुम उसकी भावनाओं के बारे में सोचोगे या नहीं?"
बाहर आकर वहाँ खड़ी सुबी रोने के सिवा कुछ नहीं कर सकी। सुबी की माँ एक पल के लिए रुकी और बोली,
"मैंने सुबी को चित्रदुर्ग के धनी व्यापारी को इसलिए नहीं दिया क्योंकि वह उम्र में बड़ा था। लेकिन मैं सिर्फ इसी वजह से अपनी बेटी को गबीता को नहीं देना चाहती!"
"इसे मुझे मत दो। तुम उसकी माँ हो - मैं उसकी बहू नहीं हूँ! अपने बच्चे को ले जाओ। लेकिन याद रखो - तुम एक बड़ा पाप कर रही हो। इस धरती पर दो नन्ही आत्माओं को अलग करने से बड़ा कोई पाप नहीं है!" "चाचा जी, धर्म और पाप समुद्र में बह गए हैं! मैं अपनी जाति को उजागर नहीं होने देना चाहता।"
"ठीक है। अगर आपको अपनी बेटी की खुशी से ज्यादा अपनी जाति की चिंता है, तो मुझे कुछ नहीं कहना। सुबी, रो मत, मेरी प्यारी - जाओ।"
"चाचा जी!" सुबी की माँ ने एक पल सोचा और फिर बोली,
"मान लीजिए मैं अनुमति दे दूं, लेकिन क्या आपको लगता है कि सीतू की मां इसकी इजाजत देगी?"
"इसे क्यों न दिया जाए?"
मुझे पता है वो स्थिति कैसी होती है। आपको कम से कम पूछना तो चाहिए।
"ठीक है, मैं अभी उसे फोन करता हूँ। जाओ, सीतु, फोन करो और अपनी माँ को बुलाओ।" सीतु को लगा मानो उसकी आँखों के सामने बवंडर आ गया हो। एक नाव उस बवंडर में फँस गई थी। वह उफनती लहरों पर डगमगा रही थी। वह यह नहीं बता सकता था कि नाव सुरक्षित किनारे तक पहुँचेगी या डूब जाएगी। असल में, उसने कई बार असली तूफान का

सामना किया था। वह कई बार रसू के साथ नदी पर गया था। वे दस-पाँच बार अचानक आए तूफान में फँस गए थे। लेकिन रसू सारंग जन्मजात नाविक था। वह हर बार उफनती लहरों के बीच से अपनी नाव को सुरक्षित किनारे तक ले आया था। लेकिन आज, सीतु की आँखों के सामने जो तूफान आया था, जो नाव उस तूफान में फँसी थी, उसमें केवल वह और सुबी ही थे।
सुबी लगातार चिल्ला रहा था, 'मैं डूब रहा हूँ, मुझे बचाओ!' लेकिन सीतू, जो नाव का पतवार संभाले हुए था, यह तय नहीं कर पा रहा था कि नाव को बचाए या सुबी को। वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहा था, 'मेरा हाथ मत छोड़ो। मैं तुम्हारे पास नहीं आ सकता; लेकिन मैं इस नाव को सुरक्षित किनारे पर ले जाऊंगा।'
जब सीतु घर पहुँची तो पाडी धान के खेत में बैठी थी। सीतु को देखकर उसने कहा,
तुम दौड़ते हुए क्यों आए?
"मथुकाका ने आपको बुलाया है।"
"मैं क्यों?"
‘‘काय की!’’
"तुम्हारे पिता अब आएंगे। उन्होंने मुझे मथुकाकंका जाने से मना किया था!"
"माँ, लेकिन चाचाजी को आज बहुत ज़रूरी काम है, तुरंत वापस आ जाइए।"
सितु ने काकुलती आते हुए कहा।
"चलो।" उसके आग्रह पर पाडी चर्च की ओर चल पड़ा।
जब सीतु पाडी के साथ चर्च पहुंची, तो उसने सुबी की मां को मथुकाका के सामने बैठे देखा, और तभी पाडी को एहसास हुआ कि कुछ अलग है।

"पाडी," मथुकाका ने धीरे से कहा, "आपका क्या मतलब है? अगर सीतु और सुबी की शादी हो जाए तो क्या होगा?"
"शादी? चाचा जी, आप शादी को बच्चों का खेल क्यों समझते हैं? भंडारी और गबित के बीच कोई शादी नहीं है।" पाडी ने बिना एक पल भी हिचकिचाए कहा।
"ये दोनों लड़के एक-दूसरे से बहुत प्यार करते हैं, पैडी। वे दोनों खुश रहेंगे।"
"उसके पिता से पूछो।"
"उसने तो मुझसे हाल ही में बात भी नहीं की है। मैं उससे कैसे पूछूं?"
वह एक प्रबंधक है।
"अगर आपके मन में यह बात नहीं है, तो इसे स्पष्ट रूप से कह दें।" "किसी महिला को अपने पति के जीवित रहते अपने बेटे की शादी का प्रबंध नहीं करना चाहिए।"
लेकिन मान लीजिए, अगर रसु आपको वह शक्ति दे दे, तो आप क्या निर्णय लेंगे?
"मैं भंडारा के बेटे को अपने घर में बहू के रूप में स्वीकार नहीं करूंगी!" पाडी ने स्पष्ट रूप से कहा।
"ठीक है। अगर तुम दोनों की यही राय है, तो मैं अकेले क्या करूँगी? सुबी, मेरी बच्ची, अब जाओ। लगता है यीशु तुम दोनों को एक साथ नहीं लाना चाहते। परमेश्वर की इच्छा मनुष्य की इच्छा से कहीं अधिक शक्तिशाली है।"
उसी रात सुबी रोते हुए अपनी मां के साथ भंडारीवाड़ा चली गई। ०००

आठ
मनमोहन शेठ द्वारा लाए गए सर्वेक्षकों और मत्स्य विशेषज्ञों ने अपना सर्वेक्षण पूरा कर लिया था। कोलीवाड़ा के आगे की भूमि एक कारखाने के लिए निर्धारित की गई थी। वहां जल्द ही 'शीत भंडारण' और 'कैनिंग' कारखाने स्थापित किए जाने थे।
निर्माण कार्य शुरू हुआ। शेठ मुंबई से मजदूर लेकर आए। चित्रदुर्ग बंदरगाह पर भारी मशीनरी पहुंची। इसे निंबर्दी लाने के लिए, निंबर्दी नदी पर एक पुल का निर्माण भी शुरू हुआ, जिससे एक समय में केवल एक ही वाहन गुजर सके। हालांकि कारखाने के खुलने में अभी काफी समय था, निंबर्दी के सभी पुरुषों और महिलाओं को काम मिल गया। निंबर्दी के भंडारी, गैबिट और ईसाई समुदाय के लोग भी काम पर लग गए ताकि उनके जीवन स्तर को बेहतर बनाने वाली ये योजनाएं जल्द से जल्द पूरी हो सकें।
रासु सारंगा ने अपने कंधों पर बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी ले ली थी। शेठी ने रासु को निर्माण कार्य के लिए आने वाले इंजीनियरों और पर्यवेक्षकों के रहने की व्यवस्था करने का ज़िम्मा सौंपा था। कारखाना शुरू होने में अभी एक साल या छह महीने बाकी थे। लेकिन शेठी ने रासु को चार सौ रुपये प्रति माह का वेतन देना शुरू कर दिया था। शेठी बहुत चालाक था। वह जानता था कि अगर वह रासु सारंगा को अपना बना लेगा, तो स्थानीय गबिट समुदाय उसका साथ देगा। इसी तरह, उसने भंडारी और ईसाई समुदायों के नेताओं को भी अपने पक्ष में कर लिया था। तित्था का बाशममु भी विशेष रूप से

सुबी की बहुत याद आती थी; लेकिन उन्होंने सितु के सामने खुलकर यह बात ज़ाहिर नहीं की। आज भी उन्हें सुबी की बहुत याद आ रही थी, क्योंकि लंदन से एक पत्र आया था। लंदन पहुँचने के बाद श्रीमती रैटक्लिफ ने मथुकाका को धन्यवाद पत्र भेजा था, और उस पत्र में सुबी का विशेष रूप से ज़िक्र था। उन्होंने अपने पिता की मृत्यु के शोक को भुलाकर सुबी की सेवा के लिए उन्हें बहुत-बहुत धन्यवाद दिया था।
"सिटु, क्या तुमने हाल ही में सुबी को देखा है?" मथुकाका ने पूछा।
सीतु ने पलंग पर पड़ी रेत से एक छोटा पत्थर उठाकर नीचे फेंकते हुए कहा, "हाँ!"
"हम कब मिले थे?"
"परसों। चार दिन पहले, उसके चाचा देवगढ़ से आए थे। उन्होंने कहा था कि वे उसे देवगढ़ ले जा रहे हैं।"
"देवगढ़ को? क्यों?"
मुझे बिल्कुल पता नहीं। लेकिन मैं बहुत रोई।
एक पल के लिए मथुकाका को समझ नहीं आया कि क्या कहे। उसे लगा जैसे उसके गले में कुछ अटक गया हो, इसलिए उसने गला साफ किया और एक लंबी सांस छोड़ते हुए कहा,
"वह औरत बच्चे को नुकसान पहुंचाएगी! जब भिक्कू की मृत्यु हुई, तो मैंने सोचा कि सुबी मुक्त हो गई है। लेकिन मैंने यह नहीं सोचा था कि उसकी माँ इतनी मूर्ख होगी।"
"चाचा जी, सुबी कहती है कि अगर आप मुझे देवगढ़ ले जाएंगे, तो वहां पहुँचते ही मैं अपनी जान देकर भी आज़ाद हो जाऊंगी। मैं सुबी की माँ को मार डालूँगी!" सीतु ने होंठ दबाते हुए कहा।
मथुकाका ने अपना हाथ अपनी पीठ पर रखते हुए कहा।

"सीतु, इतनी लापरवाह मत बनो। मनुष्य को अपनी खुशी के लिए दूसरे का खून नहीं बहाना चाहिए। खून से सना सुख मनुष्य को लंबे समय तक लाभ नहीं पहुंचाता।"
"ये सुबी की मां और उसका भाई हैं जो सुबी की शादी किसी से कराने की तैयारी कर रहे हैं।"
"हम क्या कर सकते हैं?"
"चाचा जी, एक बात है जो मैंने आज तक आपको नहीं बताई। मेरी शादी सुबी से हो गई है।"
"विवाह?" मथुकाका ने मुस्कुराते हुए कहा, "दरअसल, विवाह दो आत्माओं का एक सुखद मिलन है। लेकिन जब तक इसे सांसारिक रीति- रिवाजों के साथ नहीं मनाया जाता, तब तक इसे वास्तविक नहीं माना जाता। इंग्लैंड और अमेरिका जैसे विकसित देशों में भी, विवाह उस समाज के प्रचलित रीति-रिवाजों और परंपराओं के अनुसार ही संपन्न किया जाता है।"
"चाचा जी, आपको पता नहीं। सुबी और मैंने चर्च में एक-दूसरे के गले में माला पहनाई है। हमने यीशु के सामने शपथ ली है। हम पति- पत्नी बन गए हैं!"
"अगर आप हमें अभी एक साथ लाना चाहते हैं, तो केवल वही ऐसा कर सकते हैं," मथुकाका ने चर्च के क्रॉस की ओर इशारा करते हुए कहा। उसके बाद आठ दिन बीत गए। सितु ने मथुकाका को बताया कि सुबी देवगढ़ से भाग गई है। सुबी सचमुच देवगढ़ से लौट आई थी; लेकिन उसका मामा उसे वापस लेने नहीं आया था। सुबी ने उसे धमकी दी थी – ‘अगर तुम उसे वापस लेने आए तो मैं तुम्हें मार डालूँगी’! मनु भंडारी भी देवगढ़ से नहीं आया ताकि उसके घर में ऐसी घटना न घटे। सुबी के निंबरदी लौटने के बाद गाँव में एक और अफवाह फैल गई - सुबी के दिन खत्म हो गए! उसे हर सुबह और शाम उल्टी होने लगी।

सुबी की माँ, जिसे इस बात का पता नहीं था, तुरंत समझ गई कि यह निंबरदी की जानी-मानी महिला का प्रकोप है। सुबी की माँ ने हंगामा खड़ा कर दिया क्योंकि शादी से पहले गर्भवती होने के कारण सुबी ने अपने परिवार को शर्मिंदा किया था। उसने निंबरदी की ग्राम पंचायत में शिकायत दर्ज कराई।
इस ग्राम पंचायत में पांच लोग थे, जिनमें दो भंडारी, दो गबिट और एक ईसाई शामिल थे। उसने सीतू पर अपने बेटे के अपहरण का आरोप लगाया। उसने दावा किया कि उसने यह काम मथुकाका के उकसावे पर किया था। मथुकाका को लेकर पहले से ही परेशान ग्रामीण, उस पर लगे ऐसे भयानक आरोप से और भी दुखी हो गए। जब उन्होंने सीतू से आरोप की सच्चाई पूछी, तो उसने साफ-साफ कहा, "मेरा सुबी के साथ संबंध था।"
"क्या कर डाले?"
"चाचा जी, सुबी मेरी पत्नी है। मैंने यीशु के सामने उसे अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार कर लिया है।"
"बेटे, तुमने बहुत बड़ी गलती कर दी! सच कहूँ तो, तुम्हारे साथ कुछ भी गलत नहीं हुआ है। तुम दोनों के बीच का रिश्ता प्रकृति के नियमों के अनुसार बना था। लेकिन निंबरदी के ये लोग इस बात पर विश्वास नहीं करना चाहते! ये लोग पागल हैं! जातिवाद अभी तक इनके दिमाग में नहीं बैठा है। जो भी हो। अब हमें इससे निकलने का रास्ता ढूंढना होगा।"
"एक रास्ता सुझाया गया है," सीतु ने दृढ़ता से कहा।
"किस प्रकार?"
"मेरे पास एक सुझाव है; लेकिन वह आपको नहीं बताएगा। आप उसे सहमति नहीं देंगे।"
"सुबी की माँ को मारने के लिए?"

‘‘अंहं!’’
"इसलिए?"
"तुम्हें बाद में समझ आ जाएगा।"
चार दिन के भीतर सीतू की हरकतों का पता चल गया। सीटू और सुबी दोनों निंबार्डी से गायब हो गए।
मथुकाका परेशान था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या हुआ है। लेकिन भंडारी और गबिट समुदाय के सभी लोगों ने सितु और सुबी को दोष देने के बजाय मथुकाका को दोषी ठहराया। चूंकि दोनों समुदायों के लोगों को लगा कि इस थेराधा ने ही उन्हें भाग जाने के लिए कहा होगा, इसलिए सुबी की मां रसु सारंग और गांव के लगभग पचास लोग उससे जवाब मांगने के लिए गिरजाघर की पहाड़ी पर आ गए। "हमारे बच्चे कहाँ हैं?" लोगों ने पूछा।
"मुझे कुछ नहीं पता," मथुकाका ने धीमी आवाज़ में कहा।
"मथुकाका, यह काम ठीक से नहीं हुआ है," रासु सारंग ने कहा। "रासु, मैंने आज तक कभी झूठ नहीं बोला। मैं फिर कभी झूठ नहीं बोलूंगा। मुझे नहीं पता सीतू और सुबी कहां चले गए हैं।"
"तुम ही हो जो लड़कों को उकसा रहे हो और उन्हें कहीं जाने के लिए कह रहे हो।"
इससे मुझे क्या फायदा होगा?
"तुम ही थे जिसने उनकी शादी करवाने की कोशिश की थी। तुम ही थे जिसने उन्हें भाग जाने के लिए कहा था।"
"अगर मैंने कोई गलती की है, तो प्रभु का इकलौता पुत्र, यीशु, मुझे क्षमा नहीं करेगा!"
लोग क्रोधित थे; लेकिन जब मथुकाका ने यीशु का नाम लिया, तो वे कुछ शांत हो गए। क्योंकि सभी को विश्वास था कि मथुकाका के पास कोई आध्यात्मिक शक्ति है। जब मथुकाका गाँव के लिए पानी नहीं ला

पाए, तो उन्होंने आकाश में प्रभु से प्रार्थना की; और निंबरदी के लोगों को पता चला कि जीवनदायी जल का एक नया झरना प्रकट हो गया है। कभी-कभी, गबिट के नदी पर जाने के बाद, तूफान आ जाता था। उनकी पत्नियाँ घबराकर चर्च आती थीं। मथुकाका उन्हें सांत्वना देते और उनके साथ प्रार्थना करते, और तूफान में फँसे गबिट किनारे लौट आते थे। इसमें, मथुकाका की प्रार्थनाओं के प्रभाव और तूफान में फँसे गबिट की कुशलता को कोई तुरंत नहीं समझ पाता था। लेकिन ऐसी कई घटनाएँ घटी थीं कि बहुत से लोगों का मानना था कि मथुकाका के पास कोई अदृश्य शक्ति है। इसलिए, भले ही सीतू और सुबी के मामले में लोग मथुकाका से क्रोधित थे, बहुत से लोगों को लगा कि उन पर ऐसे गंदे आरोप नहीं लगाए जाने चाहिए।
आज रसु सारंग को बहुत दुख हुआ क्योंकि उन्होंने इसके लिए मथुकाका को दोषी ठहराया था। अंत में उन्होंने यह कहा,
"मुझे अब भी लगता है कि अगर वे साथ होते तो खुश होते। इसका यह मतलब नहीं है कि मैंने उन्हें उकसाया और उनसे दूर कर दिया।" "लेकिन तुम जानती थी कि ये बच्चे एक-दूसरे के नहीं हो सकते," रासु ने कहा।
"हां। मुझे बाद में समझ आया - जब आपकी पत्नी और सुबी की मां यहां आईं।"
"अगर उन लड़कों को कुछ हो जाता है तो इसके लिए कौन जिम्मेदार होगा?" रासु ने पूछा।
मथुकाका ने शांत भाव से कहा, "तुम और सुबी की माँ, दोनों इसके लिए जिम्मेदार ठहराए जाओगे!"
"क्यों? हम कैसे जिम्मेदार हो सकते हैं?"
"अगर वे दोनों हमारे साथ न रह पाने की वजह से एक साथ आत्महत्या कर लेते हैं, तो इसका सारा दोष तुम पर आएगा!"

"पाप और पुण्य की बातें छोड़ो। समय बदल गया है," रसु ने व्यंग्यपूर्वक कहा।
"समय बदल गया है? हाँ! रसु, तुम अभी भी युवा हो। समय भले ही बदल गया हो; लेकिन मनुष्य अभी तक नहीं बदला है। उसे बदलना होगा। तुम इसी निंबरदी की मिट्टी में पले-बढ़े हो। तुमने अभी तक बाहरी दुनिया को नहीं समझा है। जाओ, प्रार्थना करो कि बच्चे जहाँ कहीं भी हों, सुखी जीवन व्यतीत करें।"
वह मथुकाका के कहे अनुसार बिल्कुल भी प्रार्थना नहीं करेगा। चर्च की पहाड़ी पर गए लोग लौट आए। उनके आते समय रसु के मन में एक बुरा विचार उमड़ रहा था। वह मथुकाका का बहिष्कार करेगा। कोई उसे भोजन नहीं देगा। कोई उसे दूध नहीं देगा, कोई उसे मछली नहीं देगा, और न ही कोई उसके घर खाना बनाने जाएगा।
गांव लौटने के बाद, रासु ने यह विचार दूसरों के साथ साझा किया। सभी इससे सहमत हो गए।
मथुकाका निर्मम हृदय का व्यक्ति नहीं था। वह लोगों के बहिष्कार की भीख नहीं मांगने वाला था। उसे केवल अपने अंतरात्मा का भय था! मथुकाका ने पहले कभी अपनी अंतरात्मा के साथ विश्वासघात नहीं किया था - और वह भविष्य में भी ऐसा कभी नहीं करेगा।
आठ दिन बीत गए। सिटु-सुबी का कहीं पता नहीं चला। निंबरदी समुदाय ने मथुकाकाओं का बहिष्कार कर दिया; लेकिन निंबरदी समुदाय के कुछ ईसाई इस विचार के खिलाफ थे। एंटोन गोंसाल्वेस ईसाइयों के नेता थे। वे रात में चर्च आए। उनके साथ उनके एक-दो जातिगत भाई भी थे।
"पिताजी, गांव वालों ने आपका बहिष्कार कर दिया है; लेकिन हम उनसे सहमत नहीं हैं। आप उनके झगड़े में क्यों पड़ गए?" एंटोन ने पूछा।

इस पर मथुकाका ने कहा, "किस तरह का झगड़ा? अरे, सारंग का पुत्र और भिक्कू की पुत्री बचपन से एक-दूसरे के साथ रहते थे। दोनों गुणी और दयालु थे! वे एक-दूसरे के प्रति आकर्षित थे। मुझे बताओ कि झगड़ा कैसे शुरू हुआ?"
"यह सच है। लेकिन भंडारी और गैबित की कोई बहू नहीं है, है ना?" "ये मूर्ख हैं! इन्हें पता ही नहीं था कि ये मुझसे क्या कह रहे हैं। जाने दो, इस मामले को यहीं छोड़ दो। तुम लोग यहाँ क्यों आते हो? ये ग्रामीण तुम्हें परेशान करेंगे। मैं बूढ़ा हो गया हूँ। चाहे मैं जियूँ या मर जाऊँ, कोई फर्क नहीं पड़ता! लेकिन वे दोनों कबीले एकजुट होकर तुम्हें परेशान करते रहेंगे।"
"ऐसा कुछ नहीं होगा। आप हमारे धार्मिक नेता हैं। क्या हम चुपचाप बैठे रहेंगे और आपको कूड़ेदान में फेंके जाते देखेंगे?" "एंटोन, भले ही मैं तुम्हारा धार्मिक गुरु हूँ, मैं लोगों के बीच भेदभाव नहीं करता। मैं यह स्वीकार नहीं करता कि किसी व्यक्ति के साथ सिर्फ इसलिए अलग व्यवहार किया जाए क्योंकि वह दूसरे धर्म को मानता है। रसु के पुत्र सितु को मैंने अपने बेटे की तरह प्यार किया। सुबी को भी मैंने वैसा ही प्यार किया। लेकिन मैंने कभी उसके ईसाई न होने के कारण कोई भेदभाव महसूस नहीं किया। निंबरदी यह जानती थी; फिर भी मुझे दुख होता है कि वह मुझे गलत समझे। एक दिन उसे अपनी गलती का एहसास होगा। भगवान उसे क्षमा करें।"
"मैं अपनी बेटी को यहाँ खाने के लिए भेजता हूँ," एंटोन ने कहा। "नहीं, एंटोन, अगर मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत होगी तो मैं नीचे आ जाऊँगा। अच्छा, शेठ क्या कहता है?"
"शेठ बहुत खुश हैं। परसों उन्होंने कुछ कुशल मछुआरों को समुद्र में भेजा था। कहा जाता है कि इस इलाके में सफेद झींगे बहुतायत

में पाए जाते हैं। अगर इन सफेद झींगों को कोल्ड स्टोर से पैकेटों में भरकर जापान भेजा जाए, तो इनकी कीमत लगभग 100 रुपये प्रति किलो मिलती है।"
"तुम क्या कह रहे हो, एंटोन?"
हे भगवान! पिता जी, अमेरिका और जापान में इन सफेद शकरकंदों की वाकई बहुत मांग है। जापानी लोग सफेद शकरकंद के लिए जान भी दे सकते हैं!
"तो इसका मतलब यह है कि यहां निवेश की गई पूंजी से शेठ को बहुत लाभ होगा!"
"बेशक! अब देखो - वह महिलाओं को दस रुपये प्रतिदिन और पुरुषों को पंद्रह रुपये प्रतिदिन देने को तैयार है। तो देखो वह कितना मुनाफा कमाएगा।"
मुझे लाने दीजिए। अगर गरीबों को चार पैसे मिल जाएं तो बहुत अच्छा होगा। लेकिन मुझे डर लग रहा है।
"कैसे?"
"निंबरदी में अब तक जो 'बुराई' नहीं थी, वह धीरे-धीरे आने लगेगी। इस रसु सारंग को ही देख लीजिए। वह कई सालों से मेरे पास आता रहा। लेकिन अपनी इच्छा बताने के अगले ही दिन चला गया। किसलिए? पैसे के लिए! इस पैसे की वजह से यहां के लोगों की इंसानियत खत्म हो जाएगी।"
"नहीं! तुम क्या करना चाहते हो? तुम मेरे घर दो बार डिनर के लिए आओगे," एंटोन ने कहा।
"मैं एक साथ उतार-चढ़ाव नहीं झेल सकता! मैं एक दिन वापस जरूर आऊंगा।"
"ठीक है। मैं फिर आऊंगा।"
‘‘ये.’’

मथुकाका एंटोन के पीछे चल रही आकृति को तब तक देखता रहा जब तक कि वह पहाड़ी पार करके नीचे नहीं उतर गया।
सूरज डूब गया। ज्वार अपने चरम पर था। एक के बाद एक लहरें पथरीले पानी से टकरा रही थीं। धीरे-धीरे तारे आसमान में दिखने लगे। गिरजाघर के बगल में एक छोटा सा परिसर था - उसमें फादर एंड्रयूज को दफनाया गया था। उस तरफ थोड़ी सी खाली जगह थी। उस जगह को देखते हुए फादर मैथ्यूज सोचने लगे, 'यह मेरी जगह है! मैं यहाँ हमेशा के लिए आराम करूँगा! एक दिन मुझे इस दुनिया को अलविदा कहना ही होगा। तो फिर मुझे किसी से नफरत क्यों करनी चाहिए? मैंने आज तक ऐसा कभी नहीं किया। लेकिन चूंकि यहाँ के लोगों ने मेरा बहिष्कार कर दिया है, शायद मेरे मन में नफरत का भाव पैदा हो जाए। हे प्रभु, यदि आप मुझे इस समय मृत्यु भी दे दें, तो मैं उसे खुशी से स्वीकार करूँगा; लेकिन मेरे अंतरात्मा को इतना कलंकित न करें।'
मथुका धीरे-धीरे बाहरी कमरे की ओर आया। कमरा अंधेरा था। मथुका ने पीतल के बड़े स्टैंड वाले मिट्टी के तेल के दीपक को जलाया। उसने उस पर एक गिलास रखा। कमरा पीली रोशनी से भर गया। मथुका ने दीपक जलाया और पीछे मुड़ा तो सीतु को देखा! कौन जाने कब वह आई और अंधेरे में बैठ गई।
"सिटु, तुम अचानक इस तरह कहां प्रकट हो गए? सुबी कहां है? क्या वह ठीक है?"
मथुकाका ने सीतु की गर्दन पकड़ रखी थी। वह उसके पीठ पर हाथ फेर रहा था। उसकी आँखें तेज़ थीं।
"चाचा जी, क्या गांव वालों ने आपका बहिष्कार कर दिया है?" मथुकाका ने हल्की सी मुस्कान के साथ कहा, "अरे, उस विषय को छोड़ो। वे लोग पागल हैं!"

नहीं। मैं इसलिए आया हूँ क्योंकि मैं सब कुछ समझ गया हूँ। मैं समझता हूँ कि मेरे पिता ने ही तुम्हें कूड़ेदान में फेंकने की पहल की थी। मैं उन्हें सबक सिखाऊँगा! ऐसे पिता को तो ज़िंदा ही नहीं रहना चाहिए!
अपने चेहरे पर हाथ रखते हुए मथुकाका ने कहा, "सितु, तुमने पहले कहा था कि तुम सुबी की माँ को मार डालोगे। मेरे सामने लोगों को मारने की ये भाषा तुम्हें शोभा नहीं देती! रसु तुम्हारा जैविक पिता है! उसने तुम्हें इस दुनिया में लाया है। मुझे डर है - एक दिन तुम हत्या करोगे! ऐसा कुछ मत करना। मैं तुमसे कसम खाता हूँ, अगर तुमने भविष्य में किसी की जान लेने की बात की तो!"
मेरा सिर भावनाओं से कांप रहा था।
बोलो, अपने मुँह से बोलो - कभी यह मत कहो कि तुम भविष्य में किसी की जान लोगे! अरे, शब्द ही कर्म की जननी हैं। जो तुम बार-बार अपने मन में सोचते हो, वही अंततः सच हो जाता है। इसीलिए मैं कहता हूँ, ऐसे विचार अपने मन में आने ही मत दो।
सितु सिर झुकाए खड़ा था। उसने आगे कुछ नहीं कहा। एक पल के लिए दोनों चुप रहे। फिर मथुकाका ने पूछा,
"तुमने उसे कहाँ छोड़ा?"
"फोंडा में। उसकी एक दूर की चाची वहाँ रहती है। उसका कोई नहीं है। वह अकेली है। हम उसके पास गए थे।"
"ठीक है। लेकिन क्या सुबी ठीक है?"
"हां। वह बच्चे के जन्म तक वहीं रहेगी।"
“हे भगवान! सीतु, क्या तुम पिता बनने वाले हो?” मथुकाका ने सीतु का हाथ प्यार से अपने हाथों में लिया। “मेरे सामने रह गए ये दो नन्हे जीव नया जीवन पाएंगे! लेकिन अभी यहाँ मत रुको। यहाँ के लोग बहुत गुस्से में हैं। अगर तुम्हें पता चल गया तो वे

तुम्हारी पिटाई करेंगे। जाओ, पर थोड़ा रुक जाओ।” मथुकाका जालीदार अलमारी के पास गए, मानो उन्हें कुछ याद आ गया हो। बाशा ने केक भेजा था। सीतु को केक का एक टुकड़ा देते हुए उन्होंने कहा, “इसे खाओ। बाशा ने इसे जानबूझकर मेरे जन्मदिन की याद दिलाने के लिए भेजा है।”
सीतु ने केक का एक टुकड़ा अपने मुंह में डाला।
उन्होंने मथुकाका के निस्वार्थ प्रेम का कई बार अनुभव किया था। लोगों द्वारा बहिष्कृत किए जाने पर अपना दुख व्यक्त किए बिना, वे सीतु की पीठ पर हाथ फेरते रहे, जब वह केक का एक टुकड़ा खा रही थी।
०००

नौ
सीतू और सुबी के निंबरदी से गायब होने के बाद माहौल काफी तनावपूर्ण हो गया था; दो महीने बाद थोड़ी शांति हुई। रसु सारंग सीतू को जान से मारने की बात कर रहा था; अब उसका गुस्सा भी शांत हो गया था। अब वह सीतू को देखना चाहता था। यह सच था कि लड़के ने गलती की थी; लेकिन अब उसे लगने लगा था कि उस गलती के लिए उसे जान से मारने की बात करना या जीवन भर उसका चेहरा न देखना ठीक नहीं है। इसके अलावा, पड़ी दिन-रात सीतू को लेकर चिंतित रहती थी। वह सीतू के प्रति आसक्त हो गई थी।
उस दिन, रासु काम से लौटा। हवा बहुत गर्म थी। उसने ठंडे पानी से स्नान किया। मनमोहन शेठ के नए शिक्षक ने उसे बीयर की दो बोतलें दी थीं। नहाने से पहले उसने उन्हें ठंडे पानी के बर्तन में डाल दिया। स्नान के बाद, उसने केवल अपनी लुंगी अपने शरीर पर लपेटी और बीयर की बोतल का ढक्कन अपने दांतों से खोला। बोतल से झाग निकला। उसने बोतल को अपने मुंह से लगाया। एक घूंट पीने के बाद, उसने पाडी से पूछा,
"आपने डिनर में क्या खाया?"
"चूड़ी जल गई है, बाल घुंघराले हो गए हैं।"
"मुझे एक चूड़ी दो और उसे एक कटोरे में रख दो।"
पाडी थाली से एक तली हुई चूड़ी लेकर उसके सामने आई और बोली,
तो आपने क्या करने का फैसला किया है?
"क्या?"

"क्या आप सीतू को ढूंढ रहे हैं या नहीं?"
उसने सिर हिलाकर कहा,
‘‘पाडे, सीता कहाँ जा रही है! वह न तो आज आएगी और न ही कल।”
"मैं अब सांस नहीं ले पा रही हूँ। तुम्हें मुझे बताना चाहिए कि मैं सुबी को वहाँ से ले आऊँ।"
"लेकिन अगर मुझे पता ही नहीं कि वह कहां है तो मैं किसी को कैसे बताऊंगी?"
"बिना जांच किए तुम उसका पता जान जाओगे?"
"अब हमें कहाँ जाँच करनी चाहिए? उस बूढ़े आदमी को तो कोई परवाह ही नहीं है।"
"उसे सीतू के ठिकाने का पता जरूर होगा। लेकिन आपको कम से कम उससे भरोसे में पूछ लेना चाहिए।"
मैं तुम्हें बताना नहीं चाहता। शायद अगर तुम कभी वहाँ जाओ, तो मुझे बता दोगे।
पाडी ने एक पल सोचा और झट से कहा, "मैं तुम्हें कार्ली के घर ले चलूँगा। मथुकाका को वह जगह बहुत पसंद है।"
"चूड़ी भी ले लो," रासु ने बोतल को दोबारा अपने मुंह से लगाते हुए कहा।
सूर्यास्त को काफी समय हो चुका था। फिर भी, पश्चिमी क्षितिज पर हल्की लालिमा छाई हुई थी। समुद्र की लहरें एक के बाद एक किनारे पर आ रही थीं। किनारे पर मौजूद चट्टानें दोनों ओर हिल रही थीं। हवा में हल्की ठंडक थी।
जैसे ही पाडी चर्च जाने के लिए पहाड़ी पर चढ़ रहा था, उसने देखा कि मथुकाका ऑर्गन की रोशनी में सब्जियां काट रहा था। ‘‘काकाऽऽऽ!’’
"कौन?"

"मैं, पैडी!"
मथुकाका के माथे पर एक पल के लिए शिकन आ गई; लेकिन बस एक क्षण के लिए। क्योंकि रसु या पाडी कई दिनों से उससे मिलने नहीं आए थे। इतना ही नहीं, मथुकाका ने ही उन्हें अपनी सीतु बांधकर भाग जाने की सलाह दी थी, क्योंकि रसु निंबरदी में इस तरह का झूठा प्रचार कर रहे थे!
"आओ। तुम क्यों आए हो?"
मैं कर्ली का कालवान लाया हूँ। क्या आपको यह पसंद है?
"जी हाँ! लेकिन आपको अचानक मेरी याद कैसे आ गई?"
पाडी उसके बगल वाली बेंच पर बैठ गई और बोली,
"सीतु का पता नहीं चल रहा है। मैं उससे मिलने के लिए तरस रहा हूँ।"
"तुम्हारा पति आत्महत्या करने की बात कर रहा था!"
"हां। लेकिन अब उन्होंने मुझे आपके पास भेजा है।"
"अरे नहीं! तो आप लोग अब भी यही सोचते हैं कि मैंने ही आपके बेटे को कहीं छिपाया है!"
"सच कहूँ तो, अंकल, मुझे पहले सीतू और सुबी की शादी पसंद नहीं आई थी। लेकिन फिर मैंने सोचा - अगर वे एक-दूसरे के प्रति इतने समर्पित हैं, तो शादी करने में क्या हर्ज है!"
"पाडे!" मथुकाका ने अपनी भौहें उठाईं और कहा, "तुम यहाँ मेरा अनुमान लगाने तो नहीं आए हो ना?"
"भगवान के लिए! नहीं, चाचा जी, मेरी सांस सच में फूल रही है।" "अगर मैंने तुम्हें एक और बात बताई, तो यह बिल्कुल भी काम नहीं करेगा," मथुकाका ने मुस्कुराते हुए कहा।
"कौन सा?"
"तुम दादी बनने वाली हो!"

पाडी इतनी खुश हुई कि वह जोर-जोर से हंसने लगी, और हंसते-हंसते उसकी आंखों में आंसू आ गए।
मथुकाका ने कर्ली के कल्वन का डिब्बा खोला, उसे सूंघा और कहा, "अहाहा! पैडे, कितने समय बाद मुझे तुम्हारे हाथ से घुंघराले बाल खाने का मौका मिला!"
पाडी ने खुशी के आंसू बहाते हुए कहा, "सच कहूं तो, चाचा जी, मुझे खाना खाते समय हर रोज आपकी याद आती थी। लेकिन मैं क्या कर सकती थी? मुझे रसू का गुस्सा शांत होने तक इंतजार करना ही पड़ा।" मुझे पता था कि एक दिन इसका बहाव कम हो जाएगा। इतनी बड़ी नदी, उसे ज्वार-भाटे की ज़रूरत ही क्यों पड़ेगी! लेकिन यह भी तो कम हो जाती है! पाडे, इंसानी गुस्से का भी यही हाल है। रासु दिल से भले इंसान हैं। निंबरदी गांव वालों ने मेरे खिलाफ बहिष्कार कर दिया था। रासु जानते थे कि सब लोग चुपके से मुझसे मिलने आएंगे। लेकिन उन्होंने बाद में कोई हंगामा नहीं किया। फिर भी, यह खास बात है कि उन्होंने आज मुझे उनके लिए नाव चलाने की इजाज़त दी।
"चाचा जी, यह सब सच है; लेकिन सुबी और सीतू कहाँ हैं?"
मथुकाका ने एक पल सोचा और कहा, "क्या आप सुबी को अपनी बहू के रूप में घर ले जाने के लिए तैयार हैं?"
"अपनी शपथ लो! मैं एक पैर पर खड़ा होने के लिए तैयार हूँ!"
"मेरी शपथ मत लो, रसु की शपथ लो। हाँ, तुमने मेरी झूठी शपथ ली है और अगर मैं मर जाऊँ तो क्या तुम्हें कुछ राहत मिलेगी?"
"ऐसा मत कहिए, चाचा जी, रासु के मन में कुछ नहीं है - और न ही मेरे मन में।"
"हां, देखो, वरना तुम मुझसे उनके ठिकाने के बारे में जानकारी छीन लोगे और..."

"नहीं। नहीं। चाचाजी, जब मैंने कहा था कि मैं दादी बनने वाली हूँ।" पैडी की आँखों में फिर से आँसू भर आए।
तब मथुका ने कहा, "तुम्हारी चचेरी बहन गड्ढे में क्यों है, है ना?"
"हाँ - वह प्यारी है!"
मुझे नहीं पता कि आंटी इतनी जिद्दी क्यों हैं, लेकिन उनके पास वे दोनों चीजें हैं।
मथुकाका को बस इतना ही कहना था कि पाडी झट से उठकर घर आ गया। तब तक रासु दोनों बीयर की बोतलें खत्म कर चुका था। तश्तरी में सिर्फ चूड़ी का ढांचा बचा था। थोड़ी भारी आँखों से उसने पाडी की ओर देखा और पूछा।
‘‘क्या कहते हो, बूढ़े आदमी?’’
"अरे, वे दोनों अवाशी में हैं। सुबी के दिन बीत चुके हैं। हमें उन्हें जल्द से जल्द यहाँ लाना होगा।"
‘‘उद्याऽऽऽ!’’
"कल लाने के बारे में क्या ख्याल है?"
"वह मालिक को घुमाने ले जाता है। अगर मैं पूछूं तो आप मना क्यों करते हैं?"
"कुछ करो। लेकिन लड़कों को जल्द से जल्द वापस लाओ।"
"तुम मेरे साथ आ रहे हो।"
"में आउन?"
"हां, यह सही है। बेटा मां को देखकर ही विश्वास करता है।"
अगली सुबह, रासु ने मनमोहन शेठ को सारी कहानी बताई। शेठ ने रासु को अपना ड्राइवर और गाड़ी लाने की अनुमति दी। शेठ की गाड़ी तित्था में इंतज़ार कर रही थी। रासु उसे वहाँ से ले गई। शाम को गाड़ी निंबरदी पुल पर पहुँची। पुल का निर्माण कार्य अभी भी चल

रहा था। जब सुबी पुल पार कर रही थी, तो उसकी आँखों में आँसू भर आए। भिक्कू भंडारी इसी पुल से चट्टानों पर गिर गया था। उसका पीछा कर रहे अधिकारी ने उसे पहचान लिया और उसे सांत्वना देने के लिए उसकी पीठ पर हाथ रखा।
निंबरदी पहुँचते ही सीतु दौड़कर गिरजाघर में गया। मथुकाका ने उसे गले लगाया और कहा, "भगवान बहुत दयालु हैं। उन्होंने तुम्हारे और मेरे बीच कोई भेद नहीं देखा, इसीलिए उन्होंने रसु का धर्म परिवर्तन कराया!"
"लेकिन चाचाजी, हम यहीं रुकेंगे!"
"आपका क्या मतलब है?"
मैं घर पर नहीं रुकूंगा।
मथुकाका हँसते हुए बोले, "सीतु, अब तुम इतने छोटे नहीं हो कि जिद्दी बने रहो। तुम जल्द ही पिता बनोगे। अगर तुम यहाँ फिर से रुक गए तो रसु क्या सोचेगा?"
जब वे दोनों अभी भी बात कर ही रहे थे, तभी रासु, पाडी और सुबी वहाँ आ गए।
सुबी का शरीर पीला पड़ गया था। उसके चेहरे से बचपन के सारे भाव गायब हो गए थे। वह धीरे-धीरे चल रही थी, मानो कोई नाव समुद्र का खजाना लूटकर किनारे पर आ रही हो। रासु शौचालय के बाहर चबूतरे पर चुपचाप सिगरेट पीता बैठा था। अब रासु को यकीन हो गया था कि जब तक मथुकाका जीवित रहेगा, वह उस पर और निंबरदी के कई लोगों पर राज करेगा।
मथुकाका के बाहर आते ही रसु ने अपनी सिगरेट फेंक दी और उठ खड़ा हुआ। मथुकाका ने उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा, “रसु!” उस एक शब्द ने रसु को बहुत कुछ कह दिया। “रसु, मैंने तुम्हें अपना पुत्र माना। पाडी ने मुझे जन्मदाता पिता की तरह प्यार किया। तुम्हारा

पुत्र सीतु और मैं कई जन्मों से रिश्तेदार रहे होंगे! सुबी तुम्हारी बहू है; लेकिन वह अनमोल है, अनमोल! ऐसी बहू तुम्हें हज़ारों में भी नहीं मिलेगी, लाख में भी नहीं। अब लोगों के बीच भेद भूल जाओ। सोचो कि सुबी सीतु के लिए पैदा हुई थी – और सीतु भी उसके लिए पैदा हुआ था।”
मथुकाका ने केवल एक शब्द कहा, ‘रासु’। लेकिन वास्तव में, उसने उसे सब कुछ बता दिया था। फिर मथुकाका ने कहा,
"आज मुझे बहुत अच्छा महसूस हुआ, लेकिन मैंने सुबी की मां को नहीं बताया।"
"उसका गुस्सा अभी शांत नहीं हुआ है। अगले दिन वह आई और उसने पाडी को गाली दी," रासु ने कहा।
"रहने दो, रहने दो। सुबी माँ बनने वाली है, उसके कान में यह बात फुसफुसाने का इंतजाम करो। फिर देखते हैं कि वह कितनी देर तक उड़ सकती है!"
लेकिन उन्हें ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ा। अगले दिन, भोर होते ही, वह चर्च हिल पहुँच गई। सिटु और सुबी एक चट्टान पर बैठे नीचे समुद्र को देख रहे थे।
जैसे ही उसकी माँ पास आई, सुबी ने सीतु को इशारा किया। वह उठा और मथुकाका के कमरे में चला गया।
सुबी को करीब से देखते ही उसकी माँ को समझ आ गया कि उसे क्या परेशानी है। उसके दिल में भरा सारा गुस्सा पिघल गया। उसने सुबी को अपने पेट से लगा लिया और फूट-फूटकर रोने लगी। बाद में, जब उसने उसे समझाने की कोशिश की, तो मथुकाका आखिरकार शांत हो गई। सीतु और सुबी की वापसी से निंबार्डी में उत्पन्न हुआ छोटा-मोटा तूफान शांत हो गया था।
०००

दस
मुंबई से आए इंजीनियर बहुत बुद्धिमान थे। उन्होंने एक महीने के भीतर दो कारखानों, 'शीतकालीन भंडारण' और 'कैनिंग फैक्ट्री' की इमारतें खड़ी कर दीं। कारखानों के लिए आवश्यक मशीनरी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थी। पुल का निर्माण भी रुका हुआ था। मनमोहन शेठ के प्रबंधक के रूप में निंबार्डी आए नारायणन बहुत ही मिलनसार व्यक्ति थे। अपने विनम्र व्यवहार से उन्होंने थोड़े ही समय में निंबार्डी के लोगों के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित कर लिए थे। रसू सारंगा और उनका सूत बहुत जल्दी लोकप्रिय हो गया। मोहन शेठ को नारायणन पर पूरा भरोसा था। मालिक के सभी वित्तीय मामलों का प्रबंधन वही करते थे।
वह और रासु कारखाने की इमारत के सामने एक ही छाते के नीचे खड़े थे। दोपहर की धूप बहुत तेज थी।
"सारंग, मुझे सुझाव दिया गया है कि हम यहां अपने छोटे मकान मालिकों के रहने के लिए एक छोटा बंगला बनाएं।"
"कोई बात नहीं। उन्हें बड़े शहरों में रहना पसंद है।"
"उन्हें यहां कार्मेल जैसा खूबसूरत बंगला बनाने में कोई आपत्ति नहीं है।"
"लेकिन क्या आप समझ रहे हैं कि मैं क्या कह रहा हूँ?"
"क्या?"
"इन मालिकों का भतीजा बहुत ही चंचल और मनमौजी है। मुझे नहीं लगता कि वह यहाँ एक-दो महीने से ज़्यादा टिक पाएगा। उस बंगले पर

पाँच से पचास हज़ार रुपये खर्च करने के बजाय, बेहतर होगा कि मथुकाका चर्च के पीछे वाले कमरे को किराए पर दे दे।"
"मैनेजर साहब, यह ठीक नहीं है। भले ही वह बूढ़ा आदमी नेक दिल है, लेकिन थोड़ा उपद्रवी ज़रूर है। आपके विशेषज्ञ यहाँ तट पर पाई जाने वाली मछलियों की प्रजातियों का निरीक्षण करने आए थे। क्या मैंने मालिकों के कहने पर उनसे दो सप्ताह के लिए उन्हें रहने के लिए एक शौचालय देने का अनुरोध नहीं किया था? उन्होंने मना कर दिया था।"
नारायण ने पूछा, "तुम्हारा बेटा और वह इतने करीब कैसे हैं?"
"जब मैं छोटी थी, तो मैं उन्हें पहाड़ी पर ले जाया करती थी। बूढ़ा आदमी अकेला रहता था। बच्चे और वह वहाँ इकट्ठा होते थे। मेरा सीतू आठ-पंद्रह दिन बूढ़े आदमी के साथ रहता था। हर दिन, वह बूढ़े आदमी के लिए पर्याप्त मछली पकड़ता था। अगर वह बीमार या थका हुआ होता, तो सीतू उसकी देखभाल करता था। अब सोचिए, हम ईसाई नहीं हैं; लेकिन सीतू बूढ़े आदमी की जान है। इस बीच, सीतू की शादी के बाद से मैं बूढ़े आदमी से थोड़ा नाराज़ थी। लेकिन सच कहूँ तो, मैं दिल से उससे नाराज़ नहीं हूँ।"
मैनेजर ने मुस्कुराते हुए कहा, "वह यहां कितने सालों से रह रहा है?"
"लगभग इकत्तीस साल बीत गए होंगे। उनके आने के बाद सूखा पड़ा था। निंबार्डी नदी सूख गई थी। निंबार्डी के सारे 'बाव' भी सूख गए थे।"
"हां, मुझे याद है। इन मथुकाकाओं ने सबके साथ प्रार्थना की, और उस रात बिजली गिरी और उस झरने का निर्माण हुआ।"
"बिल्कुल सही! और तब से निंबार्डी में सबसे छोटे से लेकर सबसे बड़े तक, सभी उस बूढ़े व्यक्ति का सम्मान करने लगे हैं। सीतू की

शादी के बाद, मैंने ग्रामीणों से उसका बहिष्कार करने की अपील की थी; लेकिन यह केवल दो-तीन दिन ही चला। एंटोन गोंसाल्वेस पहले चले गए, और फिर हमारे लोग भी आने-जाने लगे।"
"तो आप यह कह रहे हैं कि मथुकाका निंबार्डी के जीवन के साथ एक हो गया है!"
"आप बिलकुल सही कह रहे हैं। अगर आप यहां किसी के घर में अच्छा खाना बनाते हैं, तो घर का मालिक या मालकिन उसमें से कुछ हिस्सा पहाड़ी पर ले जाएगा। अगर आप ऐसा कहते हैं, तो समझ लीजिए कि उस बूढ़े आदमी को पूरे गांव से दुश्मनी है।"
लेकिन क्या ईसाई समुदाय को इस बात का कोई अफसोस नहीं होता जब ये ईसाई उपदेशक अन्य जातियों और समुदायों के लोगों के साथ इतनी खुलेआम घुलमिल जाते हैं?
"मुझे ऐसा नहीं लगता, यही तो असली मज़ाक है! हमारे समुदाय में जाति के कारण कभी कोई लड़ाई नहीं हुई। अब, काय-भंडारी और गबित के बीच विवाह को बढ़ावा देकर, उन्होंने इन दोनों जातियों को एक करने का फैसला कर लिया है।"
"क्या आपके बेटे की शादी के बाद ऐसी कोई और शादियाँ हुईं?"
"अभी तक कुछ नहीं हुआ है; लेकिन अब शुरुआत हुई है। कुछ सालों में आप भंडारी और गैबित को पहचान भी नहीं पाएंगे!"
"यह तो अद्भुत है! यह आश्चर्यजनक है कि मथुकाका इस तरह का धंधा कर रहे हैं जबकि उनका काम वास्तव में अपने धर्म का प्रसार और प्रचार करना है।"
"वह बस ऐसा ही है।"
मुझे लगता है कि मुझे कभी न कभी उनके साथ रहने की कोशिश करनी चाहिए।
"मैं चाहे जितनी भी मिन्नतें करूँ, वह टस से मस नहीं होगा।"

"अगर चर्च काउंसिल की तरफ से दबाव आए तो क्या होगा?"
"हाँ, तो फिर यह कहना असंभव है। लेकिन वह चर्च परिषद की भी आलोचना करता है। ओह, वह इंग्लैंड और अमेरिका जैसे विकसित देशों की विदेश नीति की आलोचना करता है। वह कहता है कि ये पश्चिमी राष्ट्र, चाहे कितने भी उन्नत हो जाएँ, फिर भी बर्बर हैं! वह युद्ध की उनकी प्यास और विश्व राजनीति में हस्तक्षेप करने की उनकी इच्छा की आलोचना करता है।"
नारायणन मुस्कुराए और बोले,
"निंबार्डी की इस पहाड़ी पर खड़े होकर की गई वह आलोचना! उसे कौन सुनेगा? लेकिन अगर उसे सुना जा सकता है, तो ठीक है।"
तो फिर क्या होगा?
"तब उस बूढ़े आदमी को यहाँ से निकाल दिया जाएगा या फिर उसे उपदेशक के पद से भी हटा दिया जाएगा।"
"लेकिन मुझे नहीं लगता कि कोई ऐसा करेगा। मैंने तुम्हें पहले ही बताया था! यह थोड़ा घिसा-पिटा जुमला है, लेकिन अच्छा है।" "अच्छा और बुरा! दस लाख डॉलर की ऐसी वस्तु का क्या फायदा जो हमारे समय में उपयोगी ही न हो? इसके अलावा, मैंने सुना है कि वह यहां इन कारखानों के निर्माण के भी खिलाफ थे।"
"यह सच है। लेकिन अब उन्हें कोई आपत्ति नहीं है।"
"विपक्ष को मजाक कौन कह सकता है? लेकिन सारंग, क्या तुम मजाक देखना चाहते हो?"
"कैसे?"
नारायणन ने रसु सारंगा के प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। उन्होंने बस मुस्कुराते हुए कहा, "उसे जाने दो। वह बूढ़ा है। ऐसा लगता है कि पूरा गाँव उसके पीछे पड़ा है। हमें उसके रास्ते पर क्यों चलना चाहिए?"

इसी बीच सीतु दौड़ते हुए वहां आई और रसु से बोली,
"पिताजी, सुबी झरने से आते समय फिसल गई। उसके सिर पर चोट लगी है।"
''कहाँ?''
"चाचा के शौचालय में।"
‘‘चल.’’
रसु सारंग जल्दी से पहाड़ी पर पहुँच गया। सुबी बरामदे में लेटी हुई थी। पाडी उसे पंखे से हवा कर रहा था। मथुकाका ऐसे समय में प्रार्थना किया करता था। वह उस समय भी यही कर रहा था। सुबी की माँ लगातार रो रही थी।
जब रासु सारंग वहां पहुंचे तो मथुकाका ने उनसे कहा,
"उसके सिर पर चोट लगी है। उसका शरीर भी बुरी तरह से पिटा हुआ लग रहा है। हमें थित्था से डॉक्टर को बुलाना चाहिए।"
जब रासु डॉक्टर को लेकर आई तब सुबी ने अपनी आँखें खोली थीं। मथुकाका ने उसके लिए कॉफी बनाई थी। पाडी और सुबी की माँ दोनों बैठकर बातें कर रही थीं।
डॉक्टर ने सुबी की जांच की और कहा,
"चिंता करने की कोई बात नहीं है। लेकिन माथे पर लगे उस घाव के लिए आपको टेटनस का टीका लगवाना पड़ेगा।"
पाडी ने कहा, "मैं उस घाव में हल्दी लगा दूंगा, लेकिन उसे मत छुओ।"
पाडी की बात किसी ने नहीं सुनी। डॉक्टर ने सुबी को टिटनेस का इंजेक्शन लगाया। इंजेक्शन लगते ही उसे तुरंत 'प्रतिक्रिया' हो गई। उसका पूरा शरीर कांपने लगा। उसकी आंखें बेजान सी दिखने लगीं। उसके होंठ काले पड़ गए। उसे लगा जैसे वह मरने वाली है। इंजेक्शन लगाने वाला डॉक्टर भी डर गया। मथुकाका जानता था कि

टिटनेस के इंजेक्शन से कभी-कभी ऐसी प्रतिक्रियाएं हो जाती हैं। उसने सुबी के लिए बिना दूध की कॉफी बनाई और उसे पिला दी। आधे घंटे बाद सुबी को बेहतर महसूस होने लगा। डॉक्टर की जान खतरे में थी। डॉक्टर को यकीन था कि अगर सुबी की हालत और खराब होती, तो रसु सारंगा उसे वापस नहीं जाने देते।
अगले ही दिन सुबी का गर्भपात हो गया। सब दुखी थे। कुछ लोगों ने इंजेक्शन लगाने वाले डॉक्टर की आलोचना की, जबकि अन्य ने तर्क दिया कि जाति और धार्मिक प्रतिबंधों का उल्लंघन करने के लिए भगवान ने सुबी को दंडित किया है। मथुकाका ने कहा,
"भगवान की इच्छा नहीं थी कि वह बच्चा इस दुनिया में जन्म ले। किसी को दोष देने का कोई मतलब नहीं है।"
सुबी ने बच्चे के पालन-पोषण को लेकर कई सपने देखे थे; वे सब पल भर में चकनाचूर हो गए। वह और सीतू शर्त लगाती थीं कि लड़का होगा या लड़की। सीतू कहती, 'मुझे लड़की चाहिए और लड़की ही होगी;' जबकि सुबी को पूरा भरोसा था कि लड़का ही होगा। चार महीने बाद, सुबी को अपने गर्भ में बच्चे की हलचल महसूस होती और वह माँ बनने की सुखद अनुभूति से अभिभूत हो जाती। लेकिन अब वह सब खत्म हो चुका था। उस घटना के बाद सीतू भी थोड़ी असहाय और उदास दिखने लगी। रसु सारंगा सुबी के बच्चे होने के विचार से नाराज़ थी। पाडी भी सुबी को अपनी बहू के रूप में स्वीकार करने को तैयार थी। सुबी की माँ का गुस्सा भी शांत हो गया था। लेकिन अब सुबी के मातृत्व से वंचित हो जाने पर वे सभी दुखी और व्यथित हो गए।
मथुकाका सबको समझाने की कोशिश कर रहा था; लेकिन वह खुद भी उस दुर्भाग्यपूर्ण घटना से बेहद दुखी था। 'जो बात हमारे बस में नहीं है, उस पर पछताने का क्या फायदा?' वह सबको उस घटना को भूल जाने का सुझाव दे रहा था।

एक महीना बीत गया। एक और दुखद घटना घटी। मथुकाका को चर्च परिषद से एक लंबा-चौड़ा पत्र मिला। उस पत्र में उन पर कई आरोप लगाए गए थे। कुछ आरोप इस प्रकार थे:
आप निंबर्डी गांव के ‘निजी मामलों’ में बेवजह दखल दे रहे हैं, यह भूलकर कि आप एक उपदेशक हैं। आपने अपने धर्म के प्रचार-प्रसार की पूरी तरह उपेक्षा की है। जिन लोगों को आपने चर्च के बाहरी हिस्से में रहने की अनुमति दी है, वे ईसाई नहीं हैं। अंतरजातीय विवाहों को प्रोत्साहित करना आपका काम नहीं है, लेकिन आप खुलेआम ऐसे विवाहों को बढ़ावा दे रहे हैं। इसके अलावा, चर्च के पीछे के चार क्वार्टरों को खाली रखकर और जरूरतमंदों को अस्थायी किराए पर न देकर, आप परिषद को आर्थिक नुकसान पहुंचा रहे हैं। मथुकाका के खिलाफ ऐसे आरोपों के पीछे कौन था, यह बात शायद उन्हें बाकी आरोपों से समझ में नहीं आई होगी; लेकिन बाहरी कमरों के आखिरी जिक्र को पढ़ने के बाद, मथुकाका की नजरों के सामने प्रबंधक नारायणन ही खड़ा था!
उसी नारायणन ने उन कमरों को दीर्घकालिक किराए पर मांगा था। मथुकाका ने उस सुझाव को अस्वीकार कर दिया। चर्च परिषद को चार कमरों के लिए पचास रुपये प्रति कमरा के हिसाब से दो सौ रुपये मासिक किराया मिलना था। चूंकि लोग उस आवास में रहते हैं, इसलिए उनका जीवन यापन सुचारू रूप से चलता है। इसके विपरीत, उसे बंद रखने से उन्हें नुकसान होगा, मथुकाका का ध्यान भी उस पत्र में इस ओर दिलाया गया था।
जब वह वहां हाथ में लंबा पत्र लिए खड़ा था, तभी सिटु वहां आ गई। "चाचा जी, ये किसका पत्र है?"

“इसे लो और पढ़ो।” मथुकाका ने पत्र सीतु को सौंप दिया और वे वापस पहाड़ी पर जाकर चट्टान पर बैठ गए। जब भी मथुकाका उदास होते, वे उसी स्थान पर जाकर बैठ जाते थे।
सीतु ने पत्र पढ़ा; लेकिन उसे इस बात का कोई अंदाजा नहीं था कि यह साजिश किसने रची है। उसने पत्र लिया और मथुकाका के पास जाकर बोला,
"क्या हुआ?"
"हूँ!" मथुकाका ने आह भरी और आकाश की ओर देखते हुए कहा, "यहाँ आए कारखाने के श्रमिकों की साजिशों की यह पहली झलक है!"
"चाचा जी, इस साजिश को रचने वाले का नाम बताइए - मैं उसका सिर फोड़ दूंगा!"
"जी! सीतू, क्या तुम मुझसे किया हुआ वादा भूल गई हो? क्या तुम भूल गई हो कि तुमने मुझसे कसम खाई थी कि तुम किसी की जान नहीं लोगी?"
सितु चौंक गया। उसे शपथ याद आ गई। फिर भी, उसने कहा,
"मुझे उसका नाम बताओ। मैं उसे यह पत्र दिखाऊंगा और उससे पूछूंगा।"
"मुझे बताओ कि मैं किसी ऐसे व्यक्ति का नाम कैसे ले सकता हूँ जिसे मैं नहीं जानता। इस विषय को यहीं छोड़ दो। अगर बात यहीं खत्म हो जाती है, तो तुम्हें शुभकामनाएँ।"
सीतु ने रासु को बताया कि पत्र शाम को आया था। हालाँकि, रासु हैरान था। वह तुरंत समझ गया कि यह नारायणन की साजिश है। लेकिन सीतु को बिना बताए उसने कहा, "परिषद के सदस्य हाल ही में मथुकाका से नाखुश हैं।"
"अगर वे मेरे चाचा को नुकसान पहुंचाने का फैसला करते हैं तो हमें क्या करना चाहिए?"

"हम क्या कर सकते हैं?"
इस पर पाडी ने कहा,
"अगर मेरे पिता आज जीवित होते, तो वे कहाँ रहते?"
सीतू अपनी माँ के कथन से प्रसन्न हुआ। वह वहाँ से सुबी के पास गया। सुबी अभी घर से नहीं निकली थी। वह अपनी माँ के साथ ही रह रही थी। जब सीतू वहाँ पहुँचा, तो सुबी अपनी माँ की फटी हुई साड़ी सिल रही थी।
‘‘कुठंय मामी?’’
"बस मुझे यहीं बता दो।"
सीतु उसके बगल में बैठ गई।
"कल शेत्या का एक आदमी तित्था से आया था।"
‘‘का?’’
"बप्पा ने चार सौ रुपये उधार लिए थे, और ब्याज मिलाकर पाँच सौ साठ रुपये हो गए हैं। उन्होंने मुझे तुरंत जाने को कहा है, नहीं तो मैं बर्तन बाहर फेंक दूँगा!"
तो वह वहां क्या करने वाली है?
उसने कहा, 'वह आ रही है, सूअर का पंजा पकड़े हुए। क्या तुम जानते हो कि सूअर कैसा होता है?'
"वह तो बदमाश है! उसने भिक्खुनाना को चालीस रुपये दिए होंगे और चार सौ रुपये कमा लिए होंगे! सुबी, उसने अब तक कई लोगों को इसी तरह धोखा दिया है। उसने एंटोन गोंसाल्वेस के साथ भी यही दावा किया है। मुझे लगता है मुझे जाना चाहिए और..."
"सीतू, क्या तुम भूल गई हो कि तुम्हारे चाचा ने तुमसे क्या कहा था?"
"नहीं, नहीं - मैं शेट्टी की जान को नुकसान नहीं पहुंचाना चाहता।"

"इसलिए?"
वह एक मजेदार मजाक कर रहा है!
"माँ, तुम्हारे दिन तो पहले से ही अच्छे नहीं हैं। तुम कुछ करने जाओगी और अटक जाओगी!" बोलते हुए सुबिला ने अपनी उंगली में सुई चुभाई। फिर उसने उंगली मुंह में डाल ली।
जब सीतू वहाँ थी, सुबी की माँ तिथि से लौट आई।
"तुम क्या कहते हो?" सुबी ने पूछा।
"अगर आप इसका खर्च नहीं उठा सकते, तो वे कहते हैं कि बच्चे को एक साल तक घर पर काम करते रहने दें।"
सिटु झट से उठ बैठी और अपने होंठों को दांतों से दबाते हुए बोली, "तो तुमने क्या कहा?"
मैंने कहा, 'मैं पूछ लूंगा।'
"माँ, मैं किसी बूढ़े आदमी के घर नहीं जा रहा हूँ। अगर तुम जाना चाहती हो, तो जाओ।"
"हममें से कोई भी नहीं जाना चाहता!" सिटु खड़ी हो गई और अपनी कमीज की आस्तीन खींचते हुए बोली।
"मैं कर्ज कैसे चुकाऊंगी? मैं किसी के कर्ज को न चुकाने के कारण नरक में नहीं जाना चाहती," सुबी की मां ने कहा।
"क्या आपको लगता है, चाची, कि उसने नन को चार सौ रुपये दिए थे?" "किसी ने भी उसे दस या बीस रुपये से ज्यादा नहीं दिए। लेकिन तुम्हारे चाचा ने उसे एक ही बार में दो सौ रुपये दे दिए।"
"चाचा की कहानी अलग है, चाची। लेकिन मैं आपको एक बात बता दूं - न तो आप और न ही सुबी को शेत्या के पास काम के लिए जाना चाहिए। लोग उसके बारे में अच्छी बातें नहीं करते।"
"मुझे नहीं पता ये क्या है, सिटु? लेकिन मुझे ये बताओ कि मैं उस चार सौ रुपये के कर्ज को कैसे चुकाऊं।"

"फिटेल, वो लोन," सीतू ने खिड़की से बाहर निकलते हुए कहा।
यह कहकर सीतू जाने लगी, तभी सुबी उठी और दरवाजे पर आई। सामने एक साफ-सुथरा आंगन था। घर के चारों ओर की घास हल्की हवा में लहरा रही थी। जालीदार पत्तों के बीच से चांद की हल्की किरणें दिखाई दे रही थीं। आसपास के घरों से चावल और पक रहे बांग्ला झींगे की खुशबू फैल रही थी।
सुबी, सीतू के साथ घर के सामने बाड़ के पास आई और बोली,
"कोई जल्दबाजी वाला काम मत करो। हम चाचा से पांच सौ रुपये उधार लेंगे और शेट्टी का कर्ज चुका देंगे।"
"अब से मथुकाका को ही हमें खाना खिलाना पड़ेगा! परिषद ने उसके खिलाफ एक बड़ा अभियोग पत्र भेजा है।"
"आप क्या कह रहे हैं?"
"मैं कसम खाता हूँ! कौन जाने अंकल को पहाड़ी पर रहने का मौका भी मिलेगा या नहीं।"
"वह कैसा है?"
"ऐसा ही होता है। जैसे-जैसे दिन बीतते हैं, न केवल हमारा अपना जीवन प्रभावित होता है, बल्कि हमारे सबसे करीबी लोग भी आपदाओं से प्रभावित होते हैं। फिर भाग्य मुस्कुराता है और कहता है, 'देखते हैं कौन किससे सहारा लेता है।'"
दुखी सुबी को गले लगाते हुए और उसे चूमते हुए सिटु ने कहा, "किसी बात की चिंता मत करो। मैं अब पहले की तरह भावुक नहीं हूं।"
जैसे ही सीतू सुबी को अलविदा कहने वाली थी, सुबी की माँ ने अंदर से कहा, "क्या तुम्हें लगता है कि वह तीसरा टुकड़ा और चावल खाएगा?"

"नहीं, नहीं, मुझे कुछ नहीं चाहिए!" कहते हुए, सिटु ऊंची छलांग लगाकर बाड़ के पार चली गई, गेट खुलने का इंतजार किए बिना, जिसे शिर्रिया ने बंद कर रखा था!
०००

ग्यारह
जल्द ही, दोनों कारखानों की इमारतें बनकर तैयार हो गईं। कोल्ड स्टोरेज के लिए आवश्यक मशीनरी भी आ गई। निंबरदी खाड़ी पर बना पुल भी पूरा हो गया। अब तिथि से आने वाले ट्रक और जीप सीधे समुद्र तट तक आ सकते थे। तिथि के दो-तीन होटल निंबरदी में ही खुल गए। बशाममु ने निंबरदी में अपनी मालाबारी खानवली की एक शाखा भी खोली। एक जातिगत व्यापारी की दूरदर्शिता से बशाममु भविष्य को स्पष्ट रूप से देख सकते थे। अब से, गांव के बाहर से वाहन निंबरदी में उत्पादित डिब्बाबंद मछली और अन्य मछलियों का परिवहन करने के लिए आएंगे। निंबरदी, जो अब तक खाड़ी द्वारा अन्य क्षेत्रों से अलग-थलग था, पुल द्वारा अन्य क्षेत्रों से स्थायी रूप से जुड़ जाएगा। व्यापारी, ड्राइवर, मैकेनिक आदि जैसे सभी क्षेत्रों के लोग अब से निंबरदी में नियमित रूप से आएंगे। बशाममु ने समुद्र तट पर नारियल के पेड़ों के झुरमुट में अपना 'न्यू मालाबार कैफे एंड लंच होम' खोला। होटल बनने के बाद, दो-तीन पान पत्ती की दुकानें भी खुल गईं। तिथि के मोटर मैकेनिक ने भी एक छोटा सा गैरेज खोला। दो किराने की दुकानें भी खुल गईं। पहले चाय का पैकेट या ताश का डिब्बा लेने के लिए दो-ढाई मील पैदल चलना पड़ता था। अब वह भी बंद हो गया। इस तेजी से बदलते हालात को देखकर निंबरदी के लोगों को लगा कि हर तरफ से खुशियां और समृद्धि निंबरदी की ओर आ रही है।

वही नारायणन चर्च परिषद के उस आदेश की एक प्रति लेकर मथुकाका आए और बोले,
"मुझे बहुत खेद है, फादर! आपको शायद लगता होगा कि मैंने इन इलाकों के लिए कुछ जुगाड़ किया और परिषद से यह ज़मीन हासिल की। लेकिन मुझे इसके बारे में कुछ नहीं पता। मैं अपने शेठों से कह रहा था कि यहाँ एक छोर से दूसरे छोर तक खुला समुद्र तट है। आप इस कारखाने और नावों पर लाखों रुपये खर्च करते हैं, तो क्यों न आप अपने लिए पाँच-पच्चीस हज़ार रुपये में एक छोटा सा घर बना लें? लेकिन सच कहूँ तो, फादर, ये व्यापारी बहुत चालाक हैं। उन्हें यहाँ रहने के लिए जगह चाहिए, लेकिन साथ ही वे निवेश नहीं करना चाहते! हम क्या हैं, मठ के सेवक! सच तो यह है कि व्यापार की मानसिकता वाले लोगों को गिरजाघर जैसी पवित्र इमारत के पास शरण नहीं देनी चाहिए थी।"
"श्री नारायणन, अब जब ऊपर से यह आदेश आ चुका है, तो मैं और कुछ नहीं कहना चाहता। ये किले।" इतना कहकर मथुकाका ने चारों दिशाओं के किले नारायणन को सौंप दिए।
उसने चाबियां अपने हाथों में लीं और गंभीर चेहरे से कहा,
"अगर आप इसे इस नज़रिए से देखें, तो जब तक लोग इस इमारत में रहते हैं, इसका रखरखाव अच्छी तरह से होता रहेगा। इसमें कोई शक नहीं कि शेठ इस जगह की देखभाल ऐसे करेंगे जैसे यह उनकी अपनी हो।" ‘‘हूंऽऽ!’’
मथुकाका नारायणन से और बात नहीं करना चाहता था। वह इस बात से थोड़ा परेशान था कि गिरजाघर परिषद ने उससे बिना पूछे ही सेठ मनमोहन को पाँच साल के अनुबंध पर वह पद दे दिया था। वह अपने कमरे में आया। कमरे में मेज पर यीशु की एक छोटी सी मूर्ति रखी थी और उसकी निगाहें उसी पर टिकी थीं। अत्यंत चिंताजनक स्थितियों में,

मथुकाका या तो यीशु को याद करता या उनकी मूर्ति को ध्यान से देखता रहता। उसका यह दृढ़ विश्वास था कि स्मरण और दर्शन में मनुष्य के मन के कष्टों को दूर करने की शक्ति होती है।
जब वे अपनी आरामकुर्सियों पर आराम से लेटकर यीशु की छवि को निहार रहे थे, तभी एंटोन गोंसाल्वेस जालीदार दरवाजे के बाहर खड़े होकर बोले,
‘‘मे आय कम इन, फादर?’’
"अरे, इस बार कैसे आ गए? क्या आज कारखाने में काम नहीं है?" "हां, मैं हूं। मैं फिलहाल एक डिब्बाबंद खाद्य कारखाने में सिलाई मशीन पर काम कर रहा हूं। लेकिन पिताजी, इसमें एक घोटाला है - इसीलिए मैं यहां आया हूं।"
"किस तरह का घोटाला?"
"पुलिस तुम्हारी सीतू और मेरे बिल दोनों की तलाश कर रही है।" "पुलिस?" मथुकाका झट से कुर्सी से उठ बैठा और पूछा, "किस लिए? उन्होंने क्या किया?"
"तुम्हें कुछ समझ नहीं आता?"
"नहीं।"
"दो साल पहले मैंने तिथि में एक साहूकार से साठ रुपये उधार लिए थे। साहूकार ने मुझसे एक सौ नब्बे रुपये मांगे थे। वह जीत गया। अब वह कहता है कि वह रकम वसूलने के लिए मुझे बंधक बना लेगा।" "साठ रुपये एक सौ नब्बे रुपये कैसे हो गए?"
"शेत्या ने साठ के बाद एक जोड़कर उसे एक सौ साठ बना दिया। उसने मुझसे एक सौ नब्बे रुपये वसूलने के लिए मुकदमा किया था, जो दो साल के ब्याज के रूप में तीस रुपये थे।"
"एंटोन, ये सब कहना बंद करो; मुझे बताओ कि पुलिस सीतू और बिल के पीछे क्यों पड़ी है," मथुकाका ने अधीरता से पूछा।

"कल रात किसी ने तित्था स्ट्रीट पर स्थित शेत्या की कपड़े की दुकान में सेंध लगाई।"
"और?"
"शेत्या साहूकार था। उसने कई लोगों से वचन पत्र ले रखे थे। जिस लकड़ी के बक्से में वह उन वचन पत्रों को रखता था, उसे चोर पीछे ले गए और जला दिया।"
हे भगवान! लेकिन सीतू और बिल के बीच क्या रिश्ता है?
"सीटू और बिल दोस्त हैं। आरोप है कि सुबी के पिता ने शेत्या से चार सौ रुपये उधार लिए थे। एक महीने से भी कम समय बाद, शेत्या ने सुबी की मां को धमकी देते हुए कहा, 'मुझे पैसे दो वरना मैं अदालत में मुकदमा कर दूंगा।' पुलिस को शक है कि सीटू ने बिल की मदद से शेत्या की दुकान में घुसकर उसके पास मौजूद वचन पत्र जला दिए।" "उन दोनों पर संदेह क्यों किया जाना चाहिए?"
"खबरों के मुताबिक, पिछले सात-आठ दिनों से कई लोगों ने सीतू और बिल को समुद्र तट पर एक साथ घूमते हुए देखा है।"
"अरे नहीं! सीतु के हाथों ऐसा कभी नहीं होगा," मथुकाका ने आत्मविश्वास से कहा।
"ऐसा सोचना स्वाभाविक है। लेकिन हमें परसों से बिल प्राप्त नहीं हुआ है।"
"आप कहा चले गए थे?"
मुझे यह नहीं पता।
"एंटोन, मुझे नहीं लगता कि लड़कों ने यह बुरा काम किया है; लेकिन जब तुम कहते हो कि बिल लापता है, तो मुझे थोड़ा संदेह होता है।" "सीतु कहाँ है?"
"वह सुबह से यहां नहीं आया है। मुझे देखना होगा कि वह सुबी के घर पर तो नहीं है।"

"ठीक है। लेकिन तुम्हें एक काम करना होगा," एंटोन ने मथुकाका के कान के पास अपना मुंह लाते हुए कहा, "चाहे यह सच हो या झूठ, सीतू से कहना कि वह कुछ भी कबूल न करे, चाहे पुलिस उसे बुला ले।" "आपका क्या मतलब है? अगर उसने कोई अपराध भी किया है, तो भी हम उसे झूठ बोलने के लिए मजबूर करेंगे?"
"पिताजी, आप हमारे गुरु हैं, मेरे लिए आपको कुछ सिखाना उचित नहीं है; लेकिन पिताजी, मैं यीशु की कसम खाकर कहता हूँ कि साहूकार शेते ने कई गरीब और अनपढ़ लोगों को ठगा है। यह अच्छी बात है कि उसके सारे वचनपत्र जला दिए गए। अब से निंबरदी के लोगों को किसी से भी ऋण लेने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। यह कारखाना सबकी आर्थिक स्थिति सुधार देगा। साहूकार शेते के लिए ऐसा बदलाव लाना लाज़मी था। इसलिए मैं कहता हूँ, मुझे नहीं लगता कि इसमें कोई कुकर्म हुआ है। जब मैंने उससे केवल साठ रुपये लिए थे, उसने उन्हें एक सौ साठ रुपये में बदल दिया; और अदालत ने उसकी बात मानकर उसके पक्ष में फैसला सुनाया। वह आदमी मेरा घर हड़पने जा रहा है - कैसा हत्यारा है!"
"एंटोन! अगर उसने गलती की, तो क्या हमें भी गलती करनी चाहिए?" "यह कोई गलती नहीं है, पिताजी। जब मनुष्य द्वारा निर्मित न्यायिक प्रणाली अंधी हो जाती है, तो कानून को अपने हाथ में लेने में कोई पाप नहीं होता!"
"नहीं, नहीं! एंटोन, मुझे तुम्हारे विचार पसंद नहीं हैं।"
"अगर अन्याय हुआ भी तो क्या किसी व्यक्ति को बिना संघर्ष किए मर जाना चाहिए?"
हालांकि, मथुकाका एंटोन के सवाल का जवाब तुरंत नहीं दे सका। उसने अपने हाथ हवा में उठाकर कहा, "आपके सवाल का जवाब देना इतना आसान नहीं है।"

पुलिस सितु और बिल दोनों को तालुका ले गई। शेते साहूकारों ने उन पर शक जताया था। जैसे ही उन्हें पता चला कि उन्हें ले जाया गया है, मथुकाका, एंटोन और सुबी फौजदार-कचेरी से मिलने तालुका गए। सैनिकों ने उन दोनों से पूछताछ की; लेकिन दोनों ने अपने कान हाथों से ढके रखे। अंत में, सैनिकों ने उन्हें दो घंटे का समय दिया। “अगर तुमने दो घंटे के भीतर सच नहीं बताया, तो तुम्हें फांसी पर लटका दिया जाएगा और टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाएंगे!” उन्होंने दोनों को अलग-अलग कमरों में बंद कर दिया और उन्हें धमकी दी।
मथुकाका, एंटोन और सुबी पुलिस स्टेशन के सामने एक बरगद के पेड़ के नीचे बैठे थे। पुलिस अधिकारियों ने उनसे मिलने तक से इनकार कर दिया। पुलिस विभाग को उपदेशक और आम आदमी के बीच का फर्क समझ नहीं आता था। जब यह खबर फैली कि पुलिस ने सीतू और बिल को दो घंटे का समय दिया है, तो मथुकाका समेत सभी लोग परेशान हो गए। सुबी की आंखों से आंसू बहने लगे। एंटोन भी माथे पर हाथ रखे बैठा था। तभी तिथि की दिशा से एक फैक्ट्री जीप धूल उड़ाती हुई आई। जीप में नारायणन और रासु थे। नारायणन जीप से उतरे, पेड़ के नीचे बैठे लोगों को देखा और उनके करीब गए।
"पिताजी, मैं बच्चों को वापस लेने आया हूँ!" उसने आत्मविश्वास से कहा।
"मुझे नहीं लगता कि वे चले जाएंगे," मथुकाका ने कहा।
"जी हाँ! पिताजी, मनमोहन शेठ ने मुझे भेजा है। मैं लड़कों को ले जाऊंगा!"
"आप किसी को क्यों नहीं भेजते? वह सैनिक बहुत ही अभिमानी लगता है।"

"मेरे पास उसके डर को दूर करने की जादुई शक्ति है!" नारायणन ने मुस्कुराते हुए कहा और सीधे फौजदार के कार्यालय की ओर चल दिए। रासु मथुकाका के पास खड़ा था, उसने कहा, "जब सेठ को पता चला कि लड़कों का अपहरण हो गया है, तो उसने तुरंत मैनेजर को फोन किया। सेठ बहुत दयालु है।"
मथुकाका ने कुछ नहीं कहा। हालांकि, सुबी मन ही मन मनमोहन शेठ से इसका संबंध जोड़ रहा था। वादे के मुताबिक आधे घंटे में नारायणन दोनों लड़कों को बाहर ले आए। मुस्कुराते हुए उन्होंने मथुकाका से कहा,
"पिताजी, अब हमारे साथ जीप में आइए।"
मथुकका परिवार, जो नारायणन को षड्यंत्रकारी मानता था, अब नारायणन के स्वभाव का अंदाजा नहीं लगा पा रहा था। हालांकि, रसु मनमोहन सेठ और नारायणन की कृपा के आगे झुक गया था। मनमोहन सेठ ने अपने बेटों को बचाने के लिए कौन सा रास्ता अपनाया, यह समझना असंभव था।
०००

बारह
"क्या मैं अंदर आ सकता हूँ, पिताजी?" नारायणन ने मथुकाका के कमरे में आते हुए पूछा।
“जी हाँ, अंदर आइए!” मथुकाका ने उत्तर दिया, जो नया नियम पढ़ रहे थे। नारायणन ने जालीदार दरवाजा खोला और अंदर आ गए। मथुकाका ने एक कुर्सी की ओर इशारा करते हुए कहा, “कृपया बैठ जाइए।”
कुर्सी पर बैठने के बाद उन्होंने कहा,
"परसों मैंने चर्च परिषद द्वारा हमें पट्टे पर दिए गए भवन के उस हिस्से का निरीक्षण किया। ऐसा लगा कि उसमें काफी सुधार की आवश्यकता है। इसलिए मैंने परिषद से दोबारा संपर्क किया और भवन में कुछ छोटे-मोटे बदलाव करने की अनुमति मांगी - उन्होंने आज अनुमति भेज दी।"
उसने अपनी जेब से एक कागज का टुकड़ा निकाला और मथुकाका को दिखाते हुए कहा,
"अगर आप भी इस जगह में कोई सुधार करना चाहते हैं, तो मुझे बताएं; काम किया जाएगा।"
मथुकाका ने अपना चश्मा माथे पर वापस सरकाया और धुंधली आँखों से उन्हें देखते हुए कहा, "अच्छा हुआ कि आपने परिषद से आवश्यक सुधार करने की अनुमति ले ली। मैंने भी परिषद को कई बार सूचित किया था; लेकिन उन्हें नहीं लगा कि निंबार्डी में परिषद के स्वामित्व वाली इस इमारत में सुधार किए जाने चाहिए। शाबाश, कम से कम आपकी वजह से इस इमारत में बिजली तो आ रही है! आप इस जगह का

इस्तेमाल किस लिए करेंगे?" मथुकाका ने अपना चश्मा वापस माथे पर लगाते हुए पूछा।
“क्या बात है पिताजी? ये तो बड़े सेठ हैं, इनका काफी बड़ा कारोबार है। दिल्ली, अमृतसर, लुधियाना में इनका कारोबार है। रविंद्र इनके भाई का बेटा है। इन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम.ए. किया है; लेकिन सेठ मनमोहन को लगता है कि पैसा कमाए बिना इनकी डिग्री का कोई मतलब नहीं। विभाजन के बाद भारत आकर बसने वाले कई शरणार्थी परिवारों में ये एक बहुत मशहूर परिवार है। ये दोनों कारखाने सेठ परिवार ने रवि के नाम पर बनवाए थे। रवि निंबार्डी में यहीं रहेगा। हमने ये बाहरी मकान उसके रहने के लिए लिया था।”
"अच्छा! लेकिन क्या रवि निंबार्डी जैसे किसी दूरदराज के गांव में रहना पसंद करेगा? आपने कहा था कि वह दिल्ली में पला-बढ़ा है, है ना?"
"पिताजी, आपका संदेह जायज़ है। रवि अभी युवा है। उसने चौबीस साल की उम्र में एम.ए. की डिग्री हासिल की है, इसलिए यह मान लेना गलत होगा कि वह व्यापार में माहिर है। जब हम पहली बार यहाँ आए थे, तब उसने यह भी कहा था, 'हम यहाँ कुछ नहीं करना चाहते। अगर आप चाहें तो मुंबई को कोई कंपनी दे दीजिए।'"
"तो क्या हुआ?"
"बड़े शेठ परिवार ने मुंबई के आसपास जमीन हासिल करने की बहुत कोशिश की; लेकिन अब सरकार की नीति है कि बड़े उद्योग मुंबई छोड़कर कहीं और चले जाएं, और वे सही हैं। आज मुंबई कितना बढ़ गया है! हे भगवान! अगर मुंबई की आबादी और बाहर से आने वाले लोगों की भीड़ को जल्द ही नहीं रोका गया, तो 'जनसंख्या विस्फोट' होना तय है। क्रॉफर्ड मारवत और फोर्ट इलाकों में तो ट्रैफिक जाम इतना

आम है कि पूछो ही मत। गाड़ियां फंसी रहती हैं। अगर किसी शहर की आबादी इतनी बढ़ रही है कि सड़कों पर लोगों का चलना-फिरना मुश्किल हो रहा है, तो यह वाकई चिंता का विषय है।"
"आप बिल्कुल सही कह रहे हैं!" फादर मैथ्यूज ने कहा, जो नारायणन का भाषण ध्यान से सुन रहे थे।
"शेठ परसों स्कॉटलैंड गया था।"
"अच्छा, किसलिए?" फादर मैथ्यूज ने पूछा।
"उनका कपड़ा व्यापार भी बहुत बड़ा है, और वे इसी सिलसिले में वहां गए थे। लेकिन वहां उनकी मुलाकात एक स्कॉटिश सज्जन से हुई। उन्होंने कहा, 'यह आश्चर्यजनक है कि जब आपका भारत सोने और चांदी से समृद्ध है, तब भी आप दूसरे देशों की दया पर निर्भर रहते हैं।'" उन्होंने ऐसा क्यों कहा?
मैं आपको बताता हूँ। वह सज्जन स्कॉटलैंड के एक प्रसिद्ध मत्स्य वैज्ञानिक हैं। उन्हें बचपन से ही मत्स्य पालन से लगाव था। उन्होंने इसमें डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने पूरी दुनिया की यात्रा की। उन्होंने प्रयोगों के माध्यम से यह सिद्ध किया है कि यदि एशिया के अविकसित देश भूख मिटाने के लिए मछली पकड़ने पर ध्यान केंद्रित करें, तो उनकी सभी समस्याएं हल हो जाएंगी। अरे, अगर इस खूबसूरत द्वीप के तटों पर पाए जाने वाले सफेद झींगों का बड़े पैमाने पर पालन-पोषण किया जाए, तो कहा जाता है कि हमारा भारत अमेरिका जितना समृद्ध हो जाएगा! दुनिया भर में सफेद झींगों की मांग है।
"लेकिन इसका जन्म कैसे होगा?"
एक झींगा एक वर्ष में चार लाख अंडे देता है!
"आपका क्या मतलब है?"

"यह सच है। लेकिन इन चार लाख में से पच्चीस प्रतिशत बच्चे ही जीवित रह पाते हैं। इसका मतलब है कि एक झींगा हर साल एक लाख नए झींगे पैदा करता है। झींगे का जीवनकाल केवल एक से डेढ़ साल होता है। इसलिए अगर इन कम जीवनकाल वाले झींगों को हमारे देश में 'समुद्री खेती' के माध्यम से पाला जाए, तो न केवल कोंकण के लोगों का, बल्कि पूरे देश का भविष्य उज्ज्वल होगा। अगर एक एकड़ जमीन में समुद्री पानी भरकर सफेद झींगों का पालन-पोषण किया जाए, तो इस व्यवसाय से जुड़े हर व्यक्ति को कम से कम दस हजार रुपये सालाना मिलेंगे!"
"शानदार! कोंकणपत्ती का कायापलट हो जाएगा!"
"बिल्कुल! शहर की ओर आने वाले लोगों की संख्या अपने आप कम हो जाएगी। बताइए, निंबार्डी के लोग यहाँ कैसे रह रहे हैं? क्या उन्हें दोनों वक्त का खाना पर्याप्त मिल रहा है? अब, जब से हमने कारखाना शुरू किया है, आप देख सकते हैं कि उनकी आर्थिक स्थिति कितनी तेज़ी से सुधर रही है। तो अगर यह मत्स्य पालन उद्योग, जो वैज्ञानिक पद्धति से हमारे देश के लिए विदेशी मुद्रा अर्जित करता है, प्रेरणा पाता है, तो क्या देश समृद्ध होगा या नहीं?" मथुकाका नारायणन का भाषण ध्यान से सुन रहा था। उसके कथन बहुत तर्कसंगत थे। उन्हें सुनकर मथुकाका ने कहा,
"आपने इस विषय का इतना गहन अध्ययन कब किया?"
नारायणन ने हल्की मुस्कान के साथ कहा, “मेरा जन्म भी तटीय क्षेत्र में हुआ है। मेरा जन्मस्थान केरल के एर्नाकुलम में है। बचपन से ही मछली पकड़ना मेरा पसंदीदा विषय रहा है। लेकिन मुझे वर्षों से लगता था कि मछली पकड़ने की इस पुरानी प्रथा में सुधार की आवश्यकता है, इसलिए मैंने इस विषय का गहन अध्ययन किया। बीएससी करने के बाद मैं नौकरी की तलाश में था। उसी समय मनमोहन

शेठ स्कॉटलैंड से लौटे थे। उनके मन में मछली पालन केंद्र खोलने का विचार था। मुझसे और उनसे मिलने के बाद उन्होंने फैसला किया। फिर हमने मुंबई से बहुत दूर नहीं, बहुत पास भी नहीं, ऐसी जगह खोजने का निर्णय लिया - हमें निंबार्डी पसंद आया। 'गहरे समुद्र और तट परीक्षण' में हमें यहाँ प्रचुर मात्रा में समुद्री संसाधन मिले। बिग शेठ द्वारा लाए गए विशेषज्ञ भी मेरी बात से सहमत थे।”
"शाबाश! सेठ परिवार एक ही समय में स्वार्थ और परोपकार दोनों को प्राप्त कर सकता है!"
"यह सच है, लेकिन पिताजी, मुझे शुरू में आश्चर्य हुआ था कि हमें इन उद्योगों का विरोध करना चाहिए।"
फादर मैथ्यूज ने मुस्कुराते हुए कहा, "क्या बात है, श्री नारायणन? मैं थोड़ा पुराने ख्यालों का हूं। मैंने अपनी आंखों से देखा है कि पश्चिम की भौतिक प्रगति ने उनके जीवन में कितनी पीड़ा पहुंचाई है, इसलिए यह सच है कि मैं शुरू में आपकी परियोजनाओं के खिलाफ था; लेकिन अब जब आपने मुझे यह सारी जानकारी दी है, तो मुझे लगता है कि मैंने आपकी योजना के दूरगामी परिणामों पर विचार किए बिना ही अपनी राय बना ली थी।"
"यह सच है। हमारे लिए यह सोचना स्वाभाविक है कि यहाँ के लोगों के प्रति हमारा निर्मम लालच उनकी स्वतंत्रता को नष्ट कर देगा। यदि लोग आर्थिक स्थिरता प्राप्त करना या बनाए रखना चाहते हैं, तो हमें उन विचारों में कुछ बदलाव करने होंगे जो हमारी स्वतंत्रता से पहले से चले आ रहे हैं।"
"श्री नारायणन, मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि आप इतनी गहराई से सोच रहे हैं।"

नारायणन हँसे और बोले, "चाहे वह विचारों का धन हो या सागर का धन, उसे गहराई में उतरे बिना प्राप्त नहीं किया जा सकता!"
"अच्छा! लेकिन क्या आप अपनी पत्नियों और बच्चों को यहाँ नहीं लाएंगे?" मथुकाका ने अपने चश्मे को माथे पर फिर से ठीक करते हुए पूछा।
"पत्नी और बच्चे? पिताजी, मैं तो कुंवारा हूँ!" नारायणन ने मुस्कुराते हुए कहा।
"तुम्हारा मतलब क्या है? तुमने शादी क्यों नहीं की?"
नहीं, यह हो गया है!
"तो फिर शहर में कौन-कौन है?"
मेरा एक सौतेला भाई है।
"वे करते क्या हैं?"
"कुछ नहीं बचा। यहाँ खेती होती थी, घर थे, यहाँ तक कि दो पदाव भी थे। सब कुछ बिक चुका है और साफ कर दिया गया है।"
‘‘का?’’
"वह एक महान व्यक्ति हैं, पिताजी। उन्होंने ही यह सब संभव किया है! वह साल में दो-तीन बार मेरे पास आते हैं। अपने साथ सौ-पाँच सौ रुपये लेकर आते हैं। वह एक निकम्मे इंसान हैं।"
"अरे नहीं!"
नारायणन ने हाथ हवा में लहराते हुए कहा, "हमें ऐसा करना ही होगा। अगर हर कोई सही तरीके से व्यवहार करने लगे तो यह दुनिया कैसे चलेगी? बुद्धिमानों का महत्व इसलिए है क्योंकि दुनिया में मूर्ख भी हैं, बुद्धिमानों का महत्व इसलिए है क्योंकि वे अज्ञानी हैं, और गुणी लोगों का सम्मान इसलिए है क्योंकि वे दुष्ट हैं। इसलिए मुझे लगता है कि सृष्टिकर्ता ने जानबूझकर मनुष्यों के बीच यह भेद बनाया है। इस धरती पर कितने ही संत रहे

हैं, कितनी ही धार्मिक पुस्तकें लिखी गई हैं; लेकिन मनुष्य दुनिया के अंत तक 'मनुष्य' ही रहेगा! चलो, इस विषय को छोड़ देते हैं। अगर आप इस निवास स्थान में कोई बदलाव करना चाहते हैं, तो कृपया हमें बताएं। इसमें हजारों का खर्च आएगा। मैं यह देखने आया था कि क्या मैं अपने जाने के दौरान आपको कुछ आराम दे सकता हूँ।"
"बहुत-बहुत धन्यवाद! श्री नारायणन, यह सच है कि किसी व्यक्ति के स्वभाव को पूरी तरह समझे बिना उसके बारे में पूरी तरह नकारात्मक टिप्पणी नहीं करनी चाहिए। शुरुआत में, मैं आपके बारे में कुछ कहना चाहूंगा..."
मैं चला जाऊंगा। जब तक मेरे कर्म आपको यह स्पष्ट नहीं कर देंगे, तब तक आप कैसे समझ पाएंगे कि मैं कौन हूं और कैसा हूं? मुझे तो लगता भी नहीं कि मैंने कुछ गलत किया है।
"लेकिन मुझे एक बात बताओ - तुमने सीतू और बिल से जुड़े उस मामले को कैसे दबाया?"
नारायणन जोर से हँसा और बोला, "पिताजी, सच बताइए? ऐसे किसी व्यक्ति को साहूकार शेते को सबक सिखाने के लिए भेजा गया था। यह शेते एक जिद्दी बदमाश है जो दस रुपये उधार देता है और उस दस रुपये पर एक पूजा करके सौ रुपये वसूल लेता है। मुझे पहले ही पता चल चुका था कि वह निंबरदी में कई लोगों को पैसे उधार देता था और उनसे ऊँची कीमत वसूलता था। ऐसे व्यक्ति की दुकान में सेंध लगाकर उसके वचन पत्र जलाने वालों ने एक तरह से समाजसेवा की है। चाहे बिल हो या सीतू। जब रसु सारंगा ने मुझे बताया कि सीतू पकड़ा गया है, तो मैंने लड़कों को बचाने का फैसला किया।" "लेकिन यह कैसे संभव हुआ?"
"हो गया! अब इस पर और चर्चा क्यों करें?"

"नहीं - लेकिन मैं इसलिए पूछ रहा हूँ क्योंकि मुझे थोड़ी जिज्ञासा है।"
"पिताजी, कुछ चीजों पर केवल उनके परिणामों के संदर्भ में ही विचार करना चाहिए। यह विश्लेषण करने की कोई आवश्यकता नहीं है कि ऐसा वांछनीय परिणाम कैसे प्राप्त हुआ।"
नारायणन ने चतुराई से इसका खुलासा करने से परहेज किया; और फिर मथुकाका ने भी उससे इसके बारे में नहीं पूछा। लेकिन अंत में, विदा लेते समय उसने उससे कहा,
"अगर आपको ऐसा लगने लगे कि आप हर हाल में अपराधियों का समर्थन कर रहे हैं, तो इसके परिणाम अच्छे नहीं होंगे।"
"पिताजी, क्या मैं हर अपराधी का इस तरह समर्थन करने जा रहा हूँ? सीतू इस तरह की स्थिति में फँसी थी, और वह भी साहूकार के संबंध में, इसीलिए मैं इसमें शामिल हुआ।"
नारायणन के जाने के बाद मथुकाका बाहर आया। दिन ढल रहा था। क्षितिज पर दिखाई देने वाली समुद्र की गोलाकार नीली रेखा अब थोड़ी लाल दिख रही थी। मथुकाका जाकर अपनी हमेशा वाली चट्टान पर बैठ गया। उसे नारायणन के स्वभाव का कोई अंदाजा नहीं था। एक ओर, नारायणन, जिनके प्रभाव चर्च परिषद तक पहुँच चुके थे, मथुकाका के पास यह कहने आए थे, 'यदि तुम्हें किसी सहायता की आवश्यकता हो तो मुझे बताना।' लेकिन वास्तव में, हाथ में सारोंग पकड़े रहना उनके लिए मानो निंबरदी पाने जैसा था, और इसी एक अहसास से उन्होंने सीतु की रक्षा की। उन्होंने यह भी दिखाया कि पुलिस विभाग में भी उनके वचन का कितना महत्व है।
निंबरदी में एक समय ऐसा था जब मथुकाका की सलाह के बिना एक पत्ता भी नहीं हिलता था; लेकिन अब नारायणन ने वह स्थान ग्रहण कर लिया

था। नारायणन निःसंदेह शेठ मनमोहन दास के सलाहकार, प्रबंधक और सब कुछ थे।
बाहरी भवन की मरम्मत शुरू हुई। खिड़कियों के टूटे हुए शीशे हटाकर नए लगाए गए। दीवारों पर नया रंग किया गया। छतों को अंदर से सफेद रंग से रंगा गया। तिथि से कारखाने तक बिजली लाई गई थी और अब वह गिरजाघर की पहाड़ी तक भी पहुँच गई थी। मथुकाका से बिना पूछे, नारायणन ने इलेक्ट्रीशियन से अपने रहने की जगह में बिजली लगवा ली। गिरजाघर के ऊपर एक लाल दीपक लगाया गया। नारायणन का मुख्य उद्देश्य था कि मछली पकड़ने वाली नावें समुद्र से लौटने में कुछ समय लें और अगर अंधेरा हो जाए, तो यह दीपक छह-सात मील दूर से दिखाई देगा और सही दिशा दिखाएगा। उन्होंने कहा, 'यद्यपि यह गिरजाघर एक विशेष धर्म का है, फिर भी यह निंबरदी की शान है। यहाँ रहने वाले हर व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह इसकी शान बढ़ाए। रात में गिरजाघर के ऊपर लाल दीपक जलाने से इसकी सुंदरता और बढ़ जाएगी।'
डिब्बाबंद खाद्य कारखाने और कोल्ड स्टोरेज में उनके माल का उत्पादन अब गति पकड़ चुका था। निंबार्डी को एक नई जिंदगी मिल गई थी। हर घर में खुशियां खिल रही थीं। तभी एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटित हुई।
सुबी की मां नहर खोद रही थी, तभी एक चट्टान के नीचे उसे एक बेहद जहरीले पानी के सांप ने काट लिया। जब उसे नाले से निंबरदी लाया गया, तब तक उसके मुंह से झाग बह रहा था और उसका पूरा शरीर काला- नीला पड़ गया था। नारायणन ने तुरंत कारखाने के डॉक्टर को बुलाया। डॉक्टर के स्टेथोस्कोप लगाने से पहले ही उसने उससे कहा,
"वह मर चुकी है!"

उस दोपहर नारायणन ने कारखाना बंद कर दिया। पूरा गाँव उसके अंतिम संस्कार के लिए इकट्ठा हुआ। नारायणन ने अंतिम संस्कार का सारा खर्च उठाया। सुबी को दिलासा देते हुए उन्होंने कहा, “चिंता मत करो। मथुकाका अब तक तुम्हारे साथ रहा है। अब से मुझे उसका अनुयायी समझो।”
अब मथुकाका कारखाने या नारायणन के बारे में कोई बयान नहीं दे रहे थे। रविंद्र, जो पहले निंबार्डी में जगह का निरीक्षण करने आए थे और बाद में मुंबई चले गए थे, अब निंबार्डी लौट आए थे। नारायणन उन्हें व्यवसाय का प्रशिक्षण देने वाले थे। लेकिन रविंद्र में नारायणन जैसी व्यावसायिक कुशलता, दूरदर्शिता या सूझबूझ बिल्कुल नहीं थी। गोरगोमाता रविंद्र ने कम उम्र में ही अर्थशास्त्र में एम.ए. कर लिया था; लेकिन वे अभी तक किसी विश्व स्तरीय महाविद्यालय में प्रथम वर्ष के छात्र नहीं थे। नारायणन ने उनके लिए निंबार्डी में एक अच्छा आवास बनवाया ताकि उनका मन प्रसन्न रह सके। उन्होंने मनोरंजन के लिए एक रिकॉर्ड प्लेयर, स्टीरियो और रेडियो भी लगवाया। चूंकि उन्हें पश्चिमी शैली का खाना पसंद था, इसलिए उन्होंने गोवा के एक प्रसिद्ध होटल से पांच सौ रुपये प्रति माह के वेतन पर एक रसोइया नियुक्त किया। रविंद्र सुबह दो घंटे और दोपहर दो घंटे के लिए डिब्बाबंदी कारखाने और कोल्ड स्टोरेज जाता था। जब वह आता, तो लॉबस्टर छीलने वाली लड़कियाँ और औरतें शिष्टाचारपूर्वक खड़ी हो जातीं। नारायणन ने उन्हें ऐसा निर्देश दिया था। शुरुआत से ही, नारायणन निंबरदी में रविंद्र को उसकी हर मनचाही चीज़ दिलवा देता था। लेकिन उस दिन, जब रविंद्र ने नारायणन से कहा कि उसे कोल्ड स्टोरेज में लॉबस्टर छीलने वाली गोरी, काली आँखों वाली,

स्वाभाविक रूप से लाल गालों वाली लड़की चाहिए, तो उसने अपना माथा पीट लिया और चला गया।
रवींद्र ने जिस बहू पर जोर दिया था, वह रसू सारंग की बहू और सीतू की पत्नी सुबी थी!
०००

तेरा
"मैंने कहा कि मुझे वो लड़की चाहिए!" रवींद्र ने नारायणन से कहा, जो उसके केबिन में आया था।
"छोटी सेठ! वह रसु सारंगा की बहू और सीतु की पत्नी है!"
"वह जो भी हो - मैं उसे चाहता हूँ!"
"इस बारे में सोचो, रविबाबू। किसी की पत्नी की सुंदरता देखकर उस पर बुरी नज़र रखना गलत है।"
"मैनेजर साहब, मैंने पूरी जांच-पड़ताल कर ली है। वे दोनों शादीशुदा नहीं हैं।"
"लेकिन वह सीतू से गर्भवती थी। चार-पांच महीने पहले उसका गर्भपात हो गया था। यह बात पूरे गांव को पता है," नारायणन ने रवि को समझाने की कोशिश करते हुए कहा।
"तो क्या हुआ? मुझे वो लड़की पसंद है। मैं उसे चाहता हूँ! मैं उस लड़की को चाहता हूँ!"
"उसे ढूंढना नामुमकिन है। मुझे उस कारखाने में काम करने वाली कोई और लड़की दिखाओ। मैं उसे तुम्हारे सामने पेश कर दूंगी; लेकिन कृपया उस लड़की के बारे में सोचना बंद कर दो।"
"जाना नामुमकिन है। मैनेजर साहब, मैंने उसे दो महीने पहले देखा था, और तब से मैं उसे हर दिन देख रहा हूँ। मैंने ऐसी खूबसूरती कहीं नहीं देखी। उसे देखने के बाद से मैं बेचैन हूँ। वह मेरे सपनों में आती है। मेरी बेचैनी बढ़ जाती है। कुछ करो, पर मैं चाहता हूँ कि वह यहाँ हो!"

"गुरुजी, मुझे नहीं पता कि अब मैं आपको कैसे मनाऊं," नारायणन ने निराशा में कहा।
"यह आपके लिए असंभव नहीं है। अगर आपको यकीन है कि सीतू की उससे शादी हो चुकी है, तो उससे कहिए कि वह सुबी को तलाक का आदेश दे दे। अगर आपको बीस हजार चाहिए, तो ले लीजिए!"
मुझे नहीं लगता कि सितु सिर्फ पैसों के लिए सुबी को छोड़ने को तैयार होगी। बचपन से ही दोनों एक-दूसरे से असीम प्यार करते आए हैं। दोनों यहाँ से भाग गए क्योंकि उनके परिवार इस शादी के खिलाफ थे।
"जो भी हो, मैनेजर साहब, आप अपनी पूरी ऊर्जा इसमें लगा दीजिए - लेकिन मुझे वो सुबी चाहिए। देखिए कि क्या वो पुरानी मैथ्यूज इस काम के लिए उपयोगी हो सकती है।"
"फादर मैथ्यूज?" नारायणन ने अपना माथा छूते हुए कहा।
"वह मामला तो और भी पेचीदा है! वह बूढ़ा आदमी सीतू और सुबी से बहुत प्यार करता है। सीतू अपने माता-पिता से भी ज्यादा फादर मैथ्यूज के प्रति समर्पित है, और फादर मैथ्यूज की मदद से ही उनकी शादी हुई होगी।"
"लेकिन उनकी शादी किसने देखी?" रवि ने पांच सौ पचपन सिगरेट जलाते हुए पूछा।
"हो सकता है किसी ने शादी न देखी हो; लेकिन हर कोई जानता है कि वे पति-पत्नी हैं।"
"बेवकूफी! बिना शादी किए वे पति-पत्नी कैसे हो सकते हैं?"
वह सीतू से गर्भवती थी।
"अरे! तुम्हें इस बारे में सीतू और फादर मैथ्यूज से बात करने की कोशिश करनी चाहिए।"

"अब मैं आपको कैसे बताऊं, रविबाबू - फादर मैथ्यूज सिद्धांतों के पक्के आदमी हैं। अगर सीतू की मृत्यु भी हो जाए, तो भी वे सुबी के साथ समझौता करने को तैयार नहीं होंगे।"
"अगर मुझे सुबी की मौत के बाद उसे पाने का मौका मिल जाए।" "रविबाबू, तुम्हारे दिमाग में कितने भयानक विचार घूम रहे हैं!" "आपको अंदाजा भी नहीं है, मैनेजर साहब। उस लड़के ने मुझे पागल कर दिया है!"
नारायणन केबिन में चिंतित खड़ा था। वातानुकूलित कमरे में भी, रविंद्र के बयान ने उसे पसीना ला दिया था।
नारायणन ने अपनी जेब में रखे रुमाल से माथे का पसीना पोंछते हुए कहा, "मुझे यह सब असंभव लगता है। लेकिन मुझे एक-दो महीने का समय दीजिए। मैं थोड़ी कोशिश करूंगा।"
"दो या चार महीने की समय सीमा तय कर लो। लेकिन मुझे वो सुबी चाहिए! मैं उसे लॉन्च के बाद अकेले बाहर ले जाना चाहता हूँ, मैनेजर। अगर वो अपने बाल बॉब कट में कटवा ले और मिनीस्कर्ट पहने तो कैसी लगेगी?"
‘‘मिनीस्कर्ट?’’
"हाँ! उसकी जांघें कितनी सुंदर हैं! उसे मिनीस्कर्ट पहननी चाहिए! मुझे लगता है उसे तैरना आना चाहिए। अगर नहीं, तो मैं उसे सिखा दूँगा!"
नारायणन ने 'आह' की आवाज के साथ रविंद्र को देखा। अनजाने में ही उसने कहा, "क्या आप मुझे तैरना सिखाएंगे?"
"हाँ! वो स्विमसूट में कमाल की लगेगी! सोचो ज़रा? सच में, सोचो। मैं बीच पर रेत पर लेटा हूँ, सुबह की धूप का मज़ा ले रहा हूँ, और मेरे बगल में बॉब कट हेयरस्टाइल वाली, स्विमसूट पहने सुबी है। मैंने एक हाथ उसकी कमर पर रखा है। ओह माय गॉड! तुम्हारे जैसे

ब्रह्मचारी को ये आइडिया बताने का कोई फ़ायदा नहीं! मैनेजर, जो चाहो करो, लेकिन मैं उस लड़की को पाकर रहूँगा! मैं उस पर पागल हूँ!"
नारायणन ने केबिन का दरवाजा खोला और बाहर कदम रखा। अचानक उसे बाहर ठंडी हवा का एहसास हुआ। वह वहाँ पहुँचा जहाँ निंबरदी के बच्चे शकरकंद छील रहे थे। सुबी के माथे पर एक गहरा धब्बा था। उसने अपने तंग कपड़े बहुत ऊँचे पहने हुए थे, मानो किसी दरांती की तरह चुभ रहे हों। उसकी नज़र सुबी की सुडौल, केले के छिलके जैसी सफेद जांघों पर पड़ी और उसने सोचा कि सुबी को अब ऐसे कपड़े नहीं पहनने चाहिए।
"सुबी, बाहर आओ," नारायणन ने गंभीर स्वर में कहा।
‘‘का?’’
"काम है।"
उसके हाथ छिलकों से भरे हुए थे। उसने अपने हाथ पास रखी बाल्टी में डुबोए और धोए, फिर कपड़े से पोंछकर वह उसके पीछे-पीछे बाहर चली गई। सूरज बहुत तेज़ चमक रहा था। समुद्र तट की पीली रेत गर्म होकर लहरें पैदा कर रही थी।
कोल्ड स्टोर के बाहर एक दीवार से टिके हुए नारायणन ने कहा, "सुबी, कल से साड़ी पहनने का तरीका बदल लो।"
सुबी को पहले तो उसकी बात समझ नहीं आई। वह पागलों की तरह उसके चेहरे को घूरती रही। नारायणन कुछ देर तक बिस्तर के किनारे को देखता रहा और सुबी से बोला,
"सुबी, तुम्हें कल से कारखाने में काम पर नहीं आना चाहिए।" ‘‘का?’’
"जैसा मैं कहता हूँ!"
"मैंने क्या गलती की?" सुबी ने डरते हुए पूछा।

"तुम्हारे हाथों से नहीं, बल्कि तुम्हें जन्म देने वाले सृष्टिकर्ता से गलती हुई है! उसने तुम्हें ऐसा आकार दिया है जो तुम्हें नहीं देना चाहिए था!"
सुबी को समझ नहीं आया कि नारायणन आज इस तरह क्यों बात कर रहा है। वह बस उसे देखती रही। फिर उसने कहा,
"सुबी, तुम्हें कल से काम पर आने की ज़रूरत नहीं है। मैं तुम्हारे वेतन को घर पर पहुँचाने का इंतज़ाम कर दूँगा।"
"ऐसा क्यों?"
"मुझसे यह मत पूछो। तुम अब जाओ।"
"तुरंत?"
"हाँ - अभी इसी वक्त!"
नारायणन जोर से चिल्लाया। वह वास्तव में सुबी को अपने विश्वास में लेना चाहता था और उसे पूरी स्थिति समझाना चाहता था; लेकिन वह ऐसा नहीं कर सका।
सुबी की आँखों में आंसू भर आए। उसे समझ नहीं आ रहा था कि मैनेजर ने उसे नौकरी से क्यों निकाल दिया जबकि उसने कुछ भी गलत नहीं किया था।
मां की मृत्यु के बाद से सुबी कुछ हद तक असहाय और अकेली सी महसूस कर रही थी। वह सुबह नौ बजे काम पर आती और शाम चार-पांच बजे लौटती। वह काम पर किसी से बात नहीं करना चाहती थी, हंसना भी नहीं चाहती थी। गर्भपात के बाद से उसके मन में एक तरह की उदासी छा गई थी। और जब उसकी मां की अचानक मृत्यु हो गई, तो यह उदासी और भी गहरी हो गई। अब जब उसके मैनेजर ने बिना कोई कारण बताए उसे काम पर आने से रोक दिया था, तो उसे लग रहा था कि दुर्भाग्य उसका पीछा कर रहा है।

जब सुबी घर लौटी, तो रासु सारंग मानसून के दौरान नाले में मछली पकड़ने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले जालों की मरम्मत कर रहा था। सुबी को इतने कम समय में आते देखकर वह थोड़ा हैरान भी हुआ।
"क्या तुम जल्दी आ गए?" उसने सुबी से पूछा।
सुबी बिना कुछ कहे अंदर चली गई और कोने में बैठकर रोने लगी। रासु ने जाल को आंगन में रखा और अंदर आ गई।
‘‘रडतेस का?’’
"मैनेजर ने मुझे काम पर न आने के लिए कहा।"
‘‘का?’’
आपने कारण नहीं बताया।
"लेकिन बिना किसी कारण के वह आपको काम पर आने से क्यों रोकेगा?" "मुझें नहीं पता।"
"रुको, मैं उससे पूछ लेता हूँ।"
रासु ने अपना जाल समेट लिया।
रासु सारंगा भी कारखाने के वेतनभोगी कर्मचारी थे। कभी-कभी वे मछली पकड़ने के लिए नाव पर जाते थे; लेकिन एक निश्चित समय तक काम करने पर उन्हें कोई दंड नहीं मिलता था। रासु सारंगा एक नदी नाविक थे। निंबार्डी में उनकी बात का बहुत महत्व था। जब फादर मैथ्यूज ने निंबार्डी के लोगों को चेतावनी दी थी कि कारखाना उनकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता को खतरे में डाल देगा, तो शेठ मनमोहन और नारायणन ने रासु सारंगा का हाथ पकड़कर उन्हें समझाया था कि 'कुछ नहीं होगा'। उन्हें सुरक्षा खाते से प्रति माह दो सौ रुपये भी मिलते थे। नारायणन जानते थे कि रासु को नियुक्त करने की कोई आवश्यकता नहीं थी; लेकिन निंबार्डी जैसे अनूठे क्षेत्र में, नारायण ने यह योजना इसलिए बनाई थी ताकि उनके सहायक के रूप में एक प्रभावशाली व्यक्ति वहां मौजूद रहे। मनमोहन शेठ ने उनकी

बात मान ली थी। रासु जब मन करता, कारखाने जाते थे। जब मन करता, नदी पर जाते थे और अगर लहरें उठतीं, तो अपनी छोटी नाव लेकर ज्वार के समय खाड़ी में चले जाते थे। अन्य नौकरों के विपरीत, उन पर समय की कोई पाबंदी नहीं थी।
नारायणन को आज सचमुच लग रहा था कि वह मुसीबत में फंस गया है। रासु सारंगा को समझ नहीं आ रहा था कि अगर उसे रवि के इरादे पता चल जाएं तो वह क्या करेगा और क्या नहीं करेगा।
रासु सारंग सीधे नारायणन के कार्यालय में आए। नारायणन को उनके आने की उम्मीद रही होगी। वे खड़े हुए और आगे बढ़े। रासु का हाथ पकड़कर उन्होंने कहा,
"चलो बाहर चलते हैं। मैं तुमसे अकेले में बात करना चाहता हूँ।" लेकिन अब रासु को लगा कि मामला कुछ गंभीर होता जा रहा है। रासु, सारंग और नारायणन कारखाने से निकलकर गांव के ठीक बाहर नाले के पास एक धान के खेत में रुक गए।
नारायणन और रासु एक गिरे हुए पेड़ के तने पर बैठे थे। नारायणन ने रासु का हाथ पकड़ा।
"सारंग, मैं एक संकट में हूँ।"
"कैसे?"
मैं यह कैसे कहूँ? एक बहुत ही कठिन समस्या खड़ी हो गई है। क्या आपको रविबाबू के स्वभाव के बारे में कुछ पता है?
"हां। वे बहुत पढ़े-लिखे हैं। लेकिन उन्हें व्यापार की अच्छी समझ नहीं है।"
मुझे यह समझने दीजिए कि यह कोई लेन-देन नहीं है। लेकिन क्या किसी का घर नष्ट करने की इच्छा रखना अच्छी बात है?
आप किसके घर में घुसने की कोशिश कर रहे हैं?

"तुम! सारंग, रविबाबू सुबी के दीवाने हैं।" नारायणन ने अचानक कहा।
रासु सारंगा ने मुट्ठी भींचकर पेड़ के तने पर प्रहार किया और कहा,
"आप क्या कहते हैं?"
"हाँ! वह स्कूल और कॉलेज में भी यही कर रहा था। इसीलिए बिग सेथ उसे यहाँ लाए और इस कारखाने का प्रभारी बना दिया।"
"तो फिर आपने इतना सब कुछ कैसे सीखा?"
"तुमने ये सब कैसे सीखा? सारंग, आजकल तो अगर तुम्हारे पास पैसा है, तो तुम किसी से भी डिग्री ले सकते हो! दिल्ली विश्वविद्यालय से भी! अरे, हमारी साधारण सी एसएससी डिग्री भी वहाँ के स्नातक के बराबर है। मैं तुम्हें विस्तार से बताऊँगी कि रविबाबू ने एक बार एम.ए. कैसे किया था। लेकिन आज तो इसी रविबाबू ने मुझे बहुत बड़ी मुसीबत में डाल दिया है।"
"अभी तक समझौता नहीं हुआ है, मैनेजर। आपको इस बारे में बड़े बॉस को बताना चाहिए। सुबी को कारखाने भेजे जाने से रोककर आपने बहुत अच्छा काम किया है। लेकिन सीतू को इसके बारे में पता मत चलने देना। वह अभी छोटा है। अगर उसे पता चल गया, तो गुस्से में आकर वह क्या करेगा, यह कोई नहीं बता सकता।"
"हाँ, इसीलिए मैंने तुम्हारे सिवा किसी और को इसके बारे में नहीं बताया। मैं कल मुंबई जा रहा हूँ। मैं बड़े शेठ से मिलूंगा और उन्हें अपने सारे विचार बताऊंगा। एक बच्चे के तौर पर, इस मामले को नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए, अगर तुम समझते हो कि ऐसा कुछ होता है!"

यह सुनकर रासु सारंग पहले तो क्रोधित हो गया, लेकिन नारायणन ने उसे आश्वस्त किया कि "हम इस समस्या का समाधान निकाल लेंगे।" इससे वह थोड़ा शांत हो गया।
उसके बाद नारायणन दो दिन बाद मुंबई चले गए। सेठ मनमोहन दास ने सब कुछ सुन लिया और अपने बैठक कक्ष में हाथ पीछे करके इधर-उधर घूमने लगे।
"अगर ऐसा है तो बस बात खत्म!" शेठ ने कहा।
"हूँ! हम स्थानीय लोगों को नाराज़ नहीं कर सकते। अगर वे गुस्सा हो गए, तो हमें हर कदम पर परेशानी होगी।"
"यह सच है। लेकिन नारायणन, मुझे नहीं लगता कि यह मामला उतना गंभीर है जितना आप सोचते हैं।"
"क्या आपको नहीं लगता कि यह गंभीर मामला है?"
"बिल्कुल नहीं! मुझे रवि की शादी करानी ही है। लेकिन जब तक हम अपने हम उम्र लोगों के बीच अपनी जगह नहीं बना लेते, तब तक मैं जल्दबाजी नहीं करूंगी। बच्चा तो आने ही वाला है। अगर इस उम्र में तुम्हारा मन नहीं है, तो कब करेगा? अगर वो बच्चे को लेकर इतना ही दीवाना है, तो तुम्हें उसकी मदद करनी चाहिए ताकि उसे बच्चा मिल सके।"
"तुम क्या कहते हो, शेठ?"
मैं तुम्हें सही सलाह दे रहा हूँ। उस रसु सारंगा के मुँह पर पाँच हज़ार रुपये फेंक दो!
"पांच हजार भी नहीं, पचास हजार भी काम नहीं आएंगे, सेठ!" नारायणन ने आत्मविश्वास से कहा।
"सच में? लेकिन मुझे लगता है कि आप जैसे समझदार व्यक्ति के लिए रवि की छोटी सी इच्छा पूरी करना असंभव नहीं होना चाहिए।"

"शेठ, वह सुबी सारंगा की बहू है! भले ही सीतू से उसकी शादी अंतरजातीय हो, फिर भी यह एक शादी है। किसी की पत्नी को बहकाना या उस पर दबाव डालना नैतिक रूप से उतना ही गलत है जितना कि गैरकानूनी।"
"क्या आप मुझे कानून सिखा रहे हैं? क्या हम उस रसु सारंगा को दो सौ रुपये मुफ्त में दे रहे हैं? उसे बता दीजिए कि जिस लड़की को आपका बेटा घर लाया है, वह उसकी कानूनी पत्नी नहीं हो सकती! और अगर इससे भी बात नहीं बनती, तो मुझे बताइए। मैं देख लूंगा!" नारायणन को समझ नहीं आ रहा था कि आगे क्या कहें। सेठ ने निंबार्डी में तीन से चार लाख रुपये खर्च करके दो कारखाने स्थापित किए थे। नारायणन का उन पर पूरा नियंत्रण था। रवि को उन्हें एक-दो साल का प्रशिक्षण देना था। लेकिन जब रवि ने शुरुआत में ही ऐसी अजीब समस्या खड़ी कर दी, तो नारायणन असमंजस में पड़ गए। उन्हें लगा था कि सेठ मनमोहन इस समस्या का कोई हल निकाल लेंगे। लेकिन सेठ ने इसके विपरीत रुख अपनाया, जिसके कारण नारायणन मुसीबत में पड़ गए।
घूमते-घूमते शेठ रुका और नारायणन से बोला, "लेकिन तुम ऐसा क्यों नहीं करते?"
"कैसे?"
"आप सीतू को किसी घोटाले में फंसाकर उसे रिहा क्यों नहीं करवा देते?"
"मालिक!"
"हाँ! तुम वो काम बिना किसी परेशानी के कर सकते हो। मुझे पूरा यकीन है। परसों तुमने सीतू और बिल गोंसाल्वेस को पुलिस के चंगुल से बचाया था, इसलिए उन लोगों को तुम्हारी अच्छाई पर भरोसा है। ठीक वैसे ही, तुमने साजिश रचकर सीतू को फंसा दिया ताकि रवि

का रास्ता साफ हो जाए। लेकिन क्या वो लड़की सच में इतनी खूबसूरत है?"
नारायणन वहाँ ऐसे बैठे थे मानो बहरे हो गए हों। वे मनमोहन शेठ को एक अजीब नज़र से देख रहे थे। मनमोहन शेठ एक कारोबारी थे। उनका मानना था कि व्यापार करते समय नैतिकता या अनैतिकता के बारे में नहीं सोचना चाहिए। लेकिन नारायणन को यह बिल्कुल भी अंदाज़ा नहीं था कि वे अपने भतीजे को उस लड़की को पाने के लिए एक धूर्त योजना बनाने की सलाह देंगे, जिसके लिए उनके मन में चाहत जाग उठी थी।
नारायणन न तो संत थे और न ही धर्मात्मा। मनमोहन सेठ को पूरा विश्वास था कि एक बार किसी काम को ठान लेने पर वो उसे पूरा किए बिना नहीं छोड़ते। लेकिन इस बार नारायणन थोड़ा परेशान थे। सीतू इतना डरपोक लड़का था कि वो न तो किसी के बीच में रहता था और न ही किसी का पक्ष लेता था। छोटे सेठ को खुश करने के लिए सीतू को किसी घोटाले में घसीटने के विचार पर वो तुरंत सहमत नहीं हुए। वो सोचने लगे, 'अगर मैं सीतू को किसी बात में घसीट लूँ, तो क्या रसू सारंग चुप रहेंगे? सीतू उनका इकलौता बेटा है। अगर मैं बिना वजह उन पर कोई बुरी खबर ले आऊँ और रसू को पता चल जाए, तो वो मुझे जिंदा नहीं छोड़ेंगे। वो कारखाना बंद करवा देंगे। वो बूढ़ा आदमी! फादर मैथ्यूज तो शुरू से ही हमारे कारखाने के खिलाफ थे। वो हम लोगों को बदनाम करने का मौका ढूंढ लेंगे। मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या करूँ। मुझे उम्मीद थी कि बड़े सेठ रविंद्र को बुलाकर उन्हें समझदारी के चार नियम बताएँगे, लेकिन ये पूरी तरह गलत था। लेकिन चाहे कुछ भी हो जाए, इस समस्या का कोई न कोई हल जरूर निकलेगा।'

जब वह वहीं खड़े-खड़े ये सब सोच रहे थे, तभी कोने में रखा फोन बज उठा। शेठ मनमोहन ने खुद फोन उठाया।
‘हेलो, मनमोहन बोल रहा हूँ। कौन बोल रहा है? नारायणन? हाँ, वो यहीं हैं। बस एक मिनट-’’ मनमोहन ने रिसीवर पर हाथ रखते हुए कहा। "तुम्हारे पास फोन है।"
नारायणन को कुछ समझ नहीं आया। यह सोचकर कि किसका फोन है, उन्होंने रिसीवर कान से लगाया और जैसे ही उन्हें पता चला कि दूसरी तरफ कौन बोल रहा है, उनका पहले से काला चेहरा और भी काला पड़ गया! उन्होंने एक-दो मिनट फोन पर बात की, फिर गहरी सांस ली और रिसीवर नीचे रख दिया। मनमोहन सोफे पर खड़े थे। नारायणन ने जैसे ही फोन का रिसीवर नीचे रखा, वे मुड़े और पूछा,
"वह कौन था?"
"सादेसाती! मेरा सौतेला भाई कृष्णन आज यहाँ फँस गया है! कृपया उसे निंबरदी का मेरा पता मत बताना। मुझे पहले से ही परेशानी है। कृष्णन को इसमें और इजाफा नहीं करना चाहिए।"
सेठ मनमोहन ने ताली बजाते हुए कहा, "शाबाश! ऐसे ही समय में इंसान की असली परीक्षा होती है। नारायण, याद रखना कि तुम्हारी चतुराई सिर्फ मुझे ही पता है। तुम्हें रविंद्र के मामले का कोई हल निकालना ही होगा।"
"लेकिन सेठ, उनकी शादी मत तोड़ो। वे ऐसे कारोबार इसलिए सुझाते हैं क्योंकि उनकी अभी शादी नहीं हुई है। एक बार जब उनकी शादी हो गई, तो चार दिनों में ही वे मुश्किल में पड़ जाएंगे!"
"मेरा भी यही विचार है; लेकिन जब तक मुझे कोई उपयुक्त जगह नहीं मिल जाती, मैं जल्दबाजी नहीं करूंगा। फिलहाल इसे शादी के लिए छोड़ देते हैं। रवि को अपनी मनपसंद लड़की के लिए थोड़ी कोशिश करनी चाहिए।"

"□□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□□□, □□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□" □□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□

चौदह
कृष्णन और नारायणन दो सौतेले भाई थे, जिनके जन्म में केवल सात महीने का अंतर था। घटनाक्रम कुछ इस प्रकार था - नारायणन की माता को बारह वर्षों से कोई संतान नहीं थी, इसलिए उनकी माता ने अपने पति की दोबारा शादी करने पर जोर दिया और उनकी शादी अपनी छोटी बहन से करवा दी। लेकिन दूसरी शादी के बाद नारायणन की माता को पता चला कि वह गर्भवती हैं। दूसरी शादी हो जाने के बाद एक अजीब स्थिति उत्पन्न हो गई। नारायणन की माता अपनी छोटी बहन के साथ अन्याय नहीं करना चाहती थीं। उन्होंने अपने पति और बहन को तिरुपति भेज दिया। उनका एकमात्र उद्देश्य उन्हें 'निजी लाभ' दिलाना था। उन्होंने अपने पति और बहन से अपनी मृत्यु की बात भी छुपा ली। यात्रा शुरू करने के बाद, वे दोनों तिरुपति से विशाखापत्तनम में नारायणन के चाचा के पास गए। वे वहां के गोदी में एक वरिष्ठ अधिकारी थे। वे दो से चार महीने तक पति-पत्नी के रूप में रहे। जब दंपति लौटे, तो दूसरी पत्नी भी गर्भवती थीं। नारायणन के जन्म के ठीक सात महीने बाद कृष्णन का जन्म हुआ। नारायणन की माता और कृष्णन की माता सगी बहनें थीं। उनके चेहरे बेहद मिलते-जुलते थे। लेकिन सात महीने के अंतर पर जन्मे इन दोनों बच्चों में और भी कई समानताएँ थीं। एक जैसी चमकदार काली त्वचा, थोड़ी चपटी नाक, ठोड़ी पर एक गड्ढा और घने, घुंघराले बाल। बचपन में ये दोनों सौतेले भाई एक साथ स्कूल जाने लगे। अगर उनमें से कोई एक अनुपस्थित होता, तो शिक्षक को ठीक से पता नहीं चलता था

कि कौन अनुपस्थित है - नारायणन या कृष्णन? दोनों भाइयों में इतनी समानता थी, लेकिन यह समानता केवल ऊपरी तौर पर थी। हालांकि, उनके स्वभाव में बहुत बड़ा अंतर था। नारायणन बेहद चालाक, रणनीतिज्ञ और दूरदर्शी था, जबकि कृष्णन कुछ हद तक जल्दबाज़, लापरवाह और मूर्ख था। कृष्णन ने अपने पिता से विरासत में मिली सारी दौलत नशे में उड़ा दी। पिछले सात-आठ सालों से वह इसी तरह भटकता रहा और अपने रिश्तेदारों से पैसे माँगता रहा। उसने अब तक नारायणन से ही दस से पंद्रह हज़ार रुपये ऐंठ लिए थे। वह नारायणन से कहा करते थे, "तुम्हें पैसों की क्या ज़रूरत है? तुम तो अकेले हो! शेठ मनमोहन को तुम पर पूरा भरोसा है। तुम्हें उन्हें बताना चाहिए कि वह पूर्वा है। मेरी एक पत्नी है, चार बेटियाँ हैं। मैं इतना बड़ा कारोबार कैसे चला सकता हूँ?"
इस पर नारायणन ने कहा, "जब मेरे कोई सांसारिक कार्य नहीं हैं तो मुझे आपके सांसारिक कार्यों का बोझ उठाने के लिए मजबूर करना किस प्रकार न्यायसंगत है? आपने अपनी सारी संपत्ति बेच दी है। अब आप मुझे क्यों सता रहे हैं?"
लेकिन कृष्णन के व्यवहार में रत्ती भर भी बदलाव नहीं आया। वह एक साल या छह महीने तक इसी तरह नारायणन के पास आता रहता। वह अपनी सारी कमाई, चाहे सौ हो, पाँच सौ हो या हज़ार, कनावती में सड़क सुधारने में लगा देता। नारायणन को अच्छी तरह पता था कि वह उस पैसे को कैसे खर्च करेगा; लेकिन इस परेशानी को हमेशा के लिए दूर करने के लिए, वह उसे अपनी सामर्थ्य के अनुसार जितना हो सके उतना पैसा देने में संकोच नहीं करता था। लेकिन जब भी वह आता, नारायणन का स्वास्थ्य पूरी तरह बिगड़ जाता।
कृष्णां निम्बार्डी से जाने के बाद से वहाँ नहीं आया था। लेकिन अब जब वह कुछ समय के लिए मुंबई आया था, तो उसने उससे संपर्क

किया। इस बार नारायणन ने ठान लिया था - अब से वह कृष्णां को कभी यह नहीं बताएगा कि वह निम्बार्डी में है।
कृष्णा टैक्सी से आया। इस समय तक वह पूरी तरह से निराशा की स्थिति में था। टैक्सी से उतरते ही उसने नारायणन से कहा,
"चाहे तुम मुझे कितना भी धोखा दो, मैं तुम्हें ढूंढना कभी नहीं छोडूंगा।"
"कृष्ण, तुम्हें क्या हुआ है?" नारायणन ने पूछा।
"इसके लिए तुम जिम्मेदार हो!" कृष्णन ने तुरंत कहा।
"मैं? मैंने क्या किया?"
"तुमने अपने पिता से विरासत में मिला सारा सोना और सिक्के ले लिए और फटे हुए कपड़े के टुकड़े मेरे गले में डाल दिए। लेकिन याद रखना - मैं अपना हिस्सा तुम्हारे पिता को नहीं दूंगी!" "क्या आपके पिता और मेरे पिता अलग-अलग थे?"
"कौन जाने! तुम्हारे व्यवहार को देखकर तो मुझे नहीं लगता कि मेरे पिता तुम्हारे जन्म के लिए जिम्मेदार थे!"
नारायणन का सिर गुस्से से लाल हो गया। वह खड़ा हुआ और झटपट तड़के को कृष्णन के मुंह में डाल दिया।
"अरे कमीने, क्या तुम्हें समझ आ रहा है कि तुम क्या कह रहे हो?" नारायणन चिल्लाया।
"मैं समझ गया!" उसने कहा और अपना हाथ उस जगह पर रखा जहाँ उसके गाल पर चोट लगी थी।
"ठीक है। अगर तुम्हारे पिता और मेरे पिता एक जैसे नहीं हैं, तो तुम मेरे साथ मरने क्यों आ रहे हो?"
"मैं मरने नहीं आया! मैं तुम्हारी तरह मूर्ख नहीं हूँ जो इतनी जल्दी मरना चाहता है! मेरी पत्नी और बेटियाँ हैं। मैं उनकी देखभाल किए बिना नहीं मरूँगा, चाहे तुम कुछ भी कहो। तुमने

परिवार के डेढ़ लाख रुपये ले लिए हैं। मैं तुम्हें तब तक नहीं छोडूँगा जब तक तुम मुझे उसका आधा हिस्सा नहीं दे देते!" "कृष्णन, क्या तुम यहाँ गांजा पीकर आए हो?"
"नहीं, सच में नहीं। अब मैंने ये सब छोड़ दिया है। कभी-कभी मैं एक-दो पेग पी लेता हूँ। अगर जेब में पैसे हों तो। आप पीते हैं ना? आप तो बड़े करोड़पति मैनेजर हैं! आप ज़रूर स्कॉच पीते होंगे! आप कुछ क्यों नहीं पीते! बताइए आप मेरे साथ क्या करना चाहते हैं। लेकिन नारायणन, मुझे मेरा आधा लाख का हिस्सा दे दीजिए। मैं अब आपके पास दोबारा नहीं आऊँगा। आप निःसंतान हैं, आप तो बस बातें करते रहते हैं! अगर कल कुछ हो गया और आप मर गए, तो कोई आपकी सारी संपत्ति चुरा लेगा। अगर मेरी दुनिया में पैसा आ जाए, तो ये मेरे लिए वरदान होगा!"
नारायणन उसे डांटना चाहता था और उसे 'चले जाओ' कहना चाहता था; लेकिन उसने अपने गुस्से पर काबू पाया। उसने एक पल सोचा और फिर कहा,
"आपने अपनी बेटियों की शादी नहीं करवाई है?"
"हाँ - दो बेटियों की शादी हो गई। दो और की शादी होने वाली है। पैसों की कमी के कारण लड़कियों की पढ़ाई बीच में ही छोड़नी पड़ी। जो भी हो - आपको यह सब बताने का कोई फायदा नहीं है। चाहे कितना भी बताया जाए, बिना पत्नी वाला व्यक्ति अपने बेटों या बेटियों के बारे में क्या सोचेगा? लेकिन यह सच है कि निःसंतान लोगों के लिए पैसा बहुत लुभावना होता है।"
"तुम्हारा क्या मतलब है?" नारायणन ने पूछा।
"मुझे मेरा हिस्सा यानी पांच लाख रुपये दे दो। फिर मुझे कुछ कहने का अधिकार नहीं रहेगा।"

मेरे पास तो एक-दो हजार रुपये भी नहीं हैं। मैं आपको ढाई लाख रुपये कहाँ से लाऊँ?
"ठीक है। मैं देखता हूँ कि इसे कैसे वापस पाया जा सकता है।" "क्या तुम मुझे धमकी दे रहे हो?"
"खतरे का तो सवाल ही नहीं उठता। दुनिया के सामने तुम जिस रूप में दिखते हो, वह झूठ है। सिर्फ मैंने ही तुम्हें सही मायने में जाना है।"
"ठीक है।"
"फिर लेन-देन के बारे में बात करें।"
मेरे पास उतने पैसे नहीं हैं।
"आज नहीं। लेकिन बाद में दे दो। क्या तुम मुझे आज कम से कम एक हजार रुपये दोगे?"
नारायण ने सोचा कि मनमोहन सेठ के घर पर दिखावा करने के बजाय उसे एक हजार रुपये भेजना बेहतर होगा! उसने मनमोहन सेठ से एक हजार रुपये लिए और कृष्णन को देकर उसे विदा कर दिया। फिर भी, जाते समय उसने कहा, "मैं तीन-चार महीने में वापस आऊंगा, इसलिए कम से कम दस-पाँच हजार रुपये का इंतजाम कर देना। एक साथ पूरी रकम की जरूरत नहीं है।"
"ठीक है, ठीक है! बाद में आना, फिर देखेंगे।"
नारायणन जानता था कि एक बार उसने हजार रुपये लेकर खुद को मूर्ख बना लिया है, तो वह चार से छह महीने तक उसके पास नहीं आएगा। कृष्णा के जाने के बाद नारायणन मनमोहन शेठ के पास गए। शाम का समय था। मनमोहन शेठ सूर्यास्त के समय बोतल खोलते थे। इस समय भी उन्होंने अपने कमरे में एयर कंडीशनर चालू कर दिया था और वही काम किया।
नारायणन के आते ही उन्होंने कहा,

"बंधुराज क्या कहता है?"
मैं क्या कहूँ? मुझे पैसों की ज़रूरत है! उसने आज अपनी तरफ से पूरी कोशिश की। उसने ढाई लाख की माँग की।
"ऐसा लग रहा है जैसे तुम हज़ार रुपये खर्च करने वाले हो। ठीक है, वह गिलास उठा लो जो वहाँ रखा है।"
नारायणन ने अलमारी से गिलास निकाला। वह मनमोहन शेठ के बगल में उसी भारतीय बेंच पर बैठ गए जहाँ वे बैठे थे। दोनों ने एक-एक घूंट लिया और फिर बातचीत में जोश भर गया।
"नारायणन, मैंने आपके द्वारा बताए गए रविंद्र मामले के बारे में बहुत सोचा है। मुझे नहीं लगता कि यह मामला उतना मामूली है जितना आप कह रहे हैं।"
"अरे, इसे नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। मैं यहाँ आपके पास इसलिए आया हूँ क्योंकि मुझे इस बारे में गंभीरता से सोचना है। अगर मैं इसे खुद ही हल कर सकता, तो इतनी दूर क्यों आता?"
"क्या वो लड़की इतनी खूबसूरत है?"
मनमोहन शेठ ने पूछा। नारायणन मुस्कुराए और बोले।
"शेठ, बताओ? उस लड़की को देखकर तो मेरी या तुम्हारी उम्र का कोई भी इंसान सोचेगा कि उसके बाल इतनी जल्दी सफेद क्यों हो गए! उसकी खूबसूरती में कोई कमी नहीं है। वो सचमुच सागर की परी है! रविबाबू जवान हैं। इसमें उनकी कोई गलती नहीं कि वो उस पर मोहित हो गए।" नारायणन ने एक और घूंट लिया। मनमोहन शेठ हँसे और बोले, "नारायणन, इस उम्र में ऐसे काम तो करने ही पड़ते हैं। मज़ा तो इसी में है। जब तक तुम्हारे दाँत हैं, भुने हुए चने तोड़कर खाने ही पड़ते हैं। उन्हें मुँह की लार में मिलाकर नरम करने और मसूड़ों से चबाने का क्या मतलब है?"

मनमोहन की उपमा पर नारायणन हंसते रहे और अपने अंगूठे और तर्जनी के बीच गोला बनाते हुए बोले, "आप बिल्कुल सही हैं।"
"रवि को वहां आनंद लेना चाहिए। इसके लिए हमें कुछ भी करना पड़े, कोई बात नहीं। अगर रवि वहां आनंद नहीं लेता है, तो आठ या दस लाख रुपये निवेश करने का कोई मतलब नहीं है।"
"वे खुश थे, साहब। उन्होंने चर्च की पहाड़ी पर बने बाहरी कमरे का पूरा जीर्णोद्धार करवा दिया है। खाने के लिए गोवा से एक रसोइया भी मंगवाया है। लेकिन जब से उन्होंने सुबी को देखा है, तब से उसका नाम जप रहे हैं! अगर कोई और होता, तो उन्हें परवाह नहीं होती। वे उसके माता-पिता के चेहरे पर दस-पाँच हज़ार रुपये फेंक देते। चुप रहते। लेकिन साला, वह तो सीधा-सादा आदमी है! वह घाटी से आने वाली हवा की गंध से ही बता देता है कि मौसम अच्छा होगा या बुरा। निंबरदी के लोगों में उसकी बात का बहुत महत्व है। वह फादर मैथ्यूज है, है ना? वह एक प्रस्था है! थेराधा पहले दिन से ही हमें शक की नजरों से देख रहा है!"
"लेकिन तुमने उसे पकड़ लिया, है ना?"
"वह मुझसे इस तरह बात करता है; लेकिन उसके मन में क्या चल रहा है, इसका अंदाज़ा नहीं लगाया जा सकता। शायद उसे मुझसे कोई शिकायत है क्योंकि मैंने चर्च काउंसिल से उसका कमरा छीन लिया था। और सिटु आखिरकार उस बूढ़े आदमी के घर में रहने लगी!"
मनमोहन शेठ ने अपना गिलास होठों से लगाया और कहा, "एक उम्र ऐसी आती है जब व्यक्ति को लगता है कि वह किसी और से वह काम करवाए जो वह खुद नहीं कर सकता, और उसे यह देखकर आनंद आता है! ऐसा लगता है कि उस बूढ़े व्यक्ति ने भी ठीक यही किया है।"

नारायणन हँसे और बोले, "मज़ाक छोड़ो। लेकिन सेठ, उस बूढ़े आदमी को उन दोनों लड़कों से सच में बहुत प्यार है। वे दोनों भी उससे बहुत प्यार करते हैं।"
"जो भी हो, मुझे इतना पता है कि रवि को वहां होना चाहिए।"
"लेकिन यह भी सच है कि उन्हें वह बच्चा आसानी से नहीं मिलेगा।" हम पानी की तरह पैसा खर्च करेंगे!
नहीं! सेठ, पैसा दुनिया के हर इंसान को नहीं खरीद सकता। अगर ऐसा होता, तो दुनिया की सारी खूबसूरत औरतें अमीर लोगों की पत्नियां या रखैल बन चुकी होतीं। सीतू सारंगा के पास पैसा नहीं है। अब उसे कारखाने में हर काम के लिए चार पैसे मिलते हैं। वह कभी अपने पिता से पैसे नहीं मांगता। वह बहुत स्वाभिमानी है।
"भिखारियों को आत्मसम्मान क्यों होना चाहिए?"
नारायणन ने इस पर हंसते हुए कहा, "उनमें आत्मसम्मान है, इसीलिए हमें एहसास होता है कि हमारे पैसे की कीमत कितनी कम है।"
"साला, तुम ऐसे बात कर रही हो जैसे मैंने स्कॉच पी रखी हो!"
क्या उन गरीब लोगों में उस लत पर काबू पाने की क्षमता है?
"मुझे कुछ मत बताओ। सौभाग्य से, हमारे कारखानों को अच्छी जगह मिल गई है। पिछले दो महीनों में चालीस-पचास हजार का शुद्ध लाभ हुआ है। अगर सफेद झींगा के मौसम में अच्छी पैदावार होती है, तो हम अमेरिका और जापान के बाजारों पर कब्जा कर सकते हैं और अगर ऐसा ही हुआ तो..."
"रवि को वहीं सोना चाहिए।"
इस बार जब नारायणन ने मनमोहन शेठ का वाक्य पूरा किया, तो मनमोहन शेठ ने खुशी से नारायणन के हाथ पर ताली बजाई और दोनों दिल खोलकर हँसे।

खाने के लिए उठने से पहले एक और राउंड बाकी था। भोजन कक्ष की ओर चलते हुए नारायणन ने कहा,
"शेठ, मैं एक हफ्ते के लिए गांव जा रहा हूँ। उसने मुझे आज ही बताया कि कृष्णन के दोनों बच्चों की अभी तक शादी नहीं हुई है। भले ही मेरे कोई बच्चे नहीं हैं, लेकिन भाई होने के नाते मुझे उससे थोड़ा मिलना तो जरूरी है।"
"जाओ! जाओ! खुशी-खुशी जाओ! लेकिन लौटने के बाद, तुम्हें निंबरदी में रवि के साथ इस झगड़े को सुलझा लेना चाहिए।"
०००

पंद्रह
इस लिहाज से देखा जाए तो नारायणन को कृष्णन की बेटियों की शादी की बिल्कुल भी चिंता नहीं थी। लेकिन उनका मानना था कि अगर वे कुछ ऐसा कर दें जिससे बेटियां खुश हो जाएं, तो कृष्णन को बार-बार पैसों की भीख नहीं मांगनी पड़ेगी क्योंकि उन्हें अपनी बेटियों की शादी के लिए पैसों की जरूरत थी।
कई वर्षों बाद, वह एर्नाकुलम आ रहे थे। गाँव में बहुत सुधार हो चुका था। नई इमारतें बन चुकी थीं। उद्योग पनप चुके थे। उन्होंने आलीशान होटल 'सी लॉर्ड' में ठहर कर अपना कमरा बुक किया। दोपहर में, वह कृष्णन के घर गए। लेकिन जब उनकी पत्नी ने नारायणन को बताया कि मुंबई से एक हजार रुपये लेकर आए कृष्णन अभी तक गाँव नहीं लौटे हैं, तो उन्हें आश्चर्य हुआ। उन्होंने कहा, "कितना गैरजिम्मेदार आदमी है!"
"तुम उसे पैसे क्यों देते हो?" कृष्णन की पत्नी ने राधानम नारायणन से पूछा।
"तुम ये क्यों देते हो? ये मेरी गोद में बैठकर पैसे लेता है। इसने इस खेप को बर्बाद कर दिया है। इसने ढाई लाख रुपये की मांग की है।"
"उसे एक पैसा भी मत देना। उस अज्ञानी व्यक्ति ने हमें बर्बाद कर दिया!" राधा ने क्रोधित होकर कहा।
"आपने दो बेटियों से शादी की है, है ना?" नारायणन ने पूछा।

"कैसी शादियां और कैसी बातें! वे घर छोड़कर चले गए। अब, बची हुई दो बेटियों के नाम पर, मैं अपने सभी रिश्तेदारों से पैसे इकट्ठा करता हूं और शराब पीने में खर्च करता हूं।"
"आपको किस तरह का नशा होता है?"
मैं अफीम खाता हूँ, शराब पीता हूँ - हर तरह का नशा करता हूँ। अगर वे कहें कि मैं मरने वाला हूँ, तो भी मैं नहीं मरूँगा!
राधा एकरस स्वर में बोल रही थी। जब नारायणन इतने वर्षों बाद गाँव आ रहा था, तो उसे यह एहसास भी नहीं था कि उसे पहले अपने परिवार के लिए चार काम करने होंगे। वह एकरस स्वर में बोल रही थी।
"पिछले साल, यह नीच आदमी अपने बच्चों को अरबों को पाँच हज़ार रुपये में बेचने को तैयार था। मुंबई में दो जगहें हैं, इसलिए वह बच्चों को वहाँ ले गया; लेकिन जैसे ही बच्चों को सच्चाई का पता चला, वे वहाँ से भाग गए।"
"क्या बात यहाँ तक पहुँच गई है?"
"मैं इसलिए बच गई क्योंकि बीमारी से मेरा शरीर कमजोर हो गया था; नहीं तो यह मुझे भी धंधे में धकेल देती!" राधा ने आंसू पोंछते हुए कहा।
"अरे बाप रे! मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि यह कृष्णन इतनी बुरी हालत में पहुंच गया है।"
"तुम गांव छोड़कर खुशी-खुशी रहने लगे। तुमने यह जानने की भी जहमत नहीं उठाई कि यहां के लोग जिंदा हैं या मर गए! तुमने शादी भी नहीं की, है ना?"
नहीं। एक तरह से, यह अच्छा ही हुआ कि मैंने उस मामले को पीछे नहीं छोड़ा!

"लेकिन तुम्हारा भाई तुम्हारे बारे में क्या कहता है, तुम्हें पता है!"
"आप क्या कहते हैं?"
वे कहते हैं कि जरूरत बाहर से आती है। तो फिर शादी-विवाह के धंधे में क्यों पड़ना?
क्या आप यही कहना चाह रहे हैं?
"तो क्या हुआ! अपने भतीजों से पूछो!" राधा ने कल्याणी और सीता को बाहर बुलाया।
दोनों बच्चियां पांच-छह साल की उम्र में यौवन अवस्था में पहुंच चुकी थीं। नारायणन ने दोनों के चेहरों पर जीवन के प्रति वही उदासीनता देखी जो पिता की लापरवाही के बाद लड़कियों के चेहरों पर दिखाई देती है। उनके चेहरों और हाव-भाव से स्पष्ट था कि वे उस घर की गरीबी से व्याकुल थीं। नारायणन को उन लड़कियों की हालत देखकर दुख हुआ, जबकि कृष्णन को गुस्सा आया।
राधा ने अपनी साड़ी के किनारे से आंसू पोंछते हुए कहा,
मैं इन बच्चों के लिए हर संभव व्यवस्था करूँगी - लेकिन वह मूर्ख व्यक्ति इस घर में वापस नहीं आना चाहिए!
नारायणन वहां चिंतित होकर बैठे थे। कुछ देर बाद, गला साफ करते हुए उन्होंने कहा,
"राधा, चिंता मत करो। इन लड़कियों के लिए कोई अच्छी जगह ढूंढ लो। शादी का सारा खर्च मैं उठा लूंगा। लेकिन कृष्णन को इस बारे में कुछ पता नहीं चलना चाहिए। वह जिद्दी स्वभाव का है। वह कोई न कोई मुसीबत खड़ी कर देगा।"
नारायणन ने अपनी पतलून की जेब से बटुआ निकाला और राधा को पाँच सौ रुपये दिए। उन्होंने कहा, "मैं एक-दो महीने में वापस आऊंगा और

तब इन दोनों बच्चों की शादी का इंतजाम कर दूंगा। तुम कोई जगह ढूंढ लो और वहाँ रहो।"
"मैं कहां देखूं? तुम्हारे भाई ने हमें नीचा दिखा दिया है। कोई हमें अंदर नहीं आने दे रहा। हाल ही में केरल में लड़कियों के अपहरण की कई घटनाएं हुई हैं। इसीलिए मैं इन दोनों को घर से बाहर नहीं निकलने दे रही।"
"जी हां!" नारायणन ने सिगरेट जलाते हुए कहा, "इसी बीच मैंने अखबार में भी पढ़ा। पुलिस ने एक ऐसे गिरोह को पकड़ा है जो यहां से लड़कियों का अपहरण करके उन्हें मुंबई और कोलकाता जैसे बड़े शहरों में वेश्यावृत्ति के लिए ले जाता था।"
"इसीलिए मैं लड़कियों को घर से बाहर नहीं निकलने देता। लेकिन मैं भगवान की कसम खाता हूँ, तुम्हारा भाई इन लड़कियों को पैसों के लिए बेच देगा। बेहतर होगा कि वह यहाँ वापस न आए।"
नारायणन ने जमीन पर जली हुई सिगरेट बुझाई। उन्होंने कहा,
"अगर वह यहाँ आए, तो उसे मेरे पास भेज देना। मैं सुनिश्चित करूँगा कि वह तुम्हें दोबारा परेशान न करे। मैं आ रहा हूँ।" “रुको, तुम्हें इस घर में आकर बिना कुछ लिए नहीं जाना चाहिए,” राधा अंदर आई। उसके पीछे लड़कियाँ भी अंदर आईं, लेकिन नारायणन को खिलाने के लिए घर में कुछ भी नहीं बचा था। परसों की हवा से एक कच्चा नारियल छत से उड़कर पिछवाड़े में गिर गया था। बस वही बचा था। कल्याणी ने नारियल छीला और उसका एक हिस्सा काटकर नारायणन को दे दिया। नारायणन ने नारियल पिया और उठ खड़ा हुआ।
शाम होते-होते वह होटल लौटा। होटल की छत पर खड़े होकर उसने पश्चिम की ओर देखा। यहाँ भी रापानी गई नावें किनारे लौट रही थीं। लेकिन ऐसी आधुनिक नावें बहुत कम थीं। केरल में प्रकृति की सुंदरता जितनी अपार है, उतनी ही गरीबी भी है।

वह सुबह तीन बजे उठा। उसे याद आया कि वह भूखा ही सोया था। उसे भूख लगी थी। लेकिन चूंकि इतनी देर रात होटल में कोई जाग नहीं रहा होगा, इसलिए वह बालकनी से अंदर आया और बिस्तर पर लेट गया। नींद की कमी के कारण जो विचार रुक गए थे, वे फिर से उसके दिमाग में उमड़ने लगे। वह इन दोनों समस्याओं का हल कैसे निकालेगा? रवि को निंबार्डी में खूब मजे करने चाहिए - और कृष्णन को यहाँ वापस नहीं आना चाहिए!
०००

सोलह
निंबरदी नदी के किनारे भारी भीड़ जमा थी। नारायणन का शव नदी के उस किनारे पर पड़ा था जहाँ ज्वार उतर चुका था। पुलिस ने शव के चारों ओर घेरा बना रखा था। लोगों को आगे बढ़ने की अनुमति नहीं थी। फौजदार पंचनामा तैयार करने में व्यस्त थे। दो पंच वहाँ मौजूद थे। कांस्टेबल पंचनामा लिख रहे थे और प्रत्येक वाक्य पंचों को पढ़कर सुना रहे थे। वे यह सुनिश्चित कर रहे थे कि पंचनामा शव की स्थिति से मेल खाता है या नहीं। पूरा पंचनामा लिखे जाने के बाद, उन्होंने उसे शुरू से पढ़ना शुरू किया।
आज हम पाँचों को पंचनामा के लिए समुद्र तट पर बुलाया गया है और हम उसे लिख रहे हैं। पंचनामा यह है कि निंबरदी गाँव के पश्चिमी तट पर रेत में एक पुरुष का शव पड़ा है और वह थोड़ा सड़ चुका है। यहाँ उपस्थित डिब्बाबंदी कारखाने के मालिक रविंद्र ने पुष्टि की है कि यह शव उनके प्रबंधक श्री नारायणन का है। शव पर जो कपड़े हैं, हाथ में जो घड़ी है और गले में जो सोने की चेन है, वे प्रबंधक नारायणन के हैं और कारखाने के मालिक रविंद्र को हम जानते हैं। शव के बाएँ हाथ पर बंधी पट्टी पर 'वी. नारायणन' नाम के अंग्रेज़ी अक्षर खुदे हुए हैं। इन सभी बातों से हम, पंचनामा लिखने वाले, इस बात से आश्वस्त हैं कि यह शव प्रबंधक नारायणन का ही है।

मृतक की उम्र लगभग पचास वर्ष है और उसकी गर्दन पर चाकू जैसे किसी धारदार हथियार से लगी चोटों के निशान हैं। उक्त प्रतिष्ठान के प्रबंधक...
उस लंबे पंचनामा के पाठ से यह स्पष्ट था कि किसी ने नारायणन की हत्या की होगी और उनके शरीर को समुद्र में फेंक दिया होगा। शरीर के सड़ने के बाद, वह बहकर किनारे पर आ गया।
पंचनामा के बाद, पुलिस ने नारायणन के शव का पोस्टमार्टम करने के लिए तालुका के डॉक्टर को बुलाया। शरीर के कुछ हिस्से सड़ चुके थे, इसलिए शव को जांच के लिए तालुका ले जाना संभव नहीं था। डॉक्टर ने अपनी नाक पर कपड़ा बांध रखा था, फिर भी शव की दुर्गंध उनके सिर तक पहुंच रही थी। जांच के दौरान, शव पर रखी वस्तुओं को हटाकर अलग रख दिया गया। बाद में उन्हें जब्त कर लिया गया और पुलिस हिरासत में ले ली गई। जांच के दौरान, डॉक्टर ने कहा कि शव के अत्यधिक सड़ जाने के कारण मृत्यु का सटीक कारण बताना असंभव है। लेकिन पुलिस को पूरा यकीन था कि मैनेजर नारायणन की हत्या की गई थी और हत्यारा हत्या के बाद शव को समुद्र में काफी दूर ले गया था। शव पर हमले के कुछ निशान थे।
शव की जांच करते समय डॉक्टर ने पुष्टि की कि मृतक की हत्या के बाद उसे पानी में फेंक दिया गया था। शव को अंतिम संस्कार के लिए वारिसों को सौंप दिया जाना था। लेकिन चूंकि नारायणन का निंबरदी में कोई करीबी वारिस नहीं था, इसलिए रविंद्र ने शव को दाह संस्कार के लिए स्वीकार कर लिया।
उस सुबह, समुद्र तट पर नारायणन का शव देखकर, रविंद्र ने तुरंत मुंबई में मनमोहन शेठ को फोन किया और उन्हें खबर दी। उस समय उन्होंने फोन पर कहा था, 'मैं तुरंत निकल रहा हूँ।' हालाँकि रविंद्र ने शव को अंतिम संस्कार के लिए अपने कब्जे में ले लिया

था, लेकिन उन्होंने अंतिम संस्कार करने के लिए कुछ देर रुकने का फैसला किया। मनमोहन शेठ मुंबई से एक विशेष वाहन में रवाना हुए। नारायणन का शव पहले से ही थोड़ा सड़ चुका था, इसलिए थोड़ा और इंतजार करने से कुछ खास नुकसान नहीं होता। फिर भी, रविंद्र को ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ा। मनमोहन शेठ दोपहर तक निंबार्डी पहुँच गए।
नारायणन की दुखद मृत्यु से वह व्याकुल था, जिसके कहने पर उसने निंबरदी जैसे एक दूरस्थ गाँव में लाखों रुपये का निवेश किया था। शोक शांत होने के बाद उसने रविंद्र से पूछा।
"यह कैसे हो गया?"
"पिछले दो दिनों से मैनेजर कहीं नहीं दिखे। हमने बहुत खोजबीन की, लेकिन पता नहीं चल पाया कि वो कहां गए। आज सुबह लोगों को उनका शव यहीं मिला।"
"क्या कोई जांच हुई है?"
"हां। जांच करने वाले डॉक्टर अभी-अभी गए हैं। उन्होंने इसे हत्या का मामला बताया है।"
तालुका के फौजदार पास ही खड़े थे। मनमोहन सेठ उनके पास गए और बोले,
"अरे, तुम अभी तक चुप क्यों हो? मेरे मैनेजर की हत्या कर दी गई है! हत्यारे को तुरंत पकड़ा जाना चाहिए!"
तभी मथुकाका वहाँ पहुँचे, हाथ में एक छड़ी पकड़े हुए। उन्होंने नारायणन के शरीर को देखा, उनके गले में लटके क्रॉस को छुआ और धीमी आवाज़ में कहा,
उन्होंने पास ही मौजूद मनमोहन शेठ को संबोधित करते हुए कहा, "उनकी आत्मा को शांति मिले।"

"उनकी मृत्यु से आपको अपूरणीय क्षति हुई है। मैं आपके दुख में शामिल हूं।"
मनमोहन शेठ ने अपनी भौंहें चढ़ाते हुए कहा, "पिताजी, मुझ पर इस तरह की खोखली सहानुभूति दिखाने का क्या फायदा! आपको पुलिस को हत्यारे का पता लगाने में मदद करनी चाहिए।"
मैं वादा करता हूँ। मैं हर तरह से तुम्हारी मदद करूँगा। अपराधी को सज़ा मिलनी ही चाहिए। हत्या सबसे जघन्य अपराध है। भगवान इसे कभी क्षमा नहीं करेंगे!
नारायणन के शव का अंतिम संस्कार भी उसी स्थान पर किया गया। सूर्योदय से ही समुद्र तट पर जमा भीड़ सूर्यास्त के समय अंतिम संस्कार के बाद तितर-बितर हो गई। निंबरदी में ऐसी भयावह घटना पहले कभी नहीं हुई थी; इसलिए वहां मौजूद सभी लोग भयभीत थे। वे नारायणन की हत्या के बारे में आपस में कानाफूसी करते हुए अपने- अपने घरों को लौट गए।
जैसे ही यह खबर तालुका से जिले तक पहुंची, डी.वाई.एस.पी. और सर्कल पुलिस इंस्पेक्टर जैसे वरिष्ठ पुलिस अधिकारी भी आधी रात को निंबार्डी पहुंच गए। अगले दिन सुबह हुई। रसू सारंग, सीतू और सुबी मथुकाका के कमरे में चिंतित बैठे थे। गांव में सीतू के खिलाफ अफवाहें फैल रही थीं। कई लोगों का मानना था कि चूंकि नारायणन ने सुबी को नौकरी से निकाल दिया था, इसलिए सीतू ने उसकी हत्या कर दी और नाव से उसका शव गहरे समुद्र में फेंक दिया। कुछ लोगों ने यह भी अनुमान लगाया कि रसू सारंग ने प्रबंधक का पद पाने के लिए इस हत्या की साजिश रची होगी। कुछ लोगों को शक था कि मथुकाका का भी इसमें हाथ हो सकता है। लोगों के मन में तरह-तरह के कयास लग रहे थे कि मथुकाका ने ही यह साजिश रची होगी और रसू और सीतू की मदद से नारायणन की हत्या की होगी। लेकिन अंततः, पुलिस

को ही सच्चाई का पता लगाना था, और अंततः अदालत को ही यह तय करना था कि पुलिस को जो जानकारी मिली है वह सच है या नहीं।
लोगों के बीच फैली फुसफुसाहट जल्द ही वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों तक पहुँच गई। पुलिस को जिन तीन लोगों के मन में नारायणन के प्रति द्वेष होने का संदेह था - मथुकाका, रसु सारंग और सीतू - उन्हें पुलिस उपायुक्त द्वारा तलब किया गया। सबसे पहले मथुकाका को उनके सामने पेश किया गया!
"जी हाँ, पिताजी-" डी. वाई. एस.पी. ने पूछा, "यह हत्या किसने की? आपका क्या अनुमान है?"
मैं क्या कहूँ? मैं पूरी तरह से हैरान हूँ। इस निंबरदी में एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जो नारायणन को मारना चाहता हो।
डी. एस. वाई. पी. जोर से हँसा और बोला, "तो क्या उसकी मौत किसी भूतिया फार्म में हुई?"
"मैं ऐसा नहीं कह रहा हूँ; लेकिन उसका हत्यारा निश्चित रूप से निंबार्डिट नहीं है।"
"पिताजी, उसका हत्यारा निंबार्डी में है!"
"मुझे ऐसा नहीं लगता।"
"सितु की पत्नी को नारायणन ने नौकरी से निकाल दिया।" डी. वाई. एस. पी. मथुकाका को ऐसे देखता रहा, मानो उसे अपना थैला पानी में फेंककर देखते रहना चाहिए।
"हां, मैं समझ गया। लेकिन क्या आपको लगता है कि सीता ने उसे इतने मामूली कारण से मार डाला?"
"इसकी काफी गुंजाइश है। हमारे पास मौजूद सबूतों के आधार पर, हम निश्चित हैं कि नारायणन का हत्यारा सीतू के अलावा कोई और नहीं है।"
आपके पास क्या सबूत हैं?

"रुको, ओ फातु, इधर आओ।"
फातु भंडारी अंदर के कमरे में बैठे थे। वे बाहर आए। उनसे बात करते हुए डिप्टी स्पेशलिस्ट ने पूछा, "बताइए, आपने परसों शाम क्या देखा?"
"अगली शाम, सात बजे, मैं भाटगरवाड़ी से लौट रहा था, तभी सीतू और प्रबंधक वाडी के कोने पर नाव में सवार थे।"
"देखिए, पिताजी, डॉक्टर ने नारायणन की मृत्यु का जो समय बताया है, वह इस समय से मेल खाता है। इसके अलावा, नाव पर सवार जिन्गु डाल्ड्या ने उन दोनों को तट से आठ मील दूर देखा था।"
"यह झूठ है! परसों पूरे दिन सीतु मेरे साथ थी," मथुकाका ने तीखे स्वर में कहा।
"पिताजी, आप एक पुजारी हैं। आपसे यह अपेक्षा नहीं की जाती कि आप सच्चाई को छिपाने का प्रयास करें।"
"मैं सच नहीं छिपा रहा हूँ। जो भी तुम्हें यह बात बता रहा है, वह झूठ बोल रहा है!" मथुकाका ने कांपते हुए कहा।
"यह बात सच है या झूठ, इसका फैसला अब अदालत में होगा।"
"लेकिन जब शेते साहूकार मामले में सीतु को पुलिस ने गिरफ्तार किया था, तो नारायणन ने ही उसे बचाया था। भला वह अपने उपकारी के खिलाफ कैसे हो सकता था?"
"लोग कृतघ्न हैं। वे अपने उपकार करने वालों को मारने से भी नहीं हिचकिचाते।"
लेकिन नारायणन की हत्या में सीतु का क्या स्वार्थ था? "स्वार्थ? हमें अभी तक यह नहीं पता कि यह उसने चाहा था या उसके पिता ने। लेकिन हमें जल्द ही पता चल जाएगा। इसके अलावा, कुछ लोगों का मानना है कि आपने नारायणन की हत्या को भी उकसाया था। आप कंपनी के मालिक को रहने के लिए जगह देने को तैयार नहीं थे,

इसलिए आप उससे भी नाराज़ थे क्योंकि नारायणन को वह जगह चर्च परिषद से मिली थी।"
फादर मैथ्यूज ने माथे पर हाथ मारते हुए कहा, "हे भगवान! इन्हें पता नहीं ये क्या बोल रहे हैं!" उन्होंने अपने हाथ हवा में उछाले और सिर हिलाते हुए बाहर चले गए।
पुलिस ने सीतू को गिरफ्तार कर लिया। दो लोगों ने सीतू और नारायणन को नाव में एक साथ जाते देखा था। एक फातू थी और दूसरा जिंगू डाल्डी।
पुलिस को चार-पाँच गवाह मिले जिन्होंने बताया कि नारायणन ने सुबी को इसलिए नौकरी से निकाल दिया क्योंकि वह मन लगाकर काम नहीं कर रही थी। रवि ने खुद पुलिस को बयान दिया कि रासु सारंगा प्रबंधक का पद चाहती थी और उसने इसके लिए तीन-चार बार उससे अनुरोध किया था।
डी.एस.वाई.पी. ने पुलिस को संबोधित करते हुए कहा, "जब आखिरी दृश्य और मकसद के सबूत इतने मजबूत हैं, तो और क्या चाहिए?"
"जी हां, महोदय। लेकिन अगर सीतू और नारायणन के रिश्ते अच्छे नहीं हैं, तो वह सीतू के साथ नाव में अकेले कैसे जा सकता है?" "बाहर से देखने पर सीतू शायद ऐसा न लगे।"
"लेकिन वह लड़का नहीं लगता, महोदय।"
"आपको पता है कि आपराधिक मामले में किसी की राय मायने नहीं रखती, है ना?"
‘‘हो.’’
"तो फिर यूं ही बैठे मत रहिए और समाधान खोजने की कोशिश मत कीजिए। इस दिशा में अपराध की जांच कीजिए और धारा 302 के तहत सिटु के खिलाफ मामला दर्ज कीजिए।"
"महाराज!" सिपाही ने कहा।

‘‘बोला!’’
"सिटू युवा है।"
"तुम्हारा मतलब युवा से है? उन्नीस या बीस साल के, है ना?"
‘‘हो.’’
"तो वह नाबालिग नहीं है। एक सामान्य मामला ही काफी होगा।" "मेरा मतलब उस अर्थ में नहीं है। लेकिन हमें इस बारे में थोड़ा और गहराई से सोचने की जरूरत है कि क्या उसकी ओर से इस तरह का भयानक साहसपूर्ण कार्य संभव है।"
"देखिए, मैं आपसे कह रहा हूं कि जांच की दिशा का पालन करें और फिर आगे जो भी होता है उसे होने दें।"
‘‘येस, सर.’’
जब उप-सैनिक सेवा अधिकारी ने ऐसा आदेश दिया, तो फौजदारों के पास सोचने का ज़्यादा समय नहीं था। रवींद्र ने उप-सैनिक सेवा अधिकारी साहब का अच्छा साथ दिया था। साहब नाव में ही रुके रहे। रात में मनमोहन शेठ के साथ एक 'ओली' पार्टी थी। उस पार्टी में साहब ने सीतू को सज़ा दिलाने के लिए हर संभव प्रयास करने का वादा भी किया।
अगले दिन, अपराध की जांच में तेज़ी आई। भाटगरवाड़ी तट पर सीतू और नारायणन को नाव में चढ़ते देख चुके फातू भंडारी ने बताना शुरू किया कि जब नाव किनारे लौटी तो सीतू अकेला था। इसके अलावा, जिस चाकू से नारायणन के शरीर पर घाव किए गए थे, वह भी नाव के तल में फंसा हुआ था। सीतू ने न्यायाधीशों के सामने उसे निकाला। वह चाकू मृतक के खून से सना हुआ था। उस चाकू का पंचनामा भी बनाया गया था। अपराध की जांच इतनी सख्ती से की जा रही थी कि सीतू के पक्ष में चाहे कितना भी बड़ा विद्वान वकील क्यों न लाया जाए, अदालत में उसका बरी होना असंभव था।

रासु सारंग अकेले इधर-उधर भाग रहा था। वह लोगों से कह रहा था, "मेरा सीतू निर्दोष है। उसने यह हत्या नहीं की।" लेकिन जो वादा कभी बेमन से किया गया था, अब वह झूठा साबित हो चुका था। कोई भी उसकी बातों पर विश्वास करने को तैयार नहीं था।
सभी को लगा कि अपराध की पुलिस जांच जायज़ थी। रासु सारंगा सो गया। उसकी ठुड्डी पर एक इंच लंबी दाढ़ी उग आई थी। उसकी आँखों में एक भयावह भाव दिखने लगा। समुद्र तट पर बैठे-बैठे वह बेकाबू होकर रोने लगा।
फादर मैथ्यूज! मथुकाका भी लगभग उसी स्थिति में था। लेकिन वह रो नहीं रहा था। वह उसी तरह प्रार्थना कर रहा था।
‘‘ओ लॉर्ड! माय चाइल्ड इज इनोसंट. यू अलोन कॅन रेस्क्यु हिम.’’ लेकिन आज, उनका यीशु सिटु को बचाने में असमर्थ था।
पाडी दिन-रात रोती रहती और सुबी की बाहों में गिर पड़ती। उसे पूरा यकीन था कि सीतू कभी ऐसा घिनौना काम नहीं करेगा। पाडी का यह सोचना स्वाभाविक था कि उसके बेटे पर लगे आरोप झूठे हैं, लेकिन उसे पूरा विश्वास था कि सीतू निर्दोष है।
सुबी को शक था कि असलियत कुछ और ही है। नारायणन द्वारा अचानक नौकरी से निकाले जाने से उसका दिल टूट गया था। लेकिन उसे नहीं लगता था कि नारायणन की हत्या का इस बर्खास्तगी से कोई संबंध था। जब सुबी का गर्भपात हुआ, तो सीतू बहुत रोया और बोला, "भगवान मुझसे इतने नाराज़ क्यों हैं, जबकि मैंने किसी का कोई नुकसान नहीं किया?" इसलिए उसने चर्च में पुजारी से कई बार यही सवाल पूछा। आखिरकार, जब मथुकाका ने उसे समझाया, तब जाकर वह शांत हुआ। सीतू का संवेदनशील स्वभाव जगजाहिर था। यहां तक कि जब सुबी के पिता भिक्कू रस्सी के पुल से गिरकर मर गए, तब भी सीतू दुखी हुआ था। जब मथुकाका के साथ चार दिन रहने आए विदेशी मेहमान एडम्स,

जाऊँगा? और क्यों? मैंने क्या किया है? मैंने नारायणन की हत्या बिल्कुल नहीं की। गहरी सोच में डूबे हुए वह जोर से चिल्लाया, "नहीं, नहीं, मैंने प्रबंधक की हत्या नहीं की! मुझ पर लगा यह आरोप झूठा है!"
बाहर कमरे की रखवाली कर रहे कांस्टेबल ने उस पर झल्लाते हुए कहा, "अरे शिंचा, तुम यहाँ क्यों रो रहे हो कि तुमने हत्या नहीं की? अदालत में जज के सामने मुझे बताओ।"
मामला प्रतिबद्ध था. सीटू के मामले की सुनवाई चित्रदुर्ग के सेशन कोर्ट में होने वाली थी. रासु सारंगा ने अपना किडुकामिदुक बेच दिया। मथुकाका ने अपने पैसे में से कुछ सौ रुपये दिए और सीटू का बचाव करने के लिए एक अच्छे वकील को नियुक्त किया।
सीतू के मामले की सुनवाई में चार दिन बाकी थे। अचानक रासु सारंगा को मनमोहन शेठ का फोन आया। मैनेजर की हत्या के बाद से रासु कारखाने नहीं गए थे। रविंद्र ने उनकी जगह फातू को नियुक्त कर दिया था। अगर किसी को भी उनकी जगह नियुक्त किया जाता तो रासु को कोई हैरानी नहीं होती; लेकिन फातू की नियुक्ति देखकर उन्हें थोड़ा झटका लगा। फातू नारायणन हत्याकांड में सीतू के खिलाफ गवाह था।
फातु निंबरदी में पला-बढ़ा था। उसे सच्चाई में ज़रा भी रुचि नहीं थी। उसका रवैया था, 'कहीं न होने से कहीं होना बेहतर है'। गाँव में वह चुगलखोर के रूप में जाना जाता था। फिर, अपने स्थान पर ऐसे फातु को नियुक्त होते देख, रासु सारंगा को लगा कि कुछ गड़बड़ है।
मनमोहन शेठ का निमंत्रण मिलने के बाद, वह क्षण भर के लिए असमंजस में पड़ गया। उसे जाना चाहिए या नहीं?
लेकिन अंत में वह चला गया।

"आओ, रसु। तुमने यह अवतार क्यों लिया?" मनमोहन शेठ ने उनसे स्नेहपूर्वक पूछा।
रासु सिर झुकाए खड़ा था। उसने अपने उलझे हुए बालों में हाथ फेरा और कहा, "हे स्वामी, मेरे सीतु।"
"हाँ, इसीलिए मैंने तुम्हें बुलाया था। उसने गुस्से में आकर कुछ ऐसा कर दिया जो नहीं करना चाहिए था। नारायणन तो गया; अब सीतू को क्या सज़ा मिलेगी, कौन जाने। लोग कहते हैं कि उसे हत्या के लिए फाँसी दी जाएगी! लेकिन उसकी कम उम्र को देखते हुए, उसे निश्चित रूप से उम्रकैद की सज़ा मिलेगी। कम से कम वह दस-बारह साल बाद तो लौट आएगा।"
"लेकिन स्वामी जी, यह सब झूठ है!"
मनमोहन शेठ ने अजीब सी मुस्कान के साथ कहा, "रासु, अपने बच्चे के प्रति प्रेम के कारण तुम्हारा ऐसा महसूस करना स्वाभाविक है। लेकिन मुझे तुम्हारे और सीतू के लिए दुख हो रहा है। अगर सीतू इस मामले से बचना चाहती है, तो केवल एक ही रास्ता है।"
"कौन सा?" रासु ने असहाय महसूस करते हुए पूछा।
"सिथु छह महीने पहले की तारीख वाला एक दस्तावेज तैयार करती थी जिसमें लिखा होता था कि उसने सुबी को तलाक दे दिया है।"
"तब क्या होगा?"
"तब अदालत को यह दिखाया जा सकता है कि तलाक के कागजात देने वाली पत्नी से सीतू को नाराज होने का कोई कारण नहीं है। इसके अलावा, यदि ऐसा कोई दस्तावेज पेश किया जाता है, तो फातू और अन्य सरकारी गवाहों की विश्वसनीयता भी धूमिल हो सकती है। इस तरह सीतू इस मामले में पूरी तरह बरी हो जाएगा।"
रासु को पहले तो मनमोहन शेठ की बात समझ नहीं आई। लेकिन थोड़ी देर सोचने के बाद उसने कहा, "क्या मैं सुबी को तलाक दे दूं?

लेकिन तलाक देने के लिए सितु यहाँ है कहाँ, और वो भी पुरानी तारीख पर?"
"उसकी चिंता मत करो। तुम हाँ कह दो। जेल से उस कागज़ पर हस्ताक्षर करवाना मेरी ज़िम्मेदारी है। हाँ, एक बात और याद रखना - सुबी के रिहा होने के बाद, पंचायत में बैठे तुम लोगों का इस बात पर कोई अधिकार नहीं रहेगा कि वह किसके साथ रहेगी या क्या करेगी।"
रासु असमंजस में था। उसे इस समझौते और मामले के निपटारे के बीच का संबंध समझ नहीं आ रहा था। उसने कहा,
"गुरुजी, सुबी सीतु की पत्नी है। आपको पहले उनसे पूछना चाहिए।" "वह मूर्ख है। अगर उसमें थोड़ी भी समझ होती, तो क्या वह इतने मामूली कारण से मैनेजर की हत्या कर देता?"
"तब क्या करूँ?"
"अगर आप चाहते हैं कि सीतू जीवित रहे या उसे आजीवन कारावास की सजा न मिले, तो आपको सीतू और सुबी के रिश्ते को तोड़ना होगा! क्या आप तैयार हैं?"
मैं इस पद के लिए आवेदन कर रहा हूं।
"जाओ। पूछो और यह सब जल्दी से हो जाना चाहिए। एक बार यह मामला सेशंस कोर्ट में लंबित हो जाए, तो अगर तुम कहोगे कि तुम्हें एक नहीं बल्कि सौ समझौता पत्र मिलेंगे, तो इसका कोई फायदा नहीं होगा - यह बात याद रखना।"
घर आने से पहले रासु पहाड़ी की ओर मुड़ा। मथुकाका रात्रि प्रार्थना समाप्त करके सोने की तैयारी कर रहा था। पागल हो चुका रासु सारंग अंदर आया। उसने मथुकाका को मनमोहन के साथ हुई अपनी बातचीत के बारे में बताया। मथुकाका ने शांति से सब कुछ सुना और कहा,

"तो, एक तरह से, हम यह स्वीकार कर रहे होंगे कि ये सभी घटनाएँ सुबी के कारण घटीं। लेकिन बेहतर होगा कि आप सुबी की बात पर भी विचार करें।"
"तुम उसे मना लो। वो तुम्हारे सिवा किसी और की बात नहीं सुनेगी।"
"रासु, तुम उस बच्ची को नहीं जानते। सुबी सीतू के लिए अपनी जान देने को तैयार होगी। लेकिन मुझे शक है कि वह फिरौती का नोट देने को तैयार होगी या नहीं।"
"चाचा जी, क्या हमने सीतू से उसकी शादी इसलिए तय की थी ताकि वह इतनी हिचकिचाए?"
"अरे, ये तो पागलपन है! विवाह तो समाज की समझ के लिए बनाया गया एक समारोह है। विवाह दो आत्माओं का शुभ मिलन है! ऐसा माना जाता था कि विवाह तभी संपन्न होता है जब वह पति-पत्नी के दिलों से उत्पन्न होता है। इसके विपरीत, जब पति-पत्नी का आपस में कोई पूर्व परिचय न हो, तो रीति-रिवाजों और परंपराओं के प्रभाव से विवाह के नाम पर जो भ्रम पैदा होता है, वह सही मायने में 'विवाह' नहीं है। मुझे नहीं लगता कि सुबी तलाक देने के लिए तैयार होगी।" ०००

सत्रह
ग्रीष्म ऋतु समाप्त हो चुकी थी। मानसून शुरू हो चुका था। दूर नीले क्षितिज से सफेद बादल तेजी से पूर्व की ओर बढ़ते दिखाई दे रहे थे। मौसम विभाग ने हवाई सूचना जारी कर छोटी-बड़ी नावों को तूफान की चेतावनी दी थी।
कारखाने बंद हो चुके थे। लेकिन छोटी नावें कभी-कभार खाड़ी से गुंजाली, पलाव और शूतक जैसी मछलियाँ पकड़ने जाती थीं। डिब्बाबंदी कारखाने की मशीनरी खोल दी गई थी। उसमें तेल डालने का काम चल रहा था। कोल्ड स्टोरेज का रेफ्रिजरेशन सिस्टम बंद कर दिया गया था। इस चार महीने की अवधि के दौरान, रवींद्र ने शेठ मनमोहन की सलाह पर, श्रमिकों को घर बैठे रहने के दौरान आधी तनख्वाह देने की उदार नीति की घोषणा की थी। इससे निंबर्दी को यकीन हो गया कि कारखाने के मालिक दयालु हैं।
सुबी चर्च की पहाड़ी पर मथुकक परिवार के सामने खड़ी थी। रोने से उसकी आँखें लाल हो गई थीं। रसू और पाडी ने उसे एक ही सलाह दी थी, "सीतू को पिछली तारीख से रिहा करवाने के लिए तैयार हो जाओ।" सीतू के माता-पिता को पूरा यकीन था कि यही एकमात्र तरीका है जिससे सीतू इस मामले से मुक्त हो पाएगी। लेकिन सुबी ने उनसे कहा, "आपको रिहाई की क्या ज़रूरत है? मैंने तो चर्च की पहाड़ी पर अपनी जान देकर मुक्ति पाई थी।"
इस पर रासु ने कहा था, "सिर्फ इसलिए कि तुमने अपनी जान दे दी, सीतू इस मामले से बच नहीं पाएगी। यह साबित करने के लिए लिखित

सबूत तैयार करना जरूरी है कि जिस दिन यह अपराध हुआ था, उस दिन तुम सीतू की पत्नी नहीं थीं।"
सुबी को यह बिल्कुल समझ नहीं आया। वह मथुकाकांका के पास आई। रोते हुए उसने उन्हें सब कुछ बताया और कहा,
"चाचा जी, अगर मैं सीतू से अपना रिश्ता तोड़ दूं, तो मुझे किसका सहारा बनना पड़ेगा? चाचा जी, आपको नहीं पता कि यह सब किसलिए हो रहा है।"
"किसलिए?"
"युवा मालिकों के लिए!"
"आप क्या कह रहे हैं?"
"सिथु, कसम से! जब भी मैं तुम्हारे पास आता हूँ, तो वो युवा मालिक बरामदे में खड़ा होकर मुझे देखकर मुस्कुराता है। वो मुझे इशारे करता है। मुझे उससे बहुत डर लगने लगा है।"
मथुकाका ने गंभीरता से कहा, "मुझे कुछ संदेह था। लेकिन मैंने कहा, 'किसी को समझे बिना उस पर अपनी राय मत थोपो।'"
"अब मेरा सहारा कोई नहीं! पिता चले गए - माता भी चली गईं! अब सीतू के माता-पिता मुझे परेशान करने लगे हैं क्योंकि मेरे कारण उनका बेटा हत्या के मामले में फंस गया है। मैं सीतू की पत्नी हूँ। मैं इस उम्मीद में जी रही हूँ कि वह जल्द ही रिहा हो जाएगा; लेकिन ये लोग सीतू के साथ मेरा रिश्ता तोड़ने की कोशिश कर रहे हैं। फिर मैं किसके लिए जीऊँ? किसलिए?"
मथुकाका ने सुबी की बातें चुपचाप सुनीं और कहा,
"सुबी, ऐसा मत सोचो कि मैं तुम्हारी भावनाओं को नहीं समझती, मेरी प्यारी - लेकिन इस मामले में मैं भी उतनी ही बेबस हूँ जितनी तुम हो। मुझे समझ नहीं आ रहा कि आखिर हो क्या रहा है।"

"आज वे मुझसे तलाक मांगते हैं, कल वे कहेंगे कि मैं छोटे जमींदारों की रखैल हूँ। मैं यह सब कैसे सुन सकती हूँ?"
"मैंने अपने जीवन में कई तरह की समस्याओं का समाधान किया है, मेरे बच्चे, लेकिन अपने पैंसठ साल के करियर में मैंने कभी ऐसे भयानक सवाल का सामना नहीं किया!"
मथुकाका माथे पर हाथ रखे बैठे थे। जब सुबी ने आह भरते हुए उन्हें अपने कारण बताए, तो उनकी मनःस्थिति बहुत अस्पष्ट हो गई। हालाँकि वे सीतू को रिहा करवाना चाहते थे, लेकिन उन्हें यह विश्वास नहीं हो रहा था कि सुबी और सीतू का रिश्ता खत्म हो जाए। रविंद्र की नई चाल उनकी चिंताओं को और बढ़ा रही थी। सुबी का फिरौती मांगने का मकसद अब स्पष्ट हो गया था। मनमोहन सेठ सुबी के बदले सीतू को रिहा करने को तैयार थे। लेकिन कोई भी समझदार और नैतिक व्यक्ति ऐसे अनैतिक सौदे के लिए राजी नहीं होगा। मथुकाका तो बिल्कुल भी नहीं। हालाँकि, उन्हें धीरे-धीरे यह उम्मीद सताने लगी कि वे रविंद्र को बदल देंगे। सुबी को उसके कमरे में बिठाकर वे सड़क के उस पार रविंद्र के कमरे में गए। रविंद्र ने टेप रिकॉर्डर पर अंग्रेजी संगीत लगा रखा था। उनकी मेज पर शराब का आधा भरा गिलास रखा था।
‘‘ओ हो हो! अंकल प्लीज कम इन, व्हॉट ए प्लेजंट सरप्राईज!’’ उन्होंने मथु काका से हाथ मिलाया और विनम्रतापूर्वक उन्हें फोम के सोफे पर बैठाया। फादर मैथ्यूज जब से यहाँ रहने आए थे, तब से पहली बार रविंद्र से मिलने आए थे।
"कहिए, चाचा जी, हम आपकी क्या सेवा कर सकते हैं?"
"रवींद्र, मैं आपसे एक निवेदन करने आया हूँ।"
"अपने आदेश बताइए, चाचा जी। आपकी क्या विनती है?"
"रवि, इतना बदतमीजी करना बंद करो!"

रविंद्र ने गिलास से एक घूंट लिया, जोर से हँसा और बोला,
"क्या बढ़िया मजाक है, अंकल! मैं तो उसका सुर भी नहीं पकड़ रहा था, तो उसे जाने देने का सवाल ही कहाँ उठता है?"
"रवि, यह गिरजाघर का प्रांगण है। इस गिरजाघर की महानता अतुलनीय है। जब सूखा पड़ा था, तब निंबरदी के लोगों ने यहाँ सामूहिक प्रार्थना की थी, और उसी रात यहाँ बिजली गिरी, जिससे ताजे, जीवनदायी जल का एक झरना फूट पड़ा। अगर तुम यहाँ लेटे रहोगे, तो तुम्हें पछतावा होगा। इसलिए मेरी बात ध्यान से सुनो - शोर मचाना बंद करो।"
रवि ने सिगरेट जलाई और नाक-मुंह से धुआं निकाला। वह खिड़की के पास खड़ा था, समुद्र की ओर मुंह किए हुए। उसके सिर के लहराते बाल हवा में हिलने लगे। उसके शरीर पर पहनी 'बोस्की' कमीज हवा में फड़फड़ाने लगी। अपने बालों में हाथ फेरते हुए उसने कहा,
"चाचा जी, अगर मैं सच बताऊँ तो आप नाराज़ नहीं होंगे, है ना?" "बिल्कुल नहीं।"
"तो सुनो। मुझे सुबी चाहिए! उसकी छवि दिन-रात मेरी आँखों से ओझल नहीं होती। मैं उसे रानी की तरह रखूँगा! बताओ, क्या उसे उस सीतू से भरपेट खाना मिला? पर्याप्त कपड़े? वो भी नहीं! मैंने सुबी को कोल्ड स्टोरेज में आम छीलते देखा और उस पल मैंने सोचा... लेकिन बाद में मुझे एहसास हुआ कि उसका और सीतू का रिश्ता था।" "रिश्ता? रवि, ओह, वह उसकी पत्नी है!" मथुकाका ने अपनी भौहें उठाकर कहा,
मैंने अब तक कई लोगों से पूछा है। लेकिन किसी ने भी मुझे यह नहीं बताया कि वे शादीशुदा हैं।
मैं आपको बता रहा हूँ। वे पति-पत्नी हैं।
"क्या आपने उनकी शादी का आयोजन किया था?"

कुछ देर सोचने के बाद मथुकाका ने कहा, "मैंने शादी का इंतजाम नहीं किया था। लेकिन यह सच है कि वे पति-पत्नी हैं।"
रवि फिर जोर से हँसा और बोला, "चाचा जी, बकवास करने का कोई फायदा नहीं है। कुछ काम की बात कहिए।"
‘‘सुबी का शोर बंद करो!’’ मथुका ने हताशा में कहा।
"ठीक है, चलिए ऐसा करते हैं।"
"कैसे?"
"सीतू को सुबी से तलाक ले लेना चाहिए जैसा कि थोरा सेठ ने सुझाव दिया था - अगर आप सचमुच, ईमानदारी से चाहते हैं कि सीतू इस मामले से बाहर निकल जाए!"
"मुझे लगता है कि दोनों बातें सही हैं - सीतू को रिहा किया जाना चाहिए और उसे सुबी से तलाक नहीं लेना चाहिए।"
"असंभव! चाचा जी, यह असंभव है। दरअसल, सीतू जैसे हत्यारे को तो मौत की सज़ा मिलनी ही चाहिए। लेकिन बड़े सेठ बहुत दयालु हैं, इसलिए उन्होंने परसों यह सुझाव दिया। मुझे उनकी विनती माननी पड़ी। वरना सीतू को ज़रूर सज़ा मिलती। क्या आपको लगता है कि उम्रकैद की सज़ा मिलने के बाद सुबी जैसी खूबसूरत युवती सज़ा पूरी होने तक पवित्र रहेगी?"
"रवि! तुम्हें अपनी राय बताने का कोई फायदा नहीं। तुमने यहाँ के लोगों को धन के बल पर प्रभावित किया है; लेकिन तुम इस जन्म में सुबी को नहीं पा सकते! चाहे सीतू और सुबी हमेशा के लिए अलग हो जाएँ, तुम उसे नहीं पा सकोगे!"
"चाचा जी!" रवि ने सिगरेट का कश लेते हुए कहा, "मुझे लगता है आपने उसके दिमाग में कुछ डाल दिया है। लेकिन अगर सुबी मेरे घर आती है, तो उसका जन्म शुभ होगा। आप इस बारे में सोचिए।"
क्या तुम उससे शादी करने जा रहे हो?

"शादी? हां! वह मेरे साथ ही रहेगी, जैसे वह सीतू के साथ रहती थी।" "रवि, तुम आत्महत्या कर रहे हो।"
"बिल्कुल नहीं! इसके विपरीत, मुझे दुर्लभ चीजें प्राप्त करने में आनंद आता है! सुबी के बदले में आप जो चाहें मांग सकते हैं, मैं आपको दे दूंगा।"
"रवि! हे पागल! मैंने जीवन भर उपदेश दिया। मैंने एक निष्कलंक, चरित्रवान जीवन जिया। अब मेरे जीवन का सूर्यास्त मेरे सामने दिखाई दे रहा है। धरती का कोई धन मुझे बहका नहीं सका। अपने जीवन के सबसे आशापूर्ण दौर में भी मैं निराशा में डूबा रहा। तो अब जब मृत्यु मेरे सामने है, तो तुम्हें क्या लगता है कि मुझे किस बात का प्रलोभन होगा?"
"सच कहूँ तो, चाचा जी, आपने उस ईसाई धर्म के साथ विश्वासघात किया है जिसके आप उपदेशक थे। सिटु सारंग एक गबिट और सुबी भंडारी हैं। आपने अलग-अलग जातियों के इन दो बच्चों से प्यार किया। आपने उन्हें अपना माना। अगर आपको बच्चे चाहिए थे, तो आपने बिल गोंसाल्वेस से शादी क्यों नहीं की?"
मथुकाका ने रवि की ओर देखा, मुस्कुराया और बोला, "भले ही वह उपदेशक बन जाए, फिर भी वह एक इंसान है और मैं भी एक इंसान हूँ। इसीलिए वे दोनों मासूम बच्चे मेरे पास आए। उनके और मेरे बीच एक अटूट रिश्ता बन गया। एक बार आत्मीयता का बंधन बन जाए तो जाति की छोटी-मोटी दीवारें ढह जाती हैं। सीतु की जाति का ख्याल मेरे मन में कभी नहीं आया।"
"तो क्या आप सार्वभौमिक बंधुत्व में विश्वास करते हैं?"
रवि ने बहुत कुछ जानने के भाव से पूछा।
"हर सच्चा उपदेशक सार्वभौमिक भाईचारे में विश्वास रखता है। जो उपदेशक यह दावा करता है कि केवल उसका धर्म ही श्रेष्ठ है और वह

अपने धर्म के लोगों को अपने करीब रखना चाहता है, उसने किसी भी धर्म का अर्थ नहीं समझा है। मैंने हर व्यक्ति को सर्वप्रथम मनुष्य के रूप में देखा है। मैं अपनी मृत्यु तक यही देखता रहूंगा।"
"देखो, देखो - ज़रूर देखो! लेकिन तुम मुझे उस नज़र से क्यों नहीं देखते?"
"ओह रवि, मैं भी तुम्हें इसी नजरिए से देखता हूं। तुम भटक रहे हो, इसलिए मैं तुम्हें समझाने आया हूं।"
"इसकी कोई ज़रूरत नहीं है! आप मुझे सुबी लेने से रोकने की कोशिश कर रहे हैं।"
"हाँ, ऐसा ही है। दो प्रेमियों के जीवन को अलग करने का महान पाप मेरे हाथों से कभी नहीं होगा। मैं इतनी दूर सिर्फ आपको यह बताने आया हूँ कि ऐसा फिर कभी नहीं होगा।"
"अगर तुम नहीं आओगे तो मुझे कुछ नहीं होगा!" रवि ने लापरवाही से गिलास होठों से लगाते हुए कहा।
ऐसे मौकों पर मथुकाका अपना मन भटकने नहीं देते थे। जब कारखाने बन रहे थे, तब प्रतिष्ठित निंबरदी समुदाय ने उनका बहिष्कार किया था। लेकिन तब भी मथुकाका ने अपना मन नहीं भटकने दिया था। लेकिन आज उन्हें लगने लगा कि उनका मन भटक रहा है।
सुबी को यह आभास था कि मथुकाका के पास कोई दैवीय शक्ति है। इसलिए वह आँखें फाड़कर बैठी रही, इस उम्मीद में कि वह शौचालय में जाकर उसे रूपांतरित करके ही लौटेगा। लेकिन उसने देखा कि मथुकाका घबराया हुआ आया था। वह आया और सीधे कुर्सी पर गिर पड़ा।
उसने अपने कांपते हुए सिर को दोनों हाथों से पकड़ रखा था। वह काफी देर तक कुछ नहीं बोला। सुबी ने यह देखा और उसकी आँखों से फिर से आँसू बहने लगे।

मथुकाका ने समझौते का प्रस्ताव ठुकरा दिया। वह शांत मन से सोचने लगा। मनमोहन सेठ ऐसा अजीब सुझाव क्यों दे रहे हैं? इन लोगों का मकसद क्या हो सकता है? सुबी और सीतू का रिश्ता तोड़कर उन्हें क्या फायदा होगा? इस पूरे मामले में ज़रूर कोई रहस्य छिपा है।
सुबी के पास अब मथुकाका के सिवा कोई सहारा नहीं था, और मथुकाका की सुरक्षा में रहने का मतलब था कि रवि हर समय उसके सामने रहेगा। आजकल तो वह उसका चेहरा भी नहीं देखना चाहती थी। सुबी जानती थी कि जिस मथुकाका के पास वह आई थी, वह बूढ़ा हो चुका था और उसमें अब कोई मानवीय शक्ति नहीं बची थी। फिर भी, उसके मन के किसी कोने में उसे विश्वास था कि मथुकाका में कोई दैवीय शक्ति अवश्य होगी। हालांकि, रवि के घर जाने के बाद से मथुकाका को सिर झुकाए बैठे देखकर उसका साहस डगमगा उठा।
मथुकाका ने उसकी आँखों से आँसू बहते देखे और उठकर उसके पास गया, उसके पीठ पर हाथ रखकर बोला,
"रो मत, मेरी बच्ची। स्वर्ग में रहने वाला ईश्वर बहुत दयालु है। मैं तुम्हें अपने एक मित्र के घर भेज दूँगा। उसकी तीन बेटियाँ हैं। वह अपनी नानी के साथ रहता है। मैं उसे कल रात फोन करूँगा। तुम बिना किसी चिंता के जाओ। यहाँ किसी बात की चिंता मत करो। जब सीतु के मामले की सुनवाई होगी, मैं चित्रदुर्ग चला जाऊँगा।" मथुकाका अगले ही दिन तित्था चले गए। उन्होंने बशाममु के होटल से पणजी को एक ट्रंक कॉल किया। मथुकाका को बशाममु पर भरोसा था। फिर भी, उन्होंने बशाममु को यह नहीं बताया कि वे सुबी को निंबरदी से ले जाने वाले हैं। जिस रसु पर उन्होंने भरोसा किया था, उसने भी उन्हें धोखा दिया था। रसु ने सुबी को तलाक लेने के लिए कहना शुरू कर दिया था। रवि मथुकाका के सामने वाले छोटे से

मकान में रहता था। उसने देखा था कि तीन-चार गिरोह उसके यहाँ आते- जाते रहते थे। मथुकाका समझ गए थे कि अगर रवि दिन दहाड़े उन गिरोहों के साथ सुबी को ले जाए, तो वह उनका विरोध नहीं कर पाएंगे; इसीलिए उन्होंने सुबी को एक सुरक्षित स्थान पर ले जाने का फैसला किया था।
०००

अठारह
बारिश शुरू हो चुकी थी। अरब सागर से काले बादल पूरब की ओर बढ़ रहे थे। निंबरदी की लाल मिट्टी की धूल उड़ रही थी। हवा और बारिश के कारण निंबरदी में कोई भी अपने घरों से बाहर नहीं निकल रहा था। दिन-रात बारिश हो रही थी।
जब रवि को पता चला कि सुबी निंबरदी से गायब हो गया है, तो उसका दिल बैठ गया। उसने रसु को बुलाया। रसु ने सुबी से पूछताछ की। लेकिन रसु को कुछ भी पता नहीं था। लेकिन इस बार रसु को रवि पर शक हुआ। उसने रवि से पूछा,
"गुरुजी, आपने पहले कहा था कि अगर सुबी को रिहा कर दिया जाता है, तो सीतू भी मुक्त हो जाएगी। लेकिन उस समय मुझे नहीं लगा था कि सुबी के बारे में आपके मन में ऐसा कुछ था।"
रवि मुस्कुराया और बोला, "रसुमामा, सुंदर लड़कियों को लेकर तो सब चिंतित रहते हैं! वो कुछ समय से आपके सीतू के साथ थी, इसलिए मैंने उसे फोन किया क्योंकि शायद आपको पता हो कि वो कहाँ गई है। अगर ये सच नहीं है तो इस बारे में बहस मत कीजिए।"
“गुरुजी, मेरा इकलौता बेटा मुसीबत में है। मुझे कुछ पता नहीं। अगर मुझे किसी पर शक हुआ, तो मैं उसे इस खंजर से गोदकर मार डालूंगा!” रासु ने छह इंच लंबा खंजर निकालते हुए कहा। रवि एक पल के लिए डर गया, लेकिन डर न लगने का नाटक करते हुए उसने कहा, "रसुमामा, सुबी सुंदर और जवान है। इतनी सुंदर और जवान लड़की को कोई बहला-फुसलाकर अगवा कर सकता है, इसलिए मैंने आपसे उसके बारे

में पूछताछ की। वरना, सुबी जैसी नीची जाति की लड़की के बारे में मैं और क्या सोचती?"
रासु ने तलवार को फिर से म्यान में डाला और कहा, "गुरुजी, मेरा सिर अब जल रहा है। कोई भी मेरे रास्ते में आने की कोशिश न करे।" "तुम्हारा दिमाग जल्द ही शांत हो जाएगा," रवि ने कहा। बाहरी कमरे के सामने वाले दरवाजे के पास खड़ा मथुकाका ये शब्द सुनकर हैरान रह गया। वह रसु के दिमाग को कैसे शांत कर सकता था? वह पीछे मुड़ गया।
बारिश थोड़ी देर के लिए रुक गई थी, इसलिए मथुकाका अपने पैरों को आराम देने के लिए बरामदे में टहल रहा था। उसने रवि के कमरे से किसी के ज़ोर से बोलने की आवाज़ सुनी, इसलिए वह वहाँ गया। उसने रवि की बातें सुनीं। तभी बारिश फिर से शुरू हो गई, इसलिए वह अपने कमरे में लौट आया।
पूरी रात बारिश होती रही। ठंडी हवा के कारण वह बाहर नहीं निकल पा रहा था। मथुकाका ने कोने में चूल्हा जलाया, गर्म कोट पहना और ठंड से जम चुके हाथों को सेंकने बैठ गया। सुबह के दस बज चुके थे। आसमान बादलों से भरा था। ज्वार की लहरें बाहर हो रही मूसलाधार बारिश को और तेज़ कर रही थीं। वातावरण बेहद निराशाजनक और हताश करने वाला लग रहा था। उसी क्षण, पाडी चीखती हुई आई। पाडी को पूरी तरह भीगी हुई, बिखरे बालों, टूटी चूड़ियों और ज़ोर-ज़ोर से कराहते हुए देखकर मथुकाका उठकर आगे बढ़ा।
"अरे, क्या हुआ?"
"हमला हुआ था, हमला हुआ था!"
मुझे आपकी बात समझ नहीं आ रही है। कृपया इसे स्पष्ट रूप से समझाएं।
‘‘सीतूचा बाप मेला!’’

“क्या कह रहे हो?” मथुकाका ने कोने में अपना रेनकोट पहनते हुए कहा। उसने एक टोपी पहनी और पाडी के लिए छाता लिया। लेकिन पाडी छाते के नीचे नहीं आई। मानो आसमान ही उसके सिर पर गिर पड़ा हो। निंबरदी नदी के किनारे, नारायणन के शव से मात्र बीस गज की दूरी पर, रसु अपनी सारोंग सीने में धंसी हुई पड़ी थी। उसके शरीर से बहता खून बारिश के पानी के साथ बहकर समुद्र के पानी में मिल रहा था। बारिश के बावजूद, निंबरदी की स्त्रियाँ वहाँ जमा थीं। उन्हें लगा कि यह कोई भूत है। रसु का भूत उसी जगह के पास गिरा था जहाँ नारायणन का शव गिरा था।
वही घटना फिर! पुलिस आई। सैनिक आए। पंचनामा किया गया और लड़ाई शुरू हो गई।
रवि ने कहा, "जब रासु कल शाम मेरे पास आया, तो वह बेहोशी की हालत में लग रहा था। उसके पास वही जाम्बिया थी। यह आत्महत्या ही रही होगी।"
चूंकि रवि ने यह सुझाव दिया था, इसलिए पुलिस ने इसे आत्महत्या का मामला समझकर जांच शुरू कर दी। पोस्टमार्टम कराया गया। रिपोर्ट आ गई। रिपोर्ट आने के बाद, जांच कर रहे पुलिस अधिकारियों ने अपने वरिष्ठों को अपने निष्कर्ष प्रस्तुत किए, जो इस प्रकार थे:
‘रासु सारंग का बेटा सीतू नारायणन हत्याकांड में गिरफ्तार होने के बाद से ही गांव में पागलों की तरह घूम रहा था। अपनी मौत से एक रात पहले वह छोटे सेठ रावी आया था। उस समय उसके पास आत्महत्या में इस्तेमाल किया गया चाकू था। हत्या का कोई प्रयास नहीं है, यह एक साधारण आत्महत्या है।’
वरिष्ठ अधिकारियों ने रिपोर्ट को मंजूरी दे दी और रसु की मौत को दबा दिया गया। लेकिन मथुकाका को लगता रहा कि यह आत्महत्या नहीं

थी। क्योंकि रवि के शब्द उसके कानों में गूंजते रहे: 'तुम्हारा मन जल्द ही शांत हो जाएगा!' रवि ने ऐसा क्यों कहा? इसका क्या अर्थ है?
मथुकाका बेचैनी से कमरे में इधर-उधर घूम रहा था। वह लगातार सोच रहा था कि रासु की मौत के पीछे क्या रहस्य छिपा हो सकता है। लेकिन अब उसके पास किसी को अपने विचार बताने का मौका भी नहीं था। उसे मौत से डर नहीं लगता था; फिर भी, वह व्यर्थ में मरना नहीं चाहता था।
रसू की मृत्यु की खबर जेल में बंद सीतू को मिली। वह बेहद दुखी था। उसे इस बात का दुख था कि वह अपने पिता की मृत्यु के अवसर पर भी वहां नहीं जा पाएगा। उसने सोचा कि मथुकाका कुछ कोशिश करेगा और उसे कम से कम चार दिनों के लिए जमानत पर निंबरदी ले जाएगा। लेकिन यह असंभव था। सीतू पर हत्या का आरोप था, और हत्या के मामले में आरोपी को जमानत पर रिहा नहीं किया जा सकता। उसका मामला सत्र न्यायालय में जांच के लिए लंबित था। सुनवाई आठ से पंद्रह दिनों में होने वाली थी। जेल का वातावरण पहले से ही उमस भरा था, खासकर बरसात के दिनों में, जिससे यह और भी भयावह हो जाता था।
सितु घुटनों पर सिर रखकर दीवार से टेक लगाकर बैठा था। सुबह के साढ़े नौ बज रहे होंगे। जेलर ने लोहे की छड़ से ताला खोलते हुए कहा, "सितु सारंग, कोई आपसे मिलने आया है। साहब ने आपको दफ्तर बुलाया है।"
उसके वकील सीतू से जानकारी लेने के लिए एक-दो बार जेल आए थे। सीतू को लगा कि वे ही होंगे, लेकिन सीतू ने अपने जीवन में कभी उस आदमी को जेलर के दफ्तर में बैठे नहीं देखा था।
"सिटु सारंग, मैं तुम्हें नहीं जानती। लेकिन मैं तुमसे मिलने आई हूँ। सुबी सड़क के उस पार बैठी है।"

सुबी का नाम सुनते ही सीतु का शरीर उत्साह से भर गया। आश्चर्य से उसने कहा,
"सुबी? तुम यहाँ कैसे पहुँचे?"
"मैं तुम्हें बताता हूँ, चलो।" उस सज्जन ने सीतू की पीठ पर हाथ रखा और उसे दूसरी तरफ़ बने आगंतुक कक्ष में ले गए। सुबी सचमुच वहीं थी। उसे देखते ही वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी।
उस सज्जन ने कहा, “सीतु, तुम उसे समझाने की कोशिश करो। जेलर ने मुझे सिर्फ पंद्रह मिनट दिए हैं। तब तक मैं उस सज्जन के साथ इंतजार करूंगा।” सज्जन के जाने के बाद, सुबी ने सीतु को बताया कि पकड़े जाने के बाद निंबरदी में क्या हुआ था। रिहाई की खबर सुनकर सीतु को भी लगा कि इसके पीछे कुछ गड़बड़ है। सुबी ने आगे कहा, “जब मथुकाका को छोटे मालिकों के इरादों पर शक हुआ, तो उन्होंने मुझे रातों-रात पणजी में उस सज्जन के घर भेज दिया। तित्था तक उस सज्जन ने एक कार खरीद ली थी। उनकी तीन बेटियां हैं। मेरी ही जाति की। पणजी में उनका एक बड़ा सुअर पालन केंद्र है। वे अपने घर पर सलामी, सॉसेज और अचार बनाते हैं। उन्हें गोवा के बड़े-बड़े लोगों से ऑर्डर मिलते हैं। जब तक तुम रिहा नहीं हो जाते, मैं उनके साथ रहूंगा।”
"लेकिन ये सज्जन आपको यहाँ कैसे लाए?"
"यही हुआ था। मैं तुम्हें याद करके हर दिन रोती थी। उनकी बेटियों ने यह देखा और अपने पिता को बताया। उन्हें चित्रदुर्ग में कुछ काम था। तब उन्होंने मुझसे कहा, 'चलो, मैं चित्रदुर्ग जा रहा हूँ। अगर जेलर अच्छा रहा, तो मैं तुम्हारे लिए सीतू से पाँच मिनट की मुलाकात का इंतज़ाम कर दूँगा।'"
"ठीक है। लेकिन सुबी, क्या तुम्हें पता है कि मेरे पिता अब इस दुनिया में नहीं हैं?"

"हाँ! उन्होंने आत्महत्या कर ली!"
"नहीं, वह आत्महत्या करने वाला व्यक्ति नहीं था। वह किसी और को मार डालता।"
"तुम सही कह रही हो! मुझे भी यही शक है। उसका दिल बहुत बड़ा था। वो तूफ़ान में माल से लदे जहाज़ को किनारे तक ले जा रहा था। क्या वो आत्महत्या कर लेगा? सीतू, हमारा क्या हाल होगा?"
"सच कहूँ तो, सुबी, मैंने उस नारायणन को नहीं मारा! फातू सरासर झूठ बोलती है। मेरे खिलाफ गवाही देने वाले सभी लोग झूठे हैं। यह बात भी झूठ है कि मैंने चाकू नाव से निकाला था। मैंने उस मैनेजर को नहीं मारा। मैं तुम्हारी गर्दन की कसम खाता हूँ!"
सीतु ने सुबी की गर्दन पर हाथ रखा। फिर सुबी ने अपना सिर उसके कंधे पर टिका दिया। उसने उसे अपनी बाहों में कसकर पकड़ लिया और चूमा।
"सुबी, जब तक मैं बाहर न आ जाऊं, निंबार्डी वापस मत जाना।" "नहीं, मैं ऐसा नहीं करूँगा। लेकिन तुम इस मामले से ज़रूर बच जाओगे, है ना?"
"मेरे वकील ने मुझे यही बताया है। लेकिन हर वकील अपने मुवक्किल को यही आश्वासन देता है। यह सच है कि फैसला आने तक कुछ भी निश्चित रूप से पता नहीं चलेगा।"
"जब तक तुम रिहा नहीं हो जाते, मैं पणजी में ही रहूंगा। रिहा होते ही सीधे वहीं आ जाना। हम साथ में निंबर्दी चलेंगे।"
तभी एक सज्जन अंदर आए और सीतू से बोले, "फादर मैथ्यूज ने मुझे तुम्हारे बारे में सब कुछ बता दिया है। हम सभी यीशु में विश्वास रखते हैं। निश्चिंत रहो, वह तुम्हारे साथ अन्याय नहीं होने देंगे।"
इसलिए उसने अपने गले में लटके क्रॉस को छुआ।

सुबी जाना नहीं चाहती थी। लेकिन बैठक का निर्धारित समय समाप्त हो चुका था। सुबी को जाना ही पड़ा।
पिछले एक महीने से लगातार हो रही बारिश रुक गई थी। कई दिनों बाद, सीतू ने अपनी जेल की कोठरी से नीले आसमान का एक टुकड़ा देखा। उसने मन ही मन बुदबुदाया, 'काश आज थोड़ी धूप निकल आती।' और हैरानी की बात यह थी कि दोपहर 12 बजे धूप निकल आई थी। इस साल मानसून शुरू होने के बाद से, सीतू ने सोचा था कि सूरज अब कभी आसमान के काले बादलों से बाहर नहीं निकलेगा। हमेशा अंधेरा रहेगा और वही बारिश होती रहेगी। लेकिन उस दिन, कम से कम कुछ देर के लिए, धूप निकली थी।
सीतु छाता पकड़े बाहर चमकते सूरज को देख रहा था। उस धूप में कितनी अपार शक्ति थी! वह पिछले चार महीनों से जेल में था। बारिश शुरू होने से पहले ही उसे गिरफ्तार कर लिया गया था। तब गर्मी का मौसम था। लेकिन उसे उस समय की भीषण गर्मी याद भी नहीं थी। मानसून की उमस भरी हवा और वातावरण ने उसकी लगभग सभी सुखद यादों को मिटा दिया था। दोपहर में उसके पिता आए। उन्होंने फिर सीतु से पूछा। सीतु ने उनसे कहा, “महोदय, जिस तरह नारायणन की हत्या हुई, उसी तरह मेरे पिता की भी हत्या कर दी गई। मुझे संदेह है कि इन दोनों घटनाओं के पीछे कोई शक्तिशाली व्यक्ति जरूर है।” "नारायणन की हत्या का कारण क्या था? सरकार के साक्ष्य के अनुसार, आपने नारायणन की हत्या इसलिए की क्योंकि नारायणन के साथ आपके संबंध बिगड़ गए थे।"
"यह झूठ है, महोदय। मैंने उसे नहीं मारा। मेरे पास उसे मारने का कोई कारण नहीं था।"
"लेकिन फाटू ने मुझे बताया - अंत में, तुम और नारायणन दोनों समुद्र पर गए, और फिर तुम अकेले लौट आए।"

"यह सरासर झूठ है, महोदय! फातू बहुत ही धोखेबाज आदमी है।"
"कुछ बोलो, सिटु, मुझे तुम्हारा मामला पेचीदा लगने लगा है। नाव से चाकू निकालते समय तुमने जो बयान दिया, वह बहुत ही गलत है।" "सर, मुझे इसके बारे में कुछ नहीं पता। उस बयान में जिन लोगों का जिक्र है, वे लॉन्च इवेंट में काम करने वाले लोग हैं। वे रवि के नौकर हैं। रवि जो कहेगा, वे वही कहेंगे।"
"यह सब सच है, लेकिन..."
वकील के जाने के बाद सीतू बहुत परेशान हो गया। अपने ही वकील को, जो इतने लंबे समय से कहता आ रहा था, "हम इस मामले को पल भर में सुलझा देंगे," मामला स्थगित होने के बाद कचरा खाते हुए देखकर सीतू को गहरा दुख हुआ। उसने जेल के दरवाजे की मूठ को कसकर पकड़ लिया, अपना सिर उस पर टिकाया और रोने लगा।
उसे रोते देख एक वयस्क जेल गार्ड पास आया और बोला, "बच्चे, क्या तुम रो रहे हो?"
वकील का कहना है, 'मेरा मामला मुश्किल है।' पहले तो वे कह रहे थे, 'इस मामले का कोई मतलब नहीं है।' मुझे समझ नहीं आ रहा कि अचानक उन्हें मेरा मामला मुश्किल क्यों लगने लगा।
"सिटू, अगर आपको कोई आपत्ति न हो, तो मैं आपको कुछ बताता हूँ," पहरे पर तैनात सिपाही ने कहा।
‘‘बोल.’’
"जो वकील अभी आपके पास आया है, वह बहुत खतरनाक आदमी है। अगर दूसरी पार्टी उसे सौ या पांच सौ रुपये दे, तो वह अपने मुवक्किल को जान से मारने में भी नहीं हिचकिचाएगा। आपने जिले के सबसे बुरे वकील को नियुक्त किया है। आपने उसे कैसे नियुक्त किया?" "हवलदार साहब, हमने अपने पिता के जीवन में कभी अदालत नहीं देखी। मथुकाका बहुत ही सीधे-सादे आदमी हैं। बेचारे मथुकाका को शायद

पता ही नहीं होगा कि वकालत के पेशे में ऐसे धोखेबाज लोग भी होते हैं। अब बताइए मुझे क्या करना चाहिए।"
"मामले की सुनवाई कल अदालत में होगी। इसके अलावा, इस वकील ने आपसे सारी फीस वसूल ली है। ऐसे में आप दूसरा वकील कैसे रख सकते हैं? किसी और को फीस देनी पड़ेगी, क्या आपके पिता इसके लिए तैयार हैं?"
"ओह, मेरे पिताजी का निधन परसों हो गया! माँ घर पर अकेली हैं।" "अब ये तुम्हारा सिर है?"
"वह बूढ़ा है। ठंड और बारिश में उसके जोड़ों में अकड़न आ जाती है। वह बिना सहारे के ठीक से चल भी नहीं सकता।"
बोलते समय सीतु का गला भर आया।
रात को फिर से बारिश शुरू हो गई। बाहर अंधेरा था। अगले दिन ग्यारह बजे, नीली पुलिस कार आरोपियों को सत्र न्यायालय ले जाने के लिए जेल के गेट पर रुकी। एक-एक करके विचाराधीन कैदी पुलिस सुरक्षा में कार में सवार हुए। कार सत्र न्यायालय से रवाना हो चुकी थी। तेज बारिश हो रही थी।
०००

उन्नीस
चित्रदुर्ग जिले का मुख्यालय होने के साथ-साथ तट तक पहुँचने वाली नौकाओं का मुख्य बंदरगाह भी था। चित्रदुर्ग से पचास मील के दायरे में कोई भी नौका नहीं रुक सकती थी। इसलिए, आस-पास के स्थानों से मुंबई जाने वाले लोगों को चित्रदुर्ग आना पड़ता था। चित्रदुर्ग के आसपास उत्कृष्ट हापुस आम उगाए जाते थे। हर मौसम में, चित्रदुर्ग से लाखों रुपये के आम मुंबई और भारत के अन्य हिस्सों में निर्यात किए जाते थे। हाल ही में, चित्रदुर्ग के आमों की विदेशों में भी काफी मांग थी। इसी कारण चित्रदुर्ग कोंकण तट पर देश के लिए विदेशी मुद्रा अर्जित करने का एक प्रमुख केंद्र बन गया था।
चित्रदुर्ग में जिला न्यायाधीश का न्यायालय स्थित था। न्यायालय की इमारत एक ऊँची पहाड़ी पर थी। न्यायालय के बरामदे पर खड़े होकर पश्चिम की ओर फैले विशाल अरब सागर को देखा जा सकता था।
उस दिन अदालत में भारी भीड़ जमा थी। अदालत में चल रहा मामला भी बेहद सनसनीखेज था। चित्रदुर्ग की सत्र अदालत में आज तक कई मशहूर हत्या के मामले सुने जा चुके थे। लेकिन नारायणन की हत्या के इस मामले ने एक विशेष महत्व हासिल कर लिया था। शेठ मनमोहन विशेष रूप से इस मामले की सुनवाई के लिए मुंबई से आए थे। ऐसा माना जाता था कि नारायणन की हत्या का यह मामला कोंकण तट पर औद्योगिक गतिविधियों के लिए आने वाले उद्योगपतियों के लिए एक

चुनौती था। सरकारी वकील इस मामले को मजबूती से लड़ने वाला था; लेकिन फिर भी महान शेठ मनमोहन अपने एक वकील को मुंबई से सरकारी वकील की तरफ से मामले की पैरवी करने के लिए लाए थे। ऐसे इंतजाम तो सिर्फ एक धनी अभियोजन पक्ष ही कर सकता है।
सीतु को आरोपी के पिंजरे के पास लाया गया। अदालत में मथुकाका को देखकर उसे थोड़ी राहत मिली। सीतु मथुकाका से मिलना चाहता था और कहना चाहता था, 'देखते हैं क्या हम अपना वकील बदल सकते हैं।' लेकिन उसे मथुकाका से मिलने का मौका कभी नहीं मिला। इसके अलावा, अगर उसे मौका मिलता भी, तो मुकदमा चलते रहने के दौरान वह वकील बदलने की अनुमति नहीं देता। और अगर वह कोशिश करके अनुमति दे भी देता, तो नए वकील को फीस देने का इंतजाम करना नामुमकिन होता। सीतु ने शांत रहने का फैसला किया, अपने भाग्य पर भरोसा रखा और जो होना था उसे होने दिया।
ठीक 11:30 बजे न्यायाधीश कक्ष से बाहर आए। अदालत में मौजूद लोगों ने खड़े होकर उनका अभिनंदन किया। न्यायाधीश के अपनी कुर्सी पर बैठने के बाद, उन्होंने अपने कंधों से लहराते हुए गाउन को सीधा किया और सरकारी अभियोजकों को संबोधित किया।
"जी हां, अभियोजक महोदय, आपका मामला क्या है?"
सरकारी वकील खड़े हुए और विनम्रता से बोले, "माननीय महोदय," थोड़ा गला साफ करते हुए उन्होंने बोलना शुरू किया, "निंबर्डी चित्रदुर्ग जिले के दक्षिणी भाग में स्थित एक छोटा सा तटीय गाँव है। गाँव छोटा है, लेकिन यहाँ का समुद्र सफेद झींगों और लॉबस्टर्स से भरपूर है। इसलिए, पिछले साल प्रसिद्ध उद्योगपति सेठ मनमोहन ने निंबर्डी में दो कारखाने शुरू किए थे, एक कोल्ड स्टोरेज का और दूसरा मछली डिब्बाबंदी का। मत्स्य पालन में विशेष शिक्षा प्राप्त श्री नारायणन को दोनों कारखानों का

प्रबंधक नियुक्त किया गया था। सेठ मनमोहन ने दोनों कारखानों का नाम अपने भतीजे श्री रविंद्र के नाम पर रखा था। समुद्र में मछलियों की अच्छी-खासी संख्या हो रही थी। लेकिन गाँव में संचार व्यवस्था नहीं थी। इसलिए, सेठ ने निंबर्डी नदी और गाँव के पूर्व में स्थित खाड़ी पर एक मजबूत सीमेंट-कंक्रीट का पुल भी बनवाया।" "स्थानीय लोगों में बेरोजगारी न फैले, इसलिए उन्होंने कारखाने में केवल निंबार्डी के स्थानीय लोगों को ही काम पर रखा। महिलाओं और लड़कियों को कोल्ड स्टोरेज में आम छीलने का काम दिया गया, और पुरुषों और वयस्कों को डिब्बाबंदी कारखाने में काम दिया गया।"
"निंबरदी में रासु सारंग नाम का एक गुंडा रहता था। उसे सुरक्षा अधिकारी के रूप में इस एकमात्र इरादे से नियुक्त किया गया था कि वह वहाँ का स्थानीय नेता होगा और यदि स्थानीय लोगों को कोई समस्या होती, तो वही उसे मालिकों या प्रबंधकों के ध्यान में लाएगा। नियुक्ति के बाद उसकी महत्वाकांक्षा बढ़ने लगी। वह सोचने लगा कि वह इन कारखानों का प्रबंधक बनेगा, इसलिए वह कभी- कभी उन्हें परेशान करने लगा।"
"आरोपी सीताराम उर्फ सीतू, रसु सारंगा का पुत्र है। यह सीतू भंडारी जाति की सुबी नामक लड़की से प्रेम करता था।"
"क्या वह आपकी गवाह है?" न्यायाधीश ने पूछा।
"जी जनाब। पुलिस ने इस मामले में उनका बयान भी ले लिया है। लेकिन इस मामले में उनसे पूछताछ करने का कोई फायदा नहीं है। क्योंकि अगर सरकार उनसे पूछताछ करेगी तो वे 'विरोधी' हो जाएंगी। इसलिए हम जानबूझकर उनका बयान नहीं लेंगे।"
‘‘ओकेऽऽ! गो अहेड’’

"जिस प्रकार रसु सारंग ने अपने लिए झूठी महत्वाकांक्षाएं पालनी शुरू कीं, उसी प्रकार उनके पुत्र सीतु और उनकी प्रेमिका सुबी ने भी ऐसा ही किया।"
सरकारी वकील को रसु सारंगा को बदनाम करते देख मथुकाका मन ही मन बड़बड़ाने लगा, "हे भगवान! यह तो घोर मानहानि है।"
सरकारी अभियोजक ने आगे कहा, "इस समूह ने अपने बारे में कुछ अवास्तविक धारणाएँ बनानी शुरू कर दीं। सुबी ने कारखाने में काम किए बिना वेतन की मांग करना शुरू कर दिया, इसलिए प्रबंधक नारायणन ने उसे काम से निकाल दिया। रसू सारंग को भी काम से निकाल दिया गया। इस वजह से आरोपी सीतू मन ही मन प्रबंधक नारायणन से नाराज़ था। लेकिन उसने कभी खुलकर अपनी दुश्मनी ज़ाहिर नहीं की।"
"जिस दिन मैनेजर नारायणन निंबार्डी से लापता हुए, उसी शाम फातु भंडार्या ने सीतू और मैनेजर नारायणन को भाटगरवाड़ी के पास नाव से जाते हुए देखा।"
"यह भटगरवाड़ी कहाँ है?" न्यायाधीश ने पूछा।
"यह निंबार्डी से केवल दो या ढाई मील की दूरी पर है।"
‘‘अच्छा पुढे?’’
"फट्टू भंडारी, वह गवाह जिसने बाद में प्रबंधक और सीतू को एक नाव में साथ जाते देखा था, शाम को निंबार्डी आया। उसने सीतू को अकेले उस नाव से उतरकर चर्च के पास वाली चट्टान पर आते देखा। इसलिए यह 'आखिरी बार साथ देखे जाने' का सबूत है। बाद में, ठीक अगले दिन, नारायणन का शव निंबार्डी के किनारे पड़ा मिला। शव कुछ हद तक सड़ चुका था। मछलियों ने उसके हाथों और पैरों को कुछ जगहों पर कुतर दिया था। लेकिन गवाह नारायणन के गले में पहनी

सोने की चेन, उसके नाम का सोने का कंगन और कमीज के बटनों से शव की पहचान नारायणन के रूप में करने में सक्षम थे।"
"क्या शव की पहचान उसके चेहरे से नहीं की जा सकी?"
"यह होना ही था, लेकिन चेहरा थोड़ा 'विघटित' सा लग रहा था। इसीलिए मैं इन लेखों का जिक्र कर रहा हूं।"
‘‘आय सीऽऽ! फर्दर?’’
इसके बाद सीतू को शक के आधार पर गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तारी के बाद उसने पुलिस को बताया, 'मैं आपको वह चाकू दूंगा जिससे मैंने नारायणन की हत्या की थी' और नाव के अंदर फंसा हुआ चाकू भी निकाल कर दिखाया। उस चाकू पर खून के धब्बे थे। सीतू के घर की तलाशी लेने पर मलबे में छिपी हुई पैंट और बनियान मिली। उन पर भी खून के धब्बे मिले। अब केमिकल एनालाइजर की रिपोर्ट से पता चलता है कि मृतक के कपड़ों पर लगे खून के धब्बे, सीतू द्वारा दिखाए गए चाकू पर लगे धब्बे और उसके कपड़ों पर लगे धब्बे एक ही ब्लड ग्रुप के हैं। इससे यह साबित होता है कि हत्या आरोपी सीतू ने ही की है।
"जी हां, अपने गवाहों को बुलाइए।" न्यायाधीश ने अभियोजन पक्ष को गवाहों को बुलाने का आदेश दिया।
चूंकि पुलिस ने सरकार की ओर से शिकायत दर्ज कराई थी और अपराध की जांच भी की थी, इसलिए अंत में उन्हें गवाही के लिए बुलाने का निर्णय लिया गया। फातु भंडारी सरकार की ओर से पहली गवाह के रूप में पेश हुईं।
ईश्वर की शपथ लेकर उन्होंने कहना शुरू किया, "उस दिन, जब मैं भाटगरवाड़ी में चिंटू भंडार्या के पास गया था..."
फ़तू ने आख़िरकार कहा कि सीटू नाव से अकेले निम्बार्डी लौट आया था। सीटू के वकील उनसे जिरह करने के लिए खड़े हुए.

"देखो, तुमने कहा कि तुमने सीतू और मैनेजर को साथ देखा था, और फिर सीतू को अकेले निंबार्डी लौटते हुए देखा। तो क्या तुमने इस बारे में किसी और को बताया था?"
"मैं तुम्हें क्यों बताऊं? मैंने तो किसी को नहीं बताया।" "आपने मैनेजर से यह क्यों नहीं पूछा कि आपने उसे कहाँ छोड़ा था?"
"मेरा इससे क्या संबंध है?" उसने पूछा।
"अच्छा, तो तुमने इस बारे में मालिकों को क्यों नहीं बताया, रविबाबू?"
मैंने तुमसे कहा था। मैंने तुमसे अगली रात कहा था।
"तुम झूठ बोल रहे हो। तुमने उन्हें यह बात कभी नहीं बताई।" "उनसे पूछो," फातु ने चटदिशी की ओर मुड़ते हुए कहा।
सीतू के वकील ने फातू से इससे ज़्यादा सवाल नहीं पूछे। दरअसल, फातू को बाद में रसू की जगह नियुक्त किया गया था, और उससे पहले सीतू ने अपने वकील को फातू के बारे में काफ़ी जानकारी दी थी कि वह लोगों से पैसे उधार लेता था और शराब पीता था, और वह एक नंबर का आवारा था। लेकिन वकील ने फातू की सच्चाई (यदि कोई हो) पर सवाल उठाने वाले कोई सवाल नहीं पूछे।
फिर चाकू ज़ब्त करने की घोषणा की गई। ये रवि के कर्मचारी थे जो लॉन्च के समय काम कर रहे थे। सीटू के वकीलों ने उन महत्वपूर्ण सवालों से परहेज किया जिनसे उसकी गवाही को चुनौती मिल सकती थी। सरकारी गवाहों ने एक के बाद एक सीटू के खिलाफ मजबूत सबूत पेश किए। अंत में, न्यायाधीश ने सीटू का बयान लिया। जब उनसे पूछा गया कि सरकार द्वारा प्रस्तुत सबूतों के बारे में उनका क्या कहना है, तो सीटू, अपने वकील के पक्षपात से आश्वस्त होकर बोले, "महोदय, मेरे साथ अन्याय हो रहा है। मेरे वकीलों ने वे सवाल नहीं

पूछे जो मैंने गवाहों से पूछे हैं। मैं अनुरोध करता हूं कि इस मामले की दोबारा सुनवाई की जाए।"
जज ने कहा, "आप अब यह आपत्ति नहीं उठा सकते। जब मामला चल रहा था तब आपने यह आपत्ति क्यों नहीं उठाई?"
"आप न्याय के देवता हैं। खुद इस बारे में सोचिए। क्या मेरे वकीलों ने जिस तरह से मेरा बचाव किया, वह किसी भी समझदार व्यक्ति को विश्वसनीय लगता है?"
"अब यह मुद्दा उठ ही नहीं सकता। अगर सरकार द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों के बारे में आपको कुछ कहना है, तो कहिए।"
सितु ने कहा, "मैं निर्दोष हूँ। यह झूठ मेरे खिलाफ गढ़ा गया है। जिसने भी मैनेजर की हत्या की है, उसी ने मेरे पिता की भी हत्या की है। मनमोहन शेठ सिर्फ पैसे कमाने वाला है। उसने निंबरदी के गरीब लोगों को खरीद लिया है और आज वह मेरे खिलाफ फैसला भी खरीद रहा है!"
सितु के बयान पर न्यायाधीश क्रोधित हो गए। उन्होंने गुस्से में कलम कागज पर पटकी और कहा, "यह न्यायालय की अवमानना है!"
बेचारा सीतु पिंजरे में खड़ा था, अदालत में न्याय के देवता की तस्वीर को देख रहा था और उसकी आँखों से आंसू बह रहे थे। उसे न्याय के देवता की जगह मनमोहन शेठ तराजू लिए हुए दिखाई दे रहे थे। लेकिन उसकी आँखों पर पट्टी नहीं बंधी थी। उसे ऐसा लग रहा था मानो न्याय के देवता सीतु को बेसुध आँखों से देख रहे हों और मुस्कुरा रहे हों।
फिर दोनों पक्षों के वकीलों की ओर से शिकायतें आईं। सिटु के वकीलों ने निवेदन किया कि 'हमारा मुवक्किल अज्ञानी है; उसने जानबूझकर अदालत की अवमानना नहीं की है, इसलिए उसे अदालत की अवमानना का नोटिस जारी नहीं किया जाना चाहिए।' यह समझते हुए कि

वह केवल आरोपी का वकील है और उसके पक्ष में बोलना उसका कर्तव्य है, उसने चार शब्द कहे, ''सिटु निर्दोष है, इसलिए उसे रिहा कर दिया जाना चाहिए।''
और अंत में वही हुआ। न्यायाधीश ने नारायणन की हत्या के लिए सीतू को सजा सुनाई। उन्होंने अपने फैसले में कहा,
"वास्तव में, नारायणन जैसे कुशल तकनीशियन, एक ईमानदार सेवक, एक सज्जन और नेक इंसान, जो गरीबों और जरूरतमंदों की परवाह करता था, की क्रूर हत्या के लिए सीतू को मौत की सजा देना उचित होता, लेकिन उसकी कम उम्र को देखते हुए, मैं उसे आजीवन कारावास, यानी चौदह साल के कारावास की सजा सुनाता हूं।"
फैसला सुनते ही सीतू फिर चिल्लाई, "मैंने मैनेजर को नहीं मारा! आप मुझे बेवजह सजा दे रहे हैं!"
अदालत में हंगामा मच गया। न्यायाधीश अपने कक्ष में चले गए। अदालत में मौजूद अधिकारी और न्यायाधीश को लगा कि दोषी ठहराए गए आरोपी किसी अप्रासंगिक विषय पर बेवजह बातें कर रहे हैं। मथुकाका अपने हाथ में पकड़ी छड़ी पर झुकते हुए सीतु के पास पहुंचा और बोला,
"पुत्र सीतु, भगवान इतने अंधे नहीं हैं। तुम निर्दोष हो। मुझे इस बात का पूरा यकीन है। लेकिन अब मुझे यह अहसास हो गया है कि मनुष्य द्वारा बनाई गई यह न्यायिक प्रणाली अपूर्ण है।"
"चाचा जी, सिर्फ न्यायपालिका ही नहीं, मेरे मामले को संभालने वाला वकील भी इस साजिश में शामिल है। और मुझे लगता है कि न्याय करने वाला भी इसमें शामिल है।"
मथुकाका ने उसे आगे बोलने नहीं दिया। उसने अपनी उंगली उसके मुंह पर रखी और उसे चेतावनी देते हुए कहा, "चुप रहो।"

आँखों में आँसू लिए सीतु ने कहा, "चाचा जी, मेरी सुबी का ख्याल रखिएगा!"
"चिंता मत करो, बेटे। मैं उच्च न्यायालय में अपील करने की कोशिश करूंगा। तुम्हारी बेटी बहुत सुरक्षित जगह पर है।"
"मेरी माँ!" इस क्षण सीतु को पाडी की याद आ गई। अगर सीतु बरी हो जाती, तो वह अपने पति की मृत्यु का दुख भूल जाती। लेकिन अब यह संभावना भी खत्म हो चुकी थी। सीतु गहरे दुःख में डूबी हुई थी, क्योंकि वह सोच रही थी कि चौदह साल की कैद के बाद जब उसकी माँ वापस लौटेगी, तो क्या वह उसे फिर से देख पाएगी।
मथुकाका की बाहों में रोने का भी समय उसे नहीं मिला। मुखिया ने वारंट तैयार किया और पुलिस कांस्टेबल को सौंप दिया। कांस्टेबल ने उसे हथकड़ी पहनाई और नीली कार में बिठाकर ले गया।
मथुकाका ने आंखों में आंसू लिए उसे विदाई दी।
जब मथुकाका निंबरदी लौटा, तो उसने यह खबर पाडी को सुनाई। मथुकाका को लगा कि वह रोएगी, खूब रोएगी। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। यह खबर सुनकर वह कुछ पल के लिए मूर्ति की तरह स्थिर बैठी रही और फिर अचानक जोर से हंसने लगी। वह इशारे करने लगी। यह सुनकर पाडी पागल हो गई।
निंबरदी में, वह रावलनाथ मंदिर के सामने खुद से बातें करती और इशारे करती रहती थी। कोई बचे हुए पत्तों को एक कागज़ के थैले में भरकर उसके सामने रख देता था। कभी-कभी वह निंबरदी के किनारे आती, अपनी आँखें हाथों में थामकर क्षितिज को देखती रहती। वह सोचती कि रसु नाव में नदी पर गए हैं। सीतु भी उनके साथ हैं। वह घंटों किनारे पर खड़ी उनके लौटने का इंतज़ार करती रहती। कभी- कभी, अंधेरा होने पर भी, वह किनारे पर आ जाती। वह समुद्र की ओर मुँह करके रसु और सीतु को पुकारती।

बरसाती मौसम समाप्त हो गया। एक दिन, पाडी, जो तट पर खड़ी थी, ज्वार की लहरों से बेखबर थी। लहरों ने उसे घेर लिया। प्यास, भूख और भय की हल्की सी अनुभूति के साथ, पाडी उस दिन खुद को संभाल नहीं पाई। जिन लहरों ने उसे पानी में खींचा था, वही लहरें उसके शरीर को वापस निंबरदी के तट पर ले आईं। भगवान ने उसके कष्ट को नहीं देखा, इसलिए मथुकाका ने सोचा कि उसने भ्रमित पाडी को उसके कष्टों से मुक्त करने के लिए बचाया है।
निंबरदी गांव के लोगों ने उसी स्थान पर उनकी चिता बनाई। अंतिम संस्कार के समय मथुकाका पहाड़ी से नीचे नहीं उतर सके। अब उनके लिए चलना भी नामुमकिन हो गया था। पिछले पंद्रह दिनों से उन्हें बुखार था। एंटोन गोंसाल्वेस आते-जाते रहते थे। उनका बेटा बिल घर से मथुकाका के लिए खाना लाता था। लेकिन अब उनमें से वह उपदेशक, जो जन्म और मृत्यु पर ज्ञान भरी टिप्पणी करते थे और सत्य में दृढ़ विश्वास रखते थे, निराश हो गए थे। सारंग परिवार में एक के बाद एक घटित होती घटनाओं को देखकर उनका धैर्य जवाब दे रहा था। उन्हें लगने लगा था कि इस दुनिया में 'असत्य' का प्रभाव बढ़ता जा रहा है।
जब एंटोन ने उन्हें पाडी की मौत के बारे में बताया, तो उन्होंने कहा, "शाबाश! बेचारा हमेशा के लिए चला गया! अब जिंदगी में जीने के लिए कुछ बचा ही नहीं है, इसलिए जीने का कोई मतलब नहीं है।" शाम को वे एक छड़ी के सहारे उठे और पहाड़ी के दक्षिणी किनारे पर खड़े हो गए। किनारे पर जल रही चिता से उठता धुआँ अब गायब हो चुका था। ज्वार की लहरें धीरे-धीरे चिता को छूने लगीं। जल्द ही चिता पानी में डूब गई। एक बड़ी लहर आई और चिता को बहा ले गई, चाहे वह वहाँ हो या न हो। मथुकाका ने मन ही मन कहा,

"शाबाश, किसी को तो अंतिम संस्कार करना ही था, और सागर ने ही किया!"
जब रसु सारंग की मृत्यु हुई, तब भी निंबरदी में किसी को ज़्यादा दुख नहीं हुआ। क्योंकि सीतु को सज़ा मिलने के बाद उसे अपराधी, दोषी मान लिया गया था, और इसीलिए सबने सोचा कि उसे सज़ा मिली है। नारायणन की हत्या के बाद से सारंग परिवार के प्रति सम्मान कम होता जा रहा था। निंबरदी में किसी ने भी इस बात पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया कि पाडी पागल हो गई थी। जब निंबरदी ने खाना खाते समय एक आवारा कुत्ते को देखा, तो उसने कुछ दिनों तक पाडी को उसी तरह खिलाया जैसे वह उसे बासी रोटी फेंकती थी। उसमें दया या मानवता का कोई अंश नहीं था, और इसीलिए जब एंटोन ने पाडी की मृत्यु की खबर मथुकाका को सुनाई, तो उसने आह भरकर कहा, "कोई बात नहीं। वह एक बार तो आज़ाद हुई!"
जब मथुकाका चट्टान से लौटा, तो रवि बाहरी कमरे के सामने बरामदे में खड़ा था। वह थोड़ा आगे आया और बोला,
"पिताजी, क्या कुछ गड़बड़ है?"
"हूह!" मथुका चिल्लाई।
"लेकिन वो सुबी कहाँ है?"
मुझे क्या पता!
"देखिए पिताजी, वह चाहे जहां भी छिपे, मैं उसकी तलाश करना बंद नहीं करूंगी। मैंने सुना है कि सुनवाई से पहले वह सीतू से मिलने चित्रदुर्ग की जेल गई थी।"
"हटाओ, हटाओ, ढूंढो! तुमने उसके लिए इतनी मेहनत की। अगर वो तुम्हें नहीं मिली तो सब बेकार की मेहनत का क्या फायदा?"

"लेकिन पिताजी, मैंने आपकी बात मानी थी! सिद्धांत तो सिद्धांत होता है! लेकिन अगर रसु मर गया, पड़ी मर गई, सीतू जेल चली गई तो क्या होगा? अब सुबी अकेली रह गई है, है ना?"
"रवि!" फादर मैथ्यूज ने चर्च के किनारे की ओर देखते हुए कहा, "तुम अभी भी बच्चे हो। तुम्हें यह भी समझ नहीं आ रहा कि तुम क्या कर रहे हो।"
"मैं समझ गया। मैंने अभी तक कुछ नहीं पिया है। लेकिन पिताजी, बताइए, सुबी कहाँ है?"
"तुम्हें इसका पता चल ही जाएगा, है ना?"
मैंने कहा, "यह सच है; लेकिन फिर भी, मैं उसे तुरंत नहीं ढूंढ पाऊंगा। आपको उसका पता पता होना चाहिए!"
"बेशक आप समझते हैं। मुझे पता है और मैं आपको नहीं बता रहा हूँ।" यह कहने के बाद मथुकाका अंदर आया। वह रवि से बहुत नाराज़ था। उसे आश्चर्य था कि निर्दोष सारंग परिवार को चोट पहुँचने के बावजूद रवि के मन में सुबी के लिए अभी भी भावनाएँ थीं।
कमरे में यीशु की तस्वीर को देखकर उसने कहा, "अगर मुझे इस धरती पर ऐसी चीजें देखनी ही थीं, तो आपका जन्म ही क्यों हुआ?"
सीतू ने उच्च न्यायालय में जो अपील दायर की थी, वह भी खारिज हो गई। यहाँ निंबरदी सारंग परिवार को भूल गया। कारखाने फिर से खुल गए। सफेद झींगे बड़ी मात्रा में मिलने लगे। कर्ली झींगे भी बहुतायत में उपलब्ध होने लगे। डिब्बाबंदी कारखाने और कोल्ड स्टोरेज दोनों से माल बड़ी मात्रा में बाहर आने लगा। एक नया प्रबंधक नियुक्त किया गया था। मनमोहन सेठ रवि के नेतृत्व से खुश थे। लेकिन रवि स्वयं बेचैन था। वह सुबी को अपने साथ रखना चाहता था।
वह रात भर उसके सपनों में आती रहती थी।

□□□

बीस
उमाजीराव रावराने एक महीने तक बशाममु के होटल में ठहरे। हर सुबह वे उठकर निंबर्दी जाते थे। वहाँ उन्होंने गबिट और भंडारी लोगों से जान-पहचान बनाई। उन्हें निंबर्दी में घटी हर बात की जानकारी मिली, सीतु के जन्म से लेकर उसके दंड तक। वे गिरजाघर की पहाड़ी पर भी गए और मथुकाका से मिले। अपना परिचय देते समय उमाजीराव रावराने ने निंबर्दी आने का अपना इरादा गुप्त रखा था। उन्होंने सबको बताया कि वे राजस्व विभाग में काम करते हैं और समुद्र की हवा उनके स्वास्थ्य के लिए अच्छी है, इसलिए वे एक-दो महीने के लिए यहाँ रहने आए हैं।
साढ़े पाँच फीट लंबा रावरेन, छह फीट के करीब होने के बावजूद सीधा खड़ा रहता था, उसकी लंबी सीधी नाक, नुकीली मूंछें, बीच में एक खांचा वाली ठोड़ी, आँखों पर काले चश्मे और सिर पर थोड़ी झुकी हुई फेल्ट की टोपी थी, ये सब देखकर कोई भी यह मान सकता था कि वह वास्तव में एक लंबा-चौड़ा सेवानिवृत्त राजस्व अधिकारी होगा। जब वह पहली बार मथुकाका से मिला था, तब भी उसने यह खुलासा नहीं किया था कि वह कौन है या वह वहां क्यों आया है।
"नमस्कार, फादर मैथ्यूज, सुप्रभात!"
"सुप्रभात। मैं आपको पहचान नहीं पा रहा हूँ।" मथुकाका ने अपने चश्मे के लेंस पोंछते हुए और उसे अपनी आँखों पर लगाते हुए कहा। "मैं तुम्हें कैसे पहचान सकता हूँ? मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूँ!" राओरेन ने अपनी पाइप से धुआँ निकालते हुए कहा।

"माफ़ कीजिए। मुझे याद नहीं कि मैंने आपको देखा हो।"
"दिसंबर 1952 में रत्नागिरी में चर्च काउंसिल का एक सेमिनार आयोजित हुआ था!"
"ओह! जी हाँ! आप रत्नागिरी में कब थे?"
"जी हां। उस समय मैं रत्नागिरी डिवीजन का प्रांतीय अधिकारी था और रत्नागिरी के पूज्य समुद्रे मेरे मित्र थे।"
‘‘यह तो अद्भुत नजारा है! समुद्र अभी भी जमा हुआ था!’’
"बेचारा! हम दोनों घनिष्ठ मित्र थे। मैंने तुम्हें तब उसके घर पर देखा था।"
फादर मैथ्यूज मन ही मन गिन रहे थे कि उनके बावन वर्ष के होने के बाद से कितने वर्ष बीत चुके हैं। गिनने के बाद उन्होंने कहा, "उस घटना को तेईस साल हो गए हैं। लेकिन इतने सालों बाद भी आप मुझे पहचानते हैं? कमाल की याददाश्त है!"
रावरेन ने अपनी पाइप मेज पर रखी और कहा, "हम दोनों की उम्र लगभग एक जैसी हो सकती है, लेकिन आप बहुत थके हुए लग रहे हैं।" रावराना ने विषय पर संक्षेप में चर्चा करने के उद्देश्य से यह बात कही।
"पिछले साल तक मेरा स्वास्थ्य बहुत अच्छा था।"
“एक साल में क्या हुआ?” रावराना ने मेज पर रखी पाइप को फिर से अपने होठों से लगाया। उसने शिलगाँव से पूछा और एक कश लिया। "बहुत कुछ हो चुका है! अब इसे दोहराने का कोई फायदा नहीं है। मामला हमेशा के लिए बंद हो चुका है।"
"तो? क्या आप मुझे बताने वाले हैं कि मामला क्या था या नहीं?" "इस दुनिया में न्याय नाम की कोई चीज नहीं बची!" मथुकाका ने निराशा से खिड़की से समुद्र की ओर देखते हुए कहा।
किसके साथ अन्याय हुआ है?

रावराना ने अपने मुंह में पाइप लिए कुर्सी से थोड़ा आगे झुकते हुए पूछा।
"मैं आपको क्या बताऊं, महोदय? मैं आपको बता सकती थी; लेकिन अब बताने का कोई फायदा नहीं होगा। मैं बस उस बात को याद करते-करते थक जाना चाहती थी।"
"पिताजी!" फिर, अपनी कुर्सी को मथुकाका के बिस्तर के पास खींचते हुए, रावराने मथुकाका के बिल्कुल करीब आए और बोले, "मैं रावराने हूँ, सेवानिवृत्त सी.आई.डी., डी.आई.जी.! मोहनराव दिवेकर जिला न्यायाधीश थे। क्या आपने सुना कि उन्होंने दोहरे हत्याकांड को अंजाम दिया और उन्हें सजा मिली?"
जब मथुकाका को यह संदेह होने लगा कि यह सज्जन अपनी पहचान छिपाकर यहाँ क्यों आए हैं, तभी रावण ने मथुकाका को निंबरदी आने का अपना उद्देश्य बताया। इस पर मथुकाका ने कहा:
"लेकिन अब उच्च न्यायालय ने सुबी की हत्या के मामले में भी उसकी अपील खारिज कर दी है। इसकी जांच करके आपको क्या हासिल होगा?" "पिताजी! मैं पिछले एक महीने से यहाँ हूँ और मैंने बहुत सारी जानकारी जुटाई है। पुलिस विभाग में तीस साल का अनुभव मेरे पास है। मैंने कई जटिल अपराधों को उजागर किया है और इस सीतू मामले पर भी प्रकाश डालने का साहस मुझमें है। मैं कल एर्नाकुलम के लिए रवाना हो रहा हूँ।"
एर्नाकुलम? किसलिए?
"नारायणन के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए!"
"लेकिन मैं आपको एक बात बता दूं," फादर मैथ्यूज ने रवींद्र के कमरे की खिड़की से बाहर देखते हुए कहा। "इसका कोई फायदा नहीं होगा।"

"मैं इसका ख्याल खुद रख लूंगा। लेकिन आज मैंने सिर्फ अपनी 'पहचान' आपके सामने स्पष्ट की है। मैं अब भी इस गांव में एक सेवानिवृत्त राजस्व अधिकारी के रूप में ही रहूंगा। मुझे आपसे कुछ जानकारी चाहिए थी।"
"मुझे क्या बताओ।"
"क्या सीटू और सुबी शादीशुदा थे?"
"उसका क्या हुआ? वे दोनों मेरे साथ पले-बढ़े। बालिग होने के बाद, उनके बीच प्राकृतिक नियमों के अनुसार संबंध स्थापित हुआ। जब सुबी को एहसास हुआ कि उसके दिन बीत चुके हैं, तो मैंने उसे चर्च भेजा और उससे 'शपथ' दिलवाई। शायद दुनिया की नजरों में यह शादी वैध न हो। लेकिन पति-पत्नी का पवित्र बंधन उनके बीच स्थापित हो चुका था।"
"अच्छा। सुबी इस समय कहाँ है?"
मथुकाका को समझ नहीं आ रहा था कि इस सवाल का जवाब जल्दी दे या नहीं। उसे हल्का सा शक था कि शायद रविन ने खुद ही इस सज्जन को यहाँ भेजा है, जो सच्चाई को सामने लाना चाहते हैं।
मथुकाका ने कहा, "कम से कम सुबी आज तो सुरक्षित है। कल क्या होगा, ये कहना मुश्किल है। रवि ने मुझसे परसों तक उसे ढूंढने का वादा किया है।"
इस पर रावराने ने मथुकाका के कान के पास धीरे से अपना मुँह ले जाकर कहा, "पिताजी, कृपया मुझे उसका पता बता दीजिए। अगर वह आज जहाँ है वहाँ सुरक्षित नहीं है, तो उसे तुरंत वहाँ से ले जाया जाना चाहिए। अन्यथा, पिछले एक महीने से दिन-रात जागकर मैंने जो मेहनत की है, वह व्यर्थ हो जाएगी अगर सुबी रवि उसके हाथ लग गया। आपको मुझ पर पूरा भरोसा रखना चाहिए। मेरे इरादों पर कोई संदेह नहीं होना चाहिए।"

मथुकाका ने रावण को व्याकुलता से देखते हुए कहा, “मैंने जीवन भर मानवता में विश्वास रखा है। लेकिन अब, अपने अंतिम दिनों में, यह चकनाचूर हो गया है। यदि आप सचमुच सीतु के इस मामले पर कुछ प्रकाश डालने के इरादे से यहाँ आए हैं, तो मेरी शुभकामनाएँ आपके साथ हैं। लेकिन मुझे अब भी लगता है कि आपको यहाँ आने में बहुत देर हो गई है। यदि आप सीतु के विरुद्ध मामला दर्ज होने के समय ही आ जाते, तो स्थिति कुछ और ही होती।”
रावराने यह सुनकर हँस पड़े। उन्होंने अपनी बुझी हुई पाइप को एक छोटे से थैले में रखा और कहा, “पिताजी, यह कैसे संभव हुआ? इस सीतू को सज़ा मिली, वह चित्रदुर्ग की जेल में अपनी सज़ा काटने गया, और वहीं उसकी मुलाकात मोहनराव दिवेकर से हुई। इसीलिए उसने मुझे पत्र भेजकर उस मामले की सच्चाई की जाँच करने का अनुरोध किया था। अगर मोहनराव दिवेकर इस ‘मामले’ में न होते, तो मेरे यहाँ आने का सवाल ही नहीं उठता।”
"आपकी बात भी सही है।"
"हाँ, हर चीज़ में समय लगता है। इसलिए कृपया मेरा और समय बर्बाद न करें। मेरे लिए सुबी से मिलना बहुत ज़रूरी है। उससे मिलने के तुरंत बाद मुझे एर्नाकुलम जाना होगा। हो सकता है कि वहाँ जाकर मुझे और भी महत्वपूर्ण जानकारी मिले।"
मथुकाका ने रावण के सामने अपना दाहिना हाथ बढ़ाया। रावण ने ऐसा करने के उसके इरादे को पहचान लिया।
मथुकाका अब रावराणा से एक वादा चाहते थे। रावराणा ने बिना किसी संकोच के मथुकाका के हाथ पर अपना हाथ रख दिया। कुछ क्षणों तक दोनों में से कोई नहीं बोला। फिर मथुकाका ने रावराणा को पणजी में उस स्थान का पता बताया जहाँ सुबी ठहरे हुए थे, और उन्होंने

रावराणा का पहचान पत्र उस गृहस्थ को भी दे दिया जिसके घर में सुबी ठहरे हुए थे।
पणजी से छह मील दूर डी'सूज़ा का गाँव था। रोमेल डी'सूज़ा का एक सुअरपालन फार्म था। उनके घर के आसपास डी'सूज़ा परिवार के और भी घर थे। उनमें से अधिकांश के पास काजू की भट्टियाँ थीं। गर्मियों में जब काजू उपलब्ध होते थे, तो वे उन्हें भंडारित करके फेनी बनाते थे। कई लोगों के पास तो इस प्रकार की शराब बनाने का लाइसेंस भी था। बनी हुई फेनी को मिट्टी के बर्तन में भरकर जमीन में गाड़ दिया जाता था। फेनी जितनी पुरानी होती थी, उतनी ही कीमती होती थी। लेकिन रोमेल डी'सूज़ा का व्यवसाय अलग था। उन्होंने एक-दो सौ अमेरिकी सुअर पाल रखे थे। घर के पीछे एक छोटा सा कसाईखाना था। उनका व्यवसाय सुअर के मांस से सलामी, सॉसेज और मसालेदार अचार बनाना था। उनका व्यवसाय हर खिस्मस पर खूब फलता-फूलता था। हर साल पाँच से पचास हज़ार रुपये का सामान बिकता था। यह रोमेल डी'सूज़ा का घरेलू व्यवसाय था। लेकिन उनके उत्पादों की गुणवत्ता इतनी उच्च थी कि गोवा क्षेत्र में, क्रिसमस पार्टी में रोमेल डिसूजा द्वारा बनाए गए सॉसेज या सलामी का होना प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जाता था।
रोमेल डिसूजा और फादर मैथ्यूज पिछले चालीस वर्षों से मित्र थे। जब भी मथुकाका पणजी आते, वे रोमेल डिसूजा के घर ही ठहरते थे। जब भी मथुकाका को सुबी को रवि की बुरी निगाहों से दूर किसी सुरक्षित स्थान पर ले जाने की आवश्यकता महसूस हुई, तो सबसे पहले उन्हें रोमेल डिसूजा का ही ख्याल आया!
रोमेल डिसूजा के घर में सुबी बहुत सुरक्षित थी। डिसूजा वाडी में कुछ लाइसेंसशुदा शराब बनाने की भट्ठियाँ थीं, तो कुछ बिना लाइसेंस वाली भी थीं। उन भट्ठियों को कुछ घमंडी 'दादाजी' चलाते

रोमेल डिसूजा ने जानबूझकर सुबी से चाय लाने को कहा। हालांकि, सुबी को इस बात का कोई अंदाजा नहीं था कि चाचा रोमेल के घर कौन मेहमान आए हैं। जब उसने चाय की थाली चायदानी पर रखी और अंदर चली गई, तो चाचा रोमेल ने कहा, "बेटी सुबी, तुम इन्हें नहीं जानतीं - लेकिन ये तुमसे मिलने आए हैं।"
"मैं?" सुबी ने अपने सीने पर हाथ रखते हुए और थोड़ा उलझन जताते हुए पूछा।
"जी हां, आप उन्हें बिना किसी झिझक के आवश्यक जानकारी दे सकते हैं। वे आपके चाचा का पहचान पत्र लेकर आए हैं।"
अंकल रोमेल ने सुबी को अपने हाथ में मौजूद पत्र दिखाया।
मथुकाका का नाम सुनते ही सुबी का चेहरा खिल उठा।
"तुम्हारे चाचा कैसे हैं?" सुबी ने रावरना से पूछा।
"कोई बात नहीं। लेकिन वे तुम्हारे बारे में चिंतित हैं।"
"मेरी चिंता मत करो," उसने कहा।
"यह सच है। लेकिन मैं आज आपसे कुछ जानकारी लेने आया हूं।"
"किस प्रकार की जानकारी?"
"मैंने सीतू को दी गई सजा की जांच दोबारा शुरू कर दी है।" "लेकिन क्या अब इसका कोई फायदा होगा?" डी'सूजा ने पूछा।
देखते हैं। प्रयास जारी है। मथुकाका के शब्दों में, 'ईश्वरीय न्याय' मानवीय न्यायिक प्रणाली से कहीं अधिक प्रभावी है। मैं उस 'ईश्वरीय न्याय' को अस्तित्व में लाने के उद्देश्य से प्रयास कर रहा हूँ।
"ठीक है। सुबी से जो चाहो पूछ लो। मैं कसाईखाने जा रहा हूँ," रोमेल डिसूजा ने कहा और चला गया।

रावराना ने अपने सूटकेस से एक सूचना फाइल निकाली। उसने चश्मा लगाया। उसने अपनी पाइप में ईंधन भरा, उसे जलाया, एक-दो कश लिए और सुबी से पूछा,
"सुबी, क्या सीतु ने कभी तुम्हारे सामने नारायणन के बारे में बुरा-भला कहा था?"
"कभी नहीं।"
"जब सीतू को पता चला कि आपको कोल्ड स्टोरेज से निकाल लिया गया है, तो उसने क्या कहा?"
"उन्हें मेरा कारखाने में काम करना पसंद नहीं था। जब उन्हें पता चला कि मैनेजर ने मुझे नौकरी से निकाल दिया है, तो उन्होंने मैनेजर को धन्यवाद दिया।"
"आप क्या कह रहे हैं?"
"सिटू की शपथ!"
"अच्छा, अब मुझे बताओ, क्या तुमने मैनेजर का शव देखा?"
"हां; लेकिन मैं बहुत करीब नहीं जा पाया।"
‘‘का?’’
मुझे भूतों से डर लगता है। मैंने उन्हें दूर से देखा था।
"क्या वह मैनेजर का भूत था?"
"तुम्हारा क्या मतलब है? पूरे गांव ने उसे पहचान लिया था।" मुझे बता देना। मुझे संदेह है।
"कैसे?"
"वह आज ऐसा नहीं कह रहा है। मुझे अभी भी पुष्टि करनी है। खैर, छोड़ो, सुबी, क्या तुमने और सीतू ने मैनेजर के बारे में कुछ कहा?"
सुबी ने एक पल सोचा और याद करने की कोशिश करते हुए कहा, "मुझे अभी ऐसा कुछ याद नहीं आ रहा है। लेकिन सिटु हमेशा मैनेजर के बारे

में सम्मानपूर्वक बात करता था। वह कहता था - मैनेजर बहुत अच्छा इंसान है।"
"तो, सीतू ने छोटे सेठ के बारे में क्या सोचा?"
"कुछ नहीं।"
"क्या छोटे सेठ ने सीतु से दोस्ती करने की कोशिश की?"
"नहीं। सीतू ने छोटे या बड़े किसी भी नियोक्ता से मुलाकात नहीं की।"
"अच्छा, अब मुझे एक आखिरी बात बताइए, छोटे व्यवसाय मालिकों के बारे में आपकी क्या राय है?"
सुबी के चेहरे पर एक पल के लिए हैरानी के भाव आ गए। लेकिन उसने जल्दी ही खुद को संभाला और कहा, "वह मुझे चाहता था।"
"आपको यह कब समझ आया?"
"जब मैं कारखाने में काम कर रही थी, तो वह वहां आकर मुझे घूरता था। वह मुझसे बात करने की कोशिश करता था। जब मैं मथुकाका के यहां जाती थी, तो वह मुझे देखकर मुस्कुराता था। कभी-कभी वह इशारे भी करता था।"
"तो तुमने सीतू को इसके बारे में नहीं बताया?"
मैंने तुमसे मना किया था!
"आपने मुझे क्यों नहीं बताया?"
"वे सेठ लोग बहुत ताकतवर थे। अगर सीतू ने लड़ाई शुरू कर दी होती, तो वह बच नहीं पाता। वे सीतू की जान के साथ कुछ अच्छा या बुरा जरूर करते।"
"तुमने इस बारे में किसी को क्यों नहीं बताया ताकि सीतू की जान खतरे में न पड़ जाए?"
"हां, मुझे इसी बात की चिंता थी।"

"क्या कुछ ऐसा हुआ था जिसकी वजह से सीतू मैनेजर को मारना चाहती थी?"
"कुछ नहीं।"
"मैनेजर अविवाहित था। क्या उसने कभी आपको या कोल्ड स्टोरेज में काम करने वाले किसी अन्य बच्चे को परेशान करने की कोशिश की?" "नहीं, ऐसा नहीं है। इसके विपरीत, उन्हें मुझे काम पर न आने के लिए कहना मुश्किल लगा। यह कहते हुए उनकी आंखों में आंसू भर आए।" "ठीक है। सुबी, तुमने आज मुझे बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी दी है। मेरे मन में जो शंकाएं थीं, वे अब दूर हो गई हैं। अब मुझे एर्नाकुलम जाने में कोई आपत्ति नहीं है।"
रावराना ने मेज पर पड़ी पाइप उठाई और शिलगांव वापस चला गया। इसी बीच, कसाईखाने गए रोमेल डिसूजा लौट आए और बोले, "मुझे उम्मीद है कि आपका काम हो गया होगा।"
"जी हां!" रावरेन ने मुस्कुराते हुए कहा, "जो कुछ भी मैं पूछना चाहता था, वह सब हो गया है। अब कृपया मेरी मदद कीजिए।"
‘‘बोला.’’
मैं यहाँ से सीधे एर्नाकुलम जाना चाहता हूँ। यहाँ से नाव कब निकलती है?
"नाव से जाएं? इसमें बहुत समय लगता है।"
"मैं इसे लागू करके देखूंगा। नाव यात्रा के दौरान मुझे एक-दो दिन का समय जरूर मिलेगा ताकि मैं अब तक प्राप्त जानकारी पर विचार कर सकूं। वैसे भी, मुझे नाव यात्राएं पसंद हैं।"
"तो ठीक है। लेकिन हम आज यहां से नहीं जा पाएंगे।"
‘‘का?’’
"मेरे यहाँ आने वाला हर मेहमान यहाँ रुके बिना नहीं जा सकता!"

रावरेन हंसते हुए बोला, "क्या तुम्हारा मतलब हां है? तो मैं यहीं रुकूंगा। लेकिन मुझे नाव कब मिलेगी?"
"यहाँ से 'केप केमोरिन' नाम की एक नाव सुबह पाँच बजे रवाना होती है। क्या कल सुबह आपको नाव पर बिठाने का इंतज़ाम करना पर्याप्त होगा?"
"बहुत-बहुत धन्यवाद!"
राओराना, रोमेल डिसूजा के साथ बाहर आईं। उनका बंगला घनी झाड़ियों से घिरा हुआ था। बंगले के चारों ओर नारियल के पेड़ कतारों में लगे थे, और पेड़ों ने एक बाड़ बना रखी थी। हल्की हवा में नारियल के पत्ते सरसरा रहे थे। आसमान साफ था। किसी ने वहाँ सौंफ का भट्ठा लगा रखा था। इसी वजह से हवा में एक अजीब सी गंध फैली हुई थी। राओराना ने एक बार उसे सूंघा और डिसूजा की ओर देखते हुए कहा, "लगता है शराब बन रही है।"
जी हाँ। हमारा डी'सूजावाड़ी एक बहुत बड़ा शराब बनाने का कारखाना है। यहाँ कई भट्टे हैं। यह यहाँ के लोगों का खानदानी व्यवसाय है। शायद आपको पता न हो कि पहले, जब यहाँ पुर्तगालियों का शासन था, तब यहाँ की फेनी विदेशों में भेजी जाती थी। पेरिस में इसे 'भारतीय व्यंजन' के रूप में जाना जाता था। इस काजू फेनी का यहाँ वही स्थान था जो विदेशों में स्कॉच का था।
"वाह! अगर हम इस कारोबार पर ध्यान देते रहे तो हमारा देश काफी विदेशी मुद्रा कमा सकता है।"
"बिल्कुल!"
बातें करते हुए वे झाड़ियों को पार करके समुद्र तट पर पहुँच गए। घनी झाड़ियों से होते हुए आधे घंटे चलने के बाद विशाल नीले समुद्र का नज़ारा बेहद मनमोहक था। रावराना एक चट्टान पर बैठ गया। उसके सामने रोमेल डिसूजा खड़ा था। उसने पाइप भर रहे

रावराना से पूछा, "जिस मामले की आप जाँच कर रहे हैं, उसका क्या नतीजा निकला?"
अपनी पाइप में तंबाकू भरते हुए, रावराने रुका और मुस्कुराते हुए डी'सूजा से बोला,
"अगर सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा मैंने अनुमान लगाया था, तो मेरी जांच के नतीजे एक बड़ा तूफान खड़ा कर देंगे।"
रोमेल डिसूजा को वाक्य समझ नहीं आया। वहीं, रावराने बैठे-बैठे सिगरेट का आनंद ले रहे थे और दूर क्षितिज को निहार रहे थे। फिर दोनों ने मुक्ति आंदोलन के बाद गोवा में हुए सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन पर चर्चा की। सूर्यास्त के बाद जब वे लौटे, तो डिसूजा के घर में तले हुए सारंगा की महक अभी भी फैली हुई थी।
उन शरारती बच्चों की सूंघने की शक्ति बहुत तेज़ थी। जब उन्होंने सही-सही पहचान लिया कि कौन सी मछली तली जा रही है, तो डी'सूज़ा ने कहा, "मैं तुमसे सहमत हूँ, भाई! पूरी ज़िंदगी गोवा में बिताने के बाद भी हम गंध से यह नहीं बता सकते थे कि कौन सी मछली तली जा रही है।"
इस पर रावराने ने कहा, "अगर मैं पुलिस विभाग में होता, तो इतना ही काफी होता! एक पुलिस अधिकारी को हर समय अपनी पांचों इंद्रियों को सतर्क रखना पड़ता है!"
आप अब सेवानिवृत्त हो चुके हैं।
"तो क्या हुआ? क्या आप तीस साल पुरानी आदत को दो या चार साल में भूल जाते हैं?"
जब अंदर खाने की मेज पर कांच की प्लेटें रखी जा रही थीं, तब डी'सूजा ने रावणों से पूछा,
"क्या आप पचास साल पुराना कपड़े का एक छोटा सा टुकड़ा लेना चाहेंगे?"

‘‘अगर आप गोवा नहीं आते और शराब नहीं पीते तो आप क्या कहते? लोगों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए - जब रोम में हों, तो रोमवासी की तरह व्यवहार करें! क्या यह सच नहीं है?’’
"बिल्कुल!" रोमेल ने मुस्कुराते हुए कहा और बोतल लेने के लिए अंदर चले गए।
०००

इक्कीस
‘केप केमोरिन’ नाम की एक विशाल नाव दक्षिण दिशा में समुद्र की लहरों को चीरती हुई आगे बढ़ रही थी। द्वितीय श्रेणी के डेक पर, रावराने अपने मुँह में पाइप दबाए सीतू के मामले से संबंधित जानकारी पढ़ रहे थे। उन्हें अचानक प्रबंधक की मृत्यु की घटना याद आ गई। उन्हें नारायणन की दो तस्वीरें भी मिली थीं। एक तस्वीर उनके जीवित रहते की और दूसरी निंबरदी नदी के किनारे पुलिस द्वारा ली गई उनके शव की। रावराने एक मोटे आवर्धक लेंस से ध्यान से देख रहे थे। नारायणन की कमीज़ के बटन, उनके घुंघराले बाल, थोड़ी चपटी नाक और मोटे होंठों से यह स्पष्ट था कि शव नारायणन का ही था।
लेकिन फिर भी, रावराना को गहरा संदेह था - शव की यह तस्वीर वाकई नारायणन जैसी लग रही थी। लेकिन क्या यह उन्हीं का शव हो सकता है?
रावराना ने फाइल बंद की और अपनी निगाहें डेक से हटाकर सामने फैले समुद्र पर टिका दीं। उन्होंने एक पल के लिए आकाश की ओर देखा। आकाश और समुद्र दोनों ही विशाल और असीम थे! दूर क्षितिज पर एक हल्की बैंगनी पट्टी दिखाई दी, और वहीं आकाश और समुद्र का मिलन होता था। यह सच था कि आकाश और समुद्र का मिलन कहीं न कहीं अवश्य हुआ होगा। फिर भी, यह आँखों से दिखाई नहीं दे रहा था। प्रकृति का यह रहस्य रावराना के मन में चल रहे रहस्य का प्रतीक था, जिसे वह नहीं जानते थे। उन्हें यकीन होता जा रहा था कि सीतू

के मामले में सच्चाई कुछ और ही है। फिर भी, वह इसे निश्चित रूप से उजागर करने का कोई रास्ता नहीं खोज पा रहे थे। निंबरदी में अपने एक महीने के प्रवास के दौरान, उन्होंने सीतू के जन्म से लेकर उसके मुकदमे और सजा तक की सभी घटनाओं को दर्ज किया था। उन्हें यह असंभव लग रहा था कि प्रबंधक नारायणन की हत्या सीतू ने की हो।
नाव पर बने रेस्तरां से एक वेटर चाय की ट्रे लेकर आया। उसने अपने बगल में एक सफेद स्टूल खींचा, उस पर ट्रे रखी और रावराना परिवार से विनम्रतापूर्वक पूछा,
"दोपहर का भोजन किस समय परोसा जाना चाहिए?"
"दोपहर का खाना मत लाना। मैं भोजन कक्ष में आ जाऊंगी। मुझे अकेले खाना खाने का मन नहीं है।"
बेरा मुस्कुराई और चली गई। रावराना ने चाय बनाई, एक घूंट पिया और आगे देखने लगी। तभी नाव का कप्तान सफेद वस्त्र पहने ऊपरी केबिन से नीचे आता हुआ दिखाई दिया। जब कप्तान ने रावराना को देखकर मुस्कुराया, तो रावराना ने अपना प्याला ट्रे पर रख दिया और उससे पूछा,
‘‘वुड यू माइंड ए कप ऑफ टी?’’
“ज़रूर!” कप्तान ने कहा और उसके सामने बैठ गया। रावराना ने उसके लिए चाय बनाई। चाय की एक घूंट लेते हुए कप्तान ने उससे पूछा, “क्या आप आरामदेह सैर पर जा रहे हैं?”
रावराने मुस्कुराए और बोले, "आसानी से कौन जाता है? मैं तो इसलिए जा रहा हूँ क्योंकि मुझे एक काम करना है। यह नाव एर्नाकुलम कब पहुँचेगी? कितनी दूर है?"
"पणजी से एर्नाकुलम की दूरी लगभग पांच सौ पचास किलोमीटर है। हम कल दोपहर चार बजे एर्नाकुलम में पहुंचेंगे।"

"क्या वहां कोई होटल हैं?"
"हां। वहां मालाबार, कैसिनो, सी लॉर्ड जैसे बड़े होटल हैं, और 'साउथ स्टार' नाम का एक बड़ा होटल भी है - वहां जरूर जाएं।" "लेकिन क्या वहां जगह होगी?"
कप्तान ने मुस्कुराते हुए कहा, "हमें जगह ज़रूर मिल जाएगी और अगर जगह को लेकर कोई समस्या हो तो बस अपना नाम बता देना। कप्तान श्रीनिवास अय्यर। आपको तुरंत जगह मिल जाएगी।"
"साउथ स्टार होटल के मालिक मेरे घनिष्ठ मित्र हैं। वे पहले नौसेना में थे। एक छोटे से हादसे में उन्हें चोट लग गई थी, जिसके कारण उन्हें नौसेना से छुट्टी लेनी पड़ी। उन्होंने यह होटल शुरू किया है। यह अच्छा चल रहा है। उन्होंने दो बसें किराए पर ली हैं। चार टैक्सियाँ भी हैं। होटल हमें एर्नाकुलम और उसके आसपास के दर्शनीय स्थलों को दिखाने की व्यवस्था करता है।" "समझ गया! आपसे मिलकर बहुत अच्छा लगा। मैं पहली बार वहां जा रहा हूं।"
"चिंता मत करो! 'एडमिरल' बड़े स्नेह से तुम्हारा ख्याल रखेंगे।" "एडमिरल? क्या वह इतने उच्च पद पर थे?"
"ओह, हाँ! हम मज़ाक में उन्हें एडमिरल कहते थे। लेकिन दोस्ती के मामले में तो वो वाकई बेमिसाल हैं!"
"ठीक है। मैं उन्हें अपनी पहचान बता दूंगा। वे मेरे काम में मददगार साबित होंगे।"
"ज़रूर! अगर आप दोनों की आपस में बनती है, तो वो आपकी जितनी ज़रूरत होगी उतनी मदद करेगा। बिलकुल अप्रत्याशित रूप से! अगर मैं आपसे पूछूँ कि आपका काम क्या है, तो आप नाराज़ तो नहीं होंगे ना?" कैप्टन श्रीनिवास अय्यर ने अपनी 555 सिगरेटों की डिब्बी खोली और रावराना के सामने रखते हुए पूछा, "नहीं, धन्यवाद।"

रावराना ने अपना पाइप निकाला और उसमें तंबाकू भरने लगा और बोला, "कैप्टन साहब, मुझे आपको कुछ नहीं बताना है। मैं वहाँ एक मुश्किल काम के लिए गया हूँ। वहाँ एक हत्या हुई है। उस काम के लिए एक युवक को उम्रकैद की सज़ा सुनाई गई है। लेकिन मेरे एक जज दोस्त ने मुझे बताया कि उस मामले में सच्चाई कुछ और ही होगी, इसलिए मैं यह पता लगाने गया हूँ कि क्या मैं उस मामले पर कोई नई रोशनी डाल सकता हूँ। मैं एक सेवानिवृत्त सी.आई.डी., डी.आई.जी. हूँ।"
"ओह, जी हाँ! बहुत बढ़िया! आप जैसे लोगों से मिलना मेरे लिए सौभाग्य की बात है!"
"लेकिन मैं अपने काम के लिए आपको परेशान तो नहीं कर रहा हूँ, है ना?"
बिल्कुल नहीं। इसमें क्या दिक्कत है? अरे, हमारा इस समुद्र से दिन-रात का गहरा संबंध है! तो आपके जैसे पुलिस अधिकारी से किसी जटिल मामले की सच्चाई सुनना कितना मजेदार होगा! अगर आपको कोई आपत्ति न हो, तो मैं भी सच्चाई जानने के लिए बहुत उत्सुक हूं। रावराना ने चुपचाप अपनी पाइप से कुछ कश लिए और सोचने लगा। वह इस नाव का कप्तान है। अगर मैं उससे इस मामले पर बात करूँ तो कोई समस्या नहीं है।
रावण ने कप्तान श्रीनिवास अय्यर को सीतु की कहानी शुरू से सुनाना शुरू किया। कप्तान बड़ी दिलचस्पी से उसकी कहानी सुन रहे थे। तभी अचानक उन्हें कुछ याद आया और उन्होंने कहा, "माफ़ कीजिए। मैं केबिन में जाकर अपने सहायक को कुछ निर्देश देता हूँ।"
"आओ। लेकिन ध्यान रखना कि मैं तुम्हारे काम में दखल न दूं।" ‘‘ओह नो, नो! सर्टनली नॉट!’’

वह उसी सीढ़ी से अपने केबिन में गया जिससे कप्तान नीचे उतरा था। उसने स्टीयरिंग व्हील पर बैठे अपने साथी को कुछ निर्देश दिए।
उसने स्टीम प्रेशर की जाँच की, कंपास डायल देखकर यह सुनिश्चित किया कि उसकी नाव इच्छित दिशा में जा रही है, और बगल वाले वायरलेस रूम में चला गया। वहाँ से उसने कुछ संदेश दिया और वापस द्वितीय श्रेणी के केबिन के सामने अपनी सीट पर आ गया।
"क्षमा कीजिए महोदय। आपने जो सच बताया है वह वाकई बहुत रोचक है। मुझे समझ नहीं आ रहा कि अब आप इस मामले पर नई रोशनी डालने के लिए क्या करने वाले हैं," कैप्टन श्रीनिवास ने अपनी कुर्सी पर आराम से बैठते हुए कहा।
"इस फाइल में इस तस्वीर को देखिए। यह मैनेजर नारायणन के शव की तस्वीर है। यह शव थोड़ा 'सड़ गया' था। थोड़ा गल गया था। लेकिन फिर भी, यह शव मैनेजर नारायणन का ही लग रहा है। अब नारायणन की जीवित अवस्था की इस तस्वीर को देखिए।" रावरन्या ने कैप्टन श्रीनिवास को नारायणन की दो पुरानी तस्वीरें दिखाईं। दोनों तस्वीरों को पास से देखते हुए और बारीकी से जांच करते हुए कैप्टन श्रीनिवास ने कहा, "मुझे लगता है मैंने इस सज्जन को देखा है।"
"कहाँ? और कब?" रावरना ने जल्दी से पूछा।
"तीन सप्ताह पहले - दमनला।"
‘‘नक्कीऽऽ?’’
"बिल्कुल! और मुझे पूरा यकीन है कि यही वह आदमी है! बिलकुल वैसे ही घुंघराले बाल, हल्का भूरा रंग, चपटी नाक। लेकिन उसने चश्मा पहना हुआ था। मुझे याद है। जब मिस मार्कोनी और मैं कारखाने गए थे, तब भी उसने अपना चश्मा नहीं उतारा था। यहाँ तक कि जब इसकी ज़रूरत नहीं थी, तब भी उसने चश्मा पहने रखा और हमें जानकारी दी।"

"कैसे?" रावराना ने अधीरता से पूछा।
"शीतगृह"
रावराने ने अपनी कुर्सी आगे खींची और कहा,
"कैप्टन, आपकी बात सच है, है ना? क्या यह सिर्फ आपको ऐसा ही लग रहा है?"
"अरे! नहीं, नहीं! महोदय, मैं बिल्कुल होश में हूँ। मिस मार्कोनी मेरी दोस्त हैं और वह पिछले महीने मेरे साथ कच्छ के कांडला बंदरगाह आई थीं। रास्ते में हम दमन में थोड़ी देर रुके थे। हम वहाँ कोल्ड स्टोरेज से लॉबस्टर लेने गए थे। मुझे याद है कि मैंने उस समय तस्वीर में दिख रहे आदमी को देखा था।"
"कैप्टन, कभी-कभी दो लोगों में अजीब सी समानता होती है।"
"मैं सहमत हूँ; लेकिन उनमें बहुत अधिक समानता नहीं होगी।" मैनेजर नारायणन की तस्वीर को दोबारा देखते हुए कप्तान श्रीनिवास ने कहा, "उस मैनेजर का सौतेला भाई भी बिल्कुल उसी की तरह दिखता था। संभव है कि वह भी दमन से ही रहा हो।"
"मुझे नहीं पता। लेकिन महोदय, मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि इस तस्वीर में दिख रहे व्यक्ति की शक्ल उस व्यक्ति से बिल्कुल मिलती-जुलती है। आप दमन जाकर इसकी पुष्टि क्यों नहीं कर लेते?"
"मैं दमिश्क ही नहीं, दमन भी जाऊंगा। लेकिन उससे पहले, मैं यह सुनिश्चित करना चाहता हूं।"
"कौन सा?"
"मैनेजर नारायणन का भाई कृष्णन इस समय कहां है?"
"अच्छा! तो आप एर्नाकुलम जा रहे हैं?"
"बस! कृष्णन के मुझसे मिलने के बाद मेरी जांच अधिक सुसंगत होगी। इसके अलावा, एक बात है जो मुझे परेशान कर रही है।"

"कौन सा?"
"यह कृष्णन हर चार-दो महीने में नारायणन के पास आता था और उससे पैसों के लिए परेशान करता था। पिछले छह महीनों में वह अपने भाई से पूछताछ करने निंबरदी क्यों नहीं आया? या क्या कृष्णन ने खुद नारायणन की हत्या कर दी, इसलिए वह वहाँ नहीं गया? कृष्णन से मिलने तक मैं ऐसे कई संदेहों को दूर नहीं कर पाऊँगा। इसके अलावा, आपने मुझे यह बताकर मेरी कल्पना को एक नई दिशा दे दी है कि आपने दमन में मैनेजर नारायणन जैसा एक आदमी देखा था।"
"लेकिन आपको यह सुनिश्चित करना होगा कि मैं जो कह रहा हूं वह सच है।"
"ले लो? लेना ही पड़ेगा! अरे, मैं पिछले दो महीनों से ये सारी जानकारी इकट्ठा कर रहा हूँ, तो इसका मकसद क्या है? मेरा मकसद मैनेजर की मौत का रहस्य सुलझाना है। अब पहले मैं एर्नाकुलम जा रहा हूँ। वहाँ मैं उस कृष्णन का घर ढूँढूँगा, उस परिवार के बारे में पता लगाऊँगा और फिर दमन जाऊँगा यह देखने के लिए कि वह मैनेजर जैसा दिखने वाला आदमी कौन है जिसे तुमने देखा था। लेकिन बताओ - ये मिस मार्कोनी कौन हैं?"
"यह भी उन्हीं में से एक बच्चा है। नाविक अपना घर छोड़कर चार-छह महीने तक बाहर रहते हैं। तब हमें ऐसे दोस्त मिलते हैं!"
कप्तान श्रीनिवास ने शरारती मुस्कान के साथ कहा, रावण को उनकी यह स्पष्टवादिता बहुत पसंद आई। उसने कहा,
"यदि आवश्यक हो, तो क्या मिस मार्कोनी मेरी थोड़ी मदद कर सकती हैं?"
"सच में! वो बहुत खुशमिजाज है। तुम उसे मेरा नाम बता देना।" "लेकिन मैं उसका पता बताए बिना उससे कैसे मिल सकता हूँ?"

‘‘खरंच की! घ्या-मिस मार्कोनी, कोलाबा रोमन कॅथॉलिक चर्चमागे. मुुबई.’’
"अच्छा! मेरा कहना है कि अगर यह मार्कोनीबाई मेरे साथ दमन चलें और मुझे वह आदमी दिखा दें जो नारायणन जैसा दिखता है, तो बहुत अच्छा होगा। मुझे और कहीं खोजने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।" "बिल्कुल, आप यह तस्वीर मिस मार्कोनी को क्यों नहीं दिखाते? देखिए, क्या वह भी वही कहती हैं जो मैं कह रहा हूँ?"
"लेकिन क्या वह इसे गुप्त रख पाएगी?"
"आप भी उसके जैसा राज़ नहीं रख सकते, महोदय! वह तो अपने घर आने वाले किसी को भी यह नहीं बताती कि कल कौन आया था। हमें तभी पता चलेगा जब आने वाला व्यक्ति हमें बताएगा। वह बहुत भरोसेमंद है।" "हाँ! नहीं तो क्या होगा - मैंने इस जानकारी को प्राप्त करने के लिए इतनी मेहनत की है। अगर यह बात बाहर फैल गई, तो मेरी सारी मेहनत बेकार हो जाएगी।"
"मुझ पर भरोसा कीजिए। मिस मार्कोनी यह कारोबार बखूबी संभालती हैं। लेकिन बहुत कम लोग यह जानते हैं। मुझे उन पर पूरा भरोसा है।"
"यह ठीक है, लेकिन किसी ने भी उससे मेरे काम जैसी किसी चीज़ में मदद नहीं मांगी है।"
"लेकिन सच कहूं तो - सिटु मामले के बारे में आपने जो कुछ भी कहा है, उसे सुनने के बाद मुझे लगा कि मुझे हर संभव तरीके से आपकी मदद करनी चाहिए, और मिस मार्कोनी भी ऐसा ही महसूस करेंगी।" "धन्यवाद। आपका उपहार मेरे लिए बहुत मूल्यवान होगा।" दस्तावेजों की फाइल बंद करते हुए और उन्हें अटैची में रखते हुए, रावराने ने कहा, "ग्यारह बज गए हैं।"

"जी हां, बिल्कुल। मुझे तो पता ही नहीं चला कि दो घंटे कैसे बीत गए।" कैप्टन श्रीनिवास ने अपनी सफेद-नीली पुलिस टोपी को करीने से सिर पर रखते हुए कहा, "अब चलिए साथ में दोपहर का भोजन करते हैं।"
"ठीक है!" उनके पीछे-पीछे रावरेन भी उठ खड़ा हुआ।
०००

बाईस
अगले दिन, नाव उम्मीद से थोड़ा पहले एर्नाकुलम पहुँच गई। नाव किनारे पर आकर रुकी। जब कप्तान श्रीनिवास रावण के साथ बंदरगाह पर उतरे, तो नीले सूट पहने एक युवक मुस्कुराते हुए आगे आया। उसने कप्तान श्रीनिवास से हाथ मिलाया और पूछा, "आप किन मेहमानों को लाए हैं?"
"ये क्या है - श्री रावराने, सेवानिवृत्त डी.आई.जी., सी.आई.डी.! महोदय, हमारे एडमिरल को देखिए - 'साउथ स्टार' होटल के मालिक!" "ओह हाँ! लेकिन यह यहाँ आया कैसे?" रावरना ने पूछा।
"कल मैंने नाव से यहाँ बंदरगाह पर एक वायरलेस संदेश भेजा था।" "आपने बहुत अच्छा काम किया, कप्तान!" रावरेन ने आश्चर्य से कहा। "जी हां, महोदय, एक पुलिस अधिकारी का साथ मिलने के बाद, क्या किसी को थोड़ा आश्चर्यचकित करने की इच्छा होना स्वाभाविक है? इसके अलावा, मैंने सोचा कि आप यहां पहली बार आए हैं: और यदि आप अपने रहने की व्यवस्था जल्दी कर लें, तो आप उस महत्वपूर्ण काम के लिए भी स्वस्थ रहेंगे जिसके लिए आप यहां आए हैं।"
"मैं आपके प्रति अपनी कृतज्ञता कैसे व्यक्त करूं, यह मुझे नहीं पता," रावराने ने अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा।
"महोदय, जीवन में ऐसे संयोग बहुत कम होते हैं। मुझे आश्चर्य है कि क्या हम इस जीवन में फिर मिलेंगे! कौन गारंटी दे सकता है कि आप फिर से 'केप केमोरिन' नाव पर यात्रा करेंगे?"

"यह सच है। लेकिन हमारी डेढ़ दिन की मुलाकात के दौरान आपने मेरे साथ ऐसा व्यवहार किया जैसे हम सिर्फ डेढ़ दिन के दोस्त हों।" "तारीफ़ों के लिए धन्यवाद। तो एडमिरल जी, आप ये सब करेंगे, सज्जन!"
"बिल्कुल!" एडमिरल ने कहा।
आधे घंटे बाद, ईंधन भरने के बाद नाव 'केप केमोरिन' रवाना हुई। इसे कन्याकुमारी से सीधे कोलंबो जाना था। कप्तान श्रीनिवास, जो लौट चुके थे, ने नाव के ऊपरी डेक से रावराने और 'एडमिरल' को विदाई दी। प्रस्थान के समय, नाव का विशाल हॉर्न बजा और उस ध्वनि से बंदरगाह का वातावरण कंपकंपा उठा।
एडमिरल अपनी कार से बंदरगाह पर आए थे। वे खुद गाड़ी चलाने के लिए बैठ गए। राओरेन उनके बगल में आगे की सीट पर बैठ गए। कार समुद्र तट के समानांतर बनी डामर की सड़क पर चल पड़ी।
रावराना को अब यह एहसास होने लगा था कि केरल को दक्षिण का कश्मीर क्यों कहा जाता है। चारों ओर पानी ही पानी था। चारों ओर नारियल के पेड़ कतारों में खड़े थे। उन पेड़ों के बीच से, पीले पत्तों वाले और लकड़ी के तनों पर बने किनारे पर बसे लोगों के घर दिखाई दे रहे थे। बीचोंबीच एक नाव इधर-उधर चल रही थी, जिससे शांत पानी पर लहरें उठ रही थीं। महाराष्ट्र में भी ऐसा ही एक समुद्र तट था, लेकिन रावराना को केरल के समुद्र तट में एक नई सुंदरता दिखाई देने लगी थी।
गाड़ी जंगल पार करके धान के खेतों से गुज़रने लगी। अचानक, हमारी आँखों के सामने नीली झीलें दिखाई देने लगीं। अब मीलों तक फैले ये हरे-भरे धान के खेत भी हरी झीलों जैसे लग रहे थे। बीचोंबीच तटबंध पर एक ताड़ का पेड़ लहराता हुआ नज़र आया।
हमें अभी कितनी दूर जाना है?

"देखो, तुम्हारे सामने 'साउथ स्टार' की इमारत है।"
अरे बाप रे! यह तो बहुत लंबा है!
"यह सात मंजिला इमारत है। इस इलाके में इस तरह के कई बड़े होटल हैं।"
लेकिन क्या यात्री यहां बड़ी संख्या में आते हैं?
जी हां। ज्यादातर विदेशी पर्यटक आते हैं। होटल में जाकर देखिए, आपको नीदरलैंड, बेल्जियम, नॉर्वे, स्वीडन और यहां तक कि अमेरिका से भी पर्यटक दिखेंगे। केरल के नज़ारे देखकर ये लोग बहुत खुश होते हैं। साफ आसमान, चारों ओर सदाबहार हरियाली और मीलों तक फैला यह समुद्र तट। ये लोग समुद्र तट पर आराम करना पसंद करते हैं! समुद्र तट हमारे 'साउथ स्टार' होटल के ठीक पीछे है। वे समुद्र तट पर आराम से बैठकर बीयर का आनंद लेते हैं।
‘‘क्या ये लोग यहाँ आकर खाना खाते हैं?’’
"वे जो चाहें खाते हैं। उन्हें पश्चिमी खाना पसंद नहीं है। हमारी सास को भी अन्नम या मछली करी और चावल खाना पसंद है।"
"वे लोग कमाल के हैं!"
लेकिन उन लोगों में एक ऐसी खूबी है जो वाकई तारीफ के काबिल है। वे खूब पैसा कमाते हैं और उस पैसे का भरपूर आनंद लेते हैं। वरना हम भारतीय! बस कमाते रहते हैं, कमाते रहते हैं, कमाते रहते हैं, और एक दिन बिना उस पैसे का आनंद लिए मर जाते हैं! बिलकुल बेकार! "इसमें क्या गलत है, एडमिरल..."
"अरे, ये क्या? तुमने मुझे भी एडमिरल कहना शुरू कर दिया? अरे, मेरा नाम सी. चंद्रशेखर है।"
"लेकिन एडमिरल कहलाना अच्छा लगता है!" रावरेन ने मुस्कुराते हुए कहा।

"तो फिर बेशक आप ऐसा कह रहे हैं। आपकी और हमारे श्रीनिवास की टीम काफी करीबी लगती है।"
"क्या बात है? मैं उनसे कल ही यहाँ आकर मिला था। लेकिन उस सज्जन ने मेरे लिए बहुत कुछ किया। उन्होंने कल मुझे दोनों खाने का बिल नहीं चुकाने दिया। उन्होंने आपको वायरलेस संदेश भेजा और बंदरगाह पर बुलाया। आज के ज़माने में कौन किसके लिए ऐसा करता है?"
"यही तो उनका स्वभाव था, महोदय। हम पहले नौसेना में साथ थे। उनका दयालु स्वभाव अटूट था। लेकिन बेचारे की उम्र लंबी नहीं रही! उनकी पत्नी का पहले बच्चे के जन्म के दौरान निधन हो गया।" "आपने दोबारा शादी नहीं की?"
नहीं, उसने ऐसा नहीं किया। उसका कहना है कि मरने के बाद वह नहीं चाहता कि कोई उसका अनुसरण करे। तब से वह एक 'खुशमिजाज' इंसान की तरह व्यवहार कर रहा है। लेकिन इतना तो तय है कि वह एक बेहद प्यारा इंसान है।
"इस बात में कोई विवाद नहीं है। लेकिन उनके चेहरों पर जरा भी इस बात का संकेत नहीं था कि उनका सांसारिक जीवन बर्बाद हो गया है।" "वह आता नहीं है। वह मुस्कुराता है और नाव से यात्रा कर रहे लोगों से अपना परिचय देता है। वह उनके लिए हर संभव प्रयास करता है। छोटे बच्चों को देखकर वह बहुत खुश हो जाता है। वह उन्हें नाव पर बने स्टॉल पर ले जाता है और उन्हें चॉकलेट, फलों का रस देता है - वे जो चाहें, वह उनके लिए करता है।"
"अरे बाप रे!" राओरेन ने थोड़ा भावुक होते हुए कहा। "ऐसे व्यक्ति का निजी जीवन तो सुखमय होना चाहिए था।"
तभी, साउथ स्टार होटल के सामने फिएट कार रुक गई। बरामदे में खड़ा नौकर आगे आया और विनम्रता से कार का दरवाजा खोला।

एडमिरल स्वयं महारानी को उनके कमरे तक ले गए। उन्होंने महारानी के लिए छठी मंजिल पर एक कमरा आरक्षित किया था। यहाँ से एर्नाकुलम शहर का पूरा दृश्य दिखाई देता था। खिड़की से पश्चिम की ओर कई मील तक फैला समुद्र तट भी देखा जा सकता था। कमरे की सजावट भी बहुत सुंदर थी।
आपको वह जगह कैसी लगी?
"बहुत अच्छा!"
"अब आप आराम कर सकते हैं। मैं नीचे के काम पर एक नज़र डाल लेता हूँ।"
"देखिए। लेकिन मैं यहां मौजूद दोनों भाइयों, कृष्णन और नारायणन के बारे में थोड़ा जानना चाहता था।"
लेकिन इन नामों से क्या जानकारी प्राप्त की जा सकती है?
"ये दोनों सौतेले भाई थे। इनका इस मामले में कुछ हाथ था। ये दोनों यहीं मट्टमचेरी इलाके में रहते थे। क्या हम इस जानकारी से उनका घर ढूंढ सकते हैं?"
"ज़रूर। आपको कल सुबह तक उस घर तक पहुँचाने का इंतज़ाम कर दिया जाएगा। मुझे यहाँ कुछ लोगों को फ़ोन करना पड़ेगा।"
"आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।"
उस रात रावण ने फिर से फाइल खोली। उसने नारायणन की तस्वीर निकाली और उसे पलंग पर रख दिया, और उसी क्षण वह सोचने लगा। दमन के कोल्ड स्टोरेज में कैप्टन श्रीनिवास ने किसे देखा था? नारायणन को या कृष्णन को? या किसी और को जो उसके जैसा दिखता था? दुनिया में बहुत से लोग एक जैसे दिखते हैं। लेकिन वह व्यक्ति वहाँ कोल्ड स्टोरेज में कैसे हो सकता है? समानता महज़ एक संयोग ही हो सकती है - लेकिन कोल्ड स्टोरेज का संयोग कैसे हो सकता है?

रावरेन काफी देर से सोच ही रहा था कि तभी उसके कमरे में फोन की घंटी बजी।
"सर, मैं एडमिरल बोल रहा हूँ।"
‘‘बोला.’’
"आपका काम हो गया। आपको मनचाहा घर मिल गया। लेकिन-"
"क्या पर?"
"लेकिन यहां उस घर के बारे में ज्यादा अच्छी बातें नहीं कही जातीं।"
"आपका क्या मतलब है?"
"उस परिवार की दो लड़कियां काम करने के लिए दुबई गईं। बाकी दो भी उसी राह पर हैं।"
"उन लड़कियों के प्रति मेरा कोई कर्तव्य नहीं है। मैं उन लड़कियों के पिता कृष्णन से मिलना चाहता हूं।"
"उसका पता नहीं चल पाया है। लेकिन अगर आप उसके घर जाकर पूछताछ करना चाहते हैं, तो मेरा ड्राइवर आपको कल वहां ले जाएगा।"
ठीक है! बहुत-बहुत धन्यवाद!
आप रात के खाने के लिए किस समय आएंगे?
"आधे घंटे में।"
"नीचे एक बार है। सभी विदेशी मेहमान वहीं इकट्ठा होते हैं। अगर आप कुछ समय के लिए मौज-मस्ती करने आ रहे हैं, तो यहां आइए।"
"वह आ रहा है, वह आ रहा है।"
भूतल से सीढ़ियाँ उतरते ही 'साउथ स्टार' का आलीशान बार सामने था। एडमिरल बार के दरवाज़े पर मेहमानों का इंतज़ार कर रहे थे। नीले रंग की वर्दी पहने एक वेटर बंद कांच के दरवाज़े के पास खड़ा था। उसने झुककर मेहमानों का अभिवादन किया और बार का कांच का दरवाज़ा खोल दिया। एडमिरल के साथ आने से बार काउंटर पर बैठे

लोग उन्हें शाही मेहमान की तरह देखने लगे। दोनों लाल कालीन पर बिछी एक खाली मेज़ पर आकर बैठ गए। बार का माहौल बिना पिए ही गरमा रहा था। रिकॉर्ड प्लेयर पर पश्चिमी संगीत की धुनें बज रही थीं। इधर-उधर बैठे विदेशी पर्यटक अपनी प्रेमिकाओं के साथ मजे से मजे ले रहे थे। उनकी बातचीत धीमी थी ताकि दूसरों को परेशानी न हो। इसके अलावा, बार की बिजली की बत्तियाँ झूमर की तरह मंद कर दी गई थीं ताकि कोई यह न देख ले कि कोई शराब पीते हुए अपनी प्रेमिका के साथ शारीरिक संबंध बना रहा है। बार की दीवार पर नग्न युवतियों के यौन संबंध बनाते हुए चित्र लगे थे।
रावराना के लिए यह कोई नई बात नहीं थी। ड्यूटी पर रहते हुए उन्होंने पुणे और मुंबई में ऐसे तस्करों पर छापा मारा था। एडमिरल ने रावराना से पूछा, "तुम क्या लोगे?"
रावरेन हँसे और बोले, "अगर आप इस तरह से कहें तो मैं शराब पीने वाला नहीं हूँ; लेकिन साथ में एक-दो पाइंट व्हिस्की पी लूँगा।" ‘‘ओकेऽऽऽ!’’
एडमिरल ने बगल में खड़े वेटर को दो 'सफेद घोड़े' लाने का आदेश दिया। रावराना ने अपनी पाइप भरते हुए पूछा।
"ये लोग लंबे बालों वाले हिप्पी यात्रियों जैसे दिखते हैं। इन्हें पैसा कहाँ से मिलता है?"
वे इसे वैसे ही लाते हैं जैसे वे आते हैं।
"लेकिन ये इतने गरीब क्यों दिख रहे हैं? देखो, कम से कम इनमें से किसी एक ने तो ठीक से कपड़े पहने हैं।"
"क्या बात है, महोदय? यह युवा पीढ़ी अपने बड़ों के व्यवहार से तंग आ चुकी है। वे इस पीढ़ी के पाखंड पर प्रहार करना चाहते हैं।"

"यह सच है; लेकिन इस तरह बदमाश जैसा व्यवहार करके वे तुम पर हमला कैसे कर सकते हैं? अगर बदमाश पास आ गए, तो उन्हें कीचड़ में लोटने वाले सूअर जैसा महसूस होगा!"
एडमिरल ने मुस्कुराते हुए कहा, "ये लोग कहते हैं कि नहाना अप्राकृतिक है! क्या जंगल के जानवर हर दिन नहाते हैं? वे पूछते हैं!"
"वे जंगल के जानवर हैं; तुम तो सिर्फ इंसान हो!"
लेकिन उनका मानना है कि मनुष्यों द्वारा बनाए गए रीति-रिवाज और परंपराएं अनावश्यक हैं। उनमें से कुछ का मानना है कि यौन जीवन स्वतंत्र होना चाहिए।
"स्वतंत्र यौन जीवन? क्या इसका मतलब यह है कि कोई भी महिला किसी भी पुरुष के साथ जा सकती है?"
"हाँ! वे कहते हैं कि नैतिकता और सदाचार सब बकवास हैं।"
एडमिरल इस पर हँस पड़े। इसी बीच, बेयर व्हिस्की और सोडा का एक गिलास ले आया। एडमिरल ने रावराना परिवार के सदस्यों के गिलासों में उनकी इच्छा अनुसार सोडा डाला। उन्होंने अपने गिलास में भी थोड़ा सोडा पी लिया। फिर उन्होंने एक-दूसरे को बधाई दी और अपने गिलास होठों से लगाए।
रावराना ने अपनी पाइप से एक कश लिया और पूछा,
"आपको कृष्णन के घर के बारे में इतनी जल्दी जानकारी कैसे मिली?" "क्या बात है साहब? यह होटल का धंधा हर वर्ग के लोगों को एक साथ लाता है। होटल में आने वाले कुछ लोग शराब पीकर शोर मचाने लगते हैं। फिर हमें कुछ बूढ़े लोगों की मदद लेनी पड़ती है, जो उन्हें बीच तक ले जाकर वापस छोड़ देते हैं। ये बूढ़े लोग गाँव के बारे में बहुत कुछ जानते हैं। उन्हें पता है कि गिरोह कहाँ हैं, चोरी का धंधा करने वाली औरतें और लड़कियाँ कहाँ हैं, जुआ कहाँ चल रहा

है - उन्हें सब कुछ पता है। आपके कृष्णन के दो बच्चे दुबई गए हैं। मुझे लगता है कि बाकी दो भी यही कर रहे हैं।"
"अगर बेटियों की वजह से पिता का पता मिल भी जाए तो क्या हुआ?" ‘‘हो.’’
"ठीक है। मैं कल ऑफिस जाऊँगा।"
"लेकिन वह किस तरह का काम है?"
इस पर रावराने ने कहा, "यह बहुत पेचीदा है। मैं आपको बाद में विस्तार से बताऊंगा। अगर मैंने आपको सारे तथ्य बता दिए, तो यह स्कॉच बेकार हो जाएगी!"
रावराना परिवार के इस कथन पर एडमिरल हँसे और बोले, "कोई बात नहीं। लेकिन चूंकि श्रीनिवासन ने मुझसे आपको आवश्यक सहायता प्रदान करने के लिए कहा है, इसलिए मैं ऐसा करने के लिए बाध्य हूँ।"
उसके बाद इधर-उधर बातचीत करते हुए दो पेग खत्म हो गए। रात करीब दस बजे खाना भी परोसा गया। एडमिरल ने रावराना के साथ बहुत ही विनम्रता से व्यवहार किया। रात को अपने कमरे में सोने जाते समय रावराना ने उन्हें 'शुभ रात्रि' कहा।
मैं सुबह नौ बजे तैयार रहूंगा। आप ड्राइवर को बता देना।
"चिंता मत करो। ड्राइवर सुबह ठीक नौ बजे आपके कमरे में आ जाएगा, बस इतना ही?"
"धन्यवाद!"
रावराना ने छठी मंजिल पर स्थित अपने कमरे की पश्चिमी खिड़की खोली। ठंडी हवा का एक सुहावना झोंका अंदर आया। ऊपर से किनारे पर टकराती लहरें अंधेरे में भी साफ दिखाई दे रही थीं। आकाश ग्रहों और तारों से भरा हुआ था। दूर तैरती नाव पर जलती लाल बत्ती किसी कृत्रिम उपग्रह की तरह चलती हुई प्रतीत हो रही थी। रावराना

काफी देर तक खिड़की के पास खड़े रहे। अगर मोहनराव दिवेकर ने उन्हें चित्रदुर्ग की जेल से वह पत्र न भेजा होता, तो वे इन विभिन्न व्यक्तित्वों से न मिल पाते। निंबरदी के मथुकाका, बशाममु, फातु भंडारी, कप्तान श्रीनिवासन और आज मिले ये ‘एडमिरल’! रावराना सोचने लगे। ये लोग न तो मेरी जाति के थे और न ही मेरे कबीले के; लेकिन उन कप्तानों और इन एडमिरलों ने मुझे कितना प्रिय बना दिया था! जब मैं सत्ता में था, मेरे आस-पास के लोग मुझसे इतना शिष्टाचार से पेश आते थे, लेकिन वह शिष्टाचार, वह सम्मान, सब झूठ था। आज, जब मैं सत्ता में नहीं हूँ, तो मैं उन लोगों के ऋण को कैसे भूल सकता हूँ जो मुझसे प्रेम से पेश आते हैं? ये कैप्टन श्रीनिवान! मैंने इन्हें अपनी पूरी जिंदगी में कभी नहीं देखा था। लेकिन इन्होंने मेरे लिए कितना त्याग किया! इनके चेहरे पर इनके वैवाहिक जीवन के टूटने का जरा सा भी आभास नहीं हुआ। इस देश में ऐसे कई लोग होंगे; लेकिन वे क्षेत्र, जाति और धर्म के आधार पर एक-दूसरे से अलग हैं। ये सारे भेदभाव कब दूर होंगे? इस देश में मथुकाका जैसे उपदेशक क्यों नहीं हैं जो सभी धर्मों से प्रेम करते हैं?
एक पल के लिए रावराना भूल गया कि वह एर्नाकुलम क्यों आया था। खिड़की से लगातार आती ठंडी हवा के कारण उसकी आँखें भारी हो गई थीं। वह बिस्तर पर गया और लेट गया।
०००

तेईस
केरल की प्राकृतिक सुंदरता रावणों को मोहित करती थी। लेकिन उन्हें यह देखकर दुख हुआ कि इतनी सुंदर भूमि के लोग खुश नहीं थे। उन्हें समझ नहीं आता था कि अधिकांश लोग कम्युनिस्ट और नक्सलवादी क्यों बन रहे हैं। उन्होंने गुजरते हुए कार चालक से पूछा, "यहां लोग हत्याएं क्यों करते हैं?"
ड्राइवर ने चेहरे पर मुस्कान लिए कहा,
एक व्यक्ति अपने सामने पाँच प्रकार के भोजन से भरी थाली लेकर बैठा है और दूसरा भूखा व्यक्ति आशा भरी निगाहों से उसे देख रहा है। यदि ऐसा नियमित रूप से होता रहे, तो वह भूखा व्यक्ति कब तक शांत बैठा रह पाएगा?
रावराने ने बिना एक पल भी हिचकिचाए कहा,
"वह भूखा आदमी चैन से नहीं बैठेगा। एक दिन न एक दिन वह पांच पैसे की रोटी खाने वाले पर टूट पड़ेगा।"
"तो यहाँ बिल्कुल यही हुआ! जब आप इन धान के खेतों, नारियल के बागानों, रबर के बागानों, नारियल कारखानों को देखते हैं, तो इनके मालिक पीढ़ियों तक मालिक ही बने रहे। उनकी दौलत बढ़ती रही और मजदूर गरीब होते गए। जब तक इन मजदूरों और काम करने वालों को दिन में दो वक्त का खाना मिलता रहा, वे जानवरों की तरह काम करते रहे। लेकिन जब उन्हें शिक्षा मिली और उन्हें एक वक्त का खाना भी नहीं मिल रहा था, तो उन्होंने हथियार उठा लिए! कुछ लोग उन्हें कम्युनिस्ट कहते हैं, कुछ नक्सलवादी। शिक्षा ने ही सारा कमाल

कर दिया। केरल में साक्षरता दर लगभग 100 प्रतिशत तक पहुँच गई है।"
"क्या अब इससे निकलने का कोई रास्ता है?" रावरना ने पूछा।
"कई तरीके हैं; लेकिन नेताओं में उन्हें आजमाने की इच्छा नहीं है। वे इस बारे में सोच रहे हैं कि नेता अपने स्वार्थी हितों को कैसे पूरा करेगा।"
"तो फिर लोग ऐसे स्वार्थी लोगों को नेता के रूप में क्यों पहचानें?"
"इसे मंजूरी कौन देता है? ये लोग खुद ही ढोल पीटते रहते हैं - मानो हम गरीबों के रखवाले हों, जनता के रक्षक हों! महोदय, जब से आप यहां आए हैं, आपने 'साउथ स्टार' का माहौल देख लिया है। अब अगर आप यहां गरीबी का तमाशा देखना चाहते हैं, तो मेरे साथ आइए।" "आपको इसे देखने की क्या ज़रूरत है? मैं आपकी बात पर विश्वास करता हूँ। एक पुलिस अधिकारी के रूप में, मैंने पुणे और मुंबई की झुग्गी-झोपड़ियों के वातावरण को बहुत करीब से देखा है। वहाँ और यहाँ के वातावरण में ज़्यादा अंतर नहीं होना चाहिए।"
"क्या मुंबई में फोरस रोड पर कभी छापा मारने की जरूरत पड़ी है?" "हां! वेश्यालय में कभी-कभार अपराध होते थे।"
"तो क्या आपने कभी यह जानने की कोशिश की है कि वहां की अधिकांश वेश्याएं किस प्रांत से आती हैं?"
मुझे पूरा यकीन है। केरल में और भी होंगे।
"तो मुझे बताइए - उस समाज की क्या स्थिति होगी जहां वेश्यावृत्ति लोगों के पेट भरने के लिए एक बड़ी समस्या है?" "बिल्कुल सही। कोई भी समझदार माता-पिता नहीं चाहेंगे कि उनके बच्चे वेश्यावृत्ति में शामिल हों, जब तक कि वे घोर गरीबी में न हों।"

"हां, यह अजीब बात है कि कुछ अज्ञानी पिता सिर्फ पैसे पाने के लिए अपनी बेटियों को दुबई जैसी जगहों पर ले जाने के लिए बेच देते हैं।"
"क्या? क्या आपको यहां इस तरह के कोई उदाहरण पता हैं?"
"जिस कृष्णन के साथ तुम यह करने जा रहे हो, उसने क्या किया? उसने अपनी दो बड़ी बेटियों को अरबों को दस हजार रुपये में बेच दिया। वह अपनी छोटी दो बेटियों को भी उसी रास्ते पर ले जाने की तैयारी कर रहा था।"
"क्या अब उसने अपना मन बदल लिया है?"
मुझे नहीं पता। वह पिछले चार-छह महीनों से होटल नहीं आया है। "होटल? क्यों आ रहे हो?"
"महोदय, अगर मैं आपको सच बताऊं तो शायद आपको अच्छा न लगे।"
"यह सवाल ही नहीं है कि मुझे यह पसंद है या नहीं। मैं तुम्हारे कहे हुए का एक शब्द भी नहीं बोलूंगा।"
"हमारे होटल में आने वाले अधिकांश ग्राहक पार्टी करने आते हैं। कई यूरोपीय और अमेरिकी नाविक 'काली सुंदरियों' के दीवाने हैं! आपको जानकर आश्चर्य होगा, वे महिलाओं पर सैकड़ों रुपये खर्च करते हैं।"
"क्या एडमिरल यहां यह सब होने की अनुमति देते हैं?"
"वे क्या करेंगे? अगर कोई ग्राहक किसी लड़की को लाता है, तो मालिक यह नहीं पूछ सकता कि 'क्यों'। अगर कोई कहता है कि आजकल होटल में बहुत भीड़ है, तो ज़ाहिर है उन्हें पता होना चाहिए कि वहाँ बहुत वेश्यावृत्ति चल रही है!"
"बिल्कुल सही। लेकिन आप और कृष्णन की मुलाकात किस वजह से हुई?" "वह निकम्मा आदमी है! उसने अपनी पुश्तैनी संपत्ति लुटा दी। अंत में, उसका बेटा गुड़िया बेचने लगा! उसने इस होटल में कुछ वेटर

रखे थे। वह ग्राहकों को गुड़िया परोसने में माहिर था। हम उसे 'चित्रीय दलाल' कहते थे। लेकिन हमने उसके घर में क्या काम किया है?"
रावराने ने कहा, "क्या आप उनके भाई नारायणन को जानते थे?" "नहीं। मैंने उसे देखा तक नहीं है। वह शायद महाराष्ट्र में कहीं किसी सिंधी सेठ के लिए काम कर रहा होगा।"
"'ऐसा नहीं है, मान लो कि ऐसा था। वह मर चुका है! उसकी हत्या की गई है!'"
"क्या ऐसा है? वह यहाँ ज़्यादा नहीं आता था। हमें पता ही नहीं कि वह कभी 'चित्रिया पिंप' में आता भी है या नहीं।"
वेलिंगटन द्वीप को पार करने के बाद, कार एक घनी आबादी वाले इलाके में रुक गई। ड्राइवर कार से बाहर निकला और यात्रियों को एक पुराना, दो मंजिला घर दिखाया।
"यह वही मंजिल है। बाईं ओर एक सीढ़ी है। मैं यहीं गाड़ी रोक दूंगा।"
"ठीक है। मुझे भी ज्यादा समय नहीं लगेगा। मैं आधे घंटे में वापस आ जाऊंगी।"
तो, रावराने ने दस्तावेजों की फाइल हाथ में ली और उस घर की ओर चल पड़ा। जब रावराने सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर पहुँचा, तो उसने देखा कि चश्मा पहने एक अधेड़ उम्र की महिला दरवाजे पर फटी हुई ब्लाउज सिल रही थी। अपने घर में किसी नए व्यक्ति को आते देख, महिला ने सिलाई रोक दी और उत्सुकता भरे चेहरे से पूछा,
आप किसे चाहते हैं?
"यह कृष्णन का घर है, है ना?"
"हाँ। आपको क्या चाहिए?"
मैं कृष्णन से मिलना चाहता था।

लेकिन वे ग्रामीण इलाकों में चले गए हैं। आप किस शहर में गए थे?
"मुझें नहीं पता।"
वे कब आएंगे?
"कुछ भी कहा नहीं जा सकता।"
"उनके जाने के बाद से कितना समय बीत चुका है?"
"छह या सात महीने हो गए हैं।"
“महोदया, मैं निंबरदी से आई हूँ। मैनेजर नारायणन मेरे चचेरे भाई थे, उनके गाँव से।” नारायणन का नाम लेते ही महिला की आँखों में आँसू भर आए। उन्होंने नारायणन की हत्या की खबर ज़रूर सुनी होगी। महिला ने अपनी साड़ी के किनारे से अपनी आँखें ढक लीं और रावराना से, जो काफी देर से वहाँ खड़े बातें कर रहे थे, अंदर आने का अनुरोध किया। रावराना अंदर आए और एक पुरानी बेंत की कुर्सी पर बैठ गए। उन्होंने अपने हाथ में पकड़ी हुई अटैची साइड टेबल पर रख दी।
"महोदया, आपको कब पता चला कि नारायणन की हत्या हुई थी?"
"मुझे सही तारीख याद नहीं है। लेकिन छह महीने से ज़्यादा का समय रहा होगा। अपनी मृत्यु से महज़ चार दिन पहले उन्होंने अपने बच्चों की शादी के लिए दस हज़ार रुपये भेजे थे।"
महिला को फिर से चक्कर आने लगे।
"तो? दस हजार? किससे?"
मैंने अपनी दोनों बेटियों के नाम पर पांच-पांच हजार रुपये के ड्राफ्ट भेजे थे।
"क्या आपको याद है कि यह ड्राफ्ट किस बैंक से था?"
"मुझे उस बैंक का नाम याद नहीं है। लेकिन मेरी बेटियों को शायद पता हो। रुको," वह पूछती है।

‘‘सीताऽऽ, ओ सीताऽऽ!’’
सांवली त्वचा और बेहद खूबसूरत नाक और आंखों वाली तेईस या चौबीस साल की एक लड़की आगे आई।
"आपके चाचा ने वह ड्राफ्ट भेजा था, वह किस बैंक के नाम पर जारी किया गया था?"
"क्यों?" लड़की ने राओरानी को संदेह भरी नजरों से देखते हुए पूछा।
"थोड़ा काम है।"
"स्टेट बैंक ऑफ इंडिया।" सीता ने रावरानी की ओर देखते हुए जल्दी से कहा।
"खैर, उस मसौदे के साथ एक पत्र जरूर रहा होगा।"
"पत्र मसौदे के साथ नहीं आया था। पत्र हमारे पिता की ओर से आया था। लेकिन यह मसौदा आने के पंद्रह दिन बाद आया।"
"तो वह पत्र नारायणन की हत्या के बाद आया था?"
"हां। हमारे चाचा की हत्या की खबर सुनने के आठ दिन बाद हमारे पिता का पत्र पहुंचा।"
"क्या यही है?"
"हां यह है।"
"क्या आप मुझे वह पत्र दिखा सकते हैं?"
"जी हाँ! लेकिन आपने यह सारी जांच क्यों की?"
रावराने ने सीता के प्रश्न पर एक क्षण सोचा और कहा,
"नारायणन की हत्या कर दी गई थी। जिस युवा मछुआरे के बेटे को उसने निशाना बनाया था, उसे उम्रकैद की सजा सुनाई गई है। दरअसल, मामला अब बंद हो चुका है। लेकिन मैंने इस मामले की दोबारा जांच शुरू कर दी है और इस जांच में एक चौंकाने वाला सच सामने आने की प्रबल संभावना है। उस मामले में यह साबित हो चुका है कि नारायणन की

हत्या की गई थी; लेकिन मेरी जांच से पता चलेगा कि सच्चाई कुछ और है। इसीलिए मैं इतनी दूर आपके पास आया हूँ। मैं आपसे इस काम में मेरी मदद करने का अनुरोध करता हूँ।"
"लेकिन मान लीजिए कि इस मामले की सच्चाई सामने आ जाती है, तो इससे हमें क्या फायदा होगा?" सीता ने पूछा।
रावराने हँसते हुए बोले, "फायदा? ऐसा फायदा जो पैसों के हिसाब से मापा जा सके, निश्चित रूप से होगा। इसके अलावा, आप लोगों की जो उलझन है, वह भी दूर हो जाएगी।"
सीता ने कहा, "अगर आप अस्पष्ट भाषा का प्रयोग करने के बजाय स्पष्ट रूप से बोलें तो बेहतर होगा।"
"देखिए, मैंने आपको आर्थिक लाभ होने की बात इसलिए कही क्योंकि नारायणन अविवाहित थे। उन्हें भारत में मत्स्य पालन का विशेषज्ञ माना जाता था। सेठ मनमोहन उन्हें 2,500-3,000 रुपये प्रति माह वेतन देते थे। इस बात की प्रबल संभावना है कि उनकी मृत्यु के समय उनके पास कम से कम 3,000-5,000 रुपये नकद थे। अगर हम यह मान लें कि उनकी हत्या हुई थी, तो उनकी संपत्ति का उत्तराधिकार सीधे आपको मिलना चाहिए था; ऐसा क्यों नहीं हुआ?" वे दोनों एक-दूसरे को देखते रहे। 'तीन से पाँच लाख' शब्द सुनकर उनके मुँह में पानी आ गया। इसके अलावा, रावराने की बात बिल्कुल सही लग रही थी।
"यदि नारायणन की हत्या हुई थी, तो उनकी सारी संपत्ति उनके भाई कृष्णन और उनकी बेटियों को मिल जानी चाहिए थी।"
"आप हमसे इस काम में किस तरह की मदद की उम्मीद करते हैं?" राधा ने पूछा।
मैं जानना चाहता हूं कि नारायणन की हत्या के समय कृष्णन कहां था।

"अरे, हमारे चाचा की हत्या से आठ दिन पहले हमारे पिता यहाँ से चले गए थे। वे अभी तक वापस नहीं लौटे हैं।"
"क्या आपको इस बात से कोई आपत्ति नहीं है कि वे अभी तक वापस नहीं आए हैं?"
"वे इस तरह महीनों तक भटकते रहते हैं!" सीता ने अपनी तुच्छता और कमजोरी दर्शाते हुए कहा।
"क्या वह इतने लंबे समय से, लगभग सात या आठ महीनों से बाहर है?" "यह सच है कि वे इस बार अधिक समय तक रुके हैं; लेकिन अगर वे यहां नहीं भी आते हैं, तो भी हमें कोई बाधा नहीं होगी। इसके विपरीत, अगर वे यहां आए तो ही उनका पीछा किया जाएगा।"
"बिल्कुल सही! नारायणन हत्याकांड पर मैं जो प्रकाश डालने जा रहा हूं, वह आपके पिता के स्वभाव और कार्यों पर आधारित है।"
उन दोनों को उस कथन का अधिकांश भाग समझ में नहीं आया। लेकिन वे दोनों इस बात पर सहमत थे कि उन्हें नारायणन की संपत्ति विरासत में मिलनी चाहिए और इस सज्जन को यह संपत्ति दिलाने में कोई समस्या नहीं थी।
सीता अंदर से पत्र लेकर आई। यह पत्र कृष्णन ने अंग्रेजी में लिखा था। इसमें उसने उल्लेख किया था कि उसने नारायणन से दस हजार रुपये लिए हैं और सीता और कल्याणी की शादी के खर्चे के लिए भेज रहा है। पत्र पढ़ते ही रावराने ने शरारती मुस्कान के साथ कहा, "क्या तुम्हें विश्वास है कि यह तुम्हारे पिता का पत्र है?" "जी हां," सीता ने कहा, "यह हमारे पिता की लिखावट है। हस्ताक्षर भी उन्हीं के हैं।"
"अगर नारायणन तुम्हारी शादी के लिए पैसे भेजना चाहता था, तो क्या तुम्हें भरोसा था कि वह उसे तुम्हारे पिता को सौंप देगा?" "बैठ क्यों नहीं जाते? पत्र और पैसे तो साथ ही आए हैं।"

रावराना ने सिर हिलाकर मना किया और अपनी पाइप भरने लगा और बोला, "नारायणन अपने भाई के स्वभाव को भली-भांति जानता था। कृष्णन ने उसे कभी एक हजार या पांच सौ रुपये से अधिक नहीं दिए थे। उसे इतनी बड़ी रकम देना तो बिलकुल असंभव लगता है।"
"आप इसे असंभव कैसे कह सकते हैं? पैसा तो आ चुका है, है ना?"
"हो सकता है कि पैसा पहुँच गया हो; लेकिन असली सवाल यह है कि इसे किसने भेजा और क्यों। मुझे पूरा यकीन है कि यह पैसा आप लोगों को गुमराह करने के लिए भेजा गया था।"
फिर भी, वे दोनों ठीक से समझ नहीं पाए कि रावराना क्या कहना चाहता था। फिर भी, दोनों को लगा कि नारायणन की मृत्यु और कृष्णन द्वारा दस हजार रुपये भेजने के बीच कुछ रहस्यमय संबंध अवश्य है।
रावराने ने अपनी जेब से लेंस निकाला और पत्र को बहुत ध्यान से देखने लगे। इसी बीच, दूसरी बेटी कल्याणी वहाँ आ गई। अपने घर में एक अजनबी को देखकर और अपनी बहन और माँ का व्यवहार कुछ अजीब सा देखकर, उसने सीता से अपने दाहिने हाथ की हथेली पर एक निशान बनाकर पूछा, "यह गृहस्थ कौन है?"
तभी रावणों की नजर कल्याणी पर पड़ी। सीता ने उसका रावणों से परिचय कराया और कहा,
"यह कल्याणी है - मेरी छोटी बहन। हम यहां यह पता लगाने आए हैं कि क्या इस सज्जन के चाचा की हत्या के मामले में कुछ रहस्यमय बात है।"
रावराना ने पत्र को बार-बार पढ़ा और कहा, "अगर आपको इस पत्र की ज्यादा जरूरत नहीं है, तो मैं इसे चाहता हूँ।"
"इसे ले लो। अब हमें इसकी कोई जरूरत नहीं है।"

"धन्यवाद। यदि आवश्यक हुआ तो मैं आपसे पत्र द्वारा पुनः संपर्क करने का प्रयास करूंगा। लेकिन एक काम ऐसा है जो हमें हर हाल में करना ही होगा।"
"कौन सा?" सीता ने पूछा।
“अगर मेरा कोई कदम चूक जाए और कृष्ण यहाँ लौट आए, तो कृपया मुझे इस पते पर एक टेलीग्राम भेज देना। यह खर्चों के लिए है,” रावण ने सीता को बीस रुपये देने की कोशिश करते हुए कहा, लेकिन सीता ने कहा,
आप किस चीज के लिए भुगतान कर रहे हैं? इसकी कीमत कितनी होगी? "रहने दो। ये पैसा अपने पास रखो।"
अंततः रावरानी के आग्रह पर सीता को धन स्वीकार करना पड़ा। कल्याणी ने रावरानी के लिए चाय बनाई। जाते समय सीता ने उनसे कहा।
"अगर आपको और किसी मदद की जरूरत हो तो हमें बताएं।"
मैं आपको जरूर बता दूंगा। लेकिन मुझे नहीं लगता कि इसकी ज्यादा जरूरत पड़ेगी।
जब रावराने ने सबको विदाई देकर विदा ली, तो उनके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान झलक रही थी। इस मामले के बारे में उनकी भविष्यवाणियां सच साबित हो गई थीं। आज कृष्णन के घर पर मिले पत्र ने उनके निष्कर्षों की पुष्टि कर दी थी।
ड्राइवर उनका इंतजार कर रहा था। जैसे ही रावराने पास पहुंचा, वह कार से बाहर निकला, उनके लिए दरवाजा खोला और पूछा।
"क्या आपने काम पूरा कर लिया?"
"जी हां! उम्मीदों से कहीं बढ़कर!" रावराने ने आगे कहा।
"अब मुझे यहाँ से जल्द से जल्द निकलना होगा। मुझे दमन जाना है।" "रात में नाव होती है, है ना?"

"मुझे अब जल्द से जल्द दमन पहुंचना है। क्या यहां हवाई सेवा उपलब्ध नहीं है?"
कार स्टार्ट करने के बाद ड्राइवर ने कहा,
"कोचीन से विमान निकलते हैं। हमें कोचीन जाना होगा।"
"कोचीन यहां से कितनी दूर है?"
कोचीन और एर्नाकुलम जुड़वां शहर हैं।
"ठीक है। अब होटल लौटने के बाद हमें विमान के समय के बारे में पूछना चाहिए।"
"अरे, इसकी चिंता मत करो। एडमिरल साहब के इंडियन एयरलाइंस में ऊपर से नीचे तक जान-पहचान है। अगले दिन, 26 नवंबर को, एडमिरल साहब का जन्मदिन था और लोग 'साउथ स्टार' होटल की छत पर चाय पार्टी के लिए इकट्ठा हुए थे। उसी समय, मुंबई से कोचीन जा रहा एक विमान 'साउथ स्टार' होटल के इतने करीब आया कि आपको पूछने की भी ज़रूरत नहीं है। हम सब डर गए थे। हमें लगा कि विमान होटल से टकरा जाएगा। लेकिन विमान से फूलों की मालाएँ और 'हैप्पी बर्थडे' लिखे रंगीन कार्ड फेंके गए। बाद में हमें पता चला कि एडमिरल साहब के करीबी दोस्त गांगुली उस विमान के पायलट थे।"
"वाह! पता चला कि आपके एडमिरल साहब के कई परिचित हैं।"
"वह पढ़ाई के लिए शिमला गए। फिर उन्होंने नौसेना में भर्ती हो गए। उन्होंने वहां दस से बारह साल तक सेवा की। उसके बाद उन्होंने होटल व्यवसाय शुरू किया। समाज के हर वर्ग में उनके परिचित हैं।"
"भगवान उनका भला करे!" राओरेन ने अपनी पाइप जलाते हुए कहा। गाड़ी एक बार फिर साउथ स्टार होटल के सामने रुक गई। काउंटर पर बैठकर टाइम्स ऑफ इंडिया पढ़ रहे एडमिरल ने यात्रियों को देखा और कहा, "हेलो! मिशन कैसा चल रहा है?"

"बहुत बढ़िया! यह उम्मीद से कहीं अधिक सफल रहा।"
"बहुत बढ़िया! अब, जैसे आप आए थे, वैसे ही हमारे केरल में चार से छह दिन रुकिए।"
"चार-छह दिन? एडमिरल, मुझे वास्तव में आज ही जाना होगा।"
‘‘का?’’
मुझे इतनी महत्वपूर्ण जानकारी मिली है कि इसकी तुरंत पुष्टि किए बिना मुझे चैन नहीं आएगा। कल ही मेरे लिए कोचीन से मुंबई का हवाई टिकट बुक करा दीजिए। आपको ही मुझे परेशान करना पड़ेगा। "चिंता मत कीजिए। श्रीनिवास ने मुझे निर्देश दिया है कि मैं आपको सभी आवश्यक सहायता प्रदान करूँ। मान लीजिए आपको हवाई जहाज का टिकट मिल जाता है, तो क्या बस इतना ही है?" काउंटर पर बैठी रिसेप्शनिस्ट से बात करते हुए उन्होंने कहा, "चंदा, कृपया मुझे कोचीन हवाई अड्डे से जोड़ दीजिए।"
जैसे ही रिसेप्शनिस्ट ने फोन डायल करना शुरू किया, एडमिरल ने कहा,
"एक पुलिस अधिकारी के तौर पर, आपने बहुत ही जटिल मामलों को सुलझाया होगा, है ना?"
"हां, बहुत सारे। अपने तीस साल के करियर में, मैंने कम से कम दो से तीन हजार जटिल मामलों को उजागर किया है। लेकिन सच कहूं तो? यह सीतू मामला उन सभी को पीछे छोड़ देगा।"
"'क्या तुम ऐसा कहते हो? तो मुझे आज रात बताओ।'"
‘‘जरूर!’’
"कैप्टन श्रीनिवास ने जाते समय मुझसे कहा था कि अगर वह कुछ कहें तो उनकी बात सुनो। तुम्हें यकीन हो जाएगा कि 'सच्चाई कल्पना से भी कहीं अधिक विचित्र हो सकती है'।"

"ठीक है - आज रात! लेकिन हमें कल के लिए हवाई जहाज का टिकट चाहिए।"
"आपको टिकट मिल जाएगा। चिंता मत कीजिए। क्या हम आज रात ही आपको टिकट दिलवाने का इंतजाम कर सकते हैं?"
"इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। मुझे आप पर पूरा भरोसा है।"
उस रात रावण ने अपने कमरे में एडमिरल को सीतु की पूरी कहानी सुनाई और बताया कि वह इसे फिर से कैसे उजागर करने वाला है। जब उसने यह सब सुना, तो एडमिरल ने कहा,
"सर, आपने वाकई बहुत अच्छा काम किया है! लेकिन क्या आपको सच में लगता है कि नारायणन जीवित है?"
"सौ प्रतिशत! वह जीवित है! अगर कैप्टन श्रीनिवास ने मुझे यह नहीं बताया होता कि उन्होंने उसे दमन में देखा था, तब भी मैं उसे ढूंढ लेता।"
"लेकिन श्रीनिवास दमन में नारायणन से क्यों मिला?"
"जब मैंने उन्हें श्रीनिवासन नारायणन की तस्वीर दिखाई, तो उन्होंने कहा कि उन्होंने दमन के कोल्ड स्टोरेज में ठीक उसी चेहरे वाले एक व्यक्ति को देखा था।"
"लेकिन मान लीजिए कि वह कोई और निकला?"
"बिल्कुल नहीं! अगर उन्होंने मुझे बताया होता कि उसी चेहरे वाला आदमी कहीं और देखा गया है, तो शायद मुझे शक होता। लेकिन जब उन्होंने कहा कि उसी चेहरे वाला आदमी कोल्ड स्टोरेज में देखा गया है, तो मुझे पूरा यकीन हो गया। फिर भी, मैं कल दमन जाऊंगा और उससे खुद मिलूंगा।"
"तो फिर निंबार्डी नदी के किनारे किसका शव मिला था?"
मैं आपको बताता हूँ। पहले कुछ व्हिस्की मंगवा लीजिए।

"ज़रूर!" एडमिरल ने नीचे काउंटर से आवाज़ लगाई और वेटर से व्हिस्की मंगवाई, साथ ही रिसेप्शनिस्ट से यह भी कहा,
"अगर अब कोई मेरे पास आए तो उन्हें बता देना कि मैं बाहर गया हूँ।"
रावराना ने पश्चिम की ओर वाली खिड़की खोली। एक ताज़ा समुद्री हवा उन पर बह गई। अपनी कुर्सी पर पीछे झुककर बैठते हुए, उन्होंने अपनी पाइप भरनी शुरू की। तभी, वेटर 'टीचर्स स्कॉच' व्हिस्की की बोतल, सोडा और गिलास लेकर आया।
एडमिरल ने गिलास भर दिया। एक-दूसरे का हौसला बढ़ाने के बाद, कप्तान ने एक लंबा घूंट लिया, अपनी पाइप से एक-दो कश खींचे और कहा,
"आपका सवाल यह है कि निंबरदी नदी के किनारे किसका शव मिला था। मेरा जवाब यह है कि वह कृष्णन का शव था।"
एडमिरल आश्चर्यचकित होकर बोले, "आपका क्या मतलब है? यह कैसे संभव है?"
"देखो, कृष्णन व्यसनी था। उसने अपनी सारी संपत्ति लुटा दी थी। जब उसके पास पैसे कम होने लगे, तो उसने अपने बच्चों को भी अरबों को बेचने में संकोच नहीं किया। इतना ही नहीं, वह कभी-कभी नारायणन के पास पैसे मांगने जाता था। नारायणन उससे बहुत नाराज़ थे। साथ ही, नारायणन को लगता था कि अगर अपनी बेटियों को बेचने वाला यह बदमाश मर जाए, तो कम से कम उसकी बाकी दो बेटियाँ तो बच जाएँगी।"
"तो फिर?" एडमिरल ने पूछा।
"उसी समय, शेठ मनमोहन के भतीजे रवि ने ज़िद की कि सुबी उसे ही मिलना चाहिए। उसकी ज़िद छोड़ने के लिए नारायणन मुंबई गए और मनमोहन शेठ से मिले। लेकिन मनमोहन शेठ ने नारायणन से ज़िद करते

हुए कहा, 'चाहे कुछ भी हो जाए, रवि को वहाँ निंबर्दी का आनंद दिलाने के लिए आपको हर संभव प्रयास करना होगा।' तो नारायणन सोचने लगे कि अब इस स्थिति से कैसे निपटा जाए? शेठ मनमोहन को नारायणन पर पूरा भरोसा था। शेठ ने रवि के लिए ही डिब्बाबंदी कारखाने और कोल्ड स्टोरेज में दस से पाँच लाख रुपये का निवेश किया था! अगर उसे निंबर्दी का आनंद नहीं मिला, तो ये दोनों कारखाने जनता को सौंपने पड़ेंगे।"
"जब नारायणन मुंबई में इसी तरह की दुविधापूर्ण स्थिति में थे, तब कृष्णन उनसे वहीं मिले थे।"
आपको यह कैसे पता चला?
"उस समय रवि का पुराना रसोइया मुंबई में मनमोहन सेठ के साथ था। मुझे उससे बहुत महत्वपूर्ण जानकारी मिली है। नारायणन, जो सेठ मनमोहन से 'सुबी के प्रलोभन से रवि को रोकने और समझाने' के लिए मुंबई गए थे, उन्होंने उस दिन मुंबई में सेठ मनमोहन के गिलास से पिया था, और नारायणन ने ही मनमोहन सेठ के हाथ पर ताली बजाई और उनसे कहा कि वह सुबी को रवि को सौंपने की व्यवस्था करेंगे।" "हे भगवान!" एडमिरल ने सिगरेट का धुआं उड़ाते हुए कहा, "सर, यह तो बहुत बढ़िया है! तो आगे क्या हुआ?"
फिर नारायणन कृष्णन को निंबार्डी ले गया। उसने उसे दो दिन तक बशाममु के होटल में रखा। फिर तीसरी रात को उसने कृष्णन को निंबार्डी बुलाया होगा। नारायणन ने वहीं उसकी हत्या कर दी और उसे अपने कपड़े पहना दिए। उसने कृष्णन के हाथ में उसके नाम का कंगन पहनाया और उसके शरीर को समुद्र में फेंक दिया। नारायणन उसी रात निंबार्डी से चला गया।
इस तरह उसने कृष्णन के शव का अंतिम संस्कार किया। नारायणन को पूरा यकीन था कि जब शव किनारे पर आएगा, तो लोग उसे अपना ही

समझेंगे। दोनों भाइयों में असाधारण समानता थी; इतना ही नहीं, अगर इतना मामूली अंतर भी होता, तो शव के सड़ने के बाद उसके करीबी लोग यह कहने की हिम्मत भी नहीं करते कि कृष्णन का शव नारायणन का नहीं है। उसने शव को अपने ही कपड़े पहनाए थे। उसने अपने नाम का सोने का कंगन शव के हाथ में पहना दिया था। इसके अलावा, चूंकि उसने फातु भंडारा जैसे व्यक्ति को चुना था, जिसे सच्चाई का कोई ज्ञान नहीं था, इसलिए उसने उससे पल भर में झूठा बयान दिलवाने का भी इंतजाम कर दिया था। नारायणन ने बड़ी चतुराई से यह साजिश रची थी कि सीतू पर उसकी हत्या का आरोप लगे और बाद में अदालत में भी यह साबित हो जाए, और ठीक वैसा ही हुआ जैसा उसने अनुमान लगाया था। लेकिन नारायणन ने उसे कैसे मारा, यह आज भी मेरे लिए एक रहस्य बना हुआ है।
लेकिन अब तुम क्या करोगे?
"अब मैं सिर्फ एक ही बात साबित करूंगा, कि नारायणन जीवित है। इसलिए, मैं यह साबित करूंगा कि उसकी हत्या के लिए जो मामला गढ़ा गया था, सीतू को जो सजा दी गई थी, वह सब गैरकानूनी था।"
"लेकिन नारायणन को जीवित देखे बिना आप इस निष्कर्ष पर कैसे पहुंच सकते हैं?" एडमिरल ने सवाल किया।
"देखिए, मेरा निष्कर्ष बिल्कुल पुख्ता है। कृष्णन पिछले सात-आठ महीनों से लापता हैं। इसके अलावा, नारायणन ने कृष्णन की लिखावट में दस हजार रुपये और वह पत्र यह साबित करने के लिए भेजा था कि कृष्णन अपनी मृत्यु के बाद भी जीवित हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि लिखावट कृष्णन की ही है।"
"यह कैसे संभव है? आप कहते हैं कि कृष्णन की हत्या के बाद पैसा और पत्र एर्नाकुलम पहुंचे थे, है ना?"

"नारायणन ने कृष्णन की हत्या करने से पहले निंबार्डी में कृष्णन की ओर से वह पत्र लिखा होगा। लेकिन नारायणन ने उसे डाक में बाद में डाला। क्योंकि वह कृष्णन के घर वालों और एर्नाकुलम में सभी को यह दिखाना चाहता था कि हत्या के बाद भी कृष्णन जीवित है।"
"हे भगवान! महोदय, मैं कल्पना भी नहीं कर सकता कि एक इंसान कितनी नीच हरकत कर सकता है।"
नारायणन का यह प्रयास दो लक्ष्यों को एक तीर से साधने के उद्देश्य से किया गया था। एक ओर, परिवार को कलंकित करने वाले कृष्णन को हमेशा के लिए हटा दिया जाए, और दूसरी ओर, सीतू को हत्या के आरोप में गिरफ्तार कर लिया जाए। इससे रवि के लिए सुबी को पकड़ना आसान हो जाएगा। उसने इस योजना को बड़ी चतुराई से बनाया था।
"आप पागल हो गए हैं, महोदय!" एडमिरल ने अपना गिलास खत्म करते हुए कहा।
"ये लो, मेरे नोट्स देखो। पिछले दो महीनों की अथक मेहनत के बाद मैंने ये जानकारी जुटाई है। अब सबसे बड़ा सवाल ये है कि नारायणन को सामने देखने के बाद क्या किया जाए। वो तो पक्का वहीं है। सीतू को उम्रकैद की सजा सुनाई गई है। लेकिन उसका मकसद अभी पूरा नहीं हुआ है। सुबी रवि का पता नहीं चला है। फादर मैथ्यूज ने उसे पणजी में बहुत सुरक्षित जगह पर रखा है। बेचारी लड़की मुझे ये जानकारी देते हुए फूट-फूटकर रो रही थी। उसे इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं है कि ये साजिश कैसे रची गई।"
"महोदय, मैं आपकी बुद्धिमत्ता और दृढ़ता की जितनी भी प्रशंसा करूं कम है। मैं खुद को भाग्यशाली मानता हूं कि इस मामले में सच्चाई की खोज में मैं आपकी थोड़ी सी भी सहायता कर सका।"

रावराने ने अपना खाली गिलास एडमिरल के सामने रखते हुए कहा, "इसका श्रेय मैं कैप्टन श्रीनिवासन को देता हूँ। उन्होंने ही मुझे आपसे मिलवाया था।"
"अब आप आगे क्या करने वाले हैं?"
"मैं कल सबसे पहले मुंबई के लिए उड़ान भरूंगा। वहां मेरी मुलाकात मिस मार्कोनी से होगी। कैप्टन श्रीनिवास ने मुझे उनसे मिलने के लिए कहा है। मैं उनसे थोड़ी देर बात करूंगा और पहले उनका आकलन करूंगा कि वे मेरे लिए उपयोगी होंगी या नहीं। फिर, अगर उन्हें लगेगा कि उनकी मदद जरूरी है, तो मैं उन्हें दमन ले जाऊंगा।"
"उसका न्याय क्यों किया जाना चाहिए?"
"देखिए, दमन में दस-पाँच कोल्ड स्टोरेज और कैनिंग फैक्ट्रियां हैं। अब मैं इस मामले पर ज्यादा समय नहीं बिताना चाहता। मैं मिस मार्कोनी से जल्दी ही पता लगा लूंगा कि श्रीनिवास किस फैक्ट्री में गया था। मैं उससे एक बार व्यक्तिगत रूप से मिलूंगा और फिर तय करूंगा कि यह खुलासा कैसे करना है। लेकिन एडमिरल, मुझे यकीन है - कैप्टन श्रीनिवास को नारायणन ने ही देखा होगा। अब वह कोल्ड स्टोरेज फैक्ट्री किसकी है, वह वहां कितने समय से है - यह सारी जानकारी गौण है। मुझे सबसे पहले उस बदमाश को पकड़ना होगा।" आज रावराने बड़े हर्षोल्लास में आया था। वह कभी-कभार शराब पीता था
- लेकिन आज उसने तीसरी पेग के लिए अपना गिलास एडमिरल के सामने सरका दिया और कहा,
‘‘आखिरी वाला और वूई रात के खाने के लिए कैसे जाते हैं?’’
०००

चौबीस
रावराना को जैसे ही यह संदेश मिला कि एक टैक्सी आ गई है और उन्हें कोचीन हवाई अड्डे ले जाने के लिए इंतज़ार कर रही है, उन्होंने तुरंत अपना सूट पहना और टाई बाँधी। शीशे में देखकर उन्होंने अपने सिर पर थोड़ी झुकी हुई फेल्ट की टोपी पहनी। वे दस्तावेज़ों से भरा बैग लेकर लिफ्ट में खड़े हो गए। वेटर पहले ही उनके कपड़ों का बैग टैक्सी में रख चुका था।
जब वह बिल चुकाने के लिए सोफे पर आया, तो एडमिरल ने उसे एक रसीद थमा दी जिसमें लिखा था कि सभी बिल चुका दिए गए हैं। तब रावराने ने कहा, "यह क्या है, हम दो दिन से पूरी शान-शौकत से रह रहे हैं और आपने एक पैसा भी नहीं लिया?"
“महाराज,” एडमिरल ने रावराना का हाथ पकड़कर उसे बाहर ले जाते हुए कहा, “मैंने पैसा कमाने के लिए होटल खोला था। ईश्वर की कृपा से मुझे खूब पैसा मिल रहा है। मैं इसे अपना सौभाग्य मानता हूँ कि आप जैसे यात्री इस होटल में आते हैं। एक गरीब लड़के के साथ अन्याय हुआ था, इसलिए यद्यपि आप बोझ बनने की उम्र के नहीं हैं, फिर भी आपने पिछले दो महीनों से दिन-रात इस मामले की जाँच-पड़ताल में कड़ी मेहनत की है। कल सबको सच्चाई पता चल जाएगी। हम सीतू को भी बचा लेंगे। मैं इस काम में थोड़ा सहयोग करके संतुष्टि महसूस करना चाहता था, इसलिए मैंने आपसे बिल नहीं लिया, समझे?”

मैं अभी ज्यादा कुछ नहीं कह सकता। लेकिन मैं आप दोनों, कैप्टन श्रीनिवास द्वारा दी गई अमूल्य सहायता को कभी नहीं भूलूंगा। बहुत-बहुत धन्यवाद! भगवान आप दोनों को आशीर्वाद दें!
रावराना ने दुनिया का बहुत कुछ देखा था; लेकिन जब एक धनवान व्यक्ति ने अपनी मानवता का प्रदर्शन किया तो वह अभिभूत हो गया। चूंकि एडमिरल ने हवाई जहाज का टिकट पहले ही बुक कर दिया था, इसलिए रावरना को हवाई अड्डे जाने की जल्दी नहीं थी। कुछ देर बाद उन्हें अपनी सीट का नंबर मिल गया। चेक-इन रूम में उनकी जाँच कर रहे अधिकारियों ने उनसे बस इतना पूछा कि क्या उनके पास कोई आपत्तिजनक वस्तु है।
"किसी व्यावसायिक ट्रिप में?"
"जी हां, एक बहुत ही महत्वपूर्ण व्यावसायिक यात्रा पर!"
"मैं समझ गया!" उसने हंसते हुए कहा।
केरल से विमान के उड़ान भरते ही रावराना ने बगल की खिड़की से नीचे देखा। केरल की खूबसूरत धरती पीछे छूटती जा रही थी। समुद्र तट पर घने नारियल के पेड़, विशाल कॉफी और रबर के बागान, कोचीन और एर्नाकुलम को जोड़ने वाला विशाल पुल, वेलिंगटन द्वीप, सी लॉर्ड होटल, मालाबार होटल और वंजिनो होटल की विशाल इमारतें विमान से दिखाई दे रही थीं। थोड़ा बगल में देखने पर उन्हें महाराजा पार्क और मट्टमचेरी इलाका दिखाई दिया। कृष्णन का घर इसी मट्टमचेरी इलाके के ठीक बगल में था। रावराना ने कृष्णन के घर में अपनी जांच का अंतिम चरण पूरा किया था। जब उन्हें कृष्णन की लिखावट में लिखा पत्र मिला, तो उन्हें यकीन हो गया कि उनके मन में मौजूद सभी सुराग एक साथ जुड़ गए हैं। पत्र ने उनके इस निष्कर्ष की पुष्टि की कि नारायणन ने कृष्णन की हत्या की थी, लेकिन उन्होंने सीता या राधा को खुलकर नहीं बताया था। उन्हें

दरवाजे पर खड़े साठ वर्षीय व्यक्ति को देखकर मिस मार्कोनी ने सोचा कि अंकल को घर की याद आ रही होगी।
आप किसके पास आए थे?
"आपका स्वागत है!" राओरेन ने मुस्कुराते हुए कहा।
"मुझसे?" उसने अपना बायां हाथ अपनी छाती पर रखते हुए फिर कहा। "मेरे लिए? ... आओ, तुम कहाँ से आए हो?"
"क्या मुझे एक गिलास ठंडा पानी मिल सकता है?"
"ओह, जरूर! क्या आप चाय या कॉफी लेना चाहेंगे?"
मैं करूँगा, लेकिन अभी नहीं। अभी के लिए, मुझे एक गिलास पानी दीजिए।
रावराना ने थैले से मखमल हटाया और उसमें से दस्तावेज़ों की फाइल निकाली। उसने मिस मार्कोनी के बैठक कक्ष की ओर देखा। उस छोटे से बैठक कक्ष में छोटा लेकिन बहुत ही साफ-सुथरा फर्नीचर था। नीचे एक नीले रंग का फ़ारसी कालीन बिछा था। दीवार पर दो खूबसूरत प्राकृतिक चित्र लगे थे। इस घर से किसी वेश्या के होने का कोई आभास नहीं था। एक तरफ कांच की अलमारी थी और उस पर जेम्स हैडली चेज़ और अगाथा क्रिस्टी के दर्जनों उपन्यास कतारों में रखे थे। उन्हें देखकर रावराना ने मन ही मन कहा, 'वाह, क्या बात है!' उसने अपनी जेब से पाइप और तंबाकू की थैली निकाली। उसी क्षण, मिस मार्कोनी एक छोटी सी ट्रे में पानी का गिलास लेकर आईं। उनके चेहरे पर अभी भी रावराना के प्रति जिज्ञासा थी।
"बहुत-बहुत धन्यवाद!" रावरेन ने ट्रे से गिलास उठाते हुए कहा और उसे अपने होठों से लगाया।
"कृपया इसका ज़िक्र न करें!" मिस मार्कोनी ने मीठी मुस्कान के साथ कहा और उसके बगल में सोफे पर बैठ गईं। पानी पीने के बाद रावराना ने उनसे पूछा,

"क्या मैं पाइप पी सकता हूँ?"
"बिल्कुल!" उसने कहा और अलमारी से ऐशट्रे निकालकर उनके सामने स्टूल पर रख दी।
"मिस मार्कोनी, ऐसा लगता है कि आपको जासूसी उपन्यास पढ़ने का बहुत शौक है," रावराने ने अपनी पाइप पीते हुए कहा।
"हां। यह मेरा पसंदीदा शौक है।"
"लेकिन क्या आपके पास समय है?" रावराना ने अपनी भौहें उठाते हुए पूछा।
"मैं समय के बिना कैसे पढ़ सकता हूँ? क्या मैं जान सकता हूँ...?" "जी हां, बिल्कुल! आपको पता चल जाएगा कि मैं यहां क्यों आया हूं।"
मिस मार्कोनी की जिज्ञासा को और बढ़ाने में कोई फायदा न समझते हुए, राओरेन ने अपने पाइप से कुछ कश लिए, उसे ऐशट्रे पर रखा, दोनों हाथों की उंगलियों को आपस में फंसाया और मिस मार्कोनी की ओर देखते हुए कहा,
"मैं 'केप केमोरिन' नाव के कप्तान श्रीनिवास के अनुरोध पर आपके पास आया हूँ।"
श्रीनिवास का नाम सुनते ही मिस मार्कोनी का चेहरा खिल उठा। उन्होंने तुरंत कहा, "श्रीनिवास, आप?"
"यह सच है! मैं उनसे चार दिन पहले नाव पर मिला था। मिस मार्कोनी, आपने अब तक कई रहस्य उपन्यास पढ़ लिए होंगे। क्या आप आज मुझसे इसी तरह की कोई रहस्यमय घटना सुनना चाहेंगी?"
"क्या तुम मुझे सुनने पर मजबूर करोगे?" उसने अपने सजे-धजे बाएं हाथ की चारों उंगलियां फिर से अपनी छाती पर रख लीं। शायद यह आश्चर्य व्यक्त करने का उसका तरीका था।

"हां, मैं आपसे सुनना चाहता हूं, और मुझे आपसे थोड़ा सहयोग की उम्मीद है।"
"मैं इस रहस्यमय मामले में कैसे मदद कर सकती हूँ?" मिस मार्कोनी ने थोड़ा डरते हुए पूछा।
"सबसे पहले, मैं आपको पूरी सच्चाई बताऊंगा। मैं आपको यहां आने का उद्देश्य भी बताऊंगा, और उसके बाद ही, यदि आप मेरी मदद करना चाहें, तो निर्णय लें। मुझ पर कोई दबाव नहीं है। कोई लालच नहीं है। इसके अलावा, मैं इसलिए आया हूं क्योंकि कैप्टन श्रीनिवास ने मुझे आपके पास तुरंत आने के लिए कहा था। अन्यथा, मुझे इस जीवन में अपना परिचय देने का अवसर ही नहीं मिलता।"
"ठीक है। लेकिन आपने अभी तक हमें अपना नाम भी नहीं बताया है।" "मैं आपको बताऊंगा, मैं आपको बताऊंगा। एक पल रुकिए। इससे पहले कि मैं आपको बताऊं कि मैं कौन हूं, मैं आपको यह बताना चाहूंगा कि चित्रदुर्ग जेल में क्या हुआ था।"
इस प्रकार, रावराना ने मोहनराव दिवेकर और सीतू को सच बताना शुरू किया। जब वह सच सुन रही थी, मिस मार्कोनी एकाग्रचित्त थीं। वह अपनी ठुड्डी को अपने दाहिने हाथ की हथेली पर टिकाकर रावराना की बातें सुन रही थीं। कहानी के अंत में, नारायणन द्वारा सीतू के खिलाफ झूठे आरोप को साबित करने के लिए रची गई साजिश को सुनते हुए, उन्होंने फिर से अपना बायां हाथ अपनी छाती पर रखा और पूछा, "चाचा जी, क्या आप सच कह रहे हैं?"
"तुम्हारी हर बात सच है, लड़की। मैंने भी तीस साल तक पुलिस विभाग में काम किया है। मैंने ऐसे कई रहस्यमय अपराध सुलझाए हैं। लेकिन मैंने कभी ऐसा चौंका देने वाला मामला नहीं देखा। अब इस तस्वीर को देखो। ये नारायणन हैं!"

तस्वीर को ध्यान से देखते हुए, मिस मार्कोनी ने कहा, "मुझे ऐसा लग रहा है कि मैंने इस सज्जन को पहले कहीं देखा है।"
"इसीलिए मैं आपके पास आया हूं। आप और कैप्टन श्रीनिवास दो महीने पहले दमन गए थे, जब आपको वहां नाव पर तलने के लिए झींगों की जरूरत थी।"
"बिल्कुल!" मिस मार्कोनी ने अपनी कुर्सी से झट से उठते हुए कहा। "इस तस्वीर में दिख रहे सज्जन ने उस समय चश्मा पहना हुआ था। मैंने श्री से यह भी कहा था, 'चश्मा पहनकर उन्हें अंधेरे में कैसे दिखाई देता है?' मुझे याद आ गया, मुझे याद आ गया! चाचा जी, अगर यह नारायणन की तस्वीर है, तो वह निश्चित रूप से जीवित हैं।" "मिस मार्कोनी, मैं इस मामले की जांच के लिए आपके पास आया हूं। मैं अपनी आंखों से जल्द से जल्द यह देखना चाहता हूं कि नारायणन जीवित है।"
"लेकिन मैं आपको इसलिए बता रही हूँ क्योंकि वह ऐसा ही है!" मिस मार्कोनी ने अपना हाथ फिर से अपनी छाती पर रखते हुए कहा।
"यह सच है, मुझे आप और कैप्टन श्रीनिवास की बातों पर पूरा भरोसा है। लेकिन मैं एक पुलिस अधिकारी हूं। इसके अलावा, कल जब मुझे यकीन हो जाएगा कि नारायणन जीवित है, तो मुझे केंद्र सरकार की ओर से कार्रवाई करनी होगी, जिसके लिए हमें 'बिना किसी संदेह के' (before reasonable doubt) सुनिश्चित करना होगा।"
"तो हमें दमन के लिए कब निकलना चाहिए?" मिस मार्कोनी ने जल्दी से कहा।
हमें जल्द से जल्द यहां से निकल जाना चाहिए।
"मैं अभी इसी वक्त जाने के लिए तैयार हूं।"
"लेकिन एक बात याद रखना। अगर उसे तुम पर शक हुआ, तो वह बिना एक पल भी देरी किए चला जाएगा।"

"मैं आपको भरोसा दिलाता हूँ कि उसे शक नहीं होगा, चाचा जी। हमें उस बेचारी मासूम सीतू को जल्द से जल्द रिहा कर देना चाहिए।" "लेकिन इसमें भी एक समस्या है। एक बार जब उच्च न्यायालय ने सिटु की सजा को बरकरार रख दिया है, तो हमारे संविधान में उस फैसले को पलटने का कोई प्रावधान नहीं है। हालांकि, अमेरिकी संविधान में, एक बार तय किए गए मामले को 'फिर से खोला' जा सकता है यदि न्याय का उद्देश्य बाधित हुआ हो।"
"यह कैसे संभव है? भले ही यह साबित हो जाए कि जिसकी हत्या हुई है वह अभी भी जीवित है?"
मैं भी यही सोच रहा हूँ। नारायणन के जीवित होने का प्रमाण मिलने के बाद, सीतू को तुरंत रिहा करना वांछनीय है। लेकिन हमारे संविधान में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है। ऐसी स्थिति में, सरकार को अधिक से अधिक शेष सभी सजाओं को कम करने का अनुरोध करना होगा। "ठीक है, मैं जाने की तैयारी कर रहा हूँ।"
"तुम तैयारी करोगे; लेकिन पहले मुझे बताओ, क्या उसे शक नहीं होगा कि तुम फिर से उस नारायणन के पास जा रहे हो?"
"वह नहीं आएगा! मैं उसे बता दूँगा कि पिछली बार तुमने उसे जो 'झींगे' दिए थे, वे बहुत स्वादिष्ट थे। मुझे वही दोबारा दे दो।" "अरे, वो तो तुमसे सौ गुना ज्यादा होशियार है। क्या वो सच में मान लेगा कि तुम दमन सिर्फ झींगों के लिए आए हो?"
"तो फिर इसे कैसे करें?"
"मुझे वह कारखाना दूर से दिखाओ। दमन में आठ-दस कारखाने हैं। इधर-उधर खोजने का कोई फायदा नहीं है। इसीलिए मैंने आपकी मदद लेने का फैसला किया है।"
"ठीक है। लेकिन आप वहां क्यों जाएंगे?"

"मैं आपको कोई भी कारण दे सकता हूँ। मैंने अभी तक नारायणन को व्यक्तिगत रूप से नहीं देखा है। वह भी मुझे नहीं जानता। ऐसे में उसे मुझ पर शक करने का कोई कारण नहीं है। लेकिन अगर आप मेरे साथ आते हैं, तो शायद हमारी गणना गलत साबित हो जाए।"
"ठीक है, अंकल, मैं सहमत हूँ। मैं आपको दूर से वह कारखाना दिखा दूँगा जिसमें वह है। उसके बाद आप जो चाहें कर सकते हैं।"
मिस मार्कोनी ने अपना बैग पैक करना शुरू किया। बैग पैक करते समय उन्हें कुछ याद आया, इसलिए वे बाहर रावरन के पास आईं और बोलीं, "चाचा जी, क्या आप कुछ खाएंगे?"
आपके पास क्या है?
"परसों मेरा जन्मदिन है, मैं उस दिन के लिए केक लाया हूँ। क्या आप मुझे केक देना चाहेंगे?"
वाह! आपको और क्या चाहिए? मुझे तो बस इसके साथ एक कप चाय चाहिए! रावराना को मिस मार्कोनी उम्मीद से भी ज़्यादा मिलनसार लगीं। वह चाहते थे कि ऐसी लड़की की शादी हो, एक-दो बच्चे हों और वे सुखी जीवन व्यतीत करें। अरे, कैप्टन श्रीनिवास! अपनी पहली पत्नी के देहांत के बाद उन्होंने जीवन भर शादी न करने का निश्चय कर लिया था, और देखिए अब क्या हो रहा है! कभी-कभी वे विदेशी यात्रियों के साथ गाइड बनकर यात्रा करते हैं, कभी नौसेना अधिकारियों के साथ सोते हैं! अब कोई बात नहीं। उनके शरीर में जोश है, जवानी है, खूबसूरती है। कल क्या करेंगे जब यह शरीर थक जाएगा?
जब रावरेन इसी बारे में सोच रहा था, तभी दरवाजे की घंटी बजी। रावरेन उठा और दरवाजे की कुंडी खोलने गया। तब तक मिस मार्कोनी चाय और केक की ट्रे लेकर अंदर से बाहर आ चुकी थीं। घंटी की आवाज सुनकर उन्होंने कहा, "अंकल जी, रुकिए, मैं देखती हूँ।"
"कौन है?" उसने दरवाजे की ओर जाते हुए पूछा।

सफेद वर्दी पहने तीन युवा नौसेना अधिकारी दरवाजे पर खड़े थे। "हेलो, हनी!" उनमें से एक ने उसके अंदर आते ही उसके गाल पर चुंबन किया। दूसरे ने उसकी ओर देखकर कहा,
‘‘जॉन, बिहेव्ह प्लीज.’’
"अरे, मैंने क्या गलती की?"
तीसरे युवक ने कहा, “मिस मार्कोनी, हम आपका न्याय करने आए हैं। चलिए चलते हैं।”
"माफ़ कीजिए, मैं नहीं आ सकता।"
"आप लगे हुए हैं?"
"हां, मैं समझ गया।"
पहला गिलास जैम का था। उसने रानी की ओर इशारा करते हुए कहा,
"इस बूढ़े आदमी के साथ?"
वह अपने ही मजाक पर हंसने लगा। तभी मिस मार्कोनी ने उसके चेहरे पर ज़ोरदार थप्पड़ मारा। बाकी दोनों बीच में आ गईं। उनमें से जो ज़्यादा समझदार थी, उसने कहा, "मार्कोनी, अगर तुम नहीं आना चाहतीं, तो बस मना कर दो। लेकिन तुम्हारा यह बर्ताव ठीक नहीं है।"
रावराने, जो काफी देर से चुपचाप बैठे थे, आगे आए और बोले, "महोदय, कृपया अपना नाम बताइए। मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या आपको नौसेना में किसी के घर में घुसकर उस पर हमला करने का प्रशिक्षण मिला है। यह मेरा नाम पत्र है।"
"जैसे ही मैंने वह कार्ड उठाया और उस पर 'रिटायर्ड सी.आई.डी., डी.आई.जी.' शब्द पढ़े, वे लोग तुरंत मेज पर आ गए।"
रावराने ने उन्हें संबोधित करते हुए कहा, "भले ही वह वेश्या बन जाए, उसका अपना स्वतंत्र अस्तित्व है। इसके अलावा, यहाँ आकर आपने न केवल उसे बदनाम किया है, बल्कि मुझे भी बेवजह बदनाम किया

है। मैं आपके खिलाफ मानहानि का मुकदमा दायर कर सकता हूँ। देखना चाहते हैं?"
"ओह, महोदय! क्षमा करें! हम जा रहे हैं।"
वे तीनों जितनी जल्दी आए थे उतनी ही जल्दी चले गए।
मिस मार्कोनी ने आंखों में आंसू लिए कहा,
"मेरी वजह से तुम मुसीबत में हो..."
"चिंता मत करो। मैं तीस साल से पुलिस अधिकारी हूँ। मैं इन सब बातों को झेलने की क्षमता रखता हूँ। वैसे भी, मैं ऐसे निकम्मे लोगों की बातों को दिल पर नहीं लेना चाहता। इस तरह की बातें देखकर मुझे लगता है कि अगर तुम जवानी में ही इस जीवन में एक नया मोड़ लेने के बारे में सोच लो तो अच्छा होगा।"
"यह कैसे संभव है, चाचाजी? पूरी दुनिया मुझे जानती है।"
"तुम पागल हो! लोगों की याददाश्त बहुत कमज़ोर होती है। लोग आज तुम्हारे बारे में जो सोचते हैं, ज़रूरी नहीं कि दो-तीन साल बाद वही सोचें। जब तुम अंदर आई थीं, तब मैंने भी यही सोचा था। तुम गृहिणी क्यों नहीं बन जातीं?"
मिस मार्कोनी की आँखों से आँसू बह रहे थे। रावरेन खड़े हुए और आगे आकर उनकी पीठ पर हाथ रखकर बोले, "इस दुनिया में आप ऐसी भावुक बातें नहीं कर सकतीं, और खासकर अपने पेशे में तो बिल्कुल नहीं। आइए, शांत हो जाइए, नहा लीजिए, और देखिए, मेरी चाय खत्म हो गई है - मेरे लिए दूसरी बना दीजिए।"
उस क्षण, मिस मार्कोनी को अपनी बेबसी का एहसास हुआ। उन्हें यह भी समझ आया कि घर में चाचा जैसे दयालु व्यक्ति का होना कितना महत्वपूर्ण था।
उसके नहाने जाने के बाद, रावराने मन ही मन मुस्कुराया। उसे याद आया कि ड्यूटी पर रहते हुए उसने पुणे, मुंबई और सोलापुर जैसे

बड़े शहरों में वेश्यावृत्ति के अड्डों पर 'वेश्यावृत्ति निवारण अधिनियम' के तहत छापे मारे थे। उसने कई युवतियों को वेश्यावृत्ति के चंगुल से बचाया था। इतना सब करने के बावजूद, उसे कभी-कभी लगता था कि समाज से वेश्यावृत्ति को पूरी तरह से मिटाना संभव नहीं है। लेकिन तब भी उसे यही लगता था और आज भी लगता है कि जो लोग कर सकते हैं उन्हें यह रास्ता छोड़ देना चाहिए। मिस मार्कोनी फिर से तैयार होकर बाहर आईं। उन्होंने भरा हुआ बैग हाथ में लिया और मेहमानों को संबोधित करते हुए कहा,
"अरे यार। उन कमीनों ने मेरा मूड थोड़ी देर के लिए खराब कर दिया।"
यह सुनकर रावरेन ने हल्की सी मुस्कान के साथ कहा,
"इसीलिए मैं कहता हूं, अपने चुने हुए रास्ते को बदलने की कोशिश करो।"
मिस मार्कोनी ने बस अपना सिर हिलाकर हां में जवाब दिया!
०००

पच्चीस
गोवा, दीव और दमन कई वर्षों तक पुर्तगाली शासन के अधीन रहे। परिणामस्वरूप, वहाँ की वास्तुकला पर फ़िरंगी संस्कृति की गहरी छाप थी। पुराने गिरजाघर, जालीदार दरवाजों वाले छप्परनुमा बंगले, सब कुछ पुर्तगाली शैली का लग रहा था। जब वे दमन पहुँचे तो भोर हो चुकी थी। रावराना ने एक होटल में कमरा लिया। होटल के रजिस्टर में उन्होंने श्री क्रिस्टोफर मार्कोनी और मिस नीना मार्कोनी के नाम दर्ज करवाए थे। रावराना ने कुछ समय के लिए मिस मार्कोनी के पिता होने का दावा किया था। वैसे, उनके पिता की उम्र उन्हीं के बराबर थी। उनके पहनावे, उनके पाइप पीने के तरीके और उनकी अंग्रेज़ी पर पकड़ को देखकर कोई भी सोच सकता था कि वे ईसाई होंगे।
स्नान और नाश्ता करने के बाद वे होटल से निकल गए। हालाँकि मिस मार्कोनी कल मुंबई में हुई घटना से थोड़ी परेशान थीं, फिर भी वह उस काम को पूरा करने के लिए उत्सुक थीं जिसके लिए वह यहाँ आई थीं।
हार्बर लेन पर चलते हुए, वह एक जगह रुकी और बोली,
"चाचा जी, मैं यहीं रुकता हूँ। सामने वह बोर्ड दिख रहा है ना? वहाँ से दाईं ओर मुड़िए। वह कोल्ड स्टोरेज ठीक सामने है। आपके वापस आने तक मैं उस तरफ वाले रेस्टोरेंट में रुकूँगा।" ‘‘ओकेऽऽ!’’
‘‘विश यू बेस्ट ऑफ लक. अंकल.’’

उसने अपने पीछे छूट चुके रावरणों को संबोधित करते हुए कहा। आगे चल रहे रावरणों ने एक क्षण के लिए पीछे मुड़कर देखा और अपने माथे को छूकर हाथ उठाकर 'धन्यवाद' का इशारा किया।
मिस मार्कोनी होटल में पंद्रह मिनट तक उनका इंतजार करती रहीं।
एक घंटे बाद भी रावरान के न आने पर वह बेचैन हो गईं।
उसे डर सताने लगा कि अगर नारायणन को शक हो गया कि रावराने उस पर नज़र रख रहा है, तो वह उसकी जान लेने में ज़रा भी संकोच नहीं करेगा। एक घंटे में उसने इस रेस्टोरेंट में चार बार चाय पी। आखिरकार, उसका सब्र टूट गया। वह उठी और काउंटर पर बिल चुकाकर बाहर आ गई। तभी उसने देखा कि रावराने विपरीत दिशा से आ रहा है। उस पल उसकी जान खतरे में पड़ गई। वह उसके पास गई और बेचैनी से उससे पूछा,
"क्या हुआ?"
मैं तुमसे कह रहा हूँ, चलो। टैक्सी बुलाओ।
मिस मार्कोनी ने एक टैक्सी बुलाई। टैक्सी में बैठने के बाद, उन्होंने अपनी फेल्ट की टोपी उतारकर अपनी गोद में रख ली, अपनी टाई ढीली की और एक लंबी आह भरते हुए कहा,
"वह वही है!"
मैंने कहा, "क्या यह सही नहीं है?"
"सौ प्रतिशत!"
"क्या तुमने उससे बात की?"
"हाँ! इसकी बहुत अच्छी तैयारी की गई है। वह मुझे बहुत ध्यान से देख रहा था। अब हम समय बर्बाद कर रहे हैं और इसका कोई फायदा नहीं है।"
"तुम अब क्या करोगे?"

जब वे बात कर रहे थे, तभी पुलिस ने उनकी टैक्सी रोक दी। एक जीप सायरन बजाते हुए चौराहे से निकल गई। एक ब्यूक कार जीप के पीछे- पीछे चल रही थी। सात-आठ कारों की एक कतार उसी दिशा में जीप के पीछे चल रही थी। रावराना ने टैक्सी चालक से पूछा,
‘‘कौन गये इस गाडीमे?’’
"उपराज्यपाल! राज्यपाल!"
‘‘अच्छाऽऽऽ! वो किधर जाऐंगे अब?’’
‘‘जाऐंगे नही, कल शाम को उनका प्रोग्रॅम है ना! वो आज की रात सफेद बंगले मे रहेंगे.’’
‘‘क्या वो पब्लिक को मिलते है?’’
‘‘जरूर! आप मिलना चाहते है?’’
‘‘हां.’’
मिस मार्कोनी लगातार रानी के चेहरे को देखती रहीं।
होटल लौटने के बाद, रावराने ने कहा,
"मार्कोनी, मैं राज्यपाल से मिलना चाहता हूँ और उनसे अनुरोध करना चाहता हूँ...!"
"कैसे?"
नारायणन ने निर्दोष सीतु को हत्या के आरोप में फंसाया, यह जताते हुए कि उसकी हत्या कर दी गई है - जबकि उसने स्वयं अपने भाई कृष्णन की हत्या की थी। रवि, मनमोहन और फातु ने झूठी गवाही दी। इन सभी ने खुलेआम एक भारतीय नागरिक की स्वतंत्रता को खतरे में डाला। यह मामला बहुत गंभीर है और मैं राज्यपाल से इस मामले की जांच करने का अनुरोध करूंगा।
"क्या राज्यपाल इस पर ध्यान देंगे?"
"उन्हें ध्यान देना होगा! राज्यपाल हमारे राष्ट्रपति के प्रत्यक्ष प्रतिनिधि हैं। इसलिए, जब उन्हें यह बताया जाता है

कि संविधान द्वारा प्रदत्त एक नागरिक की स्वतंत्रता छीन ली गई है, तो उन्हें इस मामले को गंभीरता से लेना होगा।"
उस शाम, रावराने गवर्नर से मिलने के लिए व्हाइट बंगलो गए। राज्यपाल के निजी सचिव ने रावराना के नाम से एक पत्र सौंपा। पत्र पर 'सेवानिवृत्त सी.आई.डी., आई.जी.' का पदनाम देखते ही उन्होंने रावराना को अंदर भेजने का निर्देश दिया।
रावणों ने राज्यपाल का अभिवादन किया और उन्हें संक्षेप में सीतु के मामले के बारे में बताया, और कहा,
"भारत के एक निर्दोष नागरिक को उसकी स्वतंत्रता से वंचित कर दिया गया है और जिस व्यक्ति की हत्या साबित हुई है, वह दमन में एक कोल्ड स्टोरेज सुविधा में काम कर रहा है।"
"इस बारे में मुझे क्या करना चाहिए, आप क्या सुझाव देते हैं?" राज्यपाल ने पूछा।
"हमें यहां मौजूद वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों को आदेश देना चाहिए और उन्हें नारायणन को गिरफ्तार करने का निर्देश देना चाहिए।" "ठीक है।"
राज्यपाल ने अपने सहायक को बुलाया और उसके माध्यम से दमन के पुलिस आयुक्त को फोन किया। पंद्रह मिनट के भीतर पुलिस आयुक्त और चार अन्य पुलिस अधिकारी वहां पहुंच गए। रावराना ने उन्हें अपने पास मौजूद सभी दस्तावेज और नारायणन की तस्वीरें दिखाईं। राज्यपाल ने वरिष्ठ अधिकारी से कहा,
मैं आपको आदेश देता हूं कि नारायणन को तुरंत गिरफ्तार करें, जो एक निर्दोष व्यक्ति को हत्या के मामले में फंसा रहा है, और उसके खिलाफ उचित कानूनी कार्रवाई करें।
पुलिस आयुक्त और उनके चार सहायक अधिकारियों ने उस कोल्ड स्टोरेज पर छापा मारा जहाँ नारायणन काम कर रहा था। नारायणन के

लिए यह पूरी तरह अप्रत्याशित था। हथकड़ी पहनाए जाने पर वह पसीने से तरबतर हो गया।
नारायणन की गिरफ्तारी के बाद, उसे एहसास हुआ कि रावण ने ही उसकी साजिश का पर्दाफाश किया था।
"नमस्कार नारायण, आप कैसे हैं?" रावरना ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए पूछा।
फिर, उनकी ओर देखते हुए नारायणन ने कहा,
"ठीक है! लेकिन तुमने बहुत अच्छा काम किया। मैं मन ही मन सोच रही थी, अब मैं आज़ाद हूँ। सच्चाई कभी सामने नहीं आएगी।"
"आपने बहुत सावधानी बरती। लेकिन अब मुझे एक बात बताइए, इसमें कोई शक नहीं कि आपने कृष्णन की हत्या की; लेकिन बेहतर होगा अगर आप मुझे यह बता दें कि आपने यह कैसे किया।"
नारायणन को एहसास हो गया था कि अब उसके लिए इससे बचना नामुमकिन है। कम से कम उसे मृत्युदंड से बचने और आजीवन कारावास पाने की कोशिश करनी चाहिए। उसने रावण को कृष्णन की हत्या का विस्तृत और सच्चा ब्योरा दिया। उसने कहा,
"कृष्णन समय-समय पर मुझसे पैसे माँगता रहता था। जब वह आता, तो मैं उसे थोड़े पैसे दे देता था। लेकिन आखिरकार उसने मुझसे एक लाख रुपये की माँग की और कहा, 'मुझे संदेह है कि हम एक ही पिता की संतान हैं या नहीं।'" यह मेरी दिवंगत माता के चरित्र पर लगाया गया एक गंभीर आरोप था। मैंने राधा से सुना था कि उसने अपनी दो बेटियों को अरबों को बेच दिया था। वह बाकी दो बेटियों के साथ भी ऐसा ही करने की तैयारी कर रहा था। उसी समय, मनमोहन सेठ ने जोर देकर कहा था कि 'रवि को निंबर्दी में मौज-मस्ती करनी चाहिए'। मनमोहन सेठ ने मुझ पर बहुत एहसान किए थे। उन्हें मुझ पर पूरा भरोसा था। मुझे उनके लिए कुछ करना ही था। और फिर मैंने यह साजिश

रची। मैं कृष्णन को निंबर्दी ले आया। मैंने उसे दो दिन बाशममु के होटल में रखा। वहाँ वह सुबह से शाम तक शराब पीता रहता था। तीसरे दिन रात को मैंने उसे निंबर्दी बुलाया। उसे एक लाख रुपये चाहिए थे। मैंने उससे कहा कि मैं उसे पचास हजार रुपये देना चाहता हूँ। उसे मेरी योजना का जरा भी अंदाजा नहीं था। वह थोड़ा नशे में था।
"मैं उसे कोल्ड स्टोरेज में ले गया। उस समय वहाँ कोई नहीं था। जब मैंने उससे कहा, 'मेरे पास कुछ काला धन है और मैंने उसे कोल्ड स्टोरेज में छिपा रखा है।' तो उसने कहा, 'तुम बहुत चालाक हो। लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा कि तुम इस पैसे का क्या करना चाहते हो। जो भी हो, मेरा उस पर कोई एहसान नहीं है। चलो, मुझे पैसे दे दो।'"
मैंने कोल्ड स्टोरेज का दरवाजा खोला और अंदर चला गया। वह भी मेरे पीछे-पीछे अंदर आ गया। लेकिन मैंने झट से उसे नीचे खींच लिया और इससे पहले कि उसे कुछ समझ आता, मैं बाहर आ गया और कोल्ड स्टोरेज का दरवाजा बंद कर दिया। जैसा कि आप कल्पना कर सकते हैं, ऑक्सीजन की कमी के कारण कोई भी व्यक्ति कोल्ड स्टोरेज में ज्यादा देर तक जीवित नहीं रह सकता।
"बिल्कुल सही। यह एक रेफ्रिजरेटर की तरह है। तो क्या हुआ?" "आधे घंटे बाद जब मैंने दरवाजा खोला तो कृष्णन मृत पाया गया। मैंने तुरंत उसके सारे कपड़े उतार दिए और अपने कपड़े उसे पहना दिए। मैंने उसके हाथ में कंगन बांध दिया। सुबह मैंने उसके शव को नाव के अंदर ले गया।"
और उस चाकू के निशान?
"मैंने पुलिस को थोड़ा और गुमराह करने के लिए ऐसा भी किया। शव को ठिकाने लगाने के बाद, मैंने अपने कपड़े बदले और तित्था आ गया।

तित्था में एक सरदारजी मुंबई जाने की तैयारी कर रहे थे। मैंने उन्हें बताया कि मेरी पत्नी मुंबई में बीमार है। वे मुझे ट्रक में मुंबई ले जाने के लिए तैयार हो गए।"
"अच्छा। तो आप दमन कैसे आए?"
"दमन में कोल्ड स्टोरेज से मेरे कुछ परिचित थे। मुझे दमन मुंबई से ज्यादा सुरक्षित लगा।"
"लेकिन क्या आपको कृष्णन की हत्या करने का कभी पछतावा नहीं हुआ?"
"सच में नहीं। वह किसी काम का नहीं था। लेकिन सच कहूँ तो - मुझे सीतू के लिए बुरा लगा। बाद में मुझे इस बात का भी अफसोस होने लगा कि मैंने अपने मालिक के प्यार के लिए एक निर्दोष लड़के को उम्रकैद की सजा दिलवा दी। मैंने कृष्णन को मार डाला - लेकिन मुझे ऐसा लगा जैसे तीन जिंदगियां छलनी हो गई हों।"
"तीन जिंदगियां? किसकी?" रावरना ने पूछा।
"सिटु, सुबी और मथुकाका।"
‘‘अच्छा.’’
"मैं आपको सच बता रहा हूँ, महोदय, इस जीवन में कोई भी अपराध कर सकता है। लेकिन उसे ऐसा कुछ नहीं करना चाहिए जिससे किसी निर्दोष को कष्ट पहुँचे। ऐसे अपराध से मिलने वाला सुख बहुत क्षणिक होता है। सीतू मेरे सपनों में आती थी और चिल्लाकर मुझसे पूछती थी, ''बताइए, मैंने आपके विरुद्ध ऐसा क्या अपराध किया है कि आपने मुझे आजीवन कारावास की सजा दी है?'' मैं कई बार सपने से चौंककर जाग जाता था। मैं कल्पना करता था कि सुबी रो रही है और मथुकाका उसे सांत्वना दे रहा है। लेकिन अब मैं बेहतर महसूस कर रहा हूँ। मेरे मन का तनाव दूर हो गया है। मैं अदालत में भी यही बात कहूँगा। लेकिन महोदय, मुझे फाँसी नहीं दी जानी चाहिए।"

"ऐसा नहीं होगा। लेकिन अब आप पर कृष्णन की हत्या का आरोप लगेगा। इसके अलावा, चूंकि आपने सीतू के खिलाफ झूठे सबूत तैयार किए और उसे आजीवन कारावास की सजा दिलवाई, इसलिए आप पर दंड संहिता की धारा 194 के तहत भी आरोप लगेगा। अगर सीतू को कृष्णन की हत्या के लिए फांसी दी जाती और आपकी साजिश बाद में सामने आती, तो आपको फांसी दी जाती। यही उस धारा का प्रावधान है।"
लेकिन मैं जीना चाहता हूँ!
"यह भावना हर किसी में होती है। जीने की इतनी प्रबल इच्छा रखने वाले व्यक्ति को किसी और के जीने के अधिकार को दांव पर लगाने से पहले सौ बार सोचना चाहिए। ठीक है, मैं जा रहा हूँ। मुझे सीतू को रिहा करवाने के लिए तुरंत मुंबई जाना होगा।"
नारायणन ने कृष्णन की हत्या कैसे की, इस रहस्य का अंततः रावण के सामने खुलासा हो गया। जब वे हिरासत स्थल के पास से गुजरने वाले थे, तभी उन्हें कृष्णन द्वारा हस्ताक्षरित पत्र और दस हजार के मसौदे की याद आई। जब वे वापस मुड़े और वहाँ आँसू पोंछते खड़े नारायणन से इसके बारे में पूछा, तो उन्होंने कहा,
"मैंने वह पत्र नाटक इसलिए रचा था ताकि यह दिखाया जा सके कि मेरी तथाकथित हत्या के बाद भी कृष्णन जीवित थे। इसके अलावा, एक और इरादा कृष्णन की हत्या के बाद भी उनकी दो अविवाहित बेटियों की शादी कराने की जिम्मेदारी को अप्रत्यक्ष रूप से पूरा करना था।" "अच्छा। बहुत-बहुत धन्यवाद। भगवान आपका भला करे। मैंने आपके व्यवहार का अनुमान भी लगाया था और वह सही निकला।"
रावराने मुस्कुराते हुए वहां से चले गए।
मनमोहन शेठ को मुंबई में नारायणन की गिरफ्तारी की खबर मिली और उनकी घबराहट बढ़ गई। उन्होंने तुरंत रवि को निंबार्डी छोड़कर मुंबई आने का तार भेजा। रवि तुरंत मुंबई पहुंच गए।

जब यह खबर निंबर्दी में फैली, तो फातु भंडारी वहां से गायब हो गया। इसी फातु ने झूठी गवाही दी थी कि उसने नारायणन और सीतू को आखिरी बार नाव में जाते हुए देखा था। जब निंबर्दी के लोगों को पता चला कि सीतू निर्दोष है और उसे हत्या के मामले में फंसाने की साजिश छोटे और बड़े सेठानी नारायणन की मदद से रची गई थी, तो पूरा निंबर्दी गुस्से से भर गया। लोगों ने कोल्ड स्टोरेज और कैनिंग फैक्ट्री को जला दिया। कुछ लोगों ने बारूदी सुरंगें बिछाने और उन्हें उड़ाने की तैयारी शुरू कर दी।
जब गिरजाघर की पहाड़ी पर स्थित मुख्य पुजारियों ने यह खबर सुनी, तो उन्होंने अपनी लाठियाँ नीचे फेंक दीं और क्रोधित लोगों को शांत करते हुए कहा,
"अरे मूर्खों, मुझे शुरू से ही यकीन था कि मेरी सीतु निर्दोष है, बिल्कुल निर्दोष; लेकिन सच्चाई सामने आने में थोड़ा समय लग गया। अब वे सेठ लोग यहाँ नहीं आ सकते। ऐसा लगता है जैसे दोनों कारखाने अब निंबरदी के स्वामित्व में हैं। उन कारखानों को नुकसान पहुँचाकर तुम अपने ही पैरों पर पत्थर मारोगे।"
लोगों को मथुकाका की बात समझ आ गई थी। रामायण के इतने लंबे दौर के बाद मनमोहन सेठ या रवि निंबार्डी दोबारा आने की हिम्मत नहीं कर पाते। अगर उन्हें ये कारखाने किसी और को बेचने के लिए भी कहा जाता, तो भी ये मुमकिन नहीं होता।
जब मोहनराव दिवेकर ने चित्रदुर्ग जेल में यह खबर सुनी, तो उन्होंने सीतू को फोन किया और उसे बताया,
"बेटे सीतू, तुम सचमुच भाग्यशाली हो। मेरे दोस्त ने तुम्हारे खिलाफ रची गई झूठी साजिश का पर्दाफाश कर दिया है। तुम्हारी रिहाई का आदेश चार से छह दिनों में आ जाएगा। तुम्हें मेरे सामने रिहा किया जाएगा।"

"लेकिन महोदय, यह सब तो आपकी कृपा से ही संभव हुआ। मैं आपकी इस कृपा का बदला कैसे चुकाऊं?" सितु ने उनके चरणों में सिर झुकाकर कृतज्ञता व्यक्त करना शुरू किया।
"मैंने इसमें ज्यादा कुछ नहीं किया है। अगर आप मुझे धन्यवाद देना चाहते हैं, तो महारानी को धन्यवाद दें। उन्होंने अथक प्रयास किए और सच्चाई को सामने लाया।" उन्हें जगाते हुए दिवेकर ने कहा,
उस अवसर पर देसाई जेलर समुद्र तट से मिठाई लाकर जेल के सभी कैदियों में बांट दी। उन्होंने मोहनराव दिवेकर को धन्यवाद भी दिया। यह एक ऐसा उदाहरण था, जहां आजीवन कारावास की सजा पाए कैदी को अदालत के अंतिम फैसले के बाद भी निर्दोष साबित कर दिया गया। अगली सुबह करीब नौ बजे, चित्रदुर्ग तट से एक नौका जेल की ओर आ रही थी। यह एक नियमित नौका विहार था, लेकिन उस दिन इस नौका विहार में जेल के पहरेदारों ने कई अजनबियों को देखा।
जैसे ही नाव आने का समय नज़दीक आया, गार्ड ने खिड़की से बाहर देखा। चित्रदुर्ग के कलेक्टर उसमें थे। उनके साथ रावराने, फादर मैथ्यूज, मिस मार्कोनी और सुबी भी थे, जिन्हें जेल पुलिस नहीं जानती थी। चूंकि ये सभी लोग साहब के साथ आए थे, इसलिए गार्ड ने लोहे का गेट खोल दिया।
मथुकाका जेल की साढ़े तीन सौ सीढ़ियाँ नहीं चढ़ पा रहे थे। इसलिए उन्हें चढ़ने में मदद करने के लिए नाव से एक कुर्सी मंगवाई गई। नाव के कर्मचारियों ने कुर्सी को लुढ़काया और मथुकाका को जेल की ओर सीढ़ियों पर चढ़ाना शुरू किया। जब कलेक्टर रावराने और सुबी सीढ़ियाँ चढ़कर आए, तो वहाँ का दरवाजा भी खुला हुआ था।
कलेक्टर को देखते ही देसाई जेलर आगे आए और उनका अभिवादन किया।

"श्री देसाई, मैं कैदी संख्या 33, सीटू सारंग की तत्काल रिहाई का आदेश लेकर आया हूं। मैं महाराष्ट्र राज्य के माननीय राज्यपाल द्वारा भेजा गया उनकी रिहाई का आदेश लेकर आया हूं।" "हम आपके इस आदेश को लाने का इंतजार कर रहे थे।"
"महाराष्ट्र में अभी तक ऐसा किसी भी मामले में नहीं हुआ है। यह एकमात्र उदाहरण है।"
जेलर देसाई ने सीतू को आगे बुलाया। मोहनराव दिवेकर भी सीतू के साथ आगे आए। जब सीतू ने सुबी द्वारा लाया गया हार दिवेकर के गले में डाला, तो उन्होंने कहा,
"तुम क्या कर रहे हो, मेरे बच्चे? इस हार को सीतू के गले में डाल दो।"
इसलिए उन्होंने सुबी से वही हार सीतू के गले में पहना दिया। पास खड़े कैदियों ने तालियाँ बजाईं।
मोहनराव दिवेकर ने रावराना परिवार से दृढ़तापूर्वक मुलाकात की और कहा,
"दोस्त, तुमने बहुत अच्छा काम किया! तुमने अदालत में हुए अन्याय को सुधार दिया है।"
"लेकिन इसका सारा श्रेय आपको ही जाता है। अगर आपने मुझे इस मामले की जांच करने के लिए पत्र न भेजा होता तो क्या होता?"
"जो भी हो, होने दो। लेकिन तुमने इस काम में बहुत मेहनत की है।" बात करते-करते पूरा समूह देसाई जेलर के घर के सामने आ गया।
इसी बीच मथुकाका की डोली भी आ गई। सितु ने अपना सिर पैरों पर रखकर फूट-फूटकर रोया। तब मथुकाका ने कहा,
"रो मत, मेरे बेटे। स्वर्ग में विराजमान भगवान अत्यंत दयालु हैं। उन्होंने ही सबसे पहले दिवेकर साहब को तुम्हारे साथ हुए अन्याय को दूर करने की प्रेरणा दी। उनके आदेश पर रावण ने अथक

परिश्रम किया और सत्य का प्रकाश फैलाया। उसे कैप्टन श्रीनिवास, एडमिरल और मिस मार्कोनी जैसे लोगों का सहयोग मिला। इसीलिए तुम बच सके। मेरे पैर पकड़ने की बजाय, इन लोगों के पैर पकड़ो।" रावरेन ने अपनी पाइप जलाई और कहा, "बस करो, पिताजी। उन्हें आपस में कुछ बात करने दो।"
सुबी की आँखों में आँसू भर आए थे। उसे सीतू से मिलने की बिल्कुल भी उम्मीद नहीं थी, जिसे अचानक चौदह साल के कठोर कारावास की सजा सुनाई गई थी।
जैसे ही मिस मार्कोनी का ध्यान इस ओर गया, दिवेकर ने पूछा,
‘‘या बाई कोण?’’
रावराने मुस्कुराए और बोले, "जिस तरह हमने दो सिटु-सुबी विमान तैयार किए हैं, उसी तरह हम एक और तैयार करना चाहते हैं। मैं कैप्टन श्रीनिवास का इंतजार कर रहा हूँ। वह कोलंबो से विशाखापत्तनम गए हैं।"
यह सुनकर मिस मार्कोनी शर्म से लाल हो गईं।
देसाई जेलर ने अपने बंगले पर सबके लिए दोपहर के भोजन का इंतजाम किया। कलेक्टर को जल्दी थी, इसलिए उन्होंने सीतू को रिहा करने का आदेश दिया और तुरंत चले गए। तब दिवेकर ने उनसे कहा, "अगर आप भी खा लेते तो अच्छा होता।"
"क्षमा कीजिए। चित्रदुर्ग के डीएसपी द्वारा कार्यान्वयन के लिए एक अन्य सरकारी आदेश लाया गया है। इसे तत्काल लागू करने की आवश्यकता है।"
"किस प्रकार?"
"वे मनमोहन शेठ और रवि कहाँ हैं जो लापता हो गए हैं? उन्हें गिरफ्तार करने का आदेश जारी कर दिया गया है।"
"वे कहाँ जाएंगे?"

"कुछ कहना असंभव है। वे विदेश भी भाग सकते हैं। उनके पास वीजा और पासपोर्ट है। उसे भी रद्द करने का आदेश जारी किया जाना है।" न्यायाधीश दिवेकर ने कहा, "मान लीजिए, अगर वे किसी देश में भाग भी जाते हैं, तो हम 'प्रत्यर्पण अधिनियम' के तहत उन्हें उस देश को सौंपने की मांग कर सकते हैं।"
"यह सच है। लेकिन अगर वे अभी तक नहीं गए हैं, तो क्या उनके लिए जाना असंभव बनाना व्यर्थ नहीं है?"
"यह सही है।"
बाद में, पूरा समूह चर्चा में शामिल हो गया, लेकिन सीतू और सुबी कहीं नजर नहीं आए।
देसाया के बंगले के पीछे, वे दोनों एक-दूसरे को कसकर गले लगाए हुए थे, और उनकी आंखों से आंसू बह रहे थे।
चित्रदुर्ग जेल की पथरीली तलहटी से एक बार फिर ज्वार की लहरें टकरा रही थीं। वे झागदार होकर टूट रही थीं—ठंडक उड़ रही थी। सीतु की बाहों में लिपटी सुबी को समझ नहीं आ रहा था कि यह सब सच है या सपना। वह रो भी रही थी और हंस भी रही थी। उसे समझ नहीं आ रहा था कि आखिर हो क्या रहा है।
बंगले के सामने बैठे लोग मामले के जटिल परिणामों पर चर्चा कर रहे थे। लेकिन लहरों के शोरगुल में सीतू और सुबी कुछ भी नहीं सुन पा रहे थे! दरअसल, लहरें इतना ज़ोरदार शोर मचा रही थीं कि किसी की भी आवाज़ उनके कानों तक नहीं पहुँच पा रही थी!
क्योंकि वे काफी समय से दिखाई नहीं दिए थे, इसलिए मथुकाका उन्हें ढूंढते हुए एक छड़ी के सहारे आगे बढ़ी। जब उसने उन्हें देखा, तो वह उनके पास गई। लेकिन वह सबके सामने मथुकाका के प्रति अपनी भावनाओं को व्यक्त नहीं कर सकी।

जब मथुकाका ने उन दोनों को अपने करीब लिया, तो उनकी आँखें भी नम हो गईं। उसने कर्कश स्वर में कहा,
‘‘अब मैं आज़ाद हूँ!’’
"क्यों?" सीता ने पूछा।
आकाश की ओर इशारा करते हुए उन्होंने कहा, "वह मुझे पुकार रहा है; लेकिन जिस क्षण के लिए मैं उससे प्रतीक्षा करने की विनती कर रहा था, वह आ गया है। उसने मेरी बात सुनी - अब मुझे उसकी बात सुननी होगी!"
"नहीं, नहीं! चाचाजी, हम आपको मरने नहीं देंगे!" सीतु ने मथुकाका की कमर में बाहें लपेटते हुए कहा।
जब सीटू, सुबी, मथुकाका, राओराणे और मिस मार्कोनी लॉन्च से चले गए, तो चित्रदुर्ग के सभी कैदियों ने उन्हें विदाई दी।
दिवेकर अभिवादन के रूप में रुमाल लहरा रहे थे। देसाई जेलर उनके बगल में खड़े थे। उन्होंने कहा,
"महोदय, मैं सत्ताईस वर्षों से जेलर के रूप में काम कर रहा हूँ, लेकिन मेरे जीवन में ऐसी घटना कभी नहीं हुई। यह शायद आपके यहाँ होने के कारण ही संभव हो पाया कि ये दो निर्दोष आत्माएँ फिर से मिल सकीं।"
"शायद नियति ने मुझे ऐसा होने के लिए ही यहाँ भेजा था," दिवेकर साहब ने मुस्कुराते हुए कहा।
देसाई ने कहा, "आप कुछ भी कहिए, लेकिन सारा श्रेय आपको ही जाता है।"
०००

छब्बीस
निंबार्डी में जो तूफान मंडरा रहा था, वह अब थम गया है।
उस घटना को दो साल हो गए हैं। इन दो सालों में निंबार्डी में कुछ और घटनाएं घटित हुई हैं।
सीतू की रिहाई के चार महीने के भीतर ही मथुकाका ने ईसाई धर्म अपना लिया। उन्हें गिरजाघर परिसर में ही दफनाया गया। उस समय उभा गाँव पूरी तरह तबाह हो चुका था। सुबी और सीतू दोनों बहुत दुखी थे। वे दोनों अपने सगे माता-पिता से भी ज़्यादा मथुकाका के करीब थे। उनका मानना था कि मथुकाका का आशीर्वाद उनके साथ है, इसीलिए सज़ा भुगतने के बावजूद वे बच निकलने में कामयाब रहे। जिस दिन मथुकाका संकट में थे, उन्होंने सितु और सुबी को अपने पास बुलाया। वे बहुत कुछ कहना चाहती थीं, लेकिन अस्थमा के कारण उनके मुँह से एक भी शब्द स्पष्ट नहीं निकला। उनकी हालत देखकर वे दोनों समझ नहीं पा रही थीं कि क्या करें। सुबी का निधन हो चुका था। मथुकाका ने उन्हें पास बुलाया और रोती हुई सुबी के पेट की ओर उंगली करके इशारा किया, फिर उसी उंगली को अपने सीने पर रख दिया। तभी निंबर्दित भाषा में एक बूढ़े व्यक्ति ने कहा, "चाचा कहते हैं कि मरने के बाद मैं आपके पेट में आऊँगा।"
ये शब्द सुनकर सुबी अचानक रोना बंद कर दिया। वह मथुकाका के क्षीण शरीर को देखती रही। मानो वह अपनी आँखों के माध्यम से मथुकाका के शरीर से धीरे-धीरे निकल रहे जीवन को अपने गर्भ में पल रहे भ्रूण में संजो रही हो। उसी रात मथुकाका ने निंबार्डी और

इस धरती को अलविदा कह दिया। एंटोन गोंसाल्वेस और निंबार्डी के अन्य ईसाइयों ने मथुकाका को दफनाया। उस स्थान पर एक संगमरमर का मकबरा भी बनवाया गया। उस पर निम्नलिखित शब्द खुदे हुए थे:
"वे लोग जिन्होंने अपना पूरा जीवन निंबार्डी पर प्रेम बरसाया" फादर मैथ्यूज उर्फ मथुकाका यहां विश्राम कर रहे हैं।
इसके अलावा, नीचे एक अंग्रेजी पंक्ति थी - तेरा ही किया जाएगा। मथुकाका का अंतिम संस्कार ईसाई रीति-रिवाजों के अनुसार किया गया, लेकिन निंबरदी के हिंदू इससे संतुष्ट नहीं थे। गैबित और भंडारी ने मिलकर उस चट्टान के चारों ओर एक छोटा मंदिर बनवाया, जो उस बाहरी झोपड़ी के पीछे थी जहाँ मथुकाका अक्सर बैठते थे। उनका उद्देश्य मथुकाका की स्मृति को हमेशा के लिए संजोए रखना था।
मनमोहन सेठ और रवि विदेश नहीं भागे थे। वे कुछ दिनों से विजयवाड़ा में छिपे हुए थे। लेकिन बाद में उन्होंने पुलिस के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। नारायणन के खिलाफ आईपीसी की धारा 194, 302 और 201 के तहत मामला दर्ज किया गया। मनमोहन सेठ और रवि भी उस मामले में आरोपी थे। लेकिन उनके खिलाफ साजिश का आरोप साबित नहीं हो सका। दोनों को रिहा कर दिया गया। हालांकि, नारायणन को चौदह साल की सजा सुनाई गई।
निंबरदी की दोनों फैक्ट्रियां गांव की संपत्ति बन गईं। मनमोहन सेठ और रवि चाहकर भी उन पर दावा नहीं कर सकते थे। फैक्ट्रियां सहकारी आधार पर शुरू की गई थीं। हर कोई उन फैक्ट्रियों का मालिक और मजदूर दोनों था। छह लॉन्च और पांच से सात लाख रुपये की लागत से बनी ये दोनों फैक्ट्रियां गांव की संपत्ति बन गईं। सीतू को सभी तकनीकी जानकारी थी, इसलिए उसे ही इन फैक्ट्रियों के संचालन की पहल करनी पड़ी।

मथुकाका की मृत्यु के बाद, वहां कोई उपदेशक नहीं आया।
सितु और सुबी अब उस बाहरी मकान में रहते हैं। सुबी का एक बेटा हुआ। उसका नाम माथुरदास रखा गया; क्योंकि उन्हें लगा कि यह नाम मथुकाका के नाम से बहुत मिलता-जुलता है।
फातु भंडारी काफी समय से लापता था। वह अचानक गांव में प्रकट हुआ। उसके कपड़े फटे हुए थे, दाढ़ी बढ़ी हुई थी और बाल बिखरे हुए थे। वह सीना पीटते हुए जोर-जोर से चिल्ला रहा था, "मैंने राशा सारंगा को मारा! मैंने झूठी गवाही दी! अब गांव में झूठी गवाही देने वाले को फांसी दी जानी चाहिए!"
वह ज़ोर से हँसता है, और फिर ज़ोर से रोता है। गाँव वालों को लगा कि पुलिस उसे पागल समझकर शायद न पकड़ पाए, लेकिन पुलिस ने उसे पकड़ ही लिया। उस पर झूठी गवाही देने का मुकदमा भी चला। लेकिन उस मुकदमे के दौरान, न्यायाधीशों को यकीन हो गया कि वह पूरी तरह से पागल है, इसलिए उसे येरवडा भेज दिया गया। लेकिन वहाँ उसने दीवार पर मुक्का मारकर आत्महत्या कर ली। अब निंबरदी में सन्नाटा पसरा है। दोनों कारखाने हफ्ते में एक दिन बंद रहते हैं। उस दिन, सीतु अपने छोटे बच्चे को कंधे पर लेकर उस छोटे मंदिर में जाती है। वह नन्हे माथुरदास को गोद में लेकर उस चट्टान पर बिठाती है जहाँ माथुकाका बैठे थे और कहती है,
"चाचा जी, आप कब बड़े होंगे? आप मुझे कब सीतू कहकर बुलाएंगे?" इस समय उसकी आँखों में पानी आ जाता है; और बच्चा, अपने गले में लटके छोटे से क्रॉस से खेलते हुए, मन ही मन हंसने लगता है। चट्टान के नीचे लहरों का नृत्य जारी है। झागदार लहरें चट्टान से टकराती हैं, झाग और पाला आसमान में उड़ते हैं। और सीतु मथुकाका की यादों से भारी मन से शौचालय में लौट आती है।

□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□, □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□ □□□ □□□ □□□-□□□ □□□□□□□ □□□...
"□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□, □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□?"
□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□
□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□
□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□
□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□

□□□□□

***** □□□□□□ *****

sjeet